3-4

अंकों में छिपा भविष्य

अंक विज्ञान पर आधारित विश्व की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक
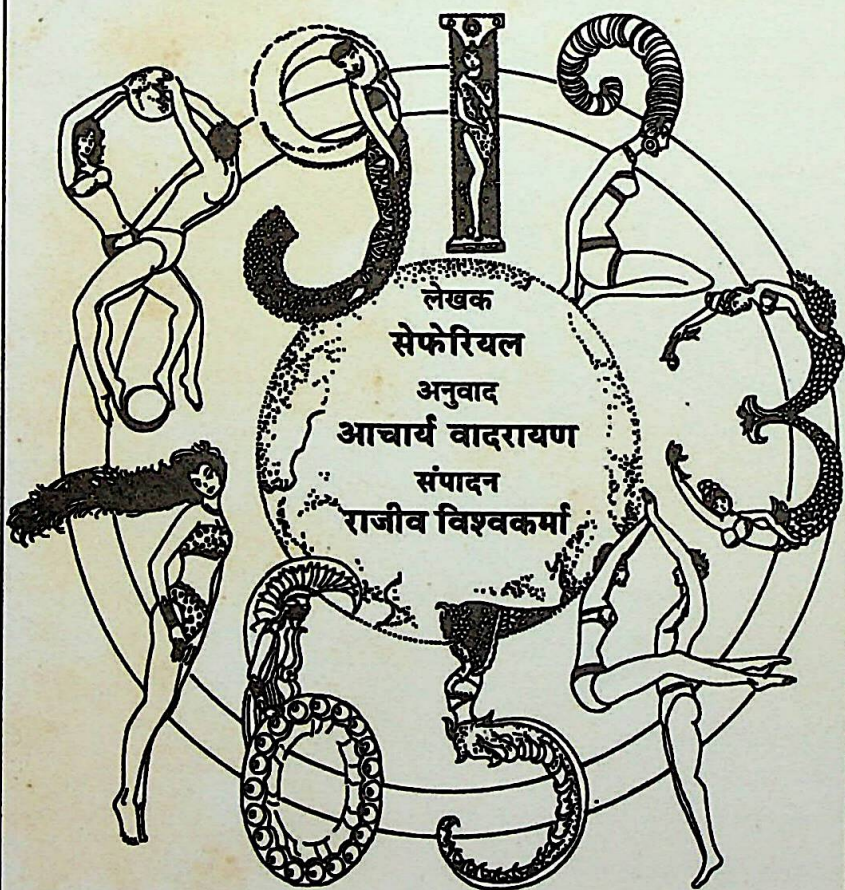
लेखक
सेफेरियल
अनुवाद
आचार्य वादरायण
संपादन
राजीव विश्वकर्मा

मनोज पॉकेट बुक्स

प्रकाशक
मनोज पॉकेट बुक्स
761, मेन रोड, बुराड़ी,
दिल्ली-110084
दूरभाष-7225025

मुद्रक
आदर्श प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

मूल्य
पेपर बैक संस्करण : 50/-
सजिल्द लाइब्रेरी संस्करण : 100/-
नवीन संस्करण

अपनी बात

मानव मन में प्रारंभ से ही भविष्य के रहस्यों को जानने की प्रबल उत्कंठा रही है और इसी ने ज्योतिषशास्त्र की अनेकानेक विधाओं जैसे हस्तरेखा विज्ञान, जन्मकुण्डली, मुखाकृति विज्ञान, रमल ज्योतिष व अंक विद्या आदि को जन्म दिया।

इन सभी विधाओं में सर्वाधिक सरल व बोधगम्य अंक विद्या है। अंक विद्या की सहायता से केवल जन्म तिथि के आधार पर आप न केवल किसी भी व्यक्ति की प्रकृति व स्वभाव को परखकर उसके विषय में सबकुछ जान सकते हैं बल्कि यह भी जान सकते हैं कि कौन-सा अंक आपके लिए शुभाशुभ है तथा किस अंक से आपको कैसा फल मिलेगा। आप किसके साथ मित्रता करें तथा किससे बचें। किसके साथ व्यापार करना लाभकारी होगा इत्यादि।

इस पुस्तक की भाषा को सरलतम तथा प्रवाहमय बनाने का हमने हरसंभव प्रयास किया है, जबकि इसकी मूल पुस्तक 'कबाला ऑफ नम्बर्स' की भाषा बेहद जटिल तथा दुरूह थी। पुस्तक में यथास्थान हिब्रू भाषा के संकेत चिह्नों को भी दिया गया है, क्योंकि ये संकेत ही पुस्तक का मूलाधार हैं। जहां-जहां संभव हुआ वहां भारतीय संदर्भों को भी देने का प्रयास हमने किया है। फिर भी सुधि पाठकों के सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक अंक विद्या के जनक विश्वविख्यात भविष्यवेत्ता सेफेरियल की अनमोल कृति 'कबाला ऑफ नम्बर्स' का सरल हिंदी रूपांतरण है। अंग्रेजी भाषा में इस पुस्तक को लाखों पाठकों ने पढ़ा, समझा तथा सराहा है, अब सरल हिंदी भाषा में आप भी पढ़ें। आशा है विश्व की श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक यह अनमोल पुस्तक जिज्ञासुओं, अध्येताओं, अनुसंधानकर्ताओं, पाठकों आदि सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

विषयानुक्रम

प्रकृति की ज्यामिति

जब गोथे ने वास्तुकला को 'जड़ संगीत' कहा था, तब वह उसी विचार से प्रभावित था जिससे प्रेरित होकर प्लेटो ने ईश्वर को एक महान ज्यामितिज्ञ कहा था। यदि हम किसी भव्य भवन, अतिसुंदर दृश्य या स्वर्णजड़ित विस्तृत स्वर्गलोक की कल्पना करें तो पाएंगे कि वस्तुतः हम ठोस विचार का ही अवलोकन कर रहे होते हैं।

भगवान के परिधान, दैवीय विचार के साकार रूप व दैवीय संकल्पना की साक्षात अभिव्यक्ति के रूप में ब्रह्माण्ड का वर्णन किया गया है। अणुओं के आकस्मिक तालमेल में विश्वास करने के दिन अब लगभग लद चुके हैं तथा वे अपने सकारात्मक रूप में हमारे मस्तिष्क में शायद कभी लौटकर भी नहीं आएंगे। विज्ञान ने ईश्वर की मीमांसा की दिशा में महान कार्य किया है तथा विज्ञान व ईश्वर मीमांसा के बीच दर्शनशास्त्र ने भी अपनी महत्ती भूमिका निभाई है।

दर्शनशास्त्र सृष्टि में अभिकल्पना के प्रमाण से ईश्वर के अस्तित्व का तर्क भी प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे हम अपने आस-पास विद्यमान ब्रह्मांडीय नियमों से परिचित होते हैं, वैसे-वैसे हमारे मस्तिष्क में सृष्टि की संरचना एवं उद्देश्य के विचार घुमड़ने लगते हैं और हम अधिकाधिक रूप से सृष्टि के रचयिता के अस्तित्व को स्वीकार करने लगते हैं।

मनुष्य तब तक प्रकृति से घनिष्ठ संबंध नहीं बना सकता या पदार्थ के नियमों का अध्ययन नहीं कर सकता, जब तक कि वह इनके मूल में छिपी प्रज्ञा के होने में विश्वास नहीं करता। समस्त जगत में, सभी दिशाओं में तथा लगभग अनंत रूपों में चेतन पदार्थ तथा प्रज्ञा त्रिमूर्ति के रूप में प्रकट होती है।

अणुओं के पारस्परिक आकर्षण, विभिन्न रासायनिक घटकों, शरीर के कोष्ठों में महीन ऊतकों के विकास, निर्जीव के सम्मिश्रण से जीव पदार्थों के निर्माण की संबंधपरकता व माया की कार्यविधि को व्यक्ति देखता है, परंतु उसे संचालित करनेवाले जादू को नहीं समझ पाता।

हमें प्रकृति के बाहरी रूप के विषय में पर्याप्त जानकारी है, परंतु इसके गूढ़ रहस्यों के विषय में हमारा ज्ञान लगभग शून्य है। हमें प्राकृतिक ज्यामितीय

रूपाकृति के पीछे छिपी प्रज्ञा के विषय में पूर्ण ज्ञान नहीं है। प्रकृति की ज्यामिति के विषय में हमने बहुत कुछ सीखा है, परंतु ज्यामितिज्ञ के विषय में हमें कुछ भी नहीं पता, सिवाय इसके कि उस ज्यामितिज्ञ के कार्यों में उसकी झलक मिलती है।

अतः प्रकृति के अंतरतम में झांकना धर्म की तरह ही सत्य की दिशा में अग्रसर होने का एकमात्र बुद्धिमत्तापूर्ण उपाय है। यदि हम प्रकृति की ज्यामिति को ठीक उसी धैर्य और सद्भावना से देखें, जिस प्रकार हिप्पारकस, टोल्मी, कैप्लर, टाइको, न्यूटन, केल्विन व अन्य विद्वानों ने इसे देखा, तो संभवतः हम इसी नतीजे पर पहुंचेंगे कि संख्या का अंक, जिनकी ज्यामितीय संबंध ों में अभिव्यक्ति की गई है, वस्तुओं की आत्मा की गहन अभिव्यक्ति मात्र हैं। योगों में असंदिग्ध रूप से वे कुछ अन्य प्रत्यक्ष गुणों के धारक प्रतीत होते हैं, जो हमें बाह्य रूप से अत्यंत प्रभावित करते हैं। विशेष तौर पर तब जब हम प्रकृति के मोहक, दृढ़ तथा शाश्वत रूप को देखते हैं, परंतु इनका गहन अध्ययन हमें इस निष्कर्ष की ओर ले जाएगा कि यह गुण हमारी ही चेतना से संबंधित कुछ तथ्य हैं, क्योंकि सौंदर्य के मापदंड, शक्ति तथा प्राकृतिक विशेषताएं निश्चित परिमाणात्मक संबंधों द्वारा अभिव्यक्त ज्यामिति द्वारा ही रेखांकित की जाती हैं।

ज्यामिति का अध्ययन हमें प्रकृति के 'मूड' को समझने व पूर्वानुमान लगाने में हमारी सहायता तो करता ही है, साथ ही प्रकृति की व्यापक शक्ति का अनेक तरीकों से उपयोग करने में भी हमारी मदद करता है। प्रतिभासंपन्न वैज्ञानिक जॉन कैप्लर ने हमारे अभीष्ट ब्रह्मांड में स्थित विभिन्न पदार्थों के संबंधों को पहली बार परिभाषित किया था। इन्हें 'कैप्लर के नियमों' के रूप में जाना जाता है। इन्हें बाद में न्यूटन ने प्रदर्शित भी किया, जो ब्रह्मांडीय नियमों की संपूर्ण अभिव्यक्ति हैं।

ये नियम उस ज्यामिति का रहस्योद्घाटन करते हैं, जिससे कभी छुटकारा पाना संभव ही नहीं है। जो भी व्यक्ति इन नियमों के पीछे छुपी प्रज्ञा पर संदेह करता है, उसे संपूर्ण वैज्ञानिक जगत को यह बताना होगा कि ये नियम संपूर्ण ब्रह्मांड में लागू क्यों होते हैं। यह बात दीगर है कि विज्ञान बार-बार उस शब्दावली का प्रयोग करता है, जिसके बारे में न तो उसके पास कोई जानकारी है, न ही कोई निश्चित परिभाषा। इस सत्य को स्वीकारते हुए कि अगली कई शताब्दियों में सूर्य, चंद्र तथा अन्य ग्रहों की स्थितियों व गतियों की गणना आसानी से की जा सकती है, हम यह भी स्वीकार कर सकते हैं कि प्रकृति की ज्यामिति एक ऐसा सत्य है जिस पर हम पूरी तरह से विश्वास कर सकते हैं।

अब हम संख्याओं की प्रतीकात्मकता पर खगोल विज्ञान के तथ्यों के पड़नेवाले प्रभाव पर विचार कर सकते हैं। चूंकि हम यह देख चुके हैं कि ब्रह्मांड सहजता से बोधगम्य इसलिए है, क्योंकि वह महान प्रज्ञा की अभिव्यक्ति है। यह बोधगम्यता इस तथ्य से प्रकट होती है कि संख्याएं ब्रह्मांडीय नियमों की सापेक्ष हैं। यह तर्क भी सार्थक है कि संख्याएं ही वे माध्यम हैं, जिन्हें दैवीय प्रज्ञा की अभिव्यक्ति में प्रयुक्त किया गया है। अनेक तथ्य इस धारणा की पुष्टि भी करते हैं।

एक ग्रह सूर्य के चारों ओर अपनी मध्यमान कक्षा में धुरी पर स्थित होकर घूमता है, जो उस ग्रह के द्रव्यमान, आयतन और आकार द्वारा निर्धारित होता है। अपनी कक्षा में इसका वेग अथवा औसत चाल इसकी औसत दूरी पर निर्भर करती है व इसका परिभ्रमण काल इसके वेग पर निर्भर करता है। इस समस्त कार्यप्रणाली को कैप्लर ने नियमबद्ध किया है।

यह नियम कहता है कि सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण करते समय अपनी चाल द्वारा समान समय में समान क्षेत्र अंकित करते हैं। अर्थात ग्रहों के नियतकालिक समय के वर्ग परस्पर सूर्य की औसत दूरी के घन रूप में विद्यमान हैं। उपरोक्त उदाहरण से पता चलता है कि ब्रह्मांड स्वयं यांत्रिकीय नियमों से संचालित होता है, जो बोधगम्य है तथा महाप्रज्ञा की अभिव्यक्ति है।

हम यह भी देखते हैं कि यह प्रज्ञा अंकों के माध्यम से प्रकट होती है जिसका उपयोग हम गणनात्मक संबंधों को दर्शाने में करते हैं। इसी प्रकार का सुचारू व बोधगम्य संबंध हमें पदार्थों के गुणों, रासायनिक मिश्रणों व क्रिस्टलीकरण में भी दिखाई देता है। प्रकाश व ध्वनि, जो विकसित अवस्था में रंग, कलाकृति व संगीत में अभिव्यक्त होते हैं, उसी अभिव्यक्ति का रूप हैं। टैलीग्राफी भी प्रकृति के सूक्ष्म रूप का ही एक अंग है, जो समस्वरता कंपन पर आधारित है।

प्राकृतिक शक्तियों को केवल उस महान प्रज्ञा की प्रेरणा का ही स्वरूप समझा जा सकता है, अन्य किसी धारणा का नहीं। हमारे सामने कठिनाई तब आती है, जब हम संख्याओं का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हैं। यदि संख्याविद् किसी संख्या द्वारा प्रकट कोई गुण बताता है तो वह इसे केवल अनुभव के आधार पर ही ठीक बता सकता है। इसके अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई तर्क नहीं होता।

वह यह नहीं बता सकता कि 9 का अंक आक्रामक गुणों को क्यों प्रकट करता है या इस अंक से काटना, घायल होना, तीक्ष्णता, कठिनाइयां, कटु वचन व तलवार आदि का बोध क्यों होता है, परंतु वह इसे मंगल ग्रह अथवा लाल रंग से अवश्य जोड़ सकता है। इसे वह उन प्रतीक चिह्नों द्वारा प्रकट कर सकता

है, जो इस संख्या की सर्वव्यापकता पर निर्भर करते हैं। लेकिन यही सर्वव्यापकता इसकी मान्यता के पक्ष में सबसे बड़ा तथ्य प्रस्तुत करती है।

यदि यह कोई व्यक्तिगत अनुभव रहा होता या केवल परंपराओं पर ही निर्भर होता, तो हम इसकी सत्यता पर प्रश्नचिह्न लगा सकते थे। परंतु प्रतीकविद् सभी देशों के अनुभव सिद्धों द्वारा समर्थित हैं, क्योंकि चाहे वह चीनी हो-सिंग हो, फारसी मार्दुक, केल्डियन कोह, काप्टिक खाम, ग्रीक वल्कन या फिर भारतीय अंगारक या फिर लैटिन 'मार्स', एक प्रकार का ग्रह पदार्थ एक जैसे ही गुणों का परिचायक है। पूर्ण पुरुष एडम, जिसे ऐलोहिम (Elohim) का मूर्तिस्वरूप माना जाता है, इस प्रकार संख्याकृत होता है—1a, 4d, 4m = 144 = 9, एडम का अर्थ है लाल रंग। यह हिब्रू संख्या का महत्तम पूर्णांक भी है। इसे 12x12 की तरह भी प्रदर्शित किया जाता है।

यह निःसंदेह आसान प्रतीक है, जो 9 के अंक को मंगल ग्रह से जोड़ता है। चूंकि समूचे ब्रह्मांड को महाप्रज्ञा की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति माना जाता है, इसलिए संख्याविद, एक वैज्ञानिक की भांति ही इस ब्रह्मांड के सहज व आसान नियमों का सदुपयोग करता है। यदि हमें अंकों का प्रतीक ज्ञान भी हो तो किसी गुण को एक अंक द्वारा प्रतीकात्मक रूप में बताना ज्यादा सुविधाजनक व श्रेयस्कर होगा। जैसे किसी व्यक्ति की शारीरिक बनावट से यह पता लगे कि वह आक्रामक स्वभाव का है, तो उसे अंक 9 के गुणों से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

विशाल व्यक्तित्व, खर्चीलेपन व मिलनसारिता के स्वभाव को 3 के अंक से अभिव्यक्त किया जाना चाहिए। ये सब उतनी ही आसानी से किया जा सकता है, जैसे πa^2 वृत्त के क्षेत्रफल को जानने के लिए ज्यामितीय सूत्र के रूप में तथा H_2SO_4 का सूत्र सल्फ्यूरिक एसिड के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह बात स्मरणीय है कि प्रकृति की अपनी ज्यामिति है, जिसे खोजा व पहचाना जा सकता है। यह ज्यामिति हमारे ज्ञान की सीमाओं से परे हो सकती है। इसकी कोई आकृति नहीं है, जिसका हमारे वैचारिक सिद्धांतों ने पता लगाया हो, परंतु इसके ठीक विपरीत हमारे विचारों तथा सिद्धांतों का पता इसी ज्यामिति द्वारा लग सकता है। हमारे अस्तित्व, हमारे जीवन की घटनाओं तथा बाह्य संसार से हमारे संबंधों की अभिव्यक्ति की वजह ज्यामिति ही प्रतीत होती है।

जब हम कहते हैं कि ईश्वर एक बड़ा ज्यामितिज्ञ है, तब हमारा तात्पर्य ज्यामिति के नियमों के अध्ययन से कहीं अधिक व्यापक होता है, जो हमें सृष्टि के निर्माण तथा ब्रह्मांड के संचालन के विषय में बताता है। हम यह भी कोशिश करते हैं कि ज्यामिति के नियमों को संपूर्ण मानव जाति पर थोप दें। हमारी धारणाएं एकता के रूप की हैं।

हमारे विचार त्रिआयामी (Triad) हैं व हमारी अनुभूति सप्ताब्द (Septenate) है। ब्रह्मांडीय तत्त्व हमारे भीतर विद्यमान हैं। हम अपने अस्तित्व के प्रत्येक चरण में पार्थिव जीवन के ज्यामितिक अनुपातों से प्रभावित होते हैं, परंतु हम पार्थिव अस्तित्व से कहीं अधिक हैं तथा इस ब्रह्मांड, जिसमें हम रहते हैं, से भी अधिक शक्तिशाली हैं, क्योंकि हमारे विचार सतत रूप से उस दिव्य सत्ता से जुड़े हैं, जिसके द्वारा हम ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करते हैं क्योंकि हम उसकी शब्दावली को समझने की सामर्थ्य, उसके तत्त्वों की उपयोगिता तथा प्राकृतिक शक्तियों के उपयोग को सीखकर अपनी चेतना का विकास एवं विस्तार करते हैं और यदि जीवन को आच्छादित करनेवाले कुछ महत्त्वपूर्ण रहस्यों की पर्तें खोलने के प्रयास में प्रतीकविद् अंकों की कुंजी का प्रयोग करते हैं, तो कम-से-कम उन्हें रहस्य विज्ञानियों तथा पूर्वी (Oriental) प्रतीकविद्‌ों तथा पारंपरिक विद्वानों का समर्थन प्राप्त होता है।

यदि संख्याविद् सत्य के मंदिर के सप्तद्वारों में से एक को भी खोलने में सफल हो जाता है, तो वह स्वयं को अन्य की अपेक्षा अधिक भाग्यशाली समझ सकता है, जो इन सिंहद्वारों के बाहर ही विचारमग्न हैं या वे यह जानने को उत्सुक ही नहीं हैं कि इन सिंहद्वारों के भीतर कितना विस्तृत खजाना छिपा हुआ है। प्लेटो ने कहा भी है कि ईश्वर ज्यामितिज्ञ है। हम जिन भौतिक नियमों को मानते हैं, वे उस महाप्रज्ञा के संख्यात्मक व ज्यामितिक रूप हैं, जिसके द्वारा वह महाप्रज्ञा समस्त भौतिक जगत का निर्माण करती है, उसमें संजीवनी का संचार करती है व स्वयं उसी में विद्यमान रहती है। किसी कवि ने भी कहा है:

"प्रकृति जिसकी काया है तथा आत्मा ईश्वर
हम और कुछ नहीं, अपितु उसी विस्मयकारी
अनादि-अनंत का एक छोटा हिस्सा मात्र हैं"

(उस दशा के सिवाय जब हम अपने प्रकृति संबंधी विचारों का विस्तार करके संपूर्ण ब्रह्मांड को इसमें सम्मिलित कर लेते हैं तथा यह मान लेते हैं कि हमें जो भी अनुभूति होती है, वह संभवतः ज्ञातव्य का केवल एक छोटा भाग ही है।)

उपरोक्त पंक्तियों में छिपे अत्यंत गूढ़ दर्शन व धार्मिक विश्वासों को समझने में हम सफल हो सकते हैं, जिन्होंने सदा ही मानव मस्तिष्क को प्रेरित किया था। पाइथागोरस, प्लेटो, कैप्लर और ब्रूनो ने हमें इस दर्शन से भिन्न कुछ नहीं बताया। इन सभी महापुरुषों ने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिया था तथा 'मौन की ध्वनि' के अस्फुट स्वरों को सुना था, परंतु यह कौन कह सकता है कि इनमें से कोई इस 'मौन ध्वनि' के गुप्त रहस्य तक पहुंचा है

या उसने सृष्टि के उद्देश्य के बारे में कुछ समझा है कि सृष्टि में जो कुछ भी है, वह सब कैसे निर्मित हुआ व इस निर्माण का आधार क्या है? दरअसल, हमें ही प्रकृति की भाषा का अध्ययन करना है और यह तभी संभव है, जब हम प्रकृति के प्रतीकों को समझें व उसके रहस्यात्मक क्रियाकलापों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें।

इस अध्ययन की कुंजी है अंक या संख्याएं–अनुपात मात्रात्मक संबंध व विभिन्न वस्तुओं की ज्यामिति। परंतु आधुनिक दर्शनशास्त्रियों का यह शौक-सा बन गया है, जिसके अंतर्गत वह अपने तर्क व निष्कर्ष गणित के गूढ़ सूत्रों में रख देते हैं, फलस्वरूप आज गणित अबूझ पहेली बन गई है। प्राचीन दर्शनशास्त्री संख्याओं के प्रयोग में पर्याप्त सतर्कता बरतते थे तथा वे संख्याओं का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप में ही किया करते थे।

जैकब बोहम एक अनूठा रहस्यवादी दर्शनशास्त्री हुआ है, जिसने संख्याओं का प्रयोग केवल प्रतीकात्मक रूप में किया है। इकहार्ट शाऊजेन ने भी ठीक ऐसा ही किया है। कैग्लिओस्ट्रो भी एक प्रतिभासंपन्न दार्शनिक था, जिसे विद्वानों ने एक मसखरा समझा। इसने संख्याओं का प्रयोग सांकेतिक लिपि ज्ञान के विषय में किया था। बाद में ये सभी संख्याओं के वास्तविक मान पर उतर आए। इन संख्याविदों में केवल कैग्लिओस्ट्रो ही एक ऐसा था, जो अपने सिद्धांत के औचित्य को कुछ हद तक सिद्ध कर पाया। लेकिन दुर्भाग्यवश चर्च के 'पवित्र धर्म परीक्षण' ने उसका मार्ग अवरुद्ध कर दिया, परंतु यह केवल इस बात का संकेत था कि चर्च को एक समस्या की समाप्ति के बाद की वस्तुस्थिति से निपटने तथा अपने कारोबार को चलाने का तरीका ज्ञात नहीं था।

दरअसल, परिस्थितियों की अनुकूलता के औचित्य को ध्यान में रखते हुए चर्च को उसे महत्त्व देना चाहिए था व उसकी कलात्मक प्रवृत्ति द्वारा अपने कोष को उत्तरोत्तर बढ़ाना चाहिए था। चूंकि प्रत्येक मनुष्य का एक प्रधान स्वर संकेत होता है, जो जीवन संगीत के प्रत्येक ताल और लय में ध्वनित होता है। यह प्रधान स्वर संकेत सार्वभौमिक संगीत को सुरों की शक्ति प्रदान करता है।

इस प्रकार के विश्लेषणात्मक चरित्र को किसी विशिष्ट रंग या आभामंडल द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। यह आभामंडल किसी ज्यामितिक रूप, स्वर संकेत या अंकों द्वारा भी प्रकट हो सकता है। इसे जैकब बोहम ने **सिग्नेटरा रैरम** के रूप में वर्णित किया है और इसे प्रकृति द्वारा दर्शाया गया बाह्य रूप भी कहा जा सकता है। तत्पश्चात बोहम ने इन विभिन्न रूपों अथवा चिन्हों को चार भागों में बांटा। उसने रहस्यात्मक ज्योतिष की एक शाखा के रूप में सृजित दो अलग-अलग कृतियों में इसका विस्तृत रूप भी प्रस्तुत किया।

ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उसने ग्रहों से संबंधित वर्णन एक पुस्तक में तथा चार पदार्थों को अलग पुस्तक में वर्णित किया है। इन चार भागों को राशिचक्रों की चार स्थिर राशियों द्वारा प्रकट किया गया है। यह चार स्थिर राशियां प्राचीन प्रतीकों जैसे ऐसीरियन (वृष), मिस्र की नृसिंह मूर्ति, हिब्रू देवदूत, आकृति की संरचना में प्रविष्ट होती हैं।

सिंह, मनुष्य, गरुड़ व वृष चार पदार्थों की आकृतियां हैं, जिसे संख्याविद् आध्यात्मिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक व शारीरिक नामों से जानते हैं। इनमें से दो प्रकाशयुक्त हैं। सिंह व कुंभ राशि, सिंह व मनुष्य, आत्मा और मस्तिष्क तथा दो गहरे रंग की हैं, जैसे गरुड़ या ड्रैगन व वृष, जीवात्मा व शरीर, जिन्हें जल व पृथ्वी तत्त्वों से तथा मकर व वृष राशि द्वारा प्रकट किया जाता है। बोहम ने इन्हें चार ऋतुओं तथा पृथ्वी के चार कोनों या मूलभूत अंकों से जोड़ा है। यदि हम 9 अंकों को 9 ग्रहों से संबंधित मानें तथा यह मान लें कि ये अस्तित्व के प्रत्येक चार धरातलों पर अंकित हैं, तो ऐसा संभव है कि मनुष्य संख्यागत रूप में अलग-अलग धरातलों पर संख्या 3, 5, 6, 9 से, जिसका योग 23 होता है, के रूप में अंकित है।

23 की संख्या का इकाई मान 5 (2+3) है। 5 की यह संख्या बुध के मूल अंक, जिसका रंग गहरा नीला (Indigo) है तथा स्वर संकेत अंग्रेजी वर्णमाला का अक्षर 'E' है।

इस प्रकार, किसी भी जन्मकुंडली को ग्रहों की राशियों द्वारा तत्त्व रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। प्रत्येक क्रियाशीलता के धरातल से जुड़े इकाई मानों का योग किया जा सकता है, ताकि हमें किसी व्यक्ति का मूल अंक प्राप्त हो सके। उदाहरणार्थ, यदि एक जन्मकुंडली में शनि तुला राशि में, बृहस्पति मकर में, मंगल कुंभ में, बुध मीन में तथा चंद्र सिंह राशि में हो, तो सूर्य को अंक 4 से आंका जाना चाहिए, जो एक नकारात्मक अंक है। चंद्रमा को 7 से आंका जाना चाहिए, जो सकारात्मक अंक है। अन्य ग्रहों के लिए निर्देश पांचवें अध्याय में दिए गए हैं।

राशि व ग्रह इस प्रकार प्रदर्शित किए जाते हैं:

Δ अग्नि	सिंह राशि, चन्द्रमा ग्रह. . . . 7
= वायु	तुला, कुंभ राशि शनि, मंगल, शुक्र . . . 8, 9, 6
∇ जल	मीन, सूर्य, बृहस्पति, बुध. . .4, 3, 5
+ पृथ्वी	कुछ नहीं।

इनके इकाई मान इस प्रकार हैं:

आध्यात्मिक	7	इकाई मान	=	7
मानसिक	896 =23	,, ,,	=	5

या उसने सृष्टि के उद्देश्य के बारे में कुछ समझा है कि सृष्टि में जो कुछ भी है, वह सब कैसे निर्मित हुआ व इस निर्माण का आधार क्या है? दरअसल, हमें ही प्रकृति की भाषा का अध्ययन करना है और यह तभी संभव है, जब हम प्रकृति के प्रतीकों को समझें व उसके रहस्यात्मक क्रियाकलापों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें।

इस अध्ययन की कुंजी है अंक या संख्याएं—अनुपात मात्रात्मक संबंध व विभिन्न वस्तुओं की ज्यामिति। परंतु आधुनिक दर्शनशास्त्रियों का यह शौक-सा बन गया है, जिसके अंतर्गत वह अपने तर्क व निष्कर्ष गणित के गूढ़ सूत्रों में रख देते हैं, फलस्वरूप आज गणित अबूझ पहेली बन गई है। प्राचीन दर्शनशास्त्री संख्याओं के प्रयोग में पर्याप्त सतर्कता बरतते थे तथा वे संख्याओं का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप में ही किया करते थे।

जैकब बोहम एक अनूठा रहस्यवादी दर्शनशास्त्री हुआ है, जिसने संख्याओं का प्रयोग केवल प्रतीकात्मक रूप में किया है। इकहार्ट शाऊजेन ने भी ठीक ऐसा ही किया है। कैग्लिओस्ट्रो भी एक प्रतिभासंपन्न दार्शनिक था, जिसे विद्वानों ने एक मसखरा समझा। इसने संख्याओं का प्रयोग सांकेतिक लिपि ज्ञान के विषय में किया था। बाद में ये सभी संख्याओं के वास्तविक मान पर उतर आए। इन संख्याविदों में केवल कैग्लिओस्ट्रो ही एक ऐसा था, जो अपने सिद्धांत के औचित्य को कुछ हद तक सिद्ध कर पाया। लेकिन दुर्भाग्यवश चर्च के 'पवित्र धर्म परीक्षण' ने उसका मार्ग अवरुद्ध कर दिया, परंतु यह केवल इस बात का संकेत था कि चर्च को एक समस्या की समाप्ति के बाद की वस्तुस्थिति से निपटने तथा अपने कारोबार को चलाने का तरीका ज्ञात नहीं था।

दरअसल, परिस्थितियों की अनुकूलता के औचित्य को ध्यान में रखते हुए चर्च को उसे महत्त्व देना चाहिए था व उसकी कलात्मक प्रवृत्ति द्वारा अपने कोष को उत्तरोत्तर बढ़ाना चाहिए था। चूंकि प्रत्येक मनुष्य का एक प्रधान स्वर संकेत होता है, जो जीवन संगीत के प्रत्येक ताल और लय में ध्वनित होता है। यह प्रधान स्वर संकेत सार्वभौमिक संगीत को सुरों की शक्ति प्रदान करता है।

इस प्रकार के विश्लेषणात्मक चरित्र को किसी विशिष्ट रंग या आभामंडल द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। यह आभामंडल किसी ज्यामितिक रूप, स्वर संकेत या अंकों द्वारा भी प्रकट हो सकता है। इसे जैकब बोहम ने सिग्नेटरा रैरम के रूप में वर्णित किया है और इसे प्रकृति द्वारा दर्शाया गया बाह्य रूप भी कहा जा सकता है। तत्पश्चात बोहम ने इन विभिन्न रूपों अथवा चिन्हों को चार भागों में बांटा। उसने रहस्यात्मक ज्योतिष की एक शाखा के रूप में सृजित दो अलग-अलग कृतियों में इसका विस्तृत रूप भी प्रस्तुत किया।

ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उसने ग्रहों से संबंधित वर्णन एक पुस्तक में तथा चार पदार्थों को अलग पुस्तक में वर्णित किया है। इन चार भागों को राशिचक्रों की चार स्थिर राशियों द्वारा प्रकट किया गया है। यह चार स्थिर राशियां प्राचीन प्रतीकों जैसे ऐसीरियन (वृष), मिस्र की नृसिंह मूर्ति, हिब्रू देवदूत, आकृति की संरचना में प्रविष्ट होती हैं।

सिंह, मनुष्य, गरुड़ व वृष चार पदार्थों की आकृतियां हैं, जिसे संख्याविद् आध्यात्मिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक व शारीरिक नामों से जानते हैं। इनमें से दो प्रकाशयुक्त हैं। सिंह व कुंभ राशि, सिंह व मनुष्य, आत्मा और मस्तिष्क तथा दो गहरे रंग की हैं, जैसे गरुड़ या ड्रैगन व वृष, जीवात्मा व शरीर, जिन्हें जल व पृथ्वी तत्त्वों से तथा मकर व वृष राशि द्वारा प्रकट किया जाता है। बोहम ने इन्हें चार ऋतुओं तथा पृथ्वी के चार कोनों या मूलभूत अंकों से जोड़ा है। यदि हम 9 अंकों को 9 ग्रहों से संबंधित मानें तथा यह मान लें कि ये अस्तित्व के प्रत्येक चार धरातलों पर अंकित हैं, तो ऐसा संभव है कि मनुष्य संख्यागत रूप में अलग-अलग धरातलों पर संख्या 3, 5, 6, 9 से, जिसका योग 23 होता है, के रूप में अंकित है।

23 की संख्या का इकाई मान 5 (2+3) है। 5 की यह संख्या बुध के मूल अंक, जिसका रंग गहरा नीला (Indigo) है तथा स्वर संकेत अंग्रेजी वर्णमाला का अक्षर 'E' है।

इस प्रकार, किसी भी जन्मकुंडली को ग्रहों की राशियों द्वारा तत्त्व रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। प्रत्येक क्रियाशीलता के धरातल से जुड़े इकाई मानों का योग किया जा सकता है, ताकि हमें किसी व्यक्ति का मूल अंक प्राप्त हो सके। उदाहरणार्थ, यदि एक जन्मकुंडली में शनि तुला राशि में, बृहस्पति मकर में, मंगल कुंभ में, बुध मीन में तथा चंद्र सिंह राशि में हो, तो सूर्य को अंक 4 से आंका जाना चाहिए, जो एक नकारात्मक अंक है। चंद्रमा को 7 से आंका जाना चाहिए, जो सकारात्मक अंक है। अन्य ग्रहों के लिए निर्देश पांचवें अध्याय में दिए गए हैं।

राशि व ग्रह इस प्रकार प्रदर्शित किए जाते हैं:

Δ अग्नि सिंह राशि, चन्द्रमा ग्रह. . . . 7

= वायु तुला, कुंभ राशि शनि, मंगल, शुक्र . . . 8, 9, 6

∇ जल मीन, सूर्य, बृहस्पति, बुध. . .4, 3, 5

+ पृथ्वी कुछ नहीं।

इनके इकाई मान इस प्रकार हैं:

आध्यात्मिक	7	इकाई मान	=	7
मानसिक	896 =23	,, ,,	=	5

मनोवैज्ञानिक	435 =12	'' ''	=	3
शारीरिक	0	'' ''	=	0
				मूलांक=15= 6 अंक

परंतु जहां तक किसी जन्मकुंडली में शनि व अन्य ग्रहों के किसी राशि में किसी समय पर अंकित होने का प्रश्न है, जिन राशियों में वे स्थित हैं, उनके अनुसार हमें उनके मान में परिवर्तन करना होगा, क्योंकि एक वैसा ही रंगीन प्रकाश विभिन्न वर्णों के माध्यम से देखने पर भिन्न प्रतीत होगा।

इसी कारण संख्याविदों ने कुछ अंकों को 12 राशियों व नक्षत्रों से जोड़ा है। इस दशा में ग्रह तथा राशियों के संबंधित अंकों का आपस में गुणा किया जाता है तथा जो भी संख्या हमें प्राप्त होती है, उसको एक अंक के रूप में परिवर्तित कर लेते हैं तथा इसका संयुक्त योग (Mass-chord) निकाला जाता है। यह प्रत्येक ग्रह के सम्मिलित प्रभाव से भिन्न होगा, जिसका प्रतिफल 9 अंकों में से एक होगा, परंतु अपेक्षाकृत ज्यादा सुविधाजनक तरीका यह है कि ग्रह के अंक को उस राशि स्थित समरूप ग्रह के अंक से गुणा करके परिणाम को जोड़ दिया जाए, जो अंकीय जन्मकुंडली में रुचि रखते हों, वे निस्संदेह मेरा आशय समझ गए होंगे तथा इसका ठीक-ठीक निष्कर्ष भी निकाल लेंगे।

मैंने यहां यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि प्रकृति की ज्यामिति एक व्यक्ति विशेष में केवल इसलिए प्रकट होती है, क्योंकि वह स्वयं उन ब्रह्मांडीय तत्त्वों से बना है तथा वह स्वयं जो भी देखता है, उसी का प्रतिबिंब है। यदि मनुष्य स्वयं को प्रकृति के दर्पण में सीधे देखता है, तो वह खुद को ही देखेगा।

□□

अंकों की शक्ति

निश्चित मात्राओं को प्रदर्शित करने के लिए हम आकृतियों की मदद लेते हैं। ये आकृतियां वस्तु के गुणों के विषय में कुछ नहीं बतातीं। इस प्रकार, यदि हम कहें कि दो और दो अंडे मिलकर चार होते हैं, तब हम यह नहीं जान सकते कि उनमें से कितने अंडे खराब हैं। इससे हमें यह पता चलता है कि कोई भी संख्या क्षमतानुसार अच्छे या खराब गुण का प्रतिनिधित्व कर सकती है, परंतु इसकी मात्रा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रत्येक अंक की एक निश्चित शक्ति है, जिसका पता केवल आकृति या प्रतीक द्वारा नहीं चल सकता। यह शक्ति वस्तुओं के आपसी गूढ़ संबंधों तथा प्रकृति के सिद्धांतों में निहित है, जिनकी यह अभिव्यक्ति हैं। यह रहस्योद्घाटन तब सामने आया, जब मनुष्य ने अंकों के क्रम 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 का विकास किया तथा उनके द्वारा चाहे जिस प्रतीक को अभिव्यक्त किया गया है।

0 (शून्य) अनंत का प्रतीक है। एक ऐसा अनंत-असीम अस्तित्व, जो समस्त वस्तुओं का उद्‌गम स्रोत है। इस ब्रह्मांड में समग्र सौरमंडल सार्वभौमिकता, विश्वजनीनता, ग्रहों की प्रदक्षिणाओं और यात्राओं में व्याप्त है लेकिन इसका विस्तार यहीं तक सीमित नहीं है, अपितु यह समस्त स्थितियों के निषेध में, प्रत्येक दायरे और सीमाओं में तथा व्यक्ति में व्याप्त है। इस प्रकार, यह सार्वभौम विरोधाभास है। एक ओर असीम विस्तार तो दूसरी ओर असीम लघुता, एक ओर असीम वृत्त तो दूसरी ओर एक सूक्ष्म अणु।

1 का अंक सकारात्मक तथा सक्रिय सिद्धांत के प्रतीक रूप में प्रयुक्त होता है। यह शब्दों के लिए भी प्रयुक्त होता है, जो अनंत तथा अव्यक्त की अभिव्यक्ति हैं। यह 'अहं' का प्रतिनिधित्व करता है, आत्मस्वीकार, सकारात्मकता, पृथकवाद, आत्मत्त्व, श्रेष्ठता, आत्मनिर्भरता, गरिमा तथा प्रशासन का भी प्रतीक है। यह धार्मिक अर्थ में स्वयं ईश्वर का प्रतीक है। दार्शनिक व वैज्ञानिक अर्थ में यह संश्लेषण तथा वस्तुओं में मूलभूत अखंडता का प्रतीक है। भौतिकवादी दृष्टि से जीवन की इकाई व्यक्ति है। यह शून्य का प्रकट भाव और सूर्य का प्रतीक है।

2 का अंक विपरीतता का प्रतीक है तथा यह प्रमाण और पुष्टि का भी द्योतक है। यह द्विगुण संपन्न अंक है, जैसे एक ओर जोड़ का है तो दूसरी ओर घटाने का, एक ओर क्रियाशीलता का तो दूसरी ओर निष्क्रियता का, एक ओर स्त्रीलिंग का तो दूसरी ओर पुल्लिंग का, एक ओर सकारात्मकता का तो दूसरी ओर नकारात्मकता का, एक ओर लाभ का तो दूसरी ओर हानि का प्रतीक है।

3 का अंक त्रिआयामिकता का प्रतीक है। जीवन के त्रिगुण पदार्थ बुद्धि, बल व चेतना का प्रतीक है। इसमें सृजन, पालन व संहार के ईश्वरीय गुण भी समाहित हैं। परिवार—माता, पिता व शिशु का भी इससे बोध होता है। यह चिंतन तथा वस्तु रूपी तीन आधार तत्त्वों का भी प्रतीक है। यह चेतना में प्रतिबिंबित होनेवाला द्वैत है, जैसे समय और स्थान में त्रिक अवस्था का निर्माता, जैसे भूत, वर्तमान तथा भविष्य। आत्मविस्तार, इच्छा, क्रियाविधि तथा प्रभावकारिता है, जो मंगल का प्रतीक है।

4 का अंक वास्तविकता व स्थायित्व का संकेत करता है। यह भौतिक जगत का द्योतक है। यह वर्गाकार व घनाकार है। भौतिक नियम, तर्क व कारण भौतिक अवस्था तथा विज्ञान का प्रतीक है। यह अनुभूतियों, अनुभव तथा ज्ञान के माध्यम से पहचाना जाता है। यह काट, खंडीकरण, विभाजन, सुनियोजन तथा वर्गीकरण है। यह स्वास्तिक, विधिचक्र, संख्याओं का क्रम तथा योग है। यह बुद्धि, चेतना, आध्यात्मिक व भौतिकता के अंतर की पहचान है। अतएव यह विवेचना, विवेक तथा सापेक्षीकरण है। इस प्रकार यह बुध का प्रतीक है।

5 का अंक विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है। यह वस्तुओं के अंत: संबंध, समझ-बूझ की क्षमता, निर्णय का भी प्रतीक है। यह वृद्धि, वाक्पटुता, विचार का विस्तार है। यह न्याय, फसलों, बुवाई तथा कटाई का प्रतीक है। यह भौतिक जगत में स्व के पुनर्उत्पादन, पितृत्व, परितोष व दंड का द्योतक है। यह अंक अनार के बीज की भांति गुणवाला है तथा बृहस्पति का प्रतीक है।

6 का अंक सहयोग का प्रतीक है। यह विवाह, एक कड़ी में जोड़ने व संबंधों का संकेतक है। पारस्परिक क्रिया, पारस्परिक संतुलन का भी द्योतक है। यह आध्यात्मिक व भौतिक जगत का मिलन स्थल है। यह मनुष्य में मानसिक व शारीरिक क्षमता का प्रतीक है। यह मीमांसा, मनोविज्ञान, दैवीय क्षमता, समागम व सहानुभूति का भी प्रतीक है। यह अंक परामनोविज्ञान, दूरसंवेदिता (Telepathy) व मानसिक तुलना का भी प्रतिनिधि है। यह कीमियागिरि (Alchemy), संपरिवर्तन, सहयोग, शांति, संतुलन व संतुष्टि की ओर संकेत करता है। यह संतुलन द्वारा परखी गई उदारता, सौंदर्य व सत्य का प्रतीक है। यह उद्देश्य प्राप्ति, समागम व पारस्परिकता का भी परिचायक है। यह स्त्री-पुरुष के नैसर्गिक संबंधों का प्रतीक है। इस अंक का प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है।

7 का अंक पूर्णता का परिचायक है। यह समय व स्थान, अंतराल तथा दूरी का प्रतीक है। वृद्धावस्था, क्षीणता, मृत्यु, सहनशीलता, स्थिरता, अमरत्व का भी यह प्रतिनिधित्व करता है। यह सात युगों, सप्ताह के सात दिनों आदि का प्रतीक है। यह सात प्रतिज्ञाओं, मनुष्य की सिद्धांतपरकता, ध्वनि के विभिन्न अवयवों व रंगों का भी संकेत करता है। यह मनुष्य की पूर्णता, विकास के चक्र, बुद्धि, मनोसंतुलन तथा विश्राम का भी द्योतक है। इसका प्रतिनिधि ग्रह शनि है।

8 का अंक विघटन का अंक है। यह चक्रीय विकास के सिद्धांतों व प्राकृतिक वस्तुओं के आध्यात्मीकरण की ओर झुकाव का प्रतीक है। प्रतिक्रिया, क्रांति, जोड़-तोड़, विघटन, अलगाव, बिखराव, अराजकता के गुण भी इसी अंक से जुड़े हैं। यह चोट, क्षति, विभाजन, संबंध विच्छेद का भी परिचायक है। यह श्वसन की अंतःप्रेरणा, अतिबुद्धित्ता, आविष्कारों व अनुसंधानों का प्रतीक है। यह विक्षेपण, सनकी स्वभाव, मार्ग से विचलन, त्रुटि व विक्षिप्तता का भी प्रतीक है। यूरेनस या वरुण इसका प्रतिनिधि ग्रह है।

9 का अंक पुनर्उत्पादन का प्रतीक है। यह पुर्नजन्म, अध्यात्म, इंद्रियों के विस्तार, पूर्वाभास, विकास व समुद्री यात्राओं का प्रतीक है। यह स्वप्न, अघटित घटना, दूरस्थ ध्वनियों को सुनने का भी प्रतीक है। यह पुनर्रचना, निहारिकामयता, कंपन, लय, तरंग, बहिर्गमन, प्रकाशन, धनुर्विद्या, भविष्यकथन, रहस्योद्घाटन, विचार तरंगों, दिव्य दर्शन, प्रेतात्मा, धुंध, बादल, दुर्बोधता, निर्वासन तथा रहस्य का भी द्योतक है। नेप्च्यून इसका प्रतिनिधि ग्रह है।

उपरोक्त तथ्य उन विचारों की लगभग अंतहीन श्रृंखला में केवल एक कड़ी मात्र हैं, जो 9 अंकों व शून्य के बीच अनंत रूप से विस्तारित हैं। कुछ व्याख्या प्रणालियों के अनुसार शून्य को अंकों में रखा जाता है, ताकि प्रथम व अंतिम अंक को मिलाकर 10 का अंक बनाया जा सके, जो दशमलव प्रणाली का पूर्णांक है, लेकिन हिब्रू प्रणाली के अनुसार अंक 12 के पास ही यह विशिष्ट गुण विद्यमान है, जो 3 और 4 का गुणनफल है और 3 व 4 के योग से बना अंक 7 है, जों एक और पवित्र अंक है। उपरोक्त व्याख्या को किसी भी अंक के इकाई मान पर प्रयोग किया जा सकता है, जैसे 731=11=2, इसमें 2 इकाई मान है। इस प्रकार सभी संख्याएं अंततः 9 अंकों में से किसी भी अंक द्वारा संकेतित की जा सकती हैं। इस संदर्भ में व्याख्या की दृष्टि से निम्नलिखित लघुकुंजी उपयोगी होगी। यह कुंजी सारगर्भित तथा व्यावहारिक दृष्टि से आसान होगी। इस प्रणाली में:

1 का अंक स्वतंत्र व्यक्तित्व व संभावित अहं, आत्मनिर्भरता, प्रतिज्ञापन व विशिष्टता का सूचक है।

2 के अंक का संबंध मानसिक आकर्षण, भावना, सहानुभूति, घृणा, संदेह व दुविधा से है।

3 का अंक विस्तार, बढ़ोत्तरी, बौद्धिक क्षमता, धन व सफलता का सूचक है।

4 का अंक उपलब्धि, संपत्ति, कब्जा, श्रेय, हैसियत व भौतिकता का परिचायक है।

5 का अंक तर्क, कारण, नैतिकता, यात्रा, वाणिज्य व उपयोगिता का प्रतीक है।

6 का अंक सहयोग, विवाह, पारस्परिकता, सहानुभूति, अभिनय, कला, संगीत व नृत्य का प्रतिनिधित्व करता है।

7 का अंक शांति, अनुबंध, समझौता, संधि, मेल-जोल, सामंजस्य व कटुता का संकेत करता है।

8 का अंक पुनर्निर्माण, मृत्यु, क्षीणता, निषेध, क्षति, लुप्त होने व बहिर्गमन का प्रतीक है।

9 का अंक तीव्रता, संघर्ष, ऊर्जा, साहस, विभक्तिकरण, रोष व उत्सुकता का प्रतीक है।

इस प्रणाली में सापेक्षिक ग्रह निम्नलिखित हैं:

अंक	संबंधित ग्रह
1	सूर्य
2	चंद्रमा (नव)
3	बृहस्पति
4	पृथ्वी या सूर्य
5	बुध
6	शुक्र
7	चंद्रमा (पूर्ण)
8	शनि
9	मंगल

यद्यपि हिब्रू प्रणाली के अनुसार जैसा पहले भी कहा गया है, 12 का अंक पूर्णता का सूचक है। प्राचीनतम संख्या गणना कैल्डियन सूत्रों द्वारा बनाई जान पड़ती है, जो विशिष्ट रूप से दशमलव पद्धति पर आधारित है। इस प्रकार हम देखते हैं कि संख्याओं की लिपि कोई अन्य लिपि न होकर दशमलवात्मक ही है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
א	ב	ג	ד	ה	ו	ז	ח	ט
10	20	30	40	50	60	70	80	90
י	כ	ל	מ	נ	ס	ע	פ	צ
100	200	300	400	500	600	700	800	900
ק	ר	ש	ת	ך	ם	ן	ף	ץ

लीडेल व स्कॉट के अनुसार यूनानी लोगों ने संख्या गणना के लिए निम्नलिखित प्रणाली अपनाई:

1	2	3	4	5	6	7	8	9
α	β	γ	δ	ϵ	–	ζ	η	θ
10	20	30	40	50	60	70	80	90
ι	κ	λ	μ	ν	—	ο	π	—
100	200	300	400	500	600	700	800	
ρ	σ	τ	υ	φ	χ	ψ	ω	

π का मान, जो किसी वृत्त की परिधि से उसके व्यास का संबंध दर्शाता है, वह एक महाचक्र में छिपा हुआ था, जिसे ब्रह्मा की आयु के रूप में जानते हैं, जो 311,040,000,000,000 वर्षों का होता है। यह आयु ब्रह्मा के 100 वर्ष के बराबर होती है। इस प्रकार ब्रह्मा का एक वर्ष 3,110,400,000,000 के सौर वर्ष के बराबर होता है। इस संख्या को 360 से विभक्त किया जाए तो ब्रह्मा के एक दिन का मान 3,640,000,000 वर्ष होता है।

तब ब्रह्मा की आयु, वर्ष व दिन का योग कर संख्या 314159 इत्यादि प्राप्त होती है, जो π का ज्ञात मान है या 355 को 113 से विभक्त करने के बाद जो संख्या मिलती है, उसका मान भी लगभग पाई के बराबर होता है। इस प्रकार हिब्रू लोगों ने इस मान को सात स्त्री–पुरुषों के सृजनात्मक शक्ति के आधार पर रखा है। ऐलोहिम अर्थात परमात्मा जो इस प्रकार है:

14 तक के अंक पूर्वी खगोलशास्त्रों में वर्णित सकारात्मक तथा नकारात्मक, सक्रिय तथा निष्क्रिय सिद्धांतों तथा सात प्रजापतियों एवं उनकी शक्ति के समरूप हैं। ये आकृतियां एक पंचकोण के कोनों पर अंकित हैं, जो महामानव का संकेत देती हैं। प्रतीकविज्ञानी एडम केडमन इसे 31415 के रूप में जानते हैं। एक प्रतीक, जो अपने भीतर कोई गुप्त सूचना निहित करता है, कई प्रकार की आकृतियोंवाला हो सकता है। वह संख्यात्मक भी हो सकता है, शाब्दिक भी अथवा चित्रात्मक भी हो सकता है। हम यहां मुख्यत: संख्याओं की प्रकृति व शक्तियों से संबद्ध हैं, इसलिए उचित यही होगा कि हम संख्याओं के शब्दरूप के संबंध को तथा उसके विभिन्न प्रयोगों तक ही स्वयं को सीमित रखें। इस

संबंध से हमें एक ऐसी प्रतीक सूची बनानी होगी, जिसका संबंध सौर प्रणाली से हो। इस प्रकार, यहां जॉन हेडेन द्वारा प्रतिपादित 'होली गाइड' में अंकित सौर संख्याओं का खुलासा करना उपयुक्त होगा:

सूर्य की संख्या है	1 (सकारात्मक)
,, ,, ,, ,,	4 (नकारात्मक)
चंद्रमा की संख्या है	7 (सकारात्मक)
,, ,, ,, ,,	2 (नकारात्मक).
शनि की संख्या है	8
बृहस्पति की संख्या है	3
मंगल की संख्या है	9
शुक्र की संख्या है	6
बुध की संख्या है	5

आप यह देख सकते हैं कि इन संख्याओं का विस्तार उनके ब्रह्मांडीय क्रमानुसार दैवीय संख्या 15 की लिपिबद्धता की ओर ले जाता है, जो π जाह के नाम को हिब्रू लोगों के अनुसार 9 और 6 के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार हमें राशियों के प्रतीक व उसके स्वामी ग्रहों के विषय में निम्नलिखित संख्या मानों का ज्ञान होता है:

♒	♓	♈	♉	♊	♋	♌	♍	♎	♏	♐	♑
♄	♃	♂	♀	☿	☽	☉	☿	♀	♂	♃	♄
8	3	9	6	5	2	4	5	6	9	3	8
					7	1					

इस प्रकार पांच ग्रहों की संख्याओं का योग तथा सूर्य व चंद्र की संख्याओं के अर्द्धमान को साथ रखकर सकारात्मक 35 व नकारात्मक 34 संख्या बनती है। इन्का योग है 69=15 व 35-34=1, इसलिए हिब्रू लोग कहते हैं 'जेहोवाह इलोहनू जेहोवाह अचड', जिसका संबंध सभी कृतियों के स्रोत से माना गया है, क्योंकि 'अचड' के लिए संख्या है 1814=14, जो शक्तियों की द्विसप्त संख्या है। इसका प्रयोग सृष्टि की रचना में किया गया है। पाठकों के लिए ग्रहों के मान को याद रखना भी आवश्यक होगा। यह संख्या मान सप्ताह के विभिन्न दिनों का भी प्रतिनिधित्व करती है।

दिवस	प्रतिनिधि ग्रह
रविवार	☉ सूर्य
सोमवार	☽ चंद्रमा

मंगलवार	♂	मंगल
बुधवार	☿	बुध
बृहस्पतिवार	♃	बृहस्पति
शुक्रवार	♀	शुक्र
शनिवार	♄	शनि

अंकों की रहस्यात्मकता को समझने में हम उपरोक्त मानों का बारंबार प्रयोग करेंगे। हेडेन द्वारा जो मान निर्धारित किए गए हैं, उनका कोई उचित आधार नहीं दिखता। जिन लोगों ने इन मानों का प्रयोग किया है, उन्होंने भी इसका कोई उचित कारण नहीं बताया है। आगे आनेवाले वर्णनों में मैंने उपरोक्त कमी का उल्लेख किया है तथा उस ढांचे को भी रेखांकित किया है, जिसके माध्यम से हेडन ने अपने मानों का प्रतिपादन किया है। यह जानना भी श्रेयस्कर होगा कि संख्याक्रमों के वर्णमालागत विकास में हिब्रू प्रणाली का ही सबसे अधिक प्रयोग किया गया है, परंतु जिसका सबसे अधिक प्रयोग किया जा सकता है, वह है ध्वन्यात्मक प्रणाली (phonetic system)। इसका संबंध ग्रह मानों से जोड़ा गया है।

□□

अंक तथा वैचारिक अभिव्यक्ति

संख्याओं के प्रतीकात्मक अर्थ व उनका दैनिक जीवन में महत्त्व जानने से पूर्व हमें यह जानना भी आवश्यक होगा कि हमारे विचारों का ज्यामितीय संबंध क्या है। यह विचार कि ब्रह्मांड एक दैवीय विचार है, जिसकी रूपात्मक अभिव्यक्ति मनुष्य के विचारों से मिलती है, जिसका संबंध संख्या से है। वह संख्या उसका विचार है। हमारे त्रिआयामी विचार एक बिंदु के विकास से इन आकृतियों का प्रतिपादन कर सकते हैं।

एक गोला या पिंड, एक कोण तथा एक घन व उनकी आभासीय समान आकृतियां वृत्त, त्रिभुज, वर्ग, आयत तथा इनकी कई विकृत आकृतियां, अंडाकार, दीर्घवृत्त (ellipse)आदि जैसी आकृतियों का प्रयोग विचारों के संकेत के लिए किया गया है, जिनसे चेतना की दशाओं का भी ज्ञान होता है, परंतु हम आकृतियों के संख्या संबंध से ही अपना अर्थ रखते हैं, जिसे 1, 3, 4 जो परमात्मा, मानव जाति व प्रकृति–ओसिरिस, होरस, आइसिस के प्रतीक हैं। यह इस वजह से है, क्योंकि हम इस सार्वभौमिक एक अस्तित्व को जीवात्मा, आत्मा व शरीर द्वारा बना हुआ ही मानते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति का संबंध एक संख्या से है और इस संख्या के शीर्ष पर है ऐडम, םדא =144=9, जो परमात्मा के प्रतिबिंब व समाकृति में विद्यमान है। पूर्वी देशों की शिक्षाओं के अनुसार रहस्य विज्ञान यह कहता है कि मानव जाति 5 के अंक से ऊपर पर कभी भी कंपित नहीं हुई है। मनुष्य की 5 ज्ञानेंद्रियां हैं व उसके हाथों और पैरों में पांच-पांच उंगलियां हैं। यह सीमा सादृश्यता द्वारा खींची गई है।

इस प्रकार यह विकास चक्र की इन्हीं पांच रेखाओं के साथ अग्रसर होता है। संख्या 5 बुध ग्रह की संख्या है। इसका मुख्य कार्य ज्ञानार्जन है, इसलिए जिज्ञासा हमारे चक्र की मुख्य विशेषता है। प्रतीक विज्ञान में हम इसी अंक को अपनी प्रणाली का मुख्य बिंदु मानते हैं। ब्रह्मांडीय संकेतों में मैंने यह दर्शाया है कि यही एकमात्र ऐसी संख्या है, जिसका संबंध सार्वभौमिक है तथा इसकी कोई सीमा नहीं है, क्योंकि यह हमारी भौतिक चेतना के समन्वय केंद्र का प्रतीक है।

हमारी पांचों ज्ञानेंद्रियां संवेदन तंत्र पर अपनी प्रतिछाया डालती हैं। ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से जो भी अनुभूति होती है, उसे ही हम अनुभव करते हैं। हमारी अनुभूति क्षमता इसलिए इस पंचवृत्त, ग्राह्यता तक सीमित है। छठी ज्ञानेंद्रिय का विकास इन पांच ज्ञानेंद्रियों के अनुभव के आधार पर होता है। यदि अब हम समस्त अनुभूतियों को वातावरण से हमारी ओर पहुंचनेवाली ध्वनि पुंज के रूप में मानें, जिस तरह से आकाश के माध्यम से रंग, तंग प्रकाश से जैसे रूपाकृति उभरती है, तब हम संख्याओं के वैचारिक संबंधों की अनुभूति के निकट पहुंचते हैं।

हमारी अनुभूति की सुसंगति एक निश्चित कंपन पुंज से घिरी हुई है। हम विशिष्ट भावों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होनेवाली ध्वनियों को सहजता से पहचान लेते हैं। उदाहरण के तौर पर एक सैनिक मार्च के लिए भड़कीली तार सप्तक वाली ध्वनि की जरूरत होती है। लालसा अथवा खेद प्रकट करने के लिए स्वाभाविक रूप से मंद सप्तक की जरूरत होती है। इसी प्रकार निराशा को प्रकट करने के लिए हम अपने आप सपाट सुरों का प्रयोग करने लगते हैं।

मानवता के वर्तमान चक्र में मानव विकास के सामान्य पांच क्रमों में मुख्यत: नौ प्रकार के आरोह-अवरोह हैं। वे अपनी मात्रानुसार संवेदनात्मक व अभिव्यक्ति की दृष्टि से मानसिक हैं। किसी व्यक्ति विशेष के विकास की मात्रा ही व्यक्ति विशेष की अभिरुचि मानसिक झुकाव, चिंतन प्रवृत्ति को निर्धारित करती है। एक व्यक्ति आम जनता के विषय में सोचता है तथा उसके विकास की मात्रा के अनुसार वह भोजन प्रबंधक, मनोरंजक, नेता, लेखक या अध्यापक हो सकता है।

कोई अन्य व्यक्ति हमेशा जीत के विषय में सोचता रहता है इसीलिए वह खोजी यात्री, सैनिक, प्रवर्तक या सुधारक बन सकता है। एक व्यक्ति चंद्रमा या पीत किरणों के प्रभाव में आ सकता है, तो दूसरा मंगल या लाल किरणों के प्रभाव में। एक व्यक्ति अंक 2 एवं उसके कंपन के प्रभाव में है तो दूसरा 9 व उसके कंपन के, परंतु अंक 2 वाला व्यक्ति संभवत: चंद्रमा की किरण से उत्पन्न और अधिक ऊंचे भाव में प्रभावित हो तथा पीत किरण से श्वेत किरण में परिवर्तित हो तो सुलझे स्वभाव का हो सकता है। ठीक वैसे ही अंक 9 से प्रभावित व्यक्ति इस सार्वभौमिक संख्या द्वारा प्रभावित होकर संघर्ष, ऊर्जा, प्रयत्नशीलता आदि गुणों का धारक हो सकता है। इस प्रकार:

234—567

9—18

27

9

अंक 2, 7, 3, 6, 4 और 5 एक-दूसरे को प्राकृतिक रूप से संतुलित करते हैं, क्योंकि वे संख्या 9 के मान से संयुक्त होते हैं। इस क्रम को पूरा करते हुए हम देखते हैं कि अंक 1 और 8 का योग 9 होता है। इससे यह पता चलता है कि 9 का अंक ही एकमात्र ऐसा अंक है, जिसका कोई जोड़ा नहीं है।

विचार का सत्य से एक निश्चित संबंध है, क्योंकि वह एक तथ्य की सत्य अभिव्यक्ति के निकट है अथवा उससे निकाला गया है। सही विचार एक औपचारिक सत्य हैं तथा वह एक निश्चित दिशा में आगे बढ़ता हुआ किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है। सभी स्थिर विचार एक संख्यात्मक भाव को प्रकट करते हैं, क्योंकि वे किसी सत्य का रूप होकर उसी कसौटी पर जा पहुंचते हैं, जिसे सुसंगति कहते हैं।

हमारे विचार ठीक वैसे ही बने हैं, जैसे कि पार्थिव ढांचा। जब हम अपनी जमीन तलाशते हैं, तो अनुभूत तथ्यों की आधारभूमि पर उसकी नींव डालते हैं तथा फिर विभिन्न स्थानों की उपयुक्तता को ध्यान में रखकर तरह-तरह की भवन निर्माण सामग्री का प्रयोग करते हुए इस दिशा में तब तक बढ़ते रहते हैं, जब तक कि इसमें निवास करनेवाले व्यक्ति का मनोवांछित तथा उपयुक्त ढांचा तैयार नहीं हो जाता।

इस प्रकार हम केंद्रीय विचार के इर्द-गिर्द अपने विचारों का ताना-बाना बुनते हैं। यह एक ज्यामितीय ढांचा है, जो संख्या संबंधी नियमों के समस्त पहलुओं से संबंधित है।

अंक 1 एक सीधी रेखा को प्रदर्शित करता है व सत्य, निष्ठा व ईमानदारी का प्रतीक है। अंक 2 समानान्तरवाद, तुलना, पारस्परिक संबंध व सापेक्षता का प्रतीक है। 3 का अंक क्षेत्रमिति, तथ्यों के समान आधार पर वस्तुओं को एक समान स्थिति में लाने का द्योतक है। भारतीय त्रिमूर्ति अर्थात देवत्व के तीन पहलुओं का अभिप्राय ब्रह्मा जो सृष्टि के रचयिता हैं, विष्णु जो सृष्टि के पालनकर्ता हैं तथा शिव जो शामक व संहारकर्ता हैं, से है।

इन तीनों का प्रतिनिधित्व क्रमशः बृहस्पति तथा मंगल करते हैं व उनसे संबंधित रंग हैं—बैंगनी, नीला तथा लाल। बैंगनी रंग अन्य दो रंगों के संयोजन से बना है। जीवन और मृत्यु दोनों ही सृष्टि की प्रक्रिया से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। हम ब्रह्मांड में व्याप्त पदार्थ में कुछ और अतिरिक्त नहीं जोड़ सकते और न ही उसमें व्याप्त शक्ति में, परंतु हम दोनों को परिवर्तित अवश्य कर सकते हैं।

इस प्रकार, विचारों के निर्माण में हम सतत रूप से उन सामग्रियों व ऊर्जा को, जिन्हें हम पहले से ही प्रयोग में ला चुके हैं, परिवर्तित व पुनर्व्यवस्थित

करते हैं। इन दोनों के संपूर्ण योग से हम कुछ भी नहीं निकाल सकते हैं। (देखें वेद मंत्र):

ॐ पूर्वमदः पूर्वमिदं, वपूर्णात्पूर्णमुउच्चते।
पूर्वस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेंवावशिख्यते।।

हमारे द्वारा की गई विभिन्न अभिव्यक्तियां जैसा हम देखते हैं, केवल एक बहुमूर्तिदर्शी हैं, जिसके लघु रंगीन शीशे के यही अंश हमारे रूपांतरण में प्रयोग किए जाते हैं। ऊर्जा का संरक्षण पदार्थ की अविनाशिता, क्रम परिवर्तन के सिद्धांत ही समस्त मानवीय विचारों को नियंत्रित करनेवाले तथ्य हैं। विचार, क्षेत्रमिति की ही एक प्रक्रिया मात्र है, जिसका आधार रूपाकृति है। इसी कारण, हम अंततः मूर्ति की मानवीकृत धारणा से परे नहीं जा सकते। सभी विचार सुनिश्चित तथा एकरूप अवश्य होने चाहिए और रूप के लिए सामग्री की भी आवश्यकता है।

आकार का गुण फलक है, इसलिए हमारे विचार ज्यामितीय सिद्धांतों द्वारा दिशा-निर्देशित होते हैं तथा अंकों के प्रतिनिधि हैं। यही कारण है कि हम विचारों के आवश्यक ज्यामितीय संबंध को अपने अस्तित्व में स्वीकार करते हैं और तब सभी ज्यामितिक संबंध सांख्यिक अनुपातों की अभिव्यक्ति होते हैं। हम अंकों की शक्ति को स्वाभाविक सहमति भी देते हैं, जो पाइथागोरस के सिद्धांत के अनुरूप ब्रह्मांड में मौजूद हैं। उपरोक्त तथ्य का सत्यापन कैप्लर व न्यूटन दोनों ने किया है। इसलिए जब भी किसी अंक के विशिष्ट गुणों की बात होती है, तो यह इस विशिष्ट अर्थ अथवा विचार समूह के आधार पर होता है, जो सार्वभौमिक मानदंडों, सिद्धांतों तथा नियमों के संदर्भ में हम निकालते हैं।

इस प्रकार, एक केंद्र सहित वृत्त सूर्य का संकेत करता है तथा इसका प्राकृतिक तत्त्व आध्यात्मिक भाव से मिलकर एक दैवीय मूर्ति की संकल्पना भी प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार, सभी वस्तुएं सूर्य किरणों से प्रकाशित व गर्म होती हैं, उसी प्रकार सभी आत्माएं प्रभु प्रेम व प्रज्ञा से ज्ञान प्राप्त करके विकास की ओर बढ़ती हैं, जो सार्वभौमिक रूप से सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। जिस तरह सूर्य केवल एक है और सौर प्रणाली में प्रमुख है, उसी प्रकार परमात्मा भी केवल एक ही है, जो सबका स्वामी है। अंक 1 से यही ध्वनित होता है।

त्रिभुज अपने भीतर मानवता संबंधी विचारों को अंतर्निहित करता है। उसके मन, शरीर तथा आत्मा के तीन पहलू इसके त्रिआयामी, सापेक्षिक विश्व, विचार तथा समय के तीन पक्ष (भूत, भविष्य, वर्तमान) के द्योतक हैं। क्रॉस (cross) पदार्थ का प्रतिनिधित्व करता है, परंतु क्रॉस तो घन (cube) का ही विस्तार

है, जिससे संबंधित अंक 4 है। अभी तक हमने विशिष्ट संख्याओं के संदर्भ में जो कुछ कहा है, वह निम्न तथा उच्च जगत कारणों तथा उसके परिणामों की दुनिया, तात्त्विक तथा आभासीय जगत के बीच मौजूद सह संबंधों की वजह से ही सत्य है।

ऐसा नहीं है कि अंकों का कोई अपना गुण व विशेषताएं हैं, परंतु यह अंक 'कारण विश्व' में अपने मात्रात्मक संबंधों के कारण अपने गुण प्राप्त करते हैं। यह कारण विशेष विश्व विचार का ही एक रूप है। 1 अंक प्राकृतिक नियम की ही एक मोहर है। ठीक उसी प्रकार, जैसे पुष्प का रूप वातावरण में उपस्थित ध्वनि, कंपन या आकाशीय पदार्थ में रंग की एक आभा। एक ग्रह की कक्षा का उस ग्रह के तथा उसके वेग, भार, द्रव्यमान से संबंध है। इसी प्रकार एक अंक की महत्ता निश्चित तात्त्विक संबंधों से जुड़ी है।

उपरोक्त तथ्यों का सार यह है कि अंक विद्या को समझने के लिए एक प्रणाली है, जो अनुभवों पर आधारित है, परंतु जिसका उद्‌गम स्रोत इस पार्थिव जगत की सीमा के बाहर है। यदि ऐसी कोई प्रणाली न होती, तो विचारों के ज्यामितिक संबंध को सिद्ध करना असंभव होता, परंतु इस प्रकार का अभ्यास ऐसे व्यक्ति प्राय: प्रतिदिन करते हैं, जो अंकों के माध्यम से भविष्यकथन करना चाहते हैं। भविष्यवाणी को वैज्ञानिक व कलात्मक दोनों कहा जा सकता है। भविष्यवाणी तब विज्ञान का गुण प्राप्त कर लेती है, जब इसमें विवेक, गणना तथा व्याख्या जुड़ जाती है। इसे तब कला की संज्ञा दी जा सकती है, जब यह अचेतन तथा स्वत:स्फूर्त माध्यमों से की जाती है। यह अंतर बहुत ही स्थूल जान पड़ता है, जिसका कई प्रकार से विरोध भी किया जा सकता है।

मेरा यह विचार ठीक ही है कि हमारे अचेतन मस्तिष्क की क्रियाएं चेतन मस्तिष्क की क्रियाओं से विपरीत एवं भिन्न हैं तथा कुछ ऐसी भी क्रियाएं हैं, जो स्वचालित ज्ञान का परिणाम हैं। विज्ञान ने इन तथ्यों को स्वीकार किया है, परंतु फिर भी यह संभव है कि मस्तिष्क जगत के भीतर कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसका संबंध इस जगत की आत्मा से हो तथा जो स्मृतिपट्टिका में अंकित वस्तुओं की प्रतिछाया बनाने में सक्षम हो। इस प्रकार के तथ्य हम दूरस्थ वस्तुओं के पूर्वज्ञान व अन्य भविष्यवाणियों के मामलों में पाते हैं। मैं ज्योतिष विद्या को उतना ही वैज्ञानिक मानता हूं, जितना खगोल विद्या को, जिस पर यह आधारित है। लेकिन यह प्रकृति के रसायनशास्त्र से भिन्न भी है, जो ग्रह-नक्षत्रों के गुणों तथा उनकी प्रतिक्रियाओं से संबंधित है।

वह व्यक्ति, जो सौर प्रणाली की ऐक्यता को तो मानता है, परंतु ग्रहों की पारस्परिक क्रियाओं को नकार देता है, निश्चय ही अतार्किक व मूढ़ है और यदि वह ग्रहों की पारस्परिक क्रिया को भी मानता है, परंतु उनसे उत्पन्न प्रभावों को

नहीं मानता, जिनका मनुष्य पर सीधा असर पड़ता है, तो वह छद्मवेशी है।

पूरब के देशों में एक ऐसा अंक विज्ञान विद्यमान है, जिसका सीधा संबंध हमारी विचार वस्तुओं से है। इसके दृष्टांत अध्याय 10 में दिए गए हैं। एक दूसरी अंक प्रणाली, जिसके द्वारा खोई हुई वस्तुओं को दोबारा प्राप्त किया जा सकता है, जिसका वर्णन अध्याय 11 में किया गया है। अध्याय 11 में दी गई प्रणाली इस विश्वास पर आधारित है कि एक विशेष विचार रूप एक विशेष अंक को जन्म देता है, जिसके साथ उसका सीधा संबंध होता है। यदि इस प्रकार किसी खोई हुई वस्तु के बारे में ध्यानपूर्वक सोचा जाए तथा उसके ठीक बाद उस वस्तु को एक अंक दिया जाए तो यह संख्या विचार विशेष के स्वाभाविक अनुक्रम में होगी।

यह विचार विशेष मस्तिष्क के नियमों से संबंधित होगा। फिर कुछ निश्चित संकेतों या कुंजियों के माध्यम से उस अंक विशेष द्वारा खोई हुई वस्तु पुनः प्राप्त की जा सकती है। 'इंटरनेशनल क्लब फॉर साइकिक रिसर्च' में इस विधि के तीन प्रयोग हुए और वह तीनों ही सफल रहे। मैंने इस प्रणाली का प्रयोग अपने कुछ मित्रों व सहयोगियों के लिए कई बार किया है। एक बार मेरे एक वकील मित्र ने अपने कुछ अदालती पत्र कहीं खो दिए। यह पत्र उनके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण थे। उन्होंने मेरी सलाह मांगी।

मैंने उनसे कहा कि वे पत्र उनके कार्यालय के शेल्फ या शेल्फ के ऊपर रखे होने चाहिए। उन्होंने शेल्फ के अंदर तो खोजबीन कर ली थी, मगर वह शेल्फ के ऊपर रखे कागजों को देखना भूल गए थे। उस शेल्फ के ऊपर एक फोल्डिंग दराज थी, जिसमें वह अपने व्यवसाय से भिन्न कागजों को रखते थे।

उन्होंने इसी दराज को खोलकर खोए हुए पत्रों को खोजा और वे सभी पत्र उन्हें वहीं मिल गए। यह स्वाभाविक है कि इस प्रकार की मानसिक क्रिया स्वतः होनी चाहिए। कुछ व्यक्ति इस प्रक्रिया को करने में असमर्थ होते हैं, जबकि दूसरे इसके प्रयोग को इसलिए टालते हैं, क्योंकि अक्सर उनके विचार मार्ग से भटक जाते हैं।

लेकिन प्रयोगों की त्रुटियों में हम मस्तिष्क के एक नियम की क्रिया को अच्छी तरह देख सकते हैं, जिससे हमें पता चलता है कि मात्रा के अलावा अंकों की कुछ और महत्ता है। इन अंकों का हमारे विचारों से सीधा संबंध है। अतः ये अंक कुछ प्राकृतिक वस्तुओं से भी संबंधित हैं।

यह अंक विचार रूप की अभिव्यक्ति हैं व हमारी स्मृति में अंकित हैं। जैसे इन अंकों का बटन दबाया जाता है, तो कोई विचार विशेष तुरंत प्रकट होता है। इसी प्रकार विभिन्न वस्तुएं एक-दूसरे के साथ जुड़ी होती हैं, जिन्हें

विचारों की संयुक्तता के रूप में जाना जाता है।

प्रकृति भी संख्यागत क्रमों के नियमों द्वारा चालित प्रतीत होती है। पुस्तक के इन्हीं पृष्ठों में मैं यह बता सकूंगा कि अंक या उसकी समानार्थक ध्वनियां किस प्रकार बारंबार आपस में बदलती रहती हैं। विज्ञान में जिसे 'आवर्तन का नियम' कहा जाता है, वह कंपनों के लयबद्ध क्रम का उदाहरण मात्र है। जो अंक विद्या का संख्यागत क्रम सिद्धांत है।

खगोलशास्त्र में एक नियम है, जिसके माध्यम से ग्रहीय विशेषताओं के व्यवस्था क्रम का पता किया जा सकता है। 'मिटॉनिक चक्र' के 19 वर्ष हमें यह बताते हैं कि चंद्रमास कौन सी तिथियों को पुनः होंगे। 649 वर्षों का चक्र हमें ग्रहणों के विषय में बताता है तथा यह भी जानकारी देता है कि इस अवधि के बाद वे दोबारा कब उसी क्रम में व उसी राशि में होंगे। यह नियम चक्र अन्य खगोलीय घटनाओं के बारंबार होने में भी देखे जा सकते हैं।

यह खगोलीय घटनाएं हैं—ग्रहों का युति संबंध तथा इनका एक ही राशि में पुनः प्रकट होना। यदि प्रकृति इन चक्रों व आवर्तन नियमों का पालन करती है, तो मनुष्य की संरचना तथा भौतिक दशाओं, उसकी निर्भरता तथा विचारों में भी इन नियमों का प्रतिबिंब जरूर झलकना चाहिए। यह चक्र अथवा परिवर्तनों की शृंखला मनुष्य की औसत आयु के अनुपात में होती है, जहां प्रकृति का चक्र 870 वर्ष का है तो मनुष्य का 8.7 वर्ष का।

प्राचीन मिस्रवासी एल्फ्रीडेरी जीवनकाल को दो भागों—सूर्य व चंद्र अथवा प्रकाश व अंधकारमय पथ में विभाजित करता है। यदि किसी शिशु का जन्म दिन के समय हुआ है, तो वह सूर्य के प्रभाव में आता है तथा सूर्य की गति का अनुसरण करता है, परंतु यदि उसका जन्म रात के समय हुआ है, तो वह चंद्र पथ का अनुसरण करेगा। दिन के समय का अर्थ है—सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच का समय तथा रात्रि के समय का अर्थ है—सूर्यास्त से सूर्योदय के बीच का काल। फिर वे जीवन को पांच वर्षों में विभाजित करते हैं, जिन्हें वह उन ग्रहों के कक्ष में रखते हैं, जो कैल्डियन क्रमानुसार हैं।

सिर्फ दो ग्रहों के प्रभाव क्षेत्र से एक संयुक्त क्रिया का पता लगाया जाता है, जिसे सूर्यगत प्रभाव तथा चंद्रगत प्रभाव कहते हैं। इससे शिशु के जन्मकाल से जीवनकाल तक का निश्चित क्रांतिक समय जाना जाता है। पृष्ठ संख्या 27 पर दी गई तालिका सूर्य व चंद्र पथ को प्रदर्शित करती है तथा यह दिखाती है कि किस आयु में कौन-सा ग्रह स्वामी है। यह मिस्र की एक प्राचीन प्रणाली है।

1, 4, 8, 11, 15, 18, 22 वें वर्ष निर्माणकारी व सृजनात्मक वर्ष हैं, जिनका संबंध शारीरिक परिवर्तनों से है। 5, 7, 12, 14, 19, 21वें वर्ष अस्थिरताकारक व नुकसानदेह हैं। 8, 13, 20वें वर्ष उन्नतिकारक व लाभदायक हैं। यह कहना

तो मुश्किल है कि मिस्रवासियों ने इस निश्चित 'एल्फ्रीडेरिज' समूहों को व्यक्ति विशेष पर कैसे लागू किया, परंतु उनसे यह ज्ञात होता है कि उनके अनुपातों में आवर्तन के नियमों का संकेत किया गया था।

सूर्य		चंद्र
☉ ☉	1	☽ ☽
☿	2	♀
♀	3	☿
☽	4	☉
♁	5	♄
♃	6	♃
♄	7	♂
☿ ☉	8	☽ ♀
☿	9	♀
♀	10	☿
☽	11	☉
♂	12	♄
♃	13	♃
♄	14	♂
♀ ☉	15	☽ ☿
☿	16	♀
♀	17	☿
☽	18	☉
♂	19	♄
♃	20	♃
♄	21	♂
☽ ☉	22	☽ ☉
☿	23	♀
♀	24	☿
इत्यादि		इत्यादि

ग्रहों की गति के क्रम में मनुष्य के जीवनकाल में क्रमशः आनेवाले 4, 8, 10, 19, 15, 12 तथा 30वें वर्ष उसकी सात विशिष्ट आयु को दर्शाते हैं। उनका वर्णन शेक्सपियर के कॉमेडी नाटक 'एज यू लाइक इट' में किया गया है। वे इस प्रकार हैं:

1-4 वर्ष	बाल्यकाल-परिवर्तनशीलता ☽
4-12 वर्ष	अध्ययन-ज्ञान ☿
12-22 वर्ष	प्रणय-प्रेम ♀
22-41 वर्ष	महत्त्वाकांक्षा-बल-ओज ☉
41-56 वर्ष	एकाग्रता-तीव्रता ♂
56-68 वर्ष	इच्छापूर्ति-प्रौढ़ता ♃
68-98 वर्ष	ह्रास-झक्की स्वभाव ♄

मनुष्य के विकास में इस चक्र नियम की मान्यता इस तत्त्व को स्वीकार करना ही है कि मानव जीवन की घटनाएं अंकों के क्रम से प्रभावित होती हैं। यदि हम यह समझते हैं कि यह पार्थिव जगत अंकों की प्रतिक्रिया है, वस्तुतः तब हमें उस अंक की जरूरत होगी, जो मानव विकास तथा विचारों की अभिव्यक्ति को नियंत्रित करता है।

अतएव, हम ब्रह्मांड के नियमों या विज्ञान के किसी भी अंक का अध्ययन संख्या के ज्ञान की अनुपस्थिति में नहीं कर सकते हैं। इसलिए हम जो कुछ भी इस ब्रह्मांड या प्राकृतिक घटनाचक्र में देखते हैं, वह अंकों की अभिव्यक्ति मात्र है। माप, मात्रा, घनत्व, भार, गुरुत्वाकर्षण, वेग, अनुपात इत्यादि अंकों द्वारा ही प्रदर्शित किए जाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानसिकता परिमाणात्मक संबंधों की अनुभूति, दूसरे शब्दों में अंकों पर ही आधारित हैं। हम विज्ञान की किसी भी शाखा का अध्ययन करें, तो पाएंगे कि उसकी अपनी भाषा विशेष या संकेत हैं। गणित समस्त विज्ञानों का आधार है तथा यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें समस्त ज्ञान का प्रवाह होता है, जिससे वह ज्ञान संचारित होता है। इस सारे ज्ञान की कुंजी 'अंकों का विज्ञान' है।

□□

संख्या और भावों की अभिव्यक्ति

कोई भी व्यक्ति मेंडलसौन के गीतों को बिना शब्दों के नहीं सुन सकता है न ही वह किसी संगीतकार द्वारा छेड़ी गई कर्णप्रिय धुन सुनकर एक निश्चित अनुभूति प्राप्त कर सकता है, जो अभिव्यक्ति के इस उच्चतर विज्ञान द्वारा प्रकट होती है।

आप जानते हैं कि वह संगीतकार भावों के एक निश्चित क्रम को छायांकित कर रहा है और आप यह भी अनुभव करते हैं कि वे भाव आपके ही हैं। वह अपने संगीत को परिभाषित करने के लिए शब्दों की मदद नहीं लेता, न ही आपको उस संगीत की अनुभूति के लिए शब्दों की जरूरत है, परंतु इसके बावजूद वह अपनी भावनाओं को बिना शब्दों के संप्रेषित करने में सफल होता है। ठीक उसी तरह, जिस तरह कवि को अपनी भावनाओं को कविता के रूप में संप्रेषित करने के लिए संगीत की जरूरत नहीं होती।

अतः हम जीवन की अनुभूतियों के विषय में पाते हैं कि संगीत तथा शब्दों की भाषा वैसे तो समान महत्त्व रखती है। लेकिन शब्दों भाषा में वह बात है, जो संगीत की भाषा में नहीं है। यह संघर्ष को अनुप्राणित करने की सामर्थ्य रखती है, जो संगीत कभी नहीं कर पाया। अधिक-से-अधिक मैंने यह सुना है कि बेसुरे संगीत का उपयोग भीड़ को भगाने में किया जाता है।

संगीत के सुरों का पैमाना ब्रह्माण्डीय कारकों से सीधा संबंध रखता है। चूंकि ग्रह रंगों व अंकों से संबंधित हैं, इसलिए ब्रह्माण्डीय क्रम के माध्यम की सुसंगति प्रकट होती है जो ध्वनि, रंग और अंकों में पाई जाती है।

ग्रह इत्यादि	सुर	रंग	अंक
शनि	D	नीला	8
बृहस्पति	B	बैंगनी	3
मंगल	G	लाल	9
सूर्य	C	नारंगी	1 या 4
शुक्र	A	नीला	6
बुध	E	पीला	5
चंद्र	F	हरा	7 या 2

उपरोक्त रंग व उनके समवर्ती ग्रह छठे अध्याय में दी गई तालिका से कुछ भिन्न और संक्षिप्त हैं। परंतु फिर भी उपरोक्त तालिका को रंगों तथा संख्याओं के मूल संबंधों के संदर्भ में ठीक माना जा सकता है।

यह हमेशा याद रखना चाहिए कि रंग हमारी ज्ञानेंद्रियों द्वारा ग्रहण किए गए आकाशीय कंपनों की दर को प्रकट करते हैं। यदि हम इन रंग संबंधों का परीक्षण करें, तो हम कुछ रुचिकर संबंध पा सकते हैं।

शनि ग्रह को ज्योतिष में विषाद का ग्रह माना गया है। इसका सुपरिणाम तभी होता है, जब यह जन्मकुंडली में विशेष रूप से बलवान होता है। दांते की जन्मकुंडली में शनि बुध की युति में होकर लग्न में स्थित था। दांते के विषय में कहा गया कि वह नरक में गया था। एड्गर एलन पो की जन्मकुंडली में यह लग्न में भी था। पो को अंग्रेजी कविता का 'रात्रि उल्लू' माना जाता है। यह योग नेपोलियन की जन्मकुंडली में भी था। नेपोलियन को 'भाग्य द्वारा प्रभावित' व्यक्ति माना गया। आमतौर पर यह दार्शनिकों की जन्मकुंडली में प्रभावकारी तरीके से विद्यमान होता है तथा यह जब भी मस्तिष्क पर विराजता है, तो गहन विचारों को ही प्रस्तुत करता है। इसीलिए जंबुकी नील रंग का संबंध विषाद से है तथा इसका मुख्य तत्त्व है–सतत प्रयत्नशीलता। इसके ठीक विपरीत व भिन्न रंग हैं–नारंगी व गहरा पीला, जो शक्तिपूर्ण व क्रियात्मक रंग हैं।

बृहस्पति आशावादी ग्रह है, जो विस्तार, आशा इत्यादि का द्योतक है तथा बैंगनी रंग से संबंध रखता है। यह रंग श्वेत प्रकाश को चांदी की महीन पर्त से निकालने से बनता है तथा मनुष्य के आभामंडल से ठीक वैसे ही जुड़ा है, जैसे हरा रंग मनुष्य के तारकीय पदार्थ से। भारतीय नक्षत्र विज्ञान के अनुसार ब्रह्मा (बृह धातु, जिसका अर्थ विस्तार है) में ब्रह्माण्डीय अथवा यह ब्रह्माण्डीय पिंड शक्ति शामिल है, जहां वह स्वयं अपना विस्तार करते हुए ब्रह्मांड की सृष्टि करते हैं।

गूढ़ विज्ञान में यह अविनाशी तथा विकासमान पिंड का वाहक होता है। इस प्रकार, हम ब्रह्मा व बृहस्पति में एक संबंध खोज सकते हैं। बृहस्पति को देव–पितर अर्थात देवपिता भी कहते हैं। इसी प्रकार का संबंध बृहस्पति व आभामंडल अथवा व्यक्ति पिंड में भी दिखाई देता है।

इसे अंतरिक्ष विज्ञान की भाषा में 'हिरण्यगर्भ' अथवा 'स्वर्ण पिंड' कहा जाता है। इसे आकाशीय जल में तैरता हुआ माना जाता है तथा इसके ऊपर कालहंस अथवा समयरूपी हंस विराजमान होता है। चूंकि एक महान अस्मिता के विस्तार से ही स्वयं ब्रह्मांड का निर्माण हुआ था, इसलिए व्यक्ति के विस्तार से ही जीवन की पूर्णता की जाती है। बृहस्पति ग्रह, जो विस्तार का स्वामी

है, बैंगनी रंग के समकक्ष है। यह रंग शक्तिपूर्ण आशावाद का प्रतीक है।

यदि जन्मकुंडली में प्रभावशाली बृहस्पति पड़ा हो, तो ऐसा व्यक्ति स्वभाव से ही विस्तारवादी व आशावान होता है। किंग एडवर्ड सप्तम तथा लॉर्ड नार्थक्लिफ की जन्मकुंडलियों में बृहस्पति लाभ स्थान में मौजूद था।

3 की संख्या बृहस्पति तथा बैंगनी रंग से संबंधित है। यह ऐसे पिंड तथा काया की भी प्रतीक है, जो विस्तार तथा संकुचन में समर्थ है। बैंगनी रंग आशावादिता का प्रतीक है।

मंगल दमकता हुआ लाल ग्रह है। यह संगीत के तीव्र सुर G से संयुक्त है व लाल रंग तथा अंक 9 के समकक्ष है। मंगल ग्रह संघर्ष, चोट, घाव, मृत्यु, हत्या, प्यार, सैनिक आदि से संबंधित है। इसके कई रूपों में पैनी वस्तुएं, तलवार, भाला, छुरा व लपलपाती जिह्वा आदि शामिल हैं। अंक 9 पुनर्निर्माण, अध्यात्म, स्वतंत्रता, स्व-विस्तार व परिव्याप्तता का प्रतीक है। मंगल विष्णु से संबंधित है तथा विष्णु इस सृजित ब्रह्मांड को चलानेवाले प्रभु हैं। 'विष्' अर्थात व्याप्त होना। अग्नि, गहनता, उत्साह, तीक्ष्णता आदि मंगल ग्रह के गुण हैं।

इस ग्रह से संबंधित ये सभी गुण, रंग तथा ध्वनियां हमारे लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये हमारी भावनाओं को चेतना के माध्यम से प्रभावित करती हैं।

जब हम संगीत सुनते हैं, तो उससे आलोड़ित होनेवाली भावनाओं के प्रति चैतन्य रहते हैं और इमें जो अनुभूति होती है, उसका श्रेय हम संगीत को देते हैं। सच तो यह है कि संगीत स्वयं में कुछ नहीं है। जो कुछ है वह उन लयबद्ध कंपनों की शृंखला में है, जिससे संगीत का निर्माण होता है और वह वास्तव में पूर्णतः शोररहित पर्यावरणीय गतियां हैं, जो तभी ध्वनि की महत्ता प्राप्त करती हैं, जब वे हमारी चेतना की सीमा में प्रवेश करती हैं। रंग-रूप इत्यादि स्वयं गुण नहीं रखते, बल्कि हम ही उनको ऐसे गुणों से सज्जित करते हैं तथा हम ऐसा उनके द्वारा पड़नेवाले प्रभावों के कारण करते हैं।

हम जैसा महसूस करते हैं, ठीक वैसा ही संगीतज्ञ ने भी तब महसूस किया होगा, जब उसने किसी गीत को सुरबद्ध किया होगा। अर्थात उसने अपनी भावनाओं को संगीत की भाषा में कह डाला होगा।

शुक्र ग्रह को संगीत, कला, काव्य तथा मानव मन की कोमल भावनाओं का प्रतीक माना जाता है। यह समन्वय तथा तालमय कलाओं को अपने में समेटे हुए है। नृत्य, संगीत, काव्य, चित्रकला तथा वे सभी उद्योग, जिनमें कलात्मकता होती है, शुक्र के गुण विद्यमान होते हैं। इसका नीला रंग औषधि की भांति कार्य करता है। शांतिदायक, मृदु व प्रसन्नतादायक नीला रंग स्नायविक विश्राम का प्रतीक है। रंगों के माध्यम से चिकित्सा करनेवाले चिकित्सक बहुधा

इसका प्रयोग करते हैं। यह संगीत के सुर की प्रतिध्वनि है तथा सभी संगीत वाद्यों में इसका प्रयोग लयबद्धता के लिए किया जाता है।

बुध ग्रह पीले रंग से संबंध रखता है तथा स्पैक्ट्रम में सबसे प्रकाशवान रंग है। बुध मस्तिष्क के बुद्धि भाग के समकक्ष है तथा मस्तिष्क की तार्किकता व ग्रहणशीलता का प्रतीक है। प्रकाश के द्वारा ही हम विभिन्न वस्तुओं के रूप, आकार को देख पाते हैं और बुध सबसे अधिक प्रकाशवान ग्रह है, इसीलिए सभी को जाग्रत करनेवाला है। प्राचीन मिस्र के धर्मग्रंथों में इसे एनुबिस (Anubis) कहा गया है।

यह हिब्रू ईश-कालेब (मानव-भेड़िया) के समकक्ष है, जिसे ग्रीक लोगों ने एस्क्यूलेजियस भी कहा गया है। यह औषधि का अधिष्ठाता ग्रह है। मनुष्य तब तक अज्ञानी होता है, जब तक स्वयं प्रभु के संदेशवाहक उसे ज्ञान की ज्योति दिखा नहीं देते। तब मनुष्य ज्ञानी होकर हर्मिस के अनुयायियों में मिल जाता है। पीला रंग नीले (शुक्र) के साथ मिलकर प्राकृतिक हरा रंग बनाता है। इसलिए हर्मिस (Hermes) और एफ्रोडाइट (Aphrodite) मिलकर अर्थात बुध व शुक्र मिलकर एक प्राकृतिक मनुष्य का निर्माण करते हैं।

इस प्रकार अंक 6 शुक्र व अंक 5 बुध मिलकर अंक 11=2 बनाते हैं, जो चंद्र की संख्या है तथा यह हमारी तालिका में हरे रंग से संबंधित है। जब बुध (जो बुद्धि सिद्धांत का प्रतीक है) अपने आकाशीय विपरीत से मिलता है, तो परिणामत: ज्ञान-प्रकाश की उत्पत्ति होती है। ज्ञेयवादियों ने मस्तिष्क के दो रूपों की व्याख्या की है तथा क्रिस्टॉस अर्थात बुध के पिंड के ऊपर उन्होंने इरोज के पिंड को रखा है। बुध को सर्पदंड, जिसे हर्मिस देव का बेंत कहते हैं, के रूप में भी जाना जाता है।

सर्पदंड को हिब्रू भाषा में पवित्र लोक की अग्नि भी कहा जाता है। यह विचार कि यह शांति का प्रतीक है, बहुत आधुनिक है तथा त्रुटिपूर्ण भी। बुध इड़ा व पिंगला नाड़ियों के पारस्परिक मेल का भी प्रतीक है। इड़ा व पिंगला सृजनात्मक अग्नि हैं, जो सुषुम्ना में एकीकृत हो जाती हैं। ब्रह्मदंड या रीढ़ की हड्डी, जो योगी की बेंत द्वारा प्रकट की जाती हैं तथा इस बेंत के लघु कटाव व गांठें रीढ़ की हड्डी में होनेवाली स्नायविक क्रियाओं का प्रतीक हैं। यह हर्मिक कला या गुप्त ज्ञान का प्रतीक है। बुध एक दंडधारी के रूप में प्रॉमीथियस के समान है, जो स्वर्ग से अग्नि को मानवता के उपयोग के लिए सौंफ के पौधे की डंठल में रखकर नीचे धरती की ओर लाया था।

ईश्वर की व्याख्या करने के साधन के रूप में बुध का संबंध अनुवाद के विभाग से है।

हम सार्वभौमिक सांकेतिकता के ज्ञान द्वारा रूप को शब्दों में, रंग को ध्वनियों

में तथा दोनों को संख्याओं के रूप में अनूदित कर सकते हैं। मस्तिष्क की क्रियाओं द्वारा हमारी भावनाएं विचारों में तथा विचार भावनाओं में परिवर्तित होते हैं। इसलिए बुद्धि सिद्धांत द्वारा ही संख्या, जो बुध द्वारा बताई जाती है, भावनाओं से सीधा संबंध रखती है। बुध की संख्या 5 है तथा यह प्रकृतिमय संख्या मानव जाति के विशिष्ट गुणों का संकेत देती है।

चंद्र दो संख्याओं से संबंधित है–7 जो सकारात्मक भाव में है तथा 2 जो नकारात्मक भाव में है। संख्या 7 के रूप में यह पूर्ण चंद्र सूर्य के विपरीत क्रियाशील है। जब हम संख्या 1 व 7 का योग करते हैं तो संख्या 8 अशुभ संकेत करती है। नवचंद्र की दशा में संख्या 2 सूर्य संख्या 1 के योग से संख्या 3 बनाती है, जो सौभाग्यशाली संख्या है तथा वर्धनशील भी है, जबकि संख्या 8 हानि की, कमतरी की द्योतक है।

संख्या 3 बृहस्पति की संख्या है तथा विस्तार का संकेत देती है तथा संख्या 8 शनि की संख्या है, जो संकुचन का संकेत देती है। सूर्य की युति में चंद्र नकारात्मक या स्त्रीपर्यक होता है, परंतु सूर्य से सातवें घर में होने पर यह सकारात्मक व पुरुष गुणवाला साबित होता है।

चंद्र की संख्या 2 सापेक्षता, हिचकिचाहट, भूलना, परिवर्तन का संकेत देती है, परंतु संख्या 7 पूर्णता व स्थिरता की प्रतीक होती है। हिब्रू प्रणाली में सप्ताह के दिनों के बाद संख्यांक आते हैं, जैसे :

रविवार	☉	1-8
सोमवार	☽	2-9
मंगलवार	♂	3
बुधवार	☿	4
बृहस्पतिवार	♃	5
शुक्रवार	♀	6
शनिवार	♄	7

इस पद्धति की व्याख्या दूसरे अध्याय में की गई है। यहां यह देखा जा सकता है कि संख्याएं 1 व 8, जीवन व मृत्यु सूर्य के प्रभाव में निहित हैं, जबकि संख्या 2 व 9, जो परिवर्तन व शक्ति की प्रतीक हैं, चंद्र के प्रभाव में आती हैं।

चंद्र हमेशा से पृथ्वी के साथ ही पहचाना जाता रहा है तथा सांकेतिक प्रणालियों में इसका संबंध भौतिक मनुष्य से है। इसे शुक्र ग्रह व मंगल के मध्य रखा जाता है। इसका रंग हरा है, जो नीले व पीले रंग से मिलकर बनता है। (शुक्र व बुध के रंग) जैसा हम पहले देख चुके हैं, इन्हीं दो ग्रहों की

संख्याओं 6 व 5 के योग 11=2 अर्थात चंद्र (नकारात्मक) संख्या बनाता है। अब चूंकि हरा रंग धरती पर विद्यमान वनस्पतियों से मिलता है, इसलिए यह प्राकृतिक रंग है तथा स्पेक्ट्रम में नीले व पीले रंगों के मध्य होता है।

अब यदि हम नीले रंगों को विचार का तथा पीले रंगों को भावनाओं का प्रतीक मान लें, तब हमें सम्मिश्रित हरे रंग में प्राकृतिक मनुष्य के रंग-संकेत मिल सकते हैं। अर्वाचीन धारणा के अनुसार मनुष्य की आत्माएं धरती पर चंद्र पिंड से आती हैं। गूढ़ ज्ञानवादी इसे चंद्र का संबंध नहीं मानते, बल्कि एक ऐसे आकाशीय धरातल के परिधिजनक प्रभाव को मानते हैं, जो गुरुत्वाकर्षण के नियमों के अनुसार, धरती के बाहर व चारों ओर चंद्र कक्षा तक विद्यमान है।

वह प्रणाली, जो रंगों व संख्याओं के विचारात्मक व भावनात्मक संबंधों की ओर संकेत करती है, संक्षेप में निम्नलिखित रूप से दिखाई जा सकती है:

बृहस्पति	बैंगनी	3	आशा, महत्त्वाकांक्षा, विस्तार
शनि	जंबुकी नील	8	चिंतन, दर्शन
शुक्र	नीला	6	शुचिता, अध्यात्म, शांति
चंद्र	हरा	2	संवेदना, परिवर्तनशीलता
बुध	पीला	5	मस्तिष्क, बुद्धि, अनुभूति
सूर्य	नारंगी	4	शक्ति, बल
मंगल	लाल	9	उत्साह, ऊर्जा, आवेग

हम देख सकते हैं कि सूर्य का रंग नारंगी शक्ति के संघनित होने की स्थिति में मंगल के लाल रंग में बदल जाता है। संयुक्तता के सिद्धांत के अनुसार हमें संख्या को विचारों से तथा भावनाओं को रंगों से संबंधित मानना चाहिए। परिणामतः संख्या विज्ञान तथा रंग कला से संबंध रखता है, जिसके द्वारा पहले अवयव में बौद्धिक क्षमता तथा दूसरे में कलात्मक अभिरुचियों का प्रदर्शन देखा जा सकता है।

अपने अन्वेषण को रंगों व संख्यांकों को समान रेखा में रखते हुए हमें ध्वनि की आरंभिक संयुक्तता निम्नलिखित रूप में दिखाई दे सकती है :

ग्रह	☉	♄	☿	☽	♂	♀	♃
सुर	C	D	E	F	G	A	B
संख्या	4-1	8	5	7-2	9	6	3
रंग	Orange	Indigo	Yellow	Green	Red	Blue	Violet

सुर C, E, G एक उभयनिष्ठ आरोह-अवरोह का निर्माण करते हैं। उनसे संबंधित संख्याएं हैं—4, 5 तथा 9, इस प्रकार 9 में 4+5 समाहित हैं। सुर D, F तथा A एक विशेष आरोह-अवरोह का निर्माण करते हैं तथा उनसे संबंधित

संख्याएं 8, 7 तथा 6 हैं। इस प्रकार, वे 8+7=15=6 का योग लाते हैं, जो संख्या 6 से सुसंगति रखता है। मैं यह नहीं कह सकता कि यह प्रयोग कहां तक आगे बढ़ाया जा सकता है। शनि (8) व चंद्र (7) ज्योतिष रूप में अंक 6 से संयुक्त हैं। तुला व वृषभ राशियां शुक्र द्वारा संचालित होती हैं तथा उनके उच्चवर्णीय चिह्न क्रमशः शनि व चंद्र होते हैं।

□□

संख्या तथा वैयक्तिकता की अभिव्यक्ति

संख्या तथा इच्छा के बीच संबंधों का तर्क ठीक उसी प्रकार देना संभव है, जैसा संबंध हम संख्या, विचारों एवं अनुभूति के बीच देख चुके हैं। चूंकि प्रत्येक इच्छा की अभिव्यक्ति विचारों तथा अनुभूति से होती है, जिसका परिणाम बोलने अथवा किसी क्रिया को करने शब्दों अथवा लेखन के रूप में होता है, अतः यदि हम विचार समूह तथा जन्म से संबंधित संख्या के आपसी संबंधों की तलाश करें, तो संभवतः यह ज्यादा सुविधाजनक और रुचिकर होगा। इन संबंधों की तलाश किसी विशिष्ट मामले से जुड़े जन्मतथि तथा अन्य आंकड़ों का हवाला देकर अभिव्यक्ति तथा संकल्प की सीमा के दायरे में होनी चाहिए।

अच्छा होगा यदि अभिव्यक्ति के पैमाने के संबंध में हमारी धारणा सुस्पष्ट हो, जिसके द्वारा हम मानव क्रियाकलापों की दैवीय सिद्धांतों के आधार पर व्याख्या करते हैं, जिसका परिणाम अनेकता में एकता होता है।

सूर्य को इस समूची प्रणाली का केंद्र मानकर जैसा कि 'लोगो' (संकेताक्षरों) द्वारा प्रदर्शित है, हमें प्रकाश और ऊष्मा की दो दशाएं मिलती हैं, जिनका संबंध दैवीय बुद्धि तथा प्रेम से है और ये दोनों सूर्य अथवा दैवीय पदार्थ से एकाकार हैं। जिन वस्तुओं में संबंध होता है, वह एक जैसी नहीं होती हैं, लेकिन पदार्थ आत्मिकता पर उसी तरह निर्भर करता है, जिस तरह आत्मा पर शरीर। निर्भर रहनेवाले पदार्थ के अस्तित्व की दशा उस वस्तु की अभिव्यक्ति पर आधारित होती है, जिस पर वह वस्तु निर्भर होती है।

प्रकाश के आलोक में ही हम वस्तुओं को देख पाते हैं तथा ऊष्मा उनमें जीवन का संचार करती है। घोर अंधेरे में हमें किसी भी रूपाकृति के अस्तित्व का पता नहीं चलता और इस तरह की उपेक्षणीय दशा में किसी वस्तु की ठीक-ठीक परिभाषा नहीं की जा सकती। ऊष्मा सभी जीवधारियों को ऊर्जा से अनुप्राणित कर देती है। ध्रुवों पर जहां कम ऊष्मा प्राप्त होती है, बहुत कम जीवधारी रह पाते हैं। प्रकाश तरंगों की गति को कृत्रिम रूप से धीमा किया जा सकता है तथा उससे रोशनी प्राप्त की जा सकती है। विद्युत धारा में प्रतिरोध का इस्तेमाल करके कोई भी व्यक्ति प्रकाश प्राप्त कर सकता है।

प्रकाश, ऊष्मा, विचारों तथा अनुभूति के पीछे ऊर्जा तथा जीवन काम कर रहा होता है, जो संकल्प का स्रोत है। इनके तथा अन्य निष्कर्षों के आधार पर हम संबंधों के पैमाने को इस तरह से रेखांकित कर सकते हैं।

जीवन

विवेक---------------------------------- प्रेम

संकल्प

सत्य---------------------------------- उदारता

इच्छा

ज्ञान----------------------------------लगाव

विचार---------------------------------- अनुभूति

वाणी----------------------------------क्रियाकलाप गुण

चरित्र

यहां पर हम देखते हैं कि जीवन संकल्प और इच्छा की तरह गुण अथवा आचरण का परिणाम है, जो मानव जीवन में वाणी तथा क्रियाकलापों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। संबंधों के उपरोक्त पैमाने में दैवीय, आत्मिक तथा मानवीय धरातलों पर संबंधित जोड़े प्रदर्शित किए गए हैं। विचारों की इस प्रणाली में प्रत्येक जीवन किसी एक जीवन की आंशिक अभिव्यक्ति है तथा मानव गुण और उसकी सघनता, किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता तथा संकल्प की सीमाओं के भीतर दिखाई देती है।

अतएव हम सुरक्षित रूप से इस दृष्टिकोण द्वारा कि सभी चीजें सृष्टि के मुख्य उद्देश्य के अनुवर्ती हैं, गुणों की भिन्नता तथा भाग्य का रहस्योद्घाटन कर सकते हैं। यह इस बात को भी प्रदर्शित करता है कि दैवीय इच्छा संख्याओं के रूप में प्रकट होती है, जिसका संचालन ब्रह्मांड के नियमों द्वारा किया जाता है।

इस बात का उल्लेख विगत अध्याय में किया जा चुका है कि चंद्रमा परिवर्तनीयता का प्रतिनिधित्व करता है तथा इससे संबंधित अंक 2 तथा 7 हैं। ऐसा विचार किया जाता है कि किसी व्यक्ति का जन्मकालीन चंद्रमा उस राशि में स्थित होता है, जिसके द्वारा उसका नक्षत्रीय तथा संख्यात्मक संबंध होता है अथवा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में सर्वाधिक प्रभावशाली गुण को रेखांकित करता है।

ज्योतिष तथा उसकी यह धारणा कि किसी व्यक्ति के जन्म के समय की ग्रह दशाएं उसके गुणों तथा भाग्य को समझने के लिए कुंजी का काम करती हैं, को सही मान लिया जाए तो उससे यह अर्थ निकलेगा कि चंद्रमा की प्रत्यक्ष गति अन्य ग्रहों की अपेक्षा सर्वाधिक है। सूर्य एक राशि में एक

महीने स्थित रहता है, जबकि अन्य ग्रह महीनों एक राशि में स्थित रहते हैं। चंद्रमा एक राशि से दूसरी राशि में मात्र 60 घंटे में प्रवेश कर जाता है। स्वाभाविक है कि किसी व्यक्ति के गुणों तथा उसके भाग्य का अनुमान लगाने में इसको सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। हम पाते हैं कि वस्तुतः चंद्रमा ऐसी भूमिका निभाता भी है, परंतु यह किसी व्यक्ति के विकास को निर्धारित करनेवाला आखिरी तत्त्व नहीं है।

1 से 9 तक की संख्याओं के पूर्व निर्धारित मानों द्वारा ऐसे मामलों के परीक्षण के लिए हमें प्रत्येक ग्रह के संबंध में हर एक राशि का मान देना होगा, जो एक दूसरे से संबंधित हैं:

राशियां	ग्रह	संबंधित संख्या
मेष, वृश्चिक	मंगल	9
वृष, तुला	शुक्र	6
मिथुन, कन्या	बुध	5
कर्क	चंद्रमा	2, 7
सिंह	सूर्य	1, 4
धनु, मीन	बृहस्पति	3
मकर, कुंभ	शनि	8

अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों के जन्म के समय में चंद्रमा की स्थितियों के संबंध में इन संख्याओं के इस्तेमाल के मद्देनजर यह देखा गया है कि इन ग्रह स्थितियों द्वारा निर्धारित संख्यात्मक मानो के पक्ष में सकारात्मक तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इस पूरी प्रणाली के पीछे निःसंदेह ग्रह राशियां मौजूद हैं। वे प्रकृति द्वारा की गई संख्याओं की अभिव्यक्ति हैं, जिनका रहस्योद्घाटन अनेक विधियों तथा आकाशीय माध्यम से भिन्न-भिन्न गतियों द्वारा होता है। ये अनेक प्राकृतिक घटनाओं जैसे विद्युत, प्रकाश, ऊष्मा आदि को जन्म देती हैं।

फिलहाल यह कहना अतार्किक न होगा कि चंद्रमा अपने परिक्रमा पथ के विभिन्न हिस्सों से हम पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालता है। इन भिन्नताओं पर ध्यान देने तथा उनके वर्गीकरण के लिए हमारे द्वारा किया गया राशिचक्रीय विभाजन अत्यंत मददगार साबित हो सकता है।

आइये,. कुछ उदाहरण देखें!

नेपोलियन प्रथम 15 अगस्त, 1769 को पैदा हुआ। उस वक्त चंद्रमा मकर राशि में स्थित था, जिसकी संख्या 8 तथा स्थायी ग्रह शनि है। यहां हम पाते हैं कि संख्या 7 द्वारा प्रतिनिधित्व तीव्र अहम की भावना तथा 8 की संख्या द्वारा अभिव्यक्त आक्रामकता का समन्वय है। राष्ट्रों में अशांति की स्थिति अथवा

शांति कायम रहने की संभावना को शनि की राशि में स्थित चंद्रमा द्वारा भलीभांति सुनिश्चित किया जा सकता है, जो 8 की संख्या के अशुभ प्रभावों के सापेक्ष भी है। यह संख्या विखंडन, क्रमिक विकास, प्रतिक्रिया, क्रांति, ध्वंस, अलगाव, बिखराव, अराजकता, पृथक्कीकरण की द्योतक है।

शनि की राशि में चंद्रमा और चंद्रमा की राशि में शनि स्थित होने से घातक अहम भाव की प्रबलता के संकेत मिलते हैं, जिसने इस महान सेनानायक की भाग्यरेखा निर्धारित कर दी।

नैवरे के किंग हेनरी के मामले में मारिनास के मुताबिक चंद्रमा मेष में स्थित था, जिसका स्वामी मंगल है तथा संबंधित अंक 9 है। वह 13 दिसंबर 1553 को पैदा हुआ था। यहां हम 9 की संख्या द्वारा सांकेतिक मंगल पुत्र का उत्कट स्वातंत्र्य भाव तथा जीत की भावना पाते हैं, परंतु मंगल के शनि के स्वामित्ववाली राशि मकर, जिसकी संख्या 8 है, में स्थित होने की वजह से उसके जीवनकाल में एक अशुभ दौर आया, जिसका अंत रैवेलॉक द्वारा उसकी हत्या के रूप में हुआ।

क्वीन एलेक्जांड्रा 1 दिसंबर 1844 को पैदा हुई थी। उस वक्त चंद्रमा सूर्य के स्वामित्ववाली सिंह राशि में था, जिसका अंक 1 है जो गरिमा, सम्मान, प्रतिष्ठा, सफलता, विशिष्टता, शासकीय गुणों को प्रदर्शित करता है। सूर्य धनु राशि में स्थित था, जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा जिसका अंक 3 है। इससे उदारता, शाहखर्ची, बढ़ोतरी तथा परोपकारिता का संकेत मिलता है। सूर्य, चंद्रमा तथा बृहस्पति की युति अत्यंत भाग्यवर्धक साबित होती है।

रूमानिया की महारानी कार्मेन सिल्वा के जन्म के समय चंद्रमा मेष राशि में था, जो मंगल की राशि है तथा जिसका अंक 9 है। मारक शक्ति, अजेयता, साहस, धैर्य, दृढ़ता तथा उत्साह इसके प्रतीक हैं।

मंगल मीन राशि में स्थित था, जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा संख्या 3 है। इससे उसकी उदारता, मान-सम्मान, धन-धान्य में वृद्धि तथा सत्कार्यों में संलग्नता का पता चलता है, परंतु मीन की राशि के मंगल से अधीरता का भी पता चलता है।

इंग्लैंड के शासक चार्ल्स प्रथम के जन्म के समय चंद्रमा तुला राशि में स्थित था, जिसका स्वामी शुक्र है तथा उससे संबंधित संख्या 6 है। शुक्र धनु राशि में स्थित था, जिसका स्वामी बृहस्पति है। इस योग से गहन कलाप्रियता, सज्जनता, सौम्यता, सुख-शांतिप्रियता, नाट्य, संगीत तथा नृत्य में गहरी रुचि का पता चलता है। इससे उसकी सामाजिकता, न्यायप्रियता तथा परोपकारिता का भी पता चलता है।

जोन ऑफ ऑर्क: 6 जनवरी 1412 को पैदा हुई थी। उसका जन्मकालीन

चंद्रमा शुक्र के स्वामित्ववाली राशि तुला में स्थित था। भद्रता, सौम्यता, सुख-शांति तथा सौंदर्यप्रियता भी इस योग से प्रकट होती है। शुक्र मकर राशि में स्थित था, जिसका स्वामी शनि है। इससे निराशा, हानि तथा कारावास ध्वनित होता है। उसकी कुंडली में एक अन्य सकारात्मक बात चंद्रमा तथा बृहस्पति की युति थी तथा उसकी मानसिक विशिष्टता को नेप्च्यून से सातवें घर में स्थित बुध रेखांकित करता था।

एनी बेसेंटः 1 अक्टूबर, 1847 को पैदा हुई थीं। इनकी जन्मकुंडली में चंद्रमा अपनी ही राशि कर्क में स्थित था। इससे उनके जीवन में परिवर्तन, यात्राएं, विकल्प तथा प्रचार का संकेत मिलता है। एक अन्य सकारात्मक पहलू चंद्रमा का 7 की संख्या से संबंधित होना है, जो उपलब्धि, पूर्णता, संतुष्टि तथा शांति दर्शाता है।

कैसर विलियमः के जन्म के समय चंद्रमा वृश्चिक राशि में था, जिसका स्वामी मंगल है तथा अंक 9 है। इससे उत्साह, ऊर्जा, साहस, निर्णय, शक्ति तथा प्रयत्नशीलता का पता चलता है। मंगल बृहस्पति की राशि मीन में स्थित था, जिसकी संख्या 3 है। उदारता, आकर्षण, मान-सम्मान में वृद्धि, सत्कार्य का द्योतक तो यह है ही, साथ ही अधीरता का भी प्रतीक है।

रडयार्ड किपलिंगः जन्मकालीन चंद्रमा बुध की राशि मिथुन में स्थित था, जिसका अंक 5 है। विवेक शक्ति, तर्क, यात्राएं आदि इससे पता चलती हैं। बुध बृहस्पति की राशि धनु में स्थित था, जिससे उसकी शाहखर्ची, उदारता, मान-सम्मान में वृद्धि तथा सफलता का पता चलता है। जन्मकुंडली में बुध तथा शुक्र की युति उसकी काव्यात्मक बुद्धि की ओर झुकाव का स्पष्ट संकेत देती है।

लॉर्ड नार्थक्लिफः की जन्मकुंडली में चंद्रमा मेष राशि में था, जिसका स्वामी मंगल तथा अंक 9 है जो साहस, प्रतिरोध, उत्साह, आक्रामकता के स्वभाव का द्योतक है। मंगल, बुध की राशि कन्या में स्थित है, जिसका अंक 5 है। इससे सतर्कता, बुद्धिमत्ता, वणिक बुद्धि का पता चलता है।

अब यदि हम उपरोक्त कुछ उदाहरणों में से जिनकी संख्या निश्चित ही कई गुना बढ़ सकती है, कुछ को लें तो हम पाते हैं कि चंद्रमा तथा दूसरे ग्रहों से संबंधित संरचनाओं के योग के आधार पर हम व्यक्तियों के गुणों की परख की एक कुंजी तैयार कर सकते हैं:

नेपोलियन प्रथमः चंद्र, शनि=28=10 या 1 इससे साम्राज्य, शासन तथा प्रबल अहंभाव का पता चलता है।

किंग हेनरीः चंद्रमा, मंगल, शनि=298=19=1, इससे शासन, साम्राज्य तथा अहंभाव का पता चलता है।

क्वीन एलेक्जांड्राः चंद्रमा, सूर्य, बृहस्पति, =213=6, जो भद्रता, परिष्कृतता, शांतिप्रियता तथा दयालुता का द्योतक है।

कार्मेन सिल्वाः चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति =293=14=5, जो बुद्धिमत्ता, बुद्धि तथा सतर्कता का लक्षण है।

चार्ल्स प्रथमः चंद्रमा, शुक्र, बृहस्पति =263=11=2, यह ढुलमुलपन तथा परिवर्तनशीलता की संख्या है।

जोन ऑफ आर्कः चंद्रमा, शुक्र, शनि =268=16=7, का अंक उपलब्धि, पूर्णता तथा प्रतिष्ठा का द्योतक है।

एनी बेसेंटः चंद्रमा (अपनी ही राशि में स्थित) =2 परिवर्तनशीलता तथा लोकप्रियता का अंक।

कैसर विलियमः चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति =253=10=1, विजय, साम्राज्य, शासन का प्रतीक है। एक सेनापति के मामले में इससे सफलता, विशिष्टता तथा अधिकारिता का संकेत मिलता है।

लॉर्ड नार्थक्लिफः चंद्रमा, मंगल, बुध =295=16=7, पूर्णता, उपलब्धि तथा लोकप्रियता का प्रतीक है।

यहां पर इस तथ्य का उल्लेख करना महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक मामले में प्रभावित करनेवाली संख्या प्राप्त करने में चंद्रमा की संख्या को आधार मानते हैं, फिर यह ध्यान रखते हैं कि किस राशि में चंद्रमा स्थित है तथा उसका स्वामी एवं संबंधित संख्या क्या है। जब चंद्रमा अपनी ही राशि में स्थित हो, तब इसकी जरूरत नहीं पड़ती। इस प्रकार प्राप्त संख्या को हम चंद्रमा को शासित करनेवाली राशि के मान में जोड़ देते हैं।

बहुधा देखा गया है कि दुनिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले लोगों की जन्मकुंडली में चंद्रमा को शासित करनेवाला ग्रह सदैव महत्त्वपूर्ण स्थान में स्थित होता है। अतएव उनके जन्म के समय अत्यंत शक्तिशाली ग्रह राशियों की प्रबलता रहती है। नेपोलियन की कुंडली में चंद्रमा को शासित करनेवाला ग्रह शनि था और वह चौथे घर में स्थित था। जर्मनी के पूर्व शासक का चंद्रमा को शासित करनेवाला ग्रह मंगल था, जो चौथे घर में स्थित था।

इसके अतिरिक्त अन्य ग्रह राशियों का प्रभाव किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में पड़ता है। यह एक सुस्पष्ट तथ्य है कि किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली में लग्न, चौथे, सातवें तथा दसवें घर में स्थित ग्रह उसके व्यक्तित्व गुणों तथा भाग्य को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नेपोलियन की कुंडली में शनि चौथे तथा चंद्रमा सातवें घर में स्थित था। किंग एडवर्ड की जन्मकुंडली में बृहस्पति लग्न में था।

लॉर्ड नार्थक्लिफ की कुंडली में भी बृहस्पति लग्न में था। सेसिल रोड्स

की जन्मकुंडली के सातवें घर में सूर्य, चंद्रमा तथा शुक्र स्थित थे। ऐनी बेसेंट के लग्न में यूरेनस, चंद्रमा चौथे घर में तथा सूर्य, शुक्र तथा बुध घर में थे। कैसर की कुंडली में मंगल चौथे घर में था। समाजवादी टॉम मान के लग्न में सूर्य तथा बुध, सातवें में मंगल तथा शुक्र अत्यधिक कमजोर था।

ग्लैडस्टोन (इंग्लैंड के प्रधानमंत्री) की कुंडली में दसवें घर में यूरेनस तथा सूर्य और बुध लग्न में स्थित थे। उक्त उदाहरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जितने अधिक ग्रह केंद्र में होंगे, व्यक्ति को उतना ही अधिक प्रभावित करेंगे।

जहां यह स्पष्ट स्वतंत्र चरित्र का निर्माण करता है, वहीं एक किस्म की बाध्यता अथवा पराधीनता भी देता है। जो व्यक्ति महत्त्वपूर्ण पदों पर होते हैं, खुद को उस पर बनाए रखने के लिए उन्हें निरंतर अनथक प्रयास और सतर्कता रखनी पड़ती है, लगातार चिंतित होना पड़ता है। आंखों को चमत्कृत कर देनेवाले ध्रुव तारे की तरह ऐसे व्यक्ति बिना कहीं रुके अपनी निर्धारित भूमिका निभाते हैं अथवा गुमनामी के अंधेरे में खो जाते हैं।

दूसरी ओर ऐसे व्यक्ति, जिनकी जन्मपत्री में ग्रह महत्त्वपूर्ण स्थितियों में नहीं होते, परिस्थितियों से बाध्य होते हैं तथा उन्हें अल्प मात्रा में दुनियावी सफलता हाथ लग पाती है। भले ही दृढ़ परिश्रम करें, वे स्वाभाविक रूप से पिछलग्गू होते हैं तथा किसी भी क्षेत्र में अगुआ नहीं बन सकते। लेकिन जब अधिकतर ग्रह मिश्रित अर्थात उच्च तथा नीच स्थितियों में हों, तब देखा जाता है कि ऐसे व्यक्तियों के जीवन के एक सामान्य लक्ष्य में भिन्नता तथा स्वभाव में अनिश्चितता होती है। भले ही उन व्यक्तियों की क्षमता असंदिग्ध हो।

अतएव, जब हम किसी व्यक्ति को 9 की संख्या से संबंधित बताते हैं, तो हमारा तात्पर्य कदापि यह नहीं होता कि वह व्यक्ति कहीं से भी मंगल ग्रह से प्रभावित होनेवाले औसत व्यक्ति से कुछ ज्यादा है, पर इसका अर्थ यह होता है कि वह व्यक्ति अपने उद्‌देश्य की प्राप्ति की दिशा में पूरी ताकत से प्रयत्नशील, ज्यादा उत्साही तथा स्वतंत्र विचारोंवाला होगा। तत्पश्चात संख्या 9 की रक्तवर्णीय राशियों का एक अन्य असामान्य पहलू दृष्टिगोचर होगा। ऐसे मामलों में एक व्यक्ति उन्मादी, उग्र तथा अराजकतावादी भी हो सकता है तथा यह उस 'रक्तवर्णीय' व्यक्ति के लिए घातक भी साबित हो सकता है।

इसका अंतिम विश्लेषण इस प्रकार हो सकता है कि मंगल, इसकी संख्या 9, इसका रंग लाल तथा इससे स्वाभाविक रूप से जुड़ी समस्त वस्तुएं मात्र 'गहनता' का संकेत करती हैं। यह ठीक उसी तरह है, जैसे सूर्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को केंद्र में रखकर उसकी सघनता से उत्पाद के अनेक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत निकाले गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के चरम क्षणों

में इस उत्साह (उत्ताप) की अनुभूति एवं कार्य तथा लक्ष्यों की सघनता का अनुभव करते हैं, जो कुशाग्र बुद्धि के हैं, उन्हें इसकी अनुभूति कमोबेश लगातार होती रहती है।

इसी प्रकार जो व्यक्ति बृहस्पति ग्रह की राशियों से संचालित होता है, जिसका रंग बैंगनी तथा संबंधित संख्या 3 है, उसे दयालु, बड़े दिलवाला, परोपकारी तथा सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। लेकिन यह भी हो सकता है कि वह शेखी बघारनेवाला, धनकुबेर, फिजूलखर्च तथा आमोदप्रिय, किंतु आत्मकेंद्रित भी हो सकता है। लेकिन वह किसी का नुकसान करने में उसी तरह असमर्थ हो सकता है जैसे उसकी भलाई में, क्योंकि दोनों ही चीजों के लिए बहुत प्रयास तथा परेशानी की जरूरत है। प्रत्येक मामले में 3 की संख्या के दो सिरों के उदाहरण हैं।

पहले मामले में एक व्यक्ति सहानुभूति तथा परोपकारिता के साथ कार्य करता है, जबकि दूसरे में भावशून्यता तथा अहंकार की भावना से। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि बृहस्पति से संबंधित गुणों का विस्तार अवांछित क्षेत्रों में हो जाता है। इस दशा में ऐसा व्यक्ति बृहस्पति के मात्र भौतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करता है। उपरोक्त दो विरोधी भावों के उल्लेख में हमें नील-बैंगनी तथा रक्त-बैंगनी रश्मियों का अंतर प्राप्त होता है। साथ ही उनकी विशिष्ट कंपन दैर्घ्य की विशिष्ट व्यवस्था की सीमाओं का भी पता चलता है।

शुक्र अर्थात 6 की संख्या से संबंधित प्रभाव भी दो प्रकार के होते हैं। इनमें से एक परिष्कृत तथा सांस्कृतिक प्रभाव रखता है, जबकि दूसरा अपने लंपटपने तथा छिछोरेपन के लिए जाना जाता है। बावजूद इसके दोनों तरह के व्यक्तियों में शांतिप्रियता की भावना उभयनिष्ठ है।

5 की संख्या भी अनेक गुणों की द्योतक है, मगर मुख्यत: यह बुद्धिमत्ता से जुड़ी हुई है। इसे आसानी से उच्च तथा निम्न मस्तिष्क के पहलुओं में बांटा जा सकता है। इसमें से पहला विज्ञान द्वारा संचालित होता है, तो दूसरा व्यवसाय द्वारा। आज के युग में इन दो गुणों का तालमेल बहुत स्वस्थ और अच्छा माना जाता है, जो बौद्धिक गरिमा का संकेत करता है। अब यह महसूस किया जाने लगा है कि उतना ही ज्ञान वांछित है, जितनी उसकी व्यावहारिक उपयोगिता होती है।

बुध के गुणों की प्रधानता मस्तिष्क के सिद्धांत से संबंधित है। चूंकि मस्तिष्क के मुहावरों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक भाषाओं की जरूरत होती है। अतएव बुध को ईश्वर का व्याख्याता अथवा भाषाविद् माना जाता है। बुध की बहुमुखी प्रतिभा से ज्योतिषविद् अच्छी तरह वाकिफ हैं।

शनि भी अपने भीतर दो पहलू छिपाए हुए है। इसकी संख्या 8 है। इससे

दकियानूसी और तंगी ध्वनित होती है। अलिप्त मस्तिष्क की विशेषता सभी दार्शनिकों में दृष्टिगोचर होती है, जो उन्हें मानसिक तथा भौतिक जगत के प्रति निर्लिप्त दृष्टिकोण बनाने में समर्थ होती है, जिसकी वजह से वे मस्तिष्क तथा पदार्थ विषयक नियमों का प्रतिपादन करने में सफल होते हैं। यह नीलवर्णीय रश्मियों का एक पहलू तथा 8 के अंक की विशेषता है।

इसका निम्न पहलू यह है कि यह व्यक्ति को विषादग्रस्त, मानवद्वेष की अंधेरी, तंग गली में ला खड़ा करती है। जीवन के दोराहों पर तुच्छ लाभ लेने की अवसरवादिता, कृतघ्नता तथा खर्च बचाने के लिए भयानक कंजूसी और खुद को दूसरों से अलग कर लेने की प्रवृत्ति भी इसके निम्न पहलू के प्रभावी होने के परिणाम हैं।

धरती के इस भयानक परजीवी तथा निर्भय होकर सूर्य के हृदय में देखनेवाले बुद्धि के संगम अलौकिक दार्शनिक के बीच अथाह खाई मौजूद है, तथापि इसे सिर्फ एक शब्द भर सकता है—अकेलापन।

इस प्रकार की पृथकता, संकीर्णता तथा अनुदारवादिता, प्रत्यक्षतः प्रतिष्ठा तथा चंद्रमा के नकारात्मक गुण अप्रतिष्ठा के विपरीत हैं, जिससे संबंधित अंक 2 है।

8 की संख्यावाला शनि मकर का स्वामी है तथा 2 की संख्यावाला चंद्रमा कर्क का स्वामी है, जो विरोधी राशियां हैं।

इसी प्रकार, हम शनि के गहरे नीले रंग को चंद्रमा के पीले रंग के विपरीत पाते हैं। मंगल तथा इससे संबंधित संख्या 9 शक्ति तथा संघर्ष से संबंधित है, जबकि शुक्र (6) शांति और सौहार्द्र से। परिणामतः हम पाते हैं कि मंगल मेष तथा वृश्चिक राशियों से संबद्ध है, जो शुक्र की तुला तथा वृष राशियों के विपरीत है। जहां किसी व्यक्ति को ग्रहों के प्रभाव की दृष्टि से मुख्य प्रभावकारी ग्रह के सापेक्ष रखना चाहे, वह मंगल की उग्रता हो अथवा शुक्र की शांतिप्रियता या चंद्रमा की चंचलता अथवा शनि की पृथक्कता, पर उस प्रभाव की श्रेणी का निर्धारण अत्यंत कठिन कार्य है।

हम देख चुके हैं कि किसी विशिष्ट रश्मि के अति ध्रुव, रंग, ग्रहीय कंपन हैं तथा उनके बीच अनेक भाव श्रेणियां विद्यमान हैं। ऐसा प्रतीत होगा कि प्रत्येक रश्मि, रंग तथा ग्रह स्वयं एक अष्टवर्ग अथवा सप्तमंडल धारण करते हैं, जिसकी वजह से सात बैंगनी उपरश्मियां हो सकें अथवा एक शुद्ध बैंगनी रश्मि अपनी छह उपरश्मियों के साथ मिलकर एक सप्त वर्णमंडल का निर्माण कर सकें। ठीक इसी तरह अन्य रंगों के साथ होता है।

इन ग्रहीय संकेतों के तहत रखे जाने पर वे निम्नलिखित क्रम में होंगे—प्रत्येक कड़ी की संख्या 1 किसी विशिष्ट लक्षण के गुणों, रंगों, संख्या ग्रहीय कंपन को व्यक्त करेगी और संख्या 7 दूसरे छोर की अथवा प्रभावी गुणों की असामान्य

विशेषताओं को रेखांकित करेगी। बीच के 2 से 6 तक के अंक विभिन्न गुणों को प्रदर्शित करेंगे।

ग्रहीय परिवर्ती

ग्रह	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽
रंग	जंबुकी नीला	बैंगनी	लाल	नारंगी	नीला	पीला	हरा
संख्या	8	3	9	1-4	6	5	7-2
1	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽
2	♃	♀	♄	☽	☽	♂	☿
3	♂	♄	☿	♂	♃	☽	♀
4	☉	☉	☉	☿	☉	☉	☉
5	♀	☽	♃	♃	☿	♄	♂
6	☿	♂	☽	♀	♄	♀	♃
7	☽	☿	♀	♄	♂	♃	♄

ऐसा मालूम होगा कि तालिका के अनेक कॉलम ध्रुवीयता दर्शाते हैं, जिसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है और उसका दूसरी लाइनों के साथ दोबारा उल्लेख किया जा रहा है। शनि का ध्रुवीकरण चंद्रमा द्वारा, मंगल का शुक्र द्वारा तथा बृहस्पति का बुध द्वारा किया गया है। जबकि बीच के कॉलम में ☉ का संकेत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत की ओर इशारा करता है, जिसका संशोधन चंद्रमा, मंगल आदि द्वारा होता है। इसकी समाप्ति शनि की प्रभावकारितावाले नकारात्मक ध्रुव में होती है। यह सोलोमन सील की ज्योतिषीय तालिका द्वारा दर्शाया गया है, जिस पर हमने किसी अन्य स्थान पर दूसरे संदर्भ में विचार किया था। जहां यह ध्रुवीयता दो उलझे हुए त्रिभुजों द्वारा दर्शाई गई है, जो आत्मिक तथा भौतिकता, तुच्छ तथा आधारभूतता के प्रतीक हैं, जिनमें शनि, बृहस्पति, मंगल के सकारात्मक त्रिकोण बड़े ग्रहों का प्रतिनिधित्व तथा सक्रिय पुरुष सिद्धांत की ओर संकेत करते हैं तथा शुक्र, बुध, चंद्रमा का नकारात्मक त्रिकोण छोटे ग्रहों को शामिल करता है और जो निष्क्रिय महिला सिद्धांत का द्योतक है।

उपरोक्त उल्लेख से यह प्रतीत होता है कि किसी व्यक्ति के बारे में विवरण

की जानकारी उसको सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले तथा अपेक्षाकृत कम प्रभावित करनेवाले सम्मिलित ग्रहीय प्रभावों द्वारा मिलती है। उदाहरण के तौर पर वृष राशि में स्थित चंद्रमा वृष के स्वामी ग्रह शुक्र के अनुकूल होता है तथा उसकी संख्या 6 एवं रंग नीला होता है, लेकिन शुक्र यदि मीन में हो, जो बृहस्पति की राशि है तथा उसका अंक 3 है, तो हमें उस शुक्र प्रभावित व्यक्ति का संपूर्ण खाका बृहस्पति के उपविभाग द्वारा ही मिल सकेगा, जैसा कि उक्त तालिका की तीसरी श्रेणी और शुक्र की लाइन द्वारा दर्शित है।

तालिका में महत्त्वपूर्ण सिद्धांत ⊙ 4 अभिव्यक्ति का मुख्य आधार है। इसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों भिन्नताएं मध्य रेखा पर संतुलित की गई हैं। इस प्रणाली में बुध पर ध्यान देना रोचक होगा, जो सूर्य के अंकीय विरोध में था, वह यहां पर सौरमंडलीय सरगम की अभिव्यक्ति की चौथी लाइन में दर्शित है।

उस तालिका को जिसको मैंने 'ग्रहीय परिवर्ती (Planetary Variants)' की संज्ञा दी है, उसे एक अभिव्यक्ति ग्रहीय ध्रुव क्षेत्र भी समझा जा सकता है। आज इन ग्रह रश्मियों के प्रभाव से बहुसंख्य मानवता इस स्थिति में है अथवा अभिव्यक्ति के उस चरण में पहुंच गई है, जिसका संकेत तालिका की तीसरी लाइन द्वारा किया गया है, जो पशु युग से विकसित होकर विकास के पांचवें चरण अर्थात मानव युग तक पहुंच चुकी है। अतएव कोई व्यक्ति जो शनि के प्रभावों के अंतर्गत पैदा हुआ है, वह मंगल की उपरश्मियों के तहत अपनी अभिव्यक्ति करेगा, बृहस्पतिवाला शनि की, मंगलवाला बुध की, शुक्रवाला बृहस्पति की, बुधवाला चंद्रमा की तथा चंद्रमा के अंतर्गत पैदा होनेवाला शुक्र की उपरश्मियों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करेगा।

अतएव शनि की ध्वंसात्मक विशेषता की अभिव्यक्ति युद्ध अथवा सैनिक रूपों में होती है। ब्रह्मवेत्ता बृहस्पति की दार्शनिक अभिव्यक्ति होती है। उत्साह संपन्न मंगल अपनी अभिव्यक्ति बुद्धिमत्ता एवं व्यावसायिकता में, सूर्य की संजीवनी शक्ति से मानव या भौतिक संस्कृति में शक्ति ग्रहण करता है। शुक्र प्रधान व्यक्ति की कला मंदिरों में अभिव्यक्ति पाती है। बुद्धिमत्ता का सिद्धांत विचारों के प्रकटन में अभिव्यक्ति पाता है, जबकि व्यावसायिकता पूरी तरह प्रकाशन तथा विज्ञापन पर आधारित होती है। अंत में लोकप्रियता की चंद्रकिरणों की अभिव्यक्ति कलापूर्ण प्रयासों के विकास में होती है तथा मुख्यत: प्रसन्नता, सहजता, आराम तथा विलास के संदर्भ में लागू होती है। मानव गुणों की समूची अभिव्यक्तियों को 'युग की आत्मा' की संज्ञा दी जा सकती है। नि:संदेह उपरिवर्णित गुणों के उल्लेख, रंग, संख्याएं आदि हम धरती के निवासियों पर ही लागू होते हैं।

दूसरे ग्रहों पर मौजूद मानव जीवन हमारी तुलना में कम अथवा ज्यादा विकसित है। वहां के ग्रहीय सप्तसुरों का संबंध हमारे यहां से पर्याप्त भिन्न है। मंगल प्रधान व्यक्ति अथवा बृहस्पति प्रधान व्यक्ति के ब्रह्मांडीय संबंध उन्हें एक अलग ही किस्म के ज्योतिष विज्ञान के अंतर्गत रखेंगे। मंगल प्रधान अथवा बृहस्पति प्रधान व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं की जानकारी के लिए हमें विभिन्न नक्षत्रीय कारणों को ध्यान में रखना होगा।

यदि उल्लेख (वर्णन) सार्वभौमिक होते, तब यह तर्क प्रस्तुत किया जाता कि धरती हरित माध्यम से इन संबंधित ग्रहों से अथवा हरित रश्मियों के विकिरण के अंतर्गत मिलती है और इस प्रकार तत्काल हमारी मानवता को पीत-हरित (Yellow-green) (2), नील-हरित (Blue-green) (7) में बांट देती है। ये प्राकृतिक तथा बुद्धिमान प्राणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस व्यवस्था की धारणा समूचे ब्रह्मांड के संदर्भ में की जा सकती है।

लेकिन यह सोचने के लिए हमारे पास रंचमात्र भी आधार नहीं है कि ये पूर्ण निरपेक्ष ब्रह्मांडीय संबंध हैं। इसके विपरीत इसकी ज्यादा संभावना है कि मंगल प्रभावित व्यक्ति की कद-काठी शारीरिक मानसिक क्षमता का वैसा ही संबंध हो, जैसा हमारा धरती की हरियाली से। जब हम जटिलताओं में प्रवेश के लिए तैयार न हों, तब हमें अपना अध्ययन सिर्फ व्यक्ति के गुणों तथा भाग्य तक सीमित रखना चाहिए तथा दूसरे व्यापक क्षेत्रों को दैवीय और विकसित मेधावाले व्यक्तियों के लिए छोड़ देना चाहिए।

□□

रूपाकृतियों, रंगों तथा ध्वनियों का अंकों से संबंध

अंकों की रहस्य विज्ञान प्रणाली दूसरे विषयों से किस प्रकार संबंधित है, इसका खुलासा मैं एक ज्योतिष परंपरा के माध्यम से कर रहा हूं। जब हम एक बार अंकों की सांकेतिकता को मानव व्यवहार के संबंध में स्वीकार कर लेते हैं, उसके ही बाद हमें उन संबंधों के आधार तलाशने की जरूरत होती है।

8 के अंक तथा उसके द्वारा संकेत किए जानेवाले तथ्यों का आपस में कोई प्राकृतिक अनुक्रम नहीं है। हम देखते हैं कि 8 का अंक दुष्कर्म या दुर्भाग्य जुड़ा हुआ है। हम पाते हैं कि यह अंतिम महत्त्वपूर्ण अंक है जो मृत्यु, क्षय, बर्बादी, विखंडन, हानि, अधूरेपन तथा भ्रष्टाचार का संकेत करता है।

8 के अंक की यह धारणा सार्वभौमिक है। खगोलशास्त्र में आठवां विभाजन मृत्यु तथा हानि का संकेत करता है। 8 के अंक की राशि वृश्चिक है जो सर्पों, दैत्यों, निशाचरों, विषधरों तथा मृत्यु के कारकों से जुड़ी हुई है। ईसाई धर्म के अनुसार, सृष्टि की रचना के 7 दिन पूरे होने के बाद आठवें दिन मृत्यु का आगमन होता है।

यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मांड विकास की पूर्णता प्राप्त कर लेने के बाद विघटित होने लगेगा। ठीक उसी तरह से जैसे किसी वृक्ष के पत्ते, फूल और फल पूर्ण विकसित होने पर जमीन पर गिरने लगते हैं। अंक रहस्य विज्ञान में हम पाते हैं कि जहां भी विकलांगता, शारीरिक अथवा मानसिक अपूर्णता मौजूद है, वहां इस अंक (8) की मौजूदगी जरूर दर्ज की जाती है। जैसा कि नेल्सन के मामले में अंग-भंग तथा दृष्टिदोष, मिल्टन के मामले में अंधता, लुई 16वें के मामले में उसका मस्तक ही कट जाना जैसे दुर्भाग्यपूर्ण वाकये जुड़े हैं। मैंने सिर्फ एक दृष्टांत प्रस्तुत किया है।

यदि हम प्रकृति के रहस्यवाद तथा मानव जीवन की घटनाओं तथा मानव आचरण में किसी गुप्त समझौते की तलाश करें, तो निश्चय ही इसकी मौजूदगी प्राकृतिक कारणों के अतिरिक्त पाएंगे, क्योंकि किसी व्यक्ति के नाम, जन्मतिथि

तथा उस अंक विशेष से जुड़ी घटना के किसी कार्य-कारण को हम सम्बद्ध नहीं पाते हैं।

अतः एक संख्या सिर्फ परिमाणात्मकता से सम्बद्ध है तथा एक रूपाकृति वह है, जिसके द्वारा हम इसका संकेत करते हैं। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व सिर्फ एक संकेताक्षर है, जिसके द्वारा वह व्यक्ति दूसरों के समक्ष अपनी अभिव्यक्ति करता है। भौतिक ब्रह्मांड सार्वभौमिक आत्मा का व्यक्तित्व है।

अतएव अंकों को संकेताक्षरों के रूप में स्वीकार करके हम इन संबंधों की तलाश की दिशा में अग्रसर होते हैं। यह मौजूद भी हैं तथा उन्हें प्राचीन ज्योतिषविदों के आख्यानों में तलाशा जा सकता है। वे मानव जीवन में ग्रहों की गतियों के प्रभाव की पुष्टि करते हैं तथा उन्होंने किसी व्यक्ति के जीवन में बार-बार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले किसी अंक तथा उस पर पड़नेवाले किसी ग्रह विशेष के प्रभावों के बीच संबंधों की तलाश की है।

प्राचीनकाल में कुछ प्रज्ञावान व्यक्तियों को छोड़कर वे इसके प्रति उपेक्षावान रहे अन्यथा उन्होंने अंकों को संकेताक्षरों के रूप में प्रयुक्त किए जाने के अलावा और भी ज्यादा महत्त्व दिया होता। जैसा कि पहले ऐसा था भी। उन्होंने अंकों को उस व्यवस्था का अंग माना, जिसके माध्यम से ईश्वर हम तक संदेश भेजता है।

उसी आलोक में उन्होंने समूचे ब्रह्मांड, सूर्य, चंद्र, ग्रहों, पुच्छल तारों तथा अन्य तारों को हम तक शकुन या अपशकुन का स्वाभाविक अथवा कार्य-कारण के रूप में संकेत करनेवाले तत्त्वों के रूप में नहीं, बल्कि उनके महत्त्व को गुप्त संकेत प्रकट करनेवाले तत्त्वों के रूप में स्वीकारा। उन्होंने प्रकृति की भाषा की व्याख्या करना सीख लिया तथा ज्योतिष तथा अंक विज्ञान का विकास किया, जिसका बाद में उन्होंने उपयोग अपने रहस्यों को छिपाने के लिए किया, जिससे अंक रहस्य विज्ञान का जन्म हुआ।

ग्रहीय गणना के आधारों का उल्लेख अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा रहस्य विज्ञान के विद्यार्थियों को ज्यादा आकृष्ट करेगा। अब हम ग्रहीय रूपता पर विचार के लिए अग्रसर होंगे।

ध्यान दें, 9 का अंक समस्त तेज धारवाली, नुकीली वस्तुओं से जुड़ा हुआ है, जो लोहे अथवा स्टील से निर्मित होती हैं जैसे भाले, बर्छियां, बल्लम, तलवारें चाकू आदि।

8 का अंक जटिलता का अंक है तथा यह सभी सर्प प्रजाति के रेंगनेवाले प्राणियों, 'S' तथा उससे आरंभ होनेवाली सभी ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करता है।

7 के अंक का प्रतिनिधित्व अर्ध चक्राकार आकृतियां, दक्षिण दिशा में

मुड़े हुए मोड़ तथा कांटेदार आकृतियां करती हैं।

6 का अंक सुगठित एवं सुडौल आकृतियों से—सुंदर घेरों, गोलाकृतियों, जिनमें संतुलन का तत्त्व प्रभावी रूप से मौजूद होता है—जुड़ा हुआ है।

5 का अंक तेज किंतु खंडित रूपाकृतियां, जुड़ी हुई तथा जंजीरनुमा आकृतियों तथा जुड़ी काया से संबंधित है।

4 का अंक वर्ग, आयत, क्रॉसों तथा क्षैतिज रेखाओं से जुड़ा हुआ है।

अंक 3 का संबंध त्रिभुज, त्रिपाद तथा तीन भागों वाली आकृतियों से है। इसमें आवरणवाली वस्तुएं, आवरण गोलाभ (Spheroids), अंडाकार तथा फैलने एवं सिकुड़नेवाली वस्तुएं भी शामिल हैं।

अंक 2 बाईं ओर के मोड़ से जुड़ा हुआ है, जो गोलाकार आधारोंवाली आकृतियों का निर्माण करता है, जैसे कटोरे, कलश इत्यादि। किसी वस्तु के समानांतर अथवा उसको जोड़नेवाली वस्तुएं जैसे खंभे आदि।

अंक 1 सीधे खड़े स्तंभों, अखंडित वस्तुओं, गोलों, घेरों, लंबवत रेखाओं तथा छिद्रों का प्रतिनिधित्व करता है।

यह भी संकेत किया गया है कि ध्वनि तथा रंगों के भी अंकों से संबंध होते हैं।

अग्रलिखित तालिका में अंक तथा उससे संबंधित रंगों का उल्लेख किया गया है:

9 लाल अथवा किरमिजी (Red or crimson)
8 काला अथवा गहरा भूरा (Black or deep brown)
7 सिल्वर अथवा दूधिया (Silver or opalescence)
6 हल्का नीला अथवा फिरोजी (Pale blue or turquoise)
5 नीला, गहरा नीला (Indigo or dark blue)
4 नारंगी, सुनहला (Orange or ruddy gold)
3 बैंगनी (Violet)
2 पीला, क्रीम (Yellow or cream)
1 सफेद, श्वेत (White)

उस प्रणाली, जिसका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं, का ग्रहों के रंगों के साथ संबंध इस प्रकार है:

बैंगनी	बृहस्पति
गहरा नीला	शनि
नीला	शुक्र
हरा	चंद्रमा
पीला	बुध

नारंगी	सूर्य
लाल	मंगल

इस प्रणाली में शुक्र पूर्वाभास अथवा आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, बुध तर्कसंगत अथवा भौतिक बुद्धि का संकेत करता है। वे तदर्थ रूप से पृथ्वी के जीवन से जुड़े हुए हैं, जिसका संकेत धरती (जिसकी ओर चंद्रमा संकेत करता है) तथा हरे रंग द्वारा मिलता है।

रंगों और अंकों के संबंधों की जांच के लिए कुछ ज्योतिष संबंधी तथ्यों का प्रयोग जरूरी है। आकाश की एक रूपाकृति (ग्रह आदि) किसी घटना के समय तथा स्थान को निर्धारित करने के लिए व्यवस्थित की गई है, जिसके द्वारा जिज्ञासु व्यक्ति उनके रंग से इसकी जानकारी हासिल कर सकता है। यह मालूम होगा कि तीन विशिष्ट बिंदुओं अथवा आकाशीय हिस्से प्रभावी रंगों की स्पष्ट जानकारी देंगे। रोजेज (Roses) के युद्ध के मामले में हमें श्वेत तथा लाल रंग के बीच की सापेक्षिक शक्ति को निर्धारित करना होगा, जो मंगल अथवा चंद्रमा के प्रभावी होने का संकेत होगा।

लेकिन मिश्रित क्षेत्र में जहां रंग एक ओर वित्तीय मामलों की ओर संकेत कर रहे हों, दूसरी ओर क्रीड़ा संबंधी मामले को, तो ऐसी स्थिति में हमें उनमें कुछ अंतर करने की जरूरत होगी। इस दशा में हम पाएंगे कि शरीर के रंग का मुख्य रूप से ध्यान रखना होगा। सिर अथवा शीर्ष पहले घर से संबंधित हैं तथा उसका संबंध मेष राशि से है।

आकाश का वह भाग पूर्व दिशा की ओर पड़नेवाले क्षितिज के निचले हिस्से में स्थित है। शरीर का रंग जो मुख्य है, उसका निर्धारण पांचवें घर द्वारा किया जाता है, जो आकाश के पूर्वी क्षितिज से 120^0 से 150^0 के मध्य स्थित है तथा सिंह राशि से संबंधित है।

ये घर स्वयं में सफेद तथा सुनहले रंग से संबंधित हैं। लेकिन जब उनमें कोई राशि स्थित होती है, तो वे उसी राशि का रंग ग्रहण कर लेते हैं, जिसका निर्धारण उस राशि को शासित करनेवाले ग्रहों द्वारा किया जाता है। अतः यदि शनि एक समय में पांचवें घर में स्थित हो, तो हमें काले अथवा गहरे नीले रंग की प्रभावकारिता की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। यदि उस घर में मकर राशि हो, तब भी यही प्रभाव होगा, क्योंकि मकर राशि का स्वामी शनि है। यदि लग्न में मंगल हो अथवा मेष राशि हो, तो लाल रंग के प्रभावी रहने की पूरी संभावना रहती है।

अतः पहले तथा पांचवें घर में स्थित राशियों और ग्रहों के अनुसार हम शरीर तथा सर्वाधिक प्रभावकारी रंग का निर्णय करते हैं। लेकिन यदि कोई अकेला ग्रह किसी समय आकाश में या तो ठीक ढंग से उदित हो अथवा

अपने चरमोत्कर्ष पर हो या अस्त हो रहा हो अथवा अपनी ही राशि में उन्नतशील हो, तब वह ग्रह अपने से संबंधित रंग का विवरण देगा तथा दूसरे सभी को अपवर्जित कर देगा।

इस संबंध में ध्यान देने योग्य है कि चंद्रमा जब जलीय राशियों जैसे कर्क, वृश्चिक अथवा मीन में होता है, तब यह हरे रंग का संकेत करता है, परंतु जब यह दूसरी राशियों में होता है, तब यह पीला अथवा क्रीम रंग का संकेत देता है।

ग्रहों के विभिन्न रंग होते हैं:

नेप्च्यून	चमेलिया, नीलक, सूर्यानुवर्ती अर्थात सफेद
यूरेनस	धारीदार, सलेटी, काला तथा सफेद
शनि	जंबुकी-नीला, गहरा नीला, काला अथवा चॉकलेटी रंग
बृहस्पति	बैंगनी, जामुनी
मंगल	लाल, किरमिजी, सिंदूरी
सूर्य	सुनहला, नारंगी
शुक्र	गुलाबी, फिरोजी, हल्का नीला
बुध	पीला, कभी-कभी गुलाबी

उपरोक्त तथ्य भलीभांति परीक्षित हैं। संभव है कि पदार्थों के वर्णभेद से संबंधित विज्ञान की शाखा की शुरुआत हो सके, जिसमें इस बात का अध्ययन हो सके कि कौन-सी रंग की भिन्नताएं महत्त्व की हैं। खेलकूद के संरक्षक (पदाधिकारी) रंगों की प्रभावकारिता के विषय में एकमत हैं।

आजकल खेलों में सफलता की दृष्टि से इस बात पर भी ध्यान दिया जा रहा है कि खिलाड़ियों की ड्रेस किस रंग की हों, जिनमें उनको अधिकतम सफलता हासिल हो सके। एक प्रणाली कुंडली के प्रत्येक घर के लिए एक रंग प्रस्तुत करती है, दूसरी उसमें स्थित राशियों के लिए तथा तीसरी उसमें मौजूद ग्रहों के लिए, परंतु कई बार जैसा मैंने दर्शित किया है कि रंग नामों में होते हैं।

कुंडली के घरों से संबंधित रंगों की जानकारी 'खगोलीय संकेत विज्ञान' से प्राप्त होती है। ग्रहों से संबंधित रंगों की जानकारी ज्योतिषशास्त्र में मिलती है। राशियों के रंग इस प्रकार हैं—मेष लाल, वृष हल्का नीला, मिथुन पीला तथा कर्क हरा, सिंह पीला, कन्या गहरा हरा, तुला हल्का पीला, वृश्चिक काला, धनु जामुनी, मकर श्वेत, कुंभ नीला तथा मीन सलेटी या धूम्रवर्णी। इनमें से अनेक रंगों का परिष्करण उनके द्वारा विकीर्णित किए जानेवाले रंगों के अनुसार किया गया है। इसलिए मीन राशि का रंग बुझे हुए राख जैसा नहीं, बल्कि

चमकदार ग्रे अथवा मोतिया ग्रे है।

कर्क का जहां चमकदार हरा रंग है, वहीं कन्या का बुझा हुआ (हल्का) हरा। मैंने पाया है कि कई बार वृश्चिक गहरे रक्तवर्ण से संबंधित होती है, जैसे माणिक्य का रंग होता है। यह मेष के रंग के विपरीत होता है, जो चमकीले लाल अथवा रूबी के रंग का होता है।

यहां पर यह प्रतीत होता है कि एक ऐसा लाल रंग है, जो काले के समवर्ती है और दोनों ही बृहस्पति राशि से संबंधित हैं। रंगों के महत्त्व के विषय में अपने अनुभव द्वारा मैं इसी नतीजे पर पहुंचा हूं कि प्रभावकारी ग्रहों के संबंध में प्रभावकारी रंगों के अध्ययन के द्वारा एक व्यवस्थित वर्ण विज्ञान की स्थापना की दिशा में अग्रसर हुआ जा सकता है, जो निश्चय ही हमारे लिए लाभप्रद होगा।

जहां तक ध्वनियों का सबंध है, हमने पुस्तक में अन्यत्र वर्णित किया है कि ध्वन्यात्मक मान ग्रहों के प्रभावों से संबंधित हैं या कम-से-कम किसी नाम के इकाई मान तथा अंतरिक्ष विज्ञान की कैल्डियन प्रण.ली में मौजूद ग्रह से संबंधित हैं। वे उस दशा में किसी विशिष्ट काल में प्रत्यक्ष रूप से अपना संबंध दिखाते हैं, जब इकाई सुस्पष्ट हो। जिस तरह सरगम या ध्वनियां ग्रहीय शक्तियों से संबंधित होती हैं, उसी प्रकार अंक तथा उपयुक्त रंग भी।

C	D	E	F	G	A	B
☉	♄	☿	☽	♂	♀	♃
4			7			
	8	5		9	6	3
1			2			

कुछ संख्याएं अथवा ध्वनियों का इकाई मान ग्रहों से संबंधित होता है। अत: रश्मि. कंपनों के नियमों की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति में रंग, ध्वनि, संख्याएं सभी सम्मिलित होती हैं। शनि तथा 8 का अंक 'S' 'Sh' और 'Z' के उच्चारण से होनेवाली समस्त ध्वनियों से संबंधित है। वे गहरे नीले रंग से भी संबंधित हैं।

बृहस्पति तथा 3 के अंक का संबंध सभी तालव्य ध्वनियों जैसे Ch, J तथा 'मृदु G' से है। वे बैंगनी रंग से संबंधित हैं। मंगल तथा अंक 9 'K', 'दीर्घ G' तथा R से संबंधित है और संबंधित रंग लाल है। सूर्य और उससे संबंधित अंक 1 और 4 'A' और 'I' की ध्वनियों तथा नारंगी रंग से संबंधित हैं। यह व्यंजन M, D, T, से भी संबंधित है। शुक्र तथा संबंधित अंक 6 का संबंध स्वर O, तथा U W से है तथा रंग है नीला।

बुध तथा अंक 5 E की ध्वनि से तथा H और N एवं पीले रंग से संबंधित है। चंद्रमा का संबंध 7 तथा 2 से है तथा ओष्ठ्य ध्वनि 'B', 'P', 'F', 'V', एवं हरे रंग से है।

□ □

व्यावहारिक अंक ज्योतिष

अंक विज्ञान के सामान्य सिद्धांतों पर विचार द्वारा एक आधारभूमि तैयार करने के पश्चात अब हम इस विषय के परंपरागत तथा अनुभवजन्य प्रतिपादन की ओर अग्रसर हो सकते हैं। मेरा विश्वास है कि मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी गूढ़ शक्ति अथवा अंकों के अंतर्निहित रहस्यात्मक गुण के लिए किसी भी प्रकार का दावा नहीं किया गया है। यदि वे इस प्रकार की कोई धारणा करते हैं तो यह मानव मस्तिष्क के संगठित विचारों द्वारा गढ़े गए तर्कों की वजह से है।

मैं अंकों को सिर्फ संकेत चिह्नों के रूप में ही मानता हूं और इस धारणा के आलोक में यह अनुभव करता हूं कि यह बहुत हद तक संभव है कि मनुष्य के भाग्य की दिशा निर्धारण करनेवाली उच्च बौद्धिक सत्ता द्वारा उसका इस्तेमाल हमारे लाभ के लिए तथा हमारे मस्तिष्क तक संदेश पहुंचाने के लिए एक सार्वभौमिक भाषा के रूप में किया जाता है। यदि मानव मस्तिष्क अंतर्ज्ञान, स्वप्नों तथा देववाणियों द्वारा निर्देशित हो सकता है तो अंकों का उपयोग भी मूक भाषा के रूप में हो सकता है, जिसे वस्तुतः मैं 'मूक' वाक्पटुता की संज्ञा देता हूं।

जैसा कि पाइथागोरस ने कहा है—'विश्व अंकों की शक्ति पर निर्मित हुआ है।' इस दशा में दुनिया को समझने के लिए अंक महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। अनेक उल्लेखनीय भविष्यवाणियां अंकों के आधार पर अब तक की जा चुकी हैं तथा निश्चित ही की जा सकती हैं।

नास्त्रेदमस तथा ऐबी गोचिन ने अंकों का उपयोग भविष्यकथन के लिए किया। जब व्यवसाय अथवा भाग्य को बदलने के लिए नामों में परिवर्तन किए जाते हैं तो एक तरह से शब्दों के अंकीय मानों को मान्यता प्रदान की जाती है। 'अब्राम' को अब्राहम तथा जैकब को इजराइल के रूप में बदलना तथा हिब्रू लिपि में यही चीज की गई, यह सब इसी दिशा में संकेत करते हैं।

कुछ विधियां शब्दों के अंकीय मान पर आधारित होती हैं, जबकि कुछ ध्वनियों अथवा उच्चारण के मान पर अंतर स्पष्ट करने के लिए। यहां दोनों

ही उदाहरण प्रस्तुत हैं।

N	A	P	O	L	E	O	N	E		
5	1	8	6	3	1	6	5	1		=36=9= मंगल
B	U	O	N	A	P	A	R	T	E	
2	6	6	5	1	8	1	2	4	1	=36=9= मंगल

योग 36+36 = 72=9 मंगल

यहां पर शब्दों का ध्वनि मान अथवा प्रथम (First Name) तथा उपनाम (Surname) का इकाई मान 9 है, जो मंगल तथा अग्नि का अंक है। इससे तलवार, काटने, छेदने, दिशा-निर्देश, ताकत, हिंसा तथा संघर्ष का भी संकेत मिलता है। यह एक ऐसा नाम है जो प्रत्येक स्थान पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में दर्ज है। इस मामले में हमने हेडन की तालिका प्रयोग की है।

यदि इसी नाम का अंकीय मान ज्ञात करने के लिए हिब्रू प्रणाली उपयोग में लाई जाए तो Napoleone का मान होगा 361=10=1 सूर्य, Buonaparte का होगा 815=14=5 बृहस्पति, जो हिब्रू व्याख्या के अनुसार गरिमा, ताकत, अहम भाव, शासक भाव, वृद्धि तथा विस्तार का संकेत करता है। यह बहुत भाग्यशाली संयोग की ओर संकेत करता है।

अपने उल्लेखनीय कैरियर के दौरान उसने अपना हस्ताक्षर Napoleone Buonaparte के स्थान पर Napoleon Bonaprte, उसके बाद Napoleon Bonaparte से Napoleon और अंत में मात्र 'N—' के रूप में करना आरंभ कर दिया था।

अनेक व्याख्याकारों ने सफलतापूर्वक टैरोट द्वारा प्रयुक्त अंकीय मानों का प्रयोग किया है। विशेषकर 22 बड़े संकेताक्षरों का, जिसको मैंने अन्यत्र दर्शित किया है। वे रहस्यात्मकता के तीन चरणों का संकेत करते हैं तथा क्रमशः दस, सात और तीन चरणों में बने हुए हैं और 21, 'द क्राउन ऑफ द मैगी' या 22, 'मूर्ख' के रूप में समाप्त होते हैं।

टैरोट द्वारा अपनाई गई गणना प्रणाली में ये 22 महत्त्वपूर्ण संकेत संक्षिप्ततः इस प्रकार परिभाषित किए गए हैं।

1 एक जादूगरः जो सृष्टि के रचयिता का प्रतीक है। एक दक्ष कलाकार, जिसने विचारों की जादुई शक्ति से यह ब्रह्मांड बनाया। यह सृष्टि रचयिता के संकल्प, इच्छा, मर्जी तथा भौतिक शक्तियों में निपुणता का भी प्रतीक है।

2 एक पुजारिनः जो दैवीय दुनिया, संरचनात्मक कल्पना (सृजन के संकल्प से जुड़ी हुई) अथवा माया का प्रतीक है।

3 महारानीः दैवीय संकल्प की प्रथम अभिव्यक्ति और कल्पना तथा

कामुकता का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त यह चिंतन, उत्पादन, विस्तार, वृद्धि, संपन्नता तथा प्रचुरता का भी संकेत करता है।

4 धन अथवा सम्राट: गुणों की प्राप्ति, स्वीकृति और अस्वीकृति, तर्क और समाधान, उपलब्धि के माध्यम से सुख, भौतिक परिणाम, ठोस, स्थापना तथा नींव या आधार का संकेत करता है।

5 रहस्य व्याख्याता अथवा निपुण व्यक्ति: यह सार्वभौमिक नियमों, धर्म, अनुशासन, उपदेश तथा शिक्षा, स्वातंत्र्य तथा विनियमितीकरण का संकेत करता है।

6 दोराहा अथवा प्रेमीयुगल: यह अंतर या विच्छेद, अच्छे व बुरे का ज्ञान, अंत:करण उन्मुक्ति अथवा दायित्व, इच्छा तथा दैहिक संबंधों का संकेत करता है।

7 रथ: यह सप्त सिद्धांतों की जानकारी, चुंबकीय शक्ति, प्रज्ञा, अनुभूति, महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत देता है।

8 न्यायाधीश, खड्ग और संतुलन: यह प्रतिकार, निर्णय, विवेक, नियंत्रण, संयम तथा निष्पक्षता का प्रतीक है।

9 कुटिया अथवा ढंका हुआ दीपक: यह पुनर्जन्म या अवतार, ज्ञान, चौकसी, वर्गीकरण, चयन, विज्ञान, अनुसंधान तथा सावधानी का संकेत करता है।

10 स्फिंक्स (शेर के मुंहवाली मानवाकृति) अथवा भाग्यचक्र: यह कार्य और कारण, नैतिक नियमों, आवर्तन (कोई चीज एक निश्चित समयांतराल पर होना), परिवर्तन या क्रांति, वितरण आदि का संकेत करता है।

11 मुंह में छींका लगा हुआ शेर: यह बल, शक्ति, संकल्प, विजय, शक्ति की दिशा, निपुणता तथा जीवनशक्ति का प्रतीक है।

12 त्याग या बलिदान: यह धार्मिक पतन, स्थिति से नीचे होना या पदच्युत होना, हटा दिया जाना, उलट-फेर, पागलनपन, व्यक्तित्वहीनता, हानि तथा अकर्मण्यता का द्योतक है।

13 मृत्यु तथा फसल कटाई करनेवाला: यह परिवर्तन, प्रतिक्रिया, निराशा, इनकार, जड़ता, ढहने, बर्बाद हो जाने तथा मृत्यु का प्रतीक है।

14 दो कलश: ये जीवनीशक्ति, मैत्री, सामाजिक दायित्व, आपसी लगाव के प्रतीक हैं।

15 प्रचंड तूफान या शैतान: यह पाप, इच्छापूर्णता, रहस्य, विवाद, घातकता, उन्माद, द्वेष, दंगों तथा अराजकता का द्योतक है।

16 टूटी हुई मीनार: यह अचानक आई हुई विपत्ति, बुद्धिगर्व, आडंबर, महाप्रलय, भूकंप, तूफान, सत्ताच्युति तथा दुर्घटनाओं का संकेत देती है।

17 तारा: यह आस्था, आश्वासन, आशा ज्योति, अंतर्ज्ञान, जन्म, सफलता तथा आकांक्षाओं का प्रतीक है।

18 धुंधलका (सांझ की बेला) या चंद्रमा: यह अंधकार, संदेह, संकोच या हिचक, निषेध, मूढ़ता, पागलपन तथा विपरीत परिवर्तन का प्रतीक है।

19 महान प्रकाश अथवा सूर्य: यह जीवनीशक्ति, आकर्षण, प्रसन्नता, सुख, ताकत, सफलता, सम्मान, उन्नति तथा उपलब्धि का द्योतक है।

20 पुनरुत्थान: यह आध्यात्मिक जागरण, प्रज्ञा, आशा, सक्रियता, नया साम्राज्य, उपयोगिता, कार्य तथा व्यवसाय का प्रतीक है।

21 मुकुट: यह दीर्घ जीवन, शक्ति, निपुणता, दृढ़ निश्चय, सहनशीलता, हैसियत, सम्मान, विशिष्टता, संपदा तथा विरासत का प्रतीक है।

22 मूर्खता: यह आवश्यकता, अलगाव, अहंभाव, भोलेपन, दंभ, अंधता, बर्बादी तथा पागलपन का प्रतीक है।

नामों के इकाई मान की गणना में आखिर में इकाई मान ही महत्त्वपूर्ण होता है। हालांकि मान का समूचा योग भी कुछ हद तक विचारणीय होता है। वर्णमाला के एक या दो अक्षरों को उसके संचरनात्मक मान में कर देना सुविधाजनक होगा। गणना की दो प्रणालियों में अक्षरों के इकाई मान निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत हैं:

हिब्रू प्रणाली	पाइथागोरस प्रणाली
1- A, I, Y, Q, J	1- A, K, T
2- B, C, K, R	2- B, L, U
3- G, L, S	3- C, M, X
4- D, M, T	4 D, N, Y
5- E, N	5- E, O, Z, W
6- U, V, W, X	6- F, P, J
7- O, Z	7- G, Q, V
8- F, Ph, P, H	8- H, R, Hi
9- Th, Tz	9- I, S, Hu

अक्षरों के ग्रहों की गणना की ध्वन्यात्मक दृष्टि से मान इस प्रकार हैं:

1– A, E, Y अथवा I (दीर्घ)

2– B, K, R, PP, G, (कठोर) O (लघु) Q, X

3– J, G, (लघु) Sh, L

4– D, T, M

5– N

6- U, OO, V, W, S
7- Z, O, (आरंभिक)
8- P, Ph, F, H, (महाप्राण) Ch (कठोर)
9- Th, Tz,

अब दोनों प्रणालियों की व्याख्या के तरीके प्रयुक्त किए जाएंगे।

हिब्रू प्रणाली का उपयोग धर्मग्रंथों के प्रतीकों की व्याख्या में किया जाता है, जैसे जोहड़ों (एक किस्म का कबीला) में यह विशिष्ट रूप से टैरोट द्वारा 22 मुख्य संकेतकों की व्याख्या प्रणाली के उपयुक्त है। प्राचीन लेखकों ने अपने भेद को छिपाने में तीन प्रणालियों का उपयोग किया।

(क) तैमूर (Temurah): इसमें एक शब्द के अक्षर एक निश्चित तरीके के तहत बदल दिए जाते थे। उन्होंने पहले वर्णमाला को तीन लाइनों में लिखा, जो इकाई, दहाई तथा सैकड़े का प्रतिनिधित्व करती थी। इन लाइनों में स्थित प्रत्येक 9 अक्षरों को पुन: तीन वर्गों में बांटा गया।

एक वर्ग में आनेवाले अक्षर को उसी वर्ग में आने वाले किसी अन्य अक्षर की जगह रखा जा सकता था। उदाहरणार्थ:

9	8	7	6	5	4	3	2	1
90	80	70	60	50	40	30	20	10
900	800	700	600	500	400	300	200	100

(ख) ज्यामेट्रिया (Gimetria): यह ज्यामितीय प्रणाली थी जिसमें प्रत्येक शब्द उस शब्द का स्थान ले सकता था जिसका मान उसके बराबर हो।

(ग) नोटेरिकान (Notaricon): इसमें प्रतीक कला के नियमों द्वारा कुछ शब्दों का चयन किया गया था। इसमें शब्दों को किसी वाक्य के आरंभ, मध्य अथवा अंत से लिया जाता था जिससे वह उससे मिलकर नए शब्द का निर्माण कर लें।

अंतत: उनके पास एक गुप्त लेख विद्या थी, जो 'तैमूर' प्रणाली पर आधारित थी। उदाहरणार्थ 'ईश्वर ने कहा—प्रकाश होने दो' इस प्रणाली के रूप में निम्न प्रकार लिखा गया:

पाइथागोरस की प्रणाली में व्याख्या के लिए पाइथागोरस की वर्णमाला प्रयुक्त होती है।

इस प्रणाली में 50 तक की संख्या में प्रत्येक को दहाई से 100 तक बढ़ांया जाता है। इसका एक निश्चित महत्त्व है और बाद में आनेवाले प्रत्येक सैकड़े का भिन्न अर्थ होता है। यह झक्की प्रवृत्ति के लोगों को छोड़कर अन्य व्यक्तियों की व्याख्याओं में जोड़ा गया, जैसे 365= 'खगोल विद्या तथा ज्योतिष'। इसमें संदेह नहीं, इसमें एक वर्ष के भीतर पड़नेवाले 365 दिनों का ध्यान रखा गया है तथा 666= शत्रुता, गुप्त योजनाएं तथा द्वेषभाव, क्योंकि (प्रतीक) रहस्योद्‌घाटन ग्रंथ में इसका प्रयोग संख्याओं अथवा जंगली जानवरों के नामों के रूप में किया गया है, जिसे कुछ ने शैतान का पुनर्जन्म कहा तो कुछ ने दुष्चरित्रता का आरोप मढ़ते हुए इतिहासप्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ इसे जोड़ा।

वस्तुतः जब मिस्टर जेम्स प्रीज ने इसका प्रदर्शन किया, तो इसका अर्थ पशु मस्तिष्क से कुछ ज्यादा नहीं था। उदाहरणार्थ—किसी औसत व्यक्ति की प्राकृतिक या निम्न बुद्धिमत्ता।

पाइथागोरस की प्रणाली के अनुसार संख्याओं के मान अथवा संकेत इस प्रकार हैं:

1 = अधीरता, उन्माद (आवेग), महत्त्वाकांक्षा
2 = मृत्यु, घातकता, ध्वंस
3 = धर्म, आस्था, भाग्य
4 = मजबूती, शक्ति, ऊर्जा
5 = विवाह, आनंद, खुशी
6 = कार्य की पूर्णता
7 = विश्राम, सुख, शांति
8 = संरक्षण, न्याय
9 = दु:ख, चिंता
10 = विवेक, तर्क, सफलता, आकांक्षा
11 = अलगाव, अपराध, धोखा
12 = भाग्यशाली लेखन, कोई कस्बा या शहर
13 = दुष्टता, गलती
14 = त्याग, हानि
15 = गुण, संस्कृति, एकता
16 = विलासिता, कामुकता, सौभाग्य
17 = दुर्भाग्य, उपेक्षा, गुमनामी
18 = दु:ख, कठिनाई, संन्यास
19 = मूर्खता, पागलपन
20 = विवेक, कठिनाई, विषाद

21 = रहस्य, उर्वरता, उत्पादन
22 = प्रताड़ना, दंड, चोट या व्यथा
23 = विद्रोह, कट्टरता, पूर्वाग्रह
24 = यात्रा, निर्वासन, व्यतिक्रम
25 = बुद्धिमत्ता, परिश्रम
26 = परोपकारिता, उदारता
27 = वीरता, बहादुरी, साहस
28 = उपहार, लक्षण या शकुन, स्मृति चिह्न
29 = खबर, घटनाक्रम
30 = विवाह, समारोह, उत्सव
31 = अच्छाई, आकांक्षा, प्रचार
32 = विवाह, विवाहोत्सव, गर्भधारण
33 = भद्रता, गुण, गरिमा (प्रतिष्ठा)
34 = पीड़ा, बदला, दंड
35 = स्वास्थ्य, शांति, सामर्थ्य
36 = अंतर्ज्ञान, मेधा
37 = संकीर्णता, वैवाहिक आनंद
38 = दुर्भाव, द्वेष, लोभ, विद्रूपता
39 = विस्तार, सम्मान
40 = विवाह, उत्सव, अवकाश,
41 = अपमान, विवाद, दुरुपयोग
42 = अल्पायु, दुःख
43 = पूजा, धर्म, पवित्रता
44 = उन्नति, राजगद्दी, सम्मान, शान
45 = जनसंख्या, परिणाम
46 = उर्वरता, लाभकारिता
47 = दीर्घायु, सुख
48 = न्यायाधीश, निर्णय, न्यायालय
49 = कृपणता, धनलोलुपता
50 = स्वातंत्र्य, मुक्ति, सहजता
60 = युद्ध में शौर्य
70 = शुरुआत, विज्ञान, अखंडता, गुण
80 = संरक्षण, पुनर्प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ
90 = वेदना, प्रतिकूल, गलती, अंधता

100 = ईश्वर की अनुकूलता, देवदूतों का सहयोग
200 = हिचक, डर, अनिश्चितता
300 = दर्शन, ज्ञान, संरक्षण
400 = लंबी यात्राएं, तीर्थयात्रा, निर्वासन
500 = पवित्रता, धार्मिकता, चयन
600 = पूर्णता, पूर्ण कौशल
700 = शक्ति, साम्राज्य, अधिकार
800 = जीत, साम्राज्य, शक्ति
900 = संघर्ष, युद्ध, पुश्तैनी दुश्मनी, विस्फोट
1000 = दया, करुणा, सहानुभूति

किसी नाम की गणना करने में उपरोक्त पाइथागोरस की वर्णमाला में दिए गए मानो को शब्दों के स्थान पर प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात उसका योग किया गया है और संख्या को सैकड़े, दहाई तथा इकाई में विभक्त किया गया है।

इस प्रकार, जब हम महान लिबरल मिनिस्टर ऑफ स्टेट (विदेश मंत्री) विलियम एवर्ट ग्लैडस्टोन के नामों का इकाई मूल्य लेते हैं तो हमें प्राप्त होता है:

WILLIAM = 4922913=30=3
EWART = 54181=19=1
GLADSTONE = 721491545=38=2

तत्पश्चात योग 312 आता है। इससे हम पाते हैं:

300 = दर्शन, ज्ञान
12 = भाग्यशाली लेखन, एक शहर

और योग 312 का इकाई मान हम 6 पाते हैं, जिसका अर्थ है 6= कार्य में निपुणता।

ध्वन्यात्मक वर्णमाला का प्रयोग ग्रहात्मक महत्त्व के संबंध में किया गया है, जो अध्याय 5 में वर्णित है। मेरा विचार है कि ये मान भी साथ-साथ अत्यंत विश्वसनीय तथा सार्वभौमिक रूप से संतोषप्रद है। यह ध्यान रखना चाहिए कि सिर्फ उन्हीं अक्षरों का प्रयोग करना चाहिए, जो शब्द अथवा नाम को ध्वनित करते हैं।

मैं नेपोलियन का उदाहरण पहले ही दे चुका हूं। जिसके नाम का योग और इकाई मान 9 के बराबर है तथा जिससे तलवार, संघर्ष इत्यादि का संकेत मिलता है। उसी कूटलिपि का प्रयोग उपरोक्त नाम लेने पर हमें मिलता है:

GLADSTONE = 23146465=31=4
WILLIAM = 6314=14=5
EWART =16124=14=5
योग = 14=5

यहां 5 की संख्या व्यक्तित्व तथा वैयक्तिक गुणों को प्रमाणित करनेवाली है, जो महान शासक के व्यक्तिगत नाम में अंतर्निहित है। यह विवेक, तर्क, नैतिकता, यात्रा, वाणिज्य तथा उपयोग का संकेत करता है।

यह देखा जा चुका है कि तर्क, नैतिकता तथा उपयोगिता दलीय राजनीति के दायरे के बाहर के विषय हैं, जो इस व्यक्ति के साथ जुड़े हैं तथा इस नाम की गणना करने के मामले में प्रभावकारी हैं। उनके सर्वाधिक सफल विरोधी राजनीतिज्ञ के बारे में भी दृष्टिपात करना रोचक होगा:

BENJAMIN = 2153145=21=3
DISRAELI = 472131=18=9
योग = 12=3

यहां हमको विस्तार, वृद्धि, क्षमता, धन तथा सफलता आदि गुण नाम तथा उपनाम दोनों में मौजूद मिलते हैं, जबकि उपनाम का मान 9 संघर्ष, ऊर्जा, मनोरंजन, उत्सुकता को समाहित करता है; जो इस सफल तथा आकर्षक राजनीतिज्ञ के राजनैतिक जीवन से जुड़ी हुई है।

नाम में बृहस्पति=3 तथा मंगल=9 की युति से निरंकुशता की प्रवृत्ति का संकेत मिलता है। दूसरी ओर यह बेहद उत्साह का भी द्योतक है।

दूसरी ओर, ग्लैडस्टोन के नाम से बुध=5 तथा सूर्य=4 की युति देखते हैं। जिसका अर्थ ज्यादा सावधान, व्यवस्थित तथा व्यावहारिकता से है। अंक '5' की प्रभावकारिता महत्त्वपूर्ण मात्रा में तर्क तथा वाक्पटुता प्रदान कर रही है।

जॉन मिल्टन के नाम में हम सूर्य तथा चंद्रमा की युति पाते हैं, जो कि बुद्धिमत्ता, परिवर्तन, भ्रमण तथा विशिष्टता का द्योतक है, परंतु नाम का योग 8 आता है, जो जीवन को क्लेश तथा अभावों से भर देता है।

विलियम शेक्सपीयर के उल्लेखनीय नाम में बुध का दोहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है जो विवेक, तर्क का इशारा करता है तथा नाम का योग 10=1 अर्थात सूर्य को इंगित करता है जो सम्मान, विशिष्टता तथा वैयक्तिकता का संकेत करता है।

उसके महत्त्वपूर्ण समकालीन फ्रांसिस बेकन लॉर्ड वेरुलम तथा विसकाउंट सेंट अल्बनस के नाम के मान इस प्रकार हैं:

Francis = 821566=28=1

Bacon = 21225=12=3

नाम से वैयक्तितता, विशिष्टता, महत्त्वाकांक्षा, संपन्नता, वृद्धि, विस्तार, दर्प, प्राप्ति तथा भौतिकता का संकेत मिलता है। यह कई दृष्टियों से भाग्यशाली संयोग (युति) है।

एक अन्य किस्म का रहस्यज्ञान अत्यंत रुचिकर है, जो जन्मतिथि के साथ

जुड़ा हुआ है। इससे किसी व्यक्ति के जीवन में अच्छे तथा बुरे भाग्यशाली समय की क्रमिक जानकारी हासिल हो सकती है, जब टेरोट की वर्णमाला से उसकी व्याख्या करें, जहां से यह शुरू होती है।

जैसा कि पहले ही दर्शित किया जा चुका है कि हिब्रू, आर्य तथा ग्रीक प्रत्येक के पास रहस्यज्ञान की अपनी विधि मौजूद थी। उनमें शब्दों के स्थान पर अंकों का प्रयोग तथा अंकों को एक विशिष्ट महत्त्व देना शामिल था। अब मेरा लक्ष्य कुछ अन्य सामान्य रूप से स्वीकृत रहस्यज्ञान के उदाहरण प्रस्तुत करने का है, जिससे कि दूसरे व्यक्ति अपने परीक्षण तथा अध्ययन द्वारा प्राप्त वैयक्तिक अनुभव का लाभ उठा सकें।

हिब्रू वर्णमाला में टेरोट का विशिष्ट रूप से उल्लेख है, जो प्रत्यक्षतः सेमेटिक मूल से आया। यद्यपि इसकी अपेक्षाकृत कैथोलिक व्याख्या अधिक की गई। किसी व्यक्ति से संबंधित संकेतों के समाधान के लिए टेरोट प्रणाली इस प्रकार है:

सर्वप्रथम व्यक्ति के नाम में प्रयुक्त अक्षरों के स्थान पर उनके मान लिख लिए जाते हैं, तत्पश्चात नाम के अक्षरों के विपरीत स्थितिवाले अक्षरों से संबंधित संख्याओं से उन्हें गुणा किया जाता है।

प्रथम नाम तथा उपनामों का समाधान इस विधि से किया जाता है। प्रत्येक नाम के मानो को विस्तारित कर आपस में जोड़ा जाता है। उनका योग ही नाम का 'की नंबर' कहा जाता है। इसे उस वर्ष में जोड़ा जाता है, जिस वर्ष में जातक पैदा हुआ था। इससे जन्म योग मिलता है। जिसे विस्तारित करने और जोड़ने से किसी व्यक्ति का टेरोटिक हस्ताक्षर प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार जॉन मिल्टन 9 दिसंबर 1608 (O.S.) = 19 दिसंबर (N.S.) : सूर्य 9वीं राशि में, 28 डिग्री का।

		राशि	डिग्री
J 1x4 = 4	M 4X6 = 24		
o 7x3 = 21	i 1X5 = 5		
h 8x2 = 16	l 3X4 = 12		
n 5x1 = 5	t 4X3 = 12		
46	o 7X2 = 14		
	n 5x1 = 5		
योग = 46	72	9	28

तब 4 + 6 + 7 + 2 + 9 + 2 + 8 = 38 'की नंबर'

1608 वर्ष

1646 योग

यहां पर 'की नंबर' 38=11 है, जो टेरोटिक प्रतीक तालिका के 'छींका बंधे हुए शेर' से संबंधित है, जो बल, दृढ़ता, निपुणता, जीवनशक्ति का संकेत करता है। 'की वर्ष' या 'नेटिविटी' 1646=17, जो तारे से संबंधित है तथा आशा, प्रबोध, अंतर्ज्ञान तथा सफलता का संकेत करता है।

सूर्य की स्थिति तथा नाम की गणना से प्राप्त इस 'की नंबर' का प्रयोग तात्कालिक वर्ष में कर उस वर्ष का संकेत प्राप्त किया जाता है। जैसे:

'की नंबर'	38
वर्ष	1674
योग	1712 = 13

धनु से 28 डिग्री स्थित सूर्य की जन्मपत्री में पैदा हुए जॉन मिल्टन के संबंध में वर्ष 1674 का संकेत 13 है। टेरोट की प्रतीक तालिका में 13 का संकेत फसल काटता हुआ कंकाल, परिवर्तन, बर्बादी प्रतिक्रिया तथा मृत्यु है। यही वह वर्ष है, जिसमें जॉन मिल्टन की मृत्यु हुई थी।

टेरोट की प्रतीक तालिका के प्रयोग की एक अन्य विधि में किसी वर्ष तथा उस वर्ष में किसी व्यक्ति की आयु को आपस में जोड़ दिया जाता है। उस योग से तालिका में प्रतीक देखे जाते हैं तथा भविष्य की जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जब इसे एक टेरोट प्रतीक संख्या में बदल दिया जाए। इस तरह से नेपोलियन 1769 में पैदा हुआ था। वह अपने जीवन में पहला शासकीय दूत 1801 में 32 वर्ष की उम्र में हुआ था। 1801+32=1833=15 जो तूफान या शैतान का प्रतीक है।

1804 में 35 वर्ष की आयु में वह सम्राट बना। 1804+35=1839=21, जो सम्राट तथा हैसियत, शक्ति, सम्मान तथा विशिष्टता का प्रतीक है। 1809 में 40 वर्ष की उम्र में जोसेफाइन (नेपोलियन की पत्नी) से तलाक हुआ 1809+40=1849=22, टेरोट की प्रतीक तालिका के मुताबिक इसका अर्थ निरी मूर्खता, दर्द, विफलता, अंधता, विच्छेद, मूढ़ता आदि है। 1815 में 46 वर्ष की आयु में वाटरलू की लड़ाई में वह परास्त हुआ। 1815+46= 1861=16=टूटी हुई मीनार। तूफान का प्रकोप तथा बुद्धि, गर्व इसका परिणाम निरंकुशता की समाप्ति सत्ताच्युति बर्बादी तथा वंध्यता है।

ऐसे और उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण जरूरी नहीं है। प्रत्येक पाठक की जानकारी में ऐसे बहुत से दृष्टांत आते हैं तथा ऐसे दृष्टांतों से जुड़ी गणनाएं तथा संख्यात्मक मान निकालना बड़ा रोचक है। किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के नाम अथवा संबंधित तिथियों से जुड़े महत्त्व के आधार पर अन्य व्यक्तियों के गुणों को रेखांकित करना मुश्किल होगा।

यहां पर शाब्दिक रूप से टेरोट की प्रतीक तालिका में 21वीं कुंजी का

अर्थ साम्राज्य की प्राप्ति है। कम शक्तिवाला तथा कम महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति अपनी हैसियत में वृद्धि और सम्मान वृद्धि पर ही संतुष्ट हो सकता है। यद्यपि यह जान लेना ठीक होगा कि किस कार्य क्षेत्र में अपनी शक्ति लगाना अधिकतम फायदेमंद रहेगा। इसके लिए प्रतीकविज्ञानी एक यंत्र का प्रयोग करते हैं, जो तीन वर्गों पर आधारित है तथा शनि अथवा पूर्ति की तालिका है। 3 का वर्ग 9 है। यदि हम 1 से 9 तक अंकों का प्रयोग इस तरह से करें कि वह एक 'मैजिक बॉक्स' का निर्माण करे, जिससे प्रत्येक दिशा से एक ही योग आए, तब हमें यह चित्र प्राप्त होगा:

4	9	2
3	5	7
8	1	6

यहां हम पाते हैं कि उपरोक्त आकृति में किन्हीं तीन वर्गों में उल्लिखित संख्याओं को किसी भी दिशा से जोड़ने पर योग 15 आता है। यह संख्या (15) पहले ही पवित्र संख्या के रूप में उल्लिखित की गई है, क्योंकि यह देवता के नाम को अपने भीतर समाहित करती है।

1 से 9 तक की संख्याएं तीन वर्गों में बांटी गई हैं, जिनके नाम हैं–आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा भौतिक। सूर्य= 1, 3, बृहस्पति= 8 तथा मंगल= 9 आध्यात्मिक संख्याएं हैं।

7 (चंद्रमा), 5 (बुध) तथा 6 (शुक्र) बौद्धिक संख्याएं हैं जबकि 8 (शनि), 4 (सूर्य) तथा 2 (चंद्रमा) भौतिक संख्याएं हैं। अब हमारे समक्ष इन संख्याओं की एक अन्य व्यवस्था मौजूद है, जो इस तरह से होगी:

3	1	9
6	7	5
2	8	4

उपरोक्त आकृति की सबसे निचली पंक्ति में हम जीवनी शक्ति या सौर सिद्धांत, चंद्र सिद्धांत तथा इन दोनों के साथ होने की वजह से मृत्यु का सिद्धांत

इससे जुड़ गया है, जिसका प्रतिनिधित्व शनि करता है।

मध्य में शुक्र से जुड़ा भावुकता का सिद्धांत तथा बुद्धिमत्ता या बुध का सिद्धांत अंतर्निहित है। यह हर्मीज एवं एफ्रोडाइट (ग्रीक देवता) की तरह संयुक्त है। यह मानव की उचित विकास प्रक्रिया में मानसिक अथवा आत्मिक सिद्धांत का रूप ले लेता है, जिसका प्रतिनिधित्व सक्रिय चंद्र सिद्धांत द्वारा किया जाता है।

सबसे अगली पंक्ति में स्वातंत्र्य, विस्तार तथा वैयक्तिकता के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व हुआ है, जिसका संकेत क्रमशः मंगल, बृहस्पति तथा सूर्य करते हैं।

अगला चरण जातक की जन्मतिथि को लेना है। इसके लिए हमेशा जन्म के समय के पहलेवाली दोपहर की तिथि को लिया जाता है, क्योंकि वही ठीक सौर्य दिवस होता है, जो निरपेक्ष तिथि के 12 घंटे पीछे होता है। अतः 26 जून को सायं 5.40 की तिथि होगी–26 जून, जब 26 जून को 9 बजे सुबह की तिथि होगी 25, क्योंकि 26 तारीख दोपहर 12 बजे से पहले पूरी नहीं होगी। मान लें, एक व्यक्ति 26 जून 1899 को सुबह 10 बजे पैदा हुआ। यह हमें 25–6–99 तिथि देता है, तिथि में शताब्दी के अंकों का प्रयोग नहीं होता। उपरोक्त उदाहरण से हमें निम्नलिखित तालिका प्राप्त होगी:

		9
6		5
2		

जिस पहले बिंदु पर हमारा ध्यान जाता है, वह है 9 की पुनरावृत्ति। इसे व्यक्ति संबंध में विशिष्ट रूप नहीं, अपितु पीढ़ियों पर लागू माना जाना चाहिए। तत्पश्चात वह आत्मिक मुक्ति, ईर्ष्या तथा उत्सुकता की ओर आता है। अब हम 6 की ओर आते हैं, जो जन्म के महीने की विशिष्टता दर्शित करता है। यह कला की अभिव्यक्ति की दिशा में कलात्मकता तथा बुद्धि कौशल के तत्त्व का प्रतीक है। अब हमारे पास 2 की संख्या है, जो उस व्यक्ति की निजता से घनिष्ठ संबंध रखता है। यह तात्त्विक परिवर्तनों, लचीलेपन, अस्थिर भाग्य, किसी दिशा विशेष की ओर झुकाव नहीं, परंतु अधिक संवेदनशीलता की ओर संकेत करता है।

आखिर की संख्या 5 हमारा ध्यान खींचती है। यह वह संख्या है, जो उस व्यक्ति के भाग्य तथा गुण चरित्र की दिशा में अंतिम तथा वैयक्तिक मोड़ प्रदान करती है।

अगले चरण में हम 25699 का योग लेते हैं। यह हुआ 31=4, जो संपूर्ण व्यक्तित्व की व्यावहारिकता की ओर संकेत करता है।

अंततोगत्वा हम ग्रहों के मेल पर ध्यान देते हैं:

चंद्रमा (2) की युति शुक्र (6) से

मंगल (9) की युति बुध (5) से

पहला ग्रहीय मेल कला, संगीत, काव्य, सामाजिकता, परिष्कृत रुचियों का संकेत करता है, जबकि दूसरा ग्रहीय मेल उत्सुकता, चौकसी, घाघपन तथा अवसरवादिता को दर्शित करता है।

यह देखा जा चुका है कि उपरोक्त मामले में जन्मतिथि संबंधी योग 4 आया था। यह देखने में आएगा कि कोई भी तिथि, जो इकाई मान 4 से जुड़ती हो, इस जातक के लिए शुभ तथा भाग्यशाली होगी, जबकि उन जातकों के लिए जिनका इकाई मान 8 है, दुर्भाग्यशाली साबित होगी। इस फल का संकेत सूर्य (4) के शनि (8) विरोधी होने से मिलता है। शनि की प्रवृत्ति सूर्य तथा चंद्रमा दोनों को खराब करने की होती है। भौतिक सतह पर शनि (8) भ्रष्टाचार का तत्त्व है, जिसमें सूर्य (पुरुष) तथा चंद्रमा (स्त्री) का प्रकृति तत्त्व शामिल है, जैसा कि निम्नलिखित आकृति में दिखाया गया है:

परंतु सूर्य एवं चंद्रमा के उच्च संयोग की दृष्टि से यह विकास तथा वृद्धि के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है, जैसे कि आत्मिक बीज से भ्रष्टाचार की भूसी का आवरण या खोल निकल पड़ा हो। जहां यह कहा गया कि 'यह भ्रष्टाचार में लिप्त दिखाया गया है', वहीं इससे भ्रष्टाचार रहित होने का भी संकेत मिलता है, जो व्यक्ति की आत्मा से प्रकट होता है।

इस कारणवश हम यह संकीय सादृश मान लेते हैं:

	☉	
	☽	
	♄	

यहां यह दृष्टव्य है कि हर जगह ग्रहीय संख्याएं प्रयोग में लाई गई हैं। ग्रहीय व्याख्याओं को हम पहले ही देख चुके हैं। इस प्रणाली में:

1 का अर्थ है वैयक्तिकता, प्रभावकारिता, अहम भाव
2 का अर्थ है लचीलापन, परिवर्तन, अस्थिरता, यात्रा
3 का अर्थ है विस्तार, वृद्धि, विकास, समृद्धि
4 का अर्थ है प्राप्ति, भौतिकता, व्यावहारिकता, परिणाम, दर्द, आडंबर
5 का अर्थ है बुद्धिमत्ता, ज्ञान, क्रियाशीलता, व्यापार, भाषा, विज्ञान
6 का अर्थ है कला, काव्य, संगीत, सामाजिकता, लगाव, प्रीति
7 का अर्थ है मानसिक शक्ति, प्रभाव, लोकप्रियता, समुद्री यात्राएं, ग्रहणशीलता, हरफनमौलापन, प्रगति
8 का अर्थ है बीमारी, मृत्यु, क्षय, हानि, चोर, घायल, अपूर्णता, बाधा, अलगाव
9 का अर्थ है स्वतंत्रता, ऊर्जा, उत्सुकता, उत्साह, भेदनशक्ति, अग्नि, ऊष्मा आदि।

उल्लिखित संक्षिप्त तालिकाएं रुचिकर होंगी:

नेपोलियन ।

14-8-69

	1	9
6		
	8	4

योग 28=1

युतियां: सूर्य तथा मंगल –
सूर्य तथा शनि

सेसिल रोड्स

5-7-52

योग 19=1

युति: चंद्र तथा बुध

मैं समझता हूं कि अग्रलिखित तुलनात्मक तालिका मेरे पाठकों के लिए अत्यंत मनोरंजक सिद्ध होगी और उनके होठों पर मुस्कुराहट भी लाएगी:

शेक्सपीयर
14-8-69

3		
6		5
		4

योग 18=9
युतियां: बृहस्पति तथा शुक्र
बुध तथा सूर्य

मिल्टन
19-2-08

	1'	9
2	8	

योग 21=3
युतियां: सूर्य तथा मंगल
चंद्र तथा शनि

कैग्लिओस्ट्रो
19-6-43

3	1	9
6		
		4

योग 23=5
युतियां: सूर्य तथा बृहस्पति
सूर्य तथा मंगल
बुध तथा बृहस्पति

सेफेरियल
19-3-64

3	1	9
6		
		4

योग 23=5
युतियां: सूर्य तथा बृहस्पति
सूर्य तथा मंगल
बुध तथा बृहस्पति

सेंट लुइस
23-4-1215

3	1	
		5
2		4

योग 15=6

लुइस 16वां
23-8-1754

3		
		5
2	8	4

योग 22=4

यह ढांचागत एकरूपता भी स्पष्ट रूप से दर्शित करती है कि यही चीज फ्रांस के सेंट लुई तथा किंग लुईस 16वें के तुलनात्मक अध्ययन में पाई जा सकती है।

सेंट लुई के चार्ट में जहां हम पाते हैं कि सूर्य प्रभावकारी (कारक) ग्रह है तथा बृहस्पति के साथ युति में है, वहीं किंग लुई के चार्ट में उच्चतर सूर्य आच्छादित है तथा शनि निम्नतर सूर्य तथा चंद्रमा की युति के साथ संलग्न है। पहले मामले में हम पाते हैं कि ईसाई संत लुई साधु बनने के लिए राजगद्दी त्याग देते हैं। दूसरी ओर एक अभागे राजा का उदाहरण है, जो सत्ताच्युत किया गया और मृत्युदंड का पात्र बना। उसके पुत्र को जेल हुई और वह कारावास में ही मर गया।

अब नामों के संख्यात्मक मानो को तुलनात्मक रूप से देखें:

LOUIS IX= 3619 = 19 = 1 सूर्य

LOUIS XVI = 36116 = 17 = 8 शनि

यह उन दोनों के भाग्य के फर्क को बखूबी इंगित करता है।

जिन व्यक्तियों को प्रतीक विज्ञान में रुचि है, उन्हें मेरे द्वारा लिखित पुस्तक 'मैनुअल ऑफ आकलटिज्म' में दर्शित फ्रांस के दो सम्राटों के उल्लेखनीय प्रतीकों में भी रुचि होगी।

ओलिवर क्रॉमवेल का चार्ट उल्लेखनीय विशेषताएं दर्शित करता है। वह 4-5-1599 को पैदा हुआ अथवा पुरानी शैली में लिखें तो अप्रैल के 25वें दिन उसी वर्ष में:

योग 27=9

यहां उत्साह अग्नि तथा मंगल का खड्ग दर्शनीय है, क्योंकि यह वर्ष की संख्या में दो बार आता है तथा जन्मतिथि के योग में भी। इसमें मंगल-बुध तथा बुध-सूर्य की युतियां हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण निर्वासन भोगनेवाले नेपोलियन तृतीय का चार्ट एक ही रेखा में है। वह अपने गुणों तथा भाग्य के लिए उल्लेखनीय है। वह 20 अप्रैल 1808 को पैदा हुआ, उसका चार्ट इस प्रकार है:

योग 14=5

युतियां : चंद्र तथा शनि, सूर्य तथा शनि

इसमें उसके पुनर्स्थापित होने का बड़ा कमज़ोर आधार है।

इस़ किस्म के अनगिनत उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जहां गुण तथा भाग्य स्पष्ट रूप से विनिर्दिष्ट होते हैं। मैं यहां दो उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं:

3	1	9
		5
2		

योग 20=2

युतियां: सूर्य तथा बृहस्पति; सूर्य तथा मंगल तथा बुध।

होरातियो नेल्सन

29-9-58

		9'
		5
2	8	

योग 33=6

दाहिनी आंख तथा दाएं हाथ से वंचित होने का संकेत चंद्रमा तथा शनि की युति द्वारा मिलता है। प्रभावकारी दोहरा मंगल महान नौसेनाध्यक्ष के उत्साह तथा शौर्य को दर्शित करता है, जबकि मंगल तथा बुध की युति चालाकी, विदग्धता तथा चौकसी को दर्शाती है। योग 6 गुणों को शुक्र की विशेषताएं

प्रदान कर रहा है, जो रेखा में उत्तम नौसैनिक परंपराओं के अनुकूल हैं।

यह सावधानीपूर्वक देखा जा सकता है कि पुरानी रीतियोंवाली जन्मतिथियों पर विचार से पूर्व उन्हें नई रीति में बदल लेना चाहिए। आगे, खगोलीय विधि को सभी मामलों में लेना चाहिए। इसमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए, जब जातक को जन्म दोपहर में हो तो तिथि वही अथवा निरपेक्ष रहती है, जबकि यदि जन्म सुबह हुआ हो तो उसके पहले की तारीख लेनी चाहिए।

सम्राट विलियम द्वितीय का चार्ट इस प्रकार है:

27-1-59

	1	9
	7	5
2		

योग 24=6

युतियां हैं सूर्य तथा मंगल, जो आध्यात्मिक उत्साह तथा अनथक औत्सुक्यपूर्ण चरित्र को दिखाती हैं, जबकि चंद्रमा और बुध ज्ञान, क्रियाशीलता तथा वाणिज्य इत्यादि को दर्शाते हैं। जन्मतिथि का योग (6) इस चरित्र में कला तथा सामाजिकता का समावेश करता है।

साम्राज्य का चार्ट भी दर्शनीय है:

	1'''	
	7''	

योग 17=8

युतियां: सूर्य तथा चंद्रमा

यह तिहरे सूर्य तथा दुहरे चंद्रमा को दर्शाता है। इस आधार पर इसे उन्नति करना चाहिए पर योग दुर्भाग्यशाली है।

आयरलैंड तथा ग्रेट ब्रिटेन का चार्ट स्थिरता के तत्त्व को समाहित करता है:
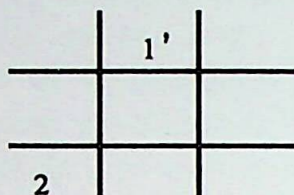
यदि यह सुबह के समय लागू हुआ होता, तब तब दोहरा सूर्य इसके भाग्य को निर्धारित करता, तब साम्राज्य को महान फायदा होता।

मैं समझता हूं, संपूर्ण तौर पर यह देखा गया है कि 'तीन के वर्ग' को जब उचित रूप में व्यवहृत किया गया है, तब बड़े चौंकानेवाले परिणाम आए हैं, चाहे वह गुणों की बात हो अथवा भाग्य का मामला हो। चीन के लोग भी इस चार्ट का उपयोग करते थे। संभवतः यह सबसे पुरातन रूपाकृति है, जिसमें मानव सभ्यता के अभिलेख दर्ज हैं।

□ □

नाम तथा अंक विज्ञान

अंकों के प्रतीक विज्ञान के सर्वाधिक रोचक प्रारूपों में से एक वह है, जो नाम के माध्यम से घटनाओं को शब्दों के संख्यात्मक मान से जोड़ता है।

वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का इकाई मान दिया गया है। यह मान हिब्रू कूट तालिका के अनुरूप है, जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। इन मानो को नाम के अक्षरों से उल्टे क्रम में गुणा किया जाता है तथा उससे जो भी संख्या प्राप्त होती है, उसे आपस में जोड़कर एक अंक या इकाई तक कर दिया जाता है। वह इकाई संख्या प्रतीक विज्ञान में तालिका या मुख्य संख्या (Key-Number) कहलाती है। इस मुख्य संख्या अथवा 'की नंबर' को टेरोट की तालिका से मिलाया जाता है। जिस संकेतांक से वह मिलता है, उस संकेतांक की विशेषताओं को जातक अपने भीतर समाहित करता है।

टेरोट तालिका का प्रत्येक संकेतांक चार आयामी व्याख्या अंतर्विष्ट करता है। वे हैं–आध्यात्मिक, बौद्धिक, मानसिक तथा भौतिक या शारीरिक। सिद्धांतों के क्षेत्र से उनके सहवर्ती निकलते हैं–सर्वप्रथम कार्य का सिद्धांत, दूसरा कारण का, तीसरा प्रभाव का और आखिर में परिणाम का, जो कि भौतिक जगत की ठोस वास्तविकता है। टेरोट तालिका के समस्त 22 प्रमुख संकेतों की पूरी व्याख्या मेरी पुस्तक 'मैनुअल ऑफ आकलटिज्म' में दी गई है, मगर मैं समझता हूं कि उसे संक्षेप में देना पाठकों के लिए ठीक रहेगा। इस प्रतीक विज्ञान में प्रयुक्त होनेवाली विधि को पाठक निम्नलिखित उदाहरण के द्वारा समझ लेंगे।

F R A N C I S   B A C O N

8 2 1 5 2 1 3   2 1 2 7 5 = 39

FRANCIS में 7 अक्षर हैं। अतः सबसे बड़ा गुणक 7 होगा, तत्पश्चातः

7x8 = 56

6x2 = 12

5x1 = 5

4x5 = 20
3x2 = 6
2x1 = 2
1x3 = 3
104 = 5

BACON में 5 अक्षर हैं, अतएव गुणा इस संख्या से होगाः

5x2 = 10
4x1 = 4
3x2 = 6
2x7 = 14
1x5 = 5
39 = 12

पूरे नाम की व्याख्या इस प्रकार होगीः

5 पुरोहित अथवा रहस्य ज्ञानी = सार्वभौतिक नियम, अनुशासन, धर्म, स्वतत्रता, कानून के दायरे में आजादी।

12 त्याग = दमन, प्रतिगामिता, सत्ताच्युति, पतन, अधोपतन।

नाम का योग होगा 5+12 = 17

ज्योतिषीय ताराः यह अनुसंधान, ज्ञान, प्रकाशवान तथा सफलता का संकेत करता है।

भाग्य का कारक 'तारा' एक उल्लेखनीय जन्म, उज्ज्वल भविष्य, मगर साथ ही असामाजिक विखंडन अथवा गुमनामी का भी संकेत करता है।

इस प्रतीक विज्ञान के संबंध में मुझे खुशी है कि मैं बेकन के 'मास्टरी ऑफ कबालिज्म' से एक दृष्टांत प्रस्तुत करने में समर्थ हूं। ये 'एसोसिएटिड अकाउंट जर्नल' में प्रकाशित हुए थे।

ये अपने भीतर पर्ण विपर्यय (Anagram) तथा कूट-बीज लेखन (Crytogram) तथा संख्यात्मक प्रतीक विज्ञान को समाहित करते हैं। 1623 में 'लव्स लेबर्स लास्ट, एक्ट' पारित हुआ। इसमें 'HONORIFI-CABILITUDINITATIBUS' शब्द को श्रेणीबद्ध किया गया। यह वर्ण विपर्यय '*Hi ludi orbi tuiti F. Baconis nati*' में प्रस्तुत किया गया है। विश्व को समर्पित ये नाटक एफ. बेकन द्वारा लिखे गए थे। इनमें अक्षरों के संख्यात्मक मान वर्णमाला के क्रम के मुताबिक थे। तथा । और J अक्षर एक जैसे रखे गए। इस प्रकार उपरोक्त वर्णों का संख्यात्मक मान इस तरह रखा गयाः

H O N O R I F I C A B I L I T U D I N I T A T I B U S

8. 14. 18. 14. 17. 9. 6. 9. 3. 1. 2. 9. 11. 9. 19. 20. 4. 9. 18. 9. 19. 1. 19. 9. 2. 20.18

वर्ण विपर्यय का प्रथम और आखिरी अक्षर प्रतीक विज्ञान में प्रयुक्त हुआ है जो इस प्रकार है:

8	H	I	9
11	LUD	I	9
14	ORB	I	9
19	TUIT	I	9
6	F.		
2	BACONI	S	18
13	NAT	I	9
73	+		63 = 136

यह पहला 'की नंबर' है।

दूसरा 'की नंबर' प्रत्येक शब्द के पहले तथा आखिरी अक्षर के बीच के अक्षरों के संख्यात्मक मानो को जोड़कर प्राप्त किया जाता है, जैसे:

U D R B U I T A C O N I A T

20 4 17 2 20 9 19, 1 3 14 13 9 1 19 = 151

आखिरी 'की' नंबर शब्द 'HONORIFICABILITUDINITATIBUS' में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह वर्ण विपर्यय '*Hi ludi orbi tuiti F. Baconis nati*' में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या द्वारा प्राप्त हो सकता है। दोनों में 27-27 अक्षर प्रयुक्त हैं।

इन संख्याओं से संदर्भित पत्रक हैं-

पेज	136
लाइन	27
शब्द	151

वाक्यांश से असंबद्ध सभी शब्द उल्लेखनीय शब्दों का निर्माण करते हैं, जिससे हम उसे अत्यधिक उल्लेखनीय प्रतीक विज्ञान की गणना में व्यवस्थित कर लेते हैं। बेकन प्रतीक विज्ञान के समस्त रूपों से सुपरिचित रहा होगा। क्या यही बात हम शेक्सपीयर के बारे में कह सकते हैं?

निम्नलिखित मानों से हम एक रोचक प्रतीक विधि प्राप्त कर सकते हैं:

A	B	C	D	E	F	G	H	I
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
1	2	3	4	5	6	7	8	9

इसका प्रयोग साथ प्रयुक्त होनेवाले नामों में ऐक्यता अथवा संबंध दर्शित करने के लिए किया गया है। साथ ही एक के स्थान पर दूसरे शब्दों का प्रयोग भी परिस्थितियों के दबाव की वजह से किया जा सकता है।

इस कूटलिपि द्वारा:

WILLIAM	= 34 = 7			
GLADSTONE	= 34 = 7			
NAPOLEON	= 38 = 2			
BONAPARTE	= 38 = 2			
JACK	= 7,	JHON	= 7	
FLO	= 7,	FLORENCE	= 7	
HARRY	= 7,	HENRY	= 7	

ये उदाहरण 7 के संख्यात्मक मानवाले उन व्यक्तियों के हैं, जिनके प्रथम नाम विलियम=7 तथा हैरी=7 हैं।

एक अन्य संबंधित नाम का उदाहरण किया गया है:

CRIPPEN = 9 Le NEVE = 9

मोटे तौर पर देखने पर ये उदाहरण उपयोगी तथा रोचक लग सकते हैं, परंतु 'कूटलिपि' उनकी कोई सांकेतिक व्याख्या प्रस्तुत नहीं करती। टेरोट के साथ संबंधित हिब्रू कूटलिपि तथा ज्योतिष के साथ ग्रहीय कूटलिपि दूसरी ओर निरंतर प्रतीकात्मकता की ओर संकेत करती रहती है। यह दर्शित किया जा चुका है कि एक युद्धपोत के नाम में निहित संख्यात्मक मान को जब हिब्रू लिपि के अक्षरों में अथवा टेरोट तालिका के 22 संकेताक्षरों की सीमा में रखा जाता है तो वह टेरोट के संबंधित संकेतों के माध्यम से व्यक्ति के गुण और भविष्यकथन का खुलासा करती है।

अमेरिकी युद्धपोतों में त्रासदपूर्ण तथा दुर्भाग्यशाली मैनी (MAINE) का योग 41155=16 आता है, जो टेरोट तालिका में टूटी हुई मीनार, महाविपत्ति, किले पर कब्जे के रूप में संकेतित है। ब्रिटिश युद्धपोतों में तीन के नाम अशुभ हैं:

SERPENT	= 3528554	= 32 = 5	
VIPER	= 61852	= 22	
COBRA	= 27221	= 14	

टेरोट की 22वीं कुंजी महामूर्खता, अज्ञात संकट तथा गलती का संकेत करती है।

जबकि 14वीं कुंजी दो कलशों की ओर, जो नौका के दो भागों में टूटने का संकेत है।

8 के अंक का महत्त्व सर्पों तथा सरीसृपों से संबंधित है। यह मृत्यु, हानि से जुड़ा है, जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

जहाज जिनका संख्यात्मक मान 8 है।

BIRKENHEAD (बिर्केनहेड) = 2122558514 = 35 = 8

एक अन्य अभागे जहाज का नाम Royal-George है, जिसका मान 12 आता है। टैरोट तालिका में 12 का संकेत त्याग, शिकार, अधोपतन, सत्ताच्युत होना आदि है।

'मैनुअल ऑफ आकलटिज्म' में मैंने एक प्रतीक संकेत विधि प्रकाशित की है, जो 'सीक्रेट प्रोग्रेशन' के नाम से है। यह जटिल समस्याओं के समाधान में प्रयुक्त होती है। वह इस प्रकार है:

ब्रिटेन के 36 बड़े कस्बों में एक हफ्ते के भीतर (एक ही वर्ष में) पैदा हुए व्यक्तियों की संख्या (रजिस्ट्रार जनरल की रिपोर्ट के अनुसार) ले लें। इसमें से उन व्यक्तियों की संख्या ज्ञात करनी थी, जो आगामी वर्ष में उन्हीं कस्बों में संबंधित हफ्ते में जन्म लें। यह समस्या सफलतापूर्वक 'काबला ऑफ द सीक्रेट प्रोग्रेशन' से हल कर ली गई।

यह काबला (प्रतीक प्रणाली) जब पूर्ण होती है, तो चार परीक्षणों से संबंधित होती है:

लघु योगात्मक (Minor addictive), दीर्घ योगात्मक (Major addictive) तथा लघु विभेदक (Minor diffrential) तथा दीर्घ विभेदक (Major differential)। इनसे संबंधित संपूर्ण प्रक्रियाएं उदाहरणों में दर्शित की गई हैं। यहां मैं सिर्फ योगात्मक तालिका (Addictive key) का उदाहरण पेश करूंगा। ये मामले लॉटरी के परिणामों से संबंधित हैं तथा मेरे समक्ष एक संवाददाता ने पेश किए थे। पहले हजार में पिछले पांच विजेताओं के नंबर इस प्रकार थे:

342, 651, 298, 542, 631

और मुझे अगले का नंबर पता लगाना था। लघु योगात्मक प्रणाली (Minor addictive) के अनुसार:

```
1.  342 =  9 = 9
                  = 12 = 3
2.  651 = 12 = 3           = 7
                  =  4 = 4      = 14
3.  298 = 19 = 1           = 7
                  =  3 = 3      = 13
4.  542 = 11 = 2           = 6
                  =  3 = 3
5.  631 = 10 = 1                = 12
                           = 6
                  =  3 = 3
6.     ? . . . 2
```

ध्यान देने पर पता लगता है कि क्रमशः 14, 13, 12 का संख्यात्मक क्रम इन लाटरी परिणामों में विद्यमान है। इस पद्धति के अनुसार अगला नंबर 2, 11 अथवा 20 होगा।

दीर्घ योगात्मक प्रणाली (Major-addictive) द्वारा:

```
342
    =  993 = 21
651             =43
    =  949 = 22      =77
298             =34
    =  840 = 12      =58
542             =24
    = 1173 = 2       =39
631             =15
?               3
```

इससे एक ऐसी संख्या प्राप्त होती है, जिसे 631 में जोड़ने पर पूर्णांक के योग का इकाई मान 3 आया। दो किस्म की संख्याओं की शृंखलाएं हमारे सामने हैं। जिनके बीच बराबर का अंतर विद्यमान है–14, 13, 12–77, 58, 39 हमने वांछित संख्या प्राप्त करने के लिए उसे संबंधित कुछ मान्य प्राप्त किए।

दीर्घ योगात्मक प्रणाली हमें इसके निकट पहुंचाती है। आकलन (लघु तथा दीर्घ योगात्मक) प्रणाली द्वारा बड़ी शीघ्रता से हमें 497 संख्या प्राप्त होती है, जो सभी परीक्षणों पर खरी उतरती है। इसका पूर्णांक 2 प्राप्त होता है, जो कि लघु योगात्मक प्रणाली द्वारा वांछित है। अतएव 4+9+7=20=2, जब इसे 631 में जोड़ा जाता है, तो आखिरी संख्या 1128 = 1+1+2+8 = 12=3 प्राप्त होती है, जो कि दीर्घ योगात्मक प्रणाली (Major addictive process) द्वारा वांछित है। बाद में देखा गया कि छठी शृंखला में 497 नंबर की लाटरी विजेता साबित हुई।

एक संवाददाता ने इस सफल संकेतात्मक विज्ञान का उदाहरण मेरे पास भेजा था। आंकड़े, वास्तविक सार्वजनिक लाटरी परिणामों से लिए गए हैं। पांच विजेता संख्याएं 30, 46, 77, 30 तथा 79 थीं। छठीं वांछित संख्या का पता करना था।

लघु योगात्मक प्रणाली के प्रयोग द्वारा:

```
30 =  3
          =  7
46 = 10          =11 =  2
          =  4             =  8
77 = 14          =15 =  6
          = 11             = 12
30 =  3          =24 =  6
          =  3             = 16
79 = 16          =19 = 10
          =  6
?    10
```

इन संख्याओं में अंतराल बराबर का है। अतः वांछित संख्या 79 का अवकलन होगी, जिसका पूर्णांक 6 बनता हो। आगे जोड़ घटाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि एक ही संख्या है, जो इस आवश्यकता को पूरा करती है, वह है 19, जिसके पूर्णांक 10 को 79 में घटाने पर 60 प्राप्त होता है। विजेता लाटरी का नंबर 19 ही रहा।

उन संख्यात्मक अवरोहों का सफलतापूर्वक प्रयोग उन्होंने किया, जो खुद को काउंट कैग्लिओस्ट्रो कहते थे। उन्होंने घटनाओं के क्रम में तब एक संबंध पाया, जब उन्होंने तार्किकता के साथ संरचनात्मक चक्र को ध्यान में रखा। उनके मुताबिक संख्यात्मक शृंखला इस प्रकार थी:

जॉर्ज I ने सत्ता छोड़ी	1714
1+7+1+4	13
जॉर्ज II ने सत्ता छोड़ी	1727
1+7+2+7	17
स्टुअर्ट का विद्रोह	1744
1+7+4+4	16
जॉर्ज III ने सत्ता छोड़ी	1760
1+7+6+0	14
अमरीकन विद्रोह	1774
1+7+7+4	19
फ्रेंच क्रांति	1793
1+7+9+3	20
महासंघ बना	1813
प्रिंस जॉर्ज रीजेंट बने	

रॉब्स पियरे का 1794 में पतन फ्रांस के इतिहास चक्र में एक और तीली जोड़ जाता है।

रॉब्स पियरे का पतन	1794
1+7+9+4	21
नेपोलियन का पतन	1815
1+8+1+5	15
चार्ल्स का पतन	1830
1+8+3+0	12
ड्यूक डी, ओरलैंस की मृत्यु	1842

(लुईस फिलिप का बड़ा पुत्र तथा फ्रांस की राजगद्दी का हकदार)

इस प्रकार हम देखते हैं कि इतिहास से संख्यात्मक आवृत्ति के नियम

की पुष्टि होती है। इस प्रकार के उदाहरण हम वैयक्तिक मामलों में भी पाते हैं। वे व्यक्ति जो बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से अंक विज्ञान का अध्ययन करते हैं, वे पाएंगे कि निरंतर उसके नियमों की पुष्टि हो रही है, जो कि अंतरिक्षीय संबंधों में देखा गया था तथा जैसा कि कैप्लर के नियमों में अभिव्यक्त हुआ था। जिसके द्वारा हम जानते हैं कि एक प्रक्षेपणीय शक्ति उल्टे तरीके से परिवर्तित होती रहती है, जिस तरह दूरी का वर्ग, जिसको प्रवर्तन सौर्यमंडल के संबंध में करने पर बोडे के नियम की निष्पत्ति होती है, जिसे इस प्रकार लिखा गया है:

☿	♀	⊕	♂	⚹	2	♄	♅
0	3	6	12	24	48	96	192
$\frac{4}{4}$	$\frac{4}{7}$	$\frac{4}{10}$	$\frac{4}{16}$	$\frac{4}{28}$	$\frac{4}{52}$	$\frac{4}{100}$	$\frac{4}{196}$

ये आंकड़े सूर्य से ग्रहों की आनुपातिक दूरी के हैं, जहां R.V. Earth=10 है। वास्तविक पद इस प्रकार होगा:

☿	♀	⊕	♂	⚹	♃	♄	♅
3.9	7.2	10	15.2	—	52	95.4	191.8

यदि ग्रहों का एक-दूसरे पर प्रभाव नहीं होता तथा उनकी गतियां एक जैसी होतीं तो उनके बीच की दूरी उल्लिखित आनुपातिक दूरी दर्शित नहीं करती।

खगोल विज्ञान का संपूर्ण आधारभूत कार्य इस बिंदु पर ध्यान देना है कि प्रकृति में आनुपातिक संबंधों की मौजूदगी है। संख्यात्मक संबंधों तथा परिणामस्वरूप अंकों का अध्ययन उनके गुण तथा समन्वय की जानकारी से मनुष्य आकाशीय नियमों की बड़ी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है, जिसके लागू होने से ब्रह्मांड तथा मनुष्य के वैयक्तिक-सामूहिक भाग्य का भी पता लगाया जा सकता है।

खगोलीय तथ्यों की पारस्परिकता की व्यवस्था से ज्यादा प्रकृति की एकात्मकता तथा अपने अवयवों से स्थापित संबंधों के रक्षण की प्रवृत्ति से ज्यादा विश्वसनीय और कुछ नहीं हो सकता। इस व्यवस्था में हर एक वस्तु अस्थिर शांति की दशा में मौजूद है, जहां दूरियों के अनुपात तथा ग्रहों की गतियां बाधारहित मौजूद हैं। अतएव, अपने गठन के अपरिवर्तनीय नियमों के पालन के समय प्रकृति प्रत्येक जीवधारी को परिवर्तन, विकास तथा अवसर भी प्रदान करती है।

□□

अंक और भविष्यकथन

पूर्व अध्याय में वर्णित सिद्धांतों को लाटरियों के नंबरों तथा कुछ अन्य मामलों में लागू किया जा सकता है तथा इस दिशा में की गई पड़ताल ने हमें अनेक आश्चर्यजनक परिणाम दिए। लाटरियों से संबंधित एक सफल प्रणाली का दृष्टांत प्रस्तुत करने के लिए मुझे एक अन्य प्रतिपादन गुप्त आरोह-अवरोह (Secret Progression) की शरण में जाना होगा।

लाटरी के आखिरी 5 ड्रा के नंबर प्राप्त कर उन्हें एक लाइन में व्यवस्थित करें तथा उन्हें लगातार घटाते हुए कम करें (यदि जरूरी हुआ तो 90 जोड़ लें, क्योंकि ड्रा में 90 नंबर मौजूद है)। इस प्रकार नंबरों की एक दूसरी लाइन प्राप्त हो जाएगी। पुनः वही प्रक्रिया दोहराई जाएगी, तो तीसरी लाइन प्राप्त होगी। एक बार फिर वही विधि इस्तेमाल करने पर चौथी लाइन प्राप्त हो जाएगी। प्रत्येक लाइन में एक संख्या कम कर देने पर और हमें आखिरी नंबर प्राप्त हो जाएगा।

उदाहरणः रोम लाटरी के पांच परिणाम इन अंकों के निकले–63, 48, 60, 27 तथा 81, यहां हम मातृ संख्या (Mother number) निकालने के लिए घटाने की प्रथम क्रिया करते हैं:

63
    75
48   27
    12   18
60   45   24
    57   42
27   87
    54
81

इस प्रकार मातृसंख्या (Mother number) 24 प्राप्त होती है। यह 2 दहाई तथा 4 इकाई से बनी है। दहाई को एक लाइन के बाईं ओर सामान्य अनुक्रम में आनेवाली संख्या के साथ तब तक रखते रहें, जब तक कि तीन लाइनें नहीं बन जातीं। इस प्रकार:

2	3	4
5	6	7
8	9	1

यहां 2 की संख्या 24 में से दहाई का प्रतिनिधित्व करती है। अतएव यह पहले स्थान पर रखी जाती है। तत्पश्चात 3 4 5 6 7 8 9 आती हैं। जब यह देखा जाता है कि वर्ग में 1 की संख्या के लिए स्थान खाली रहता है, जो कि इस श्रृंखला को पूरी करती है।

अब इकाई पर विचार करते हैं। मातृसंख्या की इकाई को पहले वर्ग में रखते हैं:

24	3–	4–
5–	6–	7–
8–	9–	1–

दूसरी इकाइयां मातृ संख्या (Mother number) की इकाई में 5 जोड़कर प्राप्त की जाती हैं, उसमें से यदि जरूरी हुआ तो 9 कम कर दिया जाता है। इस प्रकार मातृसंख्या (Mother number) की इकाई 4 है। उसमें 5 जोड़ेंगे तो हमें 9 प्राप्त हो जाएगा, जो कि तदनुसार दूसरी दहाई की इकाई है, जो 39 का निर्माण करता है।

9 में 5 जोड़ें और प्राप्त योग 14 में से 9 घटाएं तो हमें तीसरी दहाई की इकाई प्राप्त हो जाएगी। यह प्रक्रिया तब तक जारी रखें, जब तक श्रृंखला पूरी न हो जाए। तब वर्ग इस प्रकार होगा:

24	39	45
51	66	72
87	93	18

अगले चरण में संख्याओं के जोड़े बनाएं और उन्हें आपस में जोड़ें। अगर योग 90 से ज्यादा आता है, तो उसमें से 90 घटाएं। परिणामस्वरूप छह संख्याएं प्राप्त होंगी:

24 + 39= 63	84=39+45
51 + 66= 27	48=66+72
87 + 93= 90	21=93+18

आखिर में इन संख्याओं का पुनः जोड़ा बनाएं। तब हमें तीन संख्याएं प्राप्त होंगी:

63+84=147−90= 57
27+48=75 75
90+21=21 21

उक्त तीन संख्याएं मातृसंख्या (Mother number) की संतति संख्याएं (Daughter numbers) होंगी:

57, 75, 21

यह प्रक्रिया पांच बार करनी है। दूसरे शब्दों में 6 जनवरी 1894 की तिथि से, जो हम अपनी संख्याओं को मातृसंख्या में घटाने के लिए लेते हैं।

पांच तिथियों पर हुए लाटरी ड्रा के उदाहरण प्रस्तुत हैं:

13 जनवरी	44−1−63−5−25	(विजयी नहीं)
20 जनवरी	37−9−39−21−1	(चौथा पुरस्कार)
27 जनवरी	80−57−15−14−69	(दूसरा पुरस्कार)
3 फरवरी	80−83−4−19−78	(विजयी नहीं)
10 फरवरी	57−76−59−81−74	(प्रथम पुरस्कार)

अतएव अगली बार 15= 5x3, 42−15= 27 की संख्या फायदेमंद रहेगी।

इतालवी लोग इन संभावनाओं का पता लगाने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग करते हैं, जिस विधि का सर्वाधिक प्रयोग होता है, वह है पिरामिड। इसके लिए वे आखिरी ड्रा से नंबर लेते हैं। लाटरी ड्रा प्रत्येक सप्ताह होता है तथा पांच विजेता नंबर होते हैं। उन्हें वे व्यवस्थित करते हैं तथा इकाई मान

में परिवर्तित कर लेते हैं:

44–1–63–5–25

8–1–9–5–7
8–1–9–5–7
7–2–9–1–5

5–4–9–2–1

इकाई मानों का दोगुना करके 9 को बाहर करने के पश्चात आपस में उन्हें जोड़ लिया जाता है। परिणामस्वरूप 7, 2, 9, 15 प्राप्त होते हैं। इन्हें पुन: ऊपर की दो पंक्तियों में 9 को छोड़कर जोड़ लिया जाता है। अतएव हमें 5, 4, 9, 2, 1 की संख्याएं प्राप्त होती हैं।

इन्हें बाएं से दाएं लिखा जाता है तथा 1 की संख्या को निर्णायक बिंदु मानते हुए पुन: दाएं से बाएं दोहराया जाता है:

5 4 9 2 1 2 9 4 5

यह हमें पिरामिड का आधार प्रदान करता है। 9 को अंकों के जोड़ों द्वारा पिरामिड का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार:

5 4 9 2 1 2 9 4 5
9 4 2 3 3 2 4 9
4 6 5 6 5 6 4
1 2 2 2 2 1

जब तक चौथी पंक्ति शुरू होती है, बाएं तथा दाएं से दो-दो संख्याओं का चयन किया जाता है, जो तद्नुसार अगले ड्रा के चयनित नंबर होंगे।

44–1–63–5–25 के अंक रोम में 13 जनवरी, 1894 को निकले। ये 12 अथवा 21 की संख्या का संकेत करते हैं। इसी के अनुसार 20 जनवरी के विजयी नंबर थे–37–9–39–21–1–इन नंबरों में एक नंबर वह भी है, जो पहले चयनित किया गया था। अत: परिणाम संतोषजनक है।

उत्सुक पाठक शायद इस प्रणाली का मूल्यांकन स्वयं करना चाहें। इसलिए मैं यहां जनवरी में संपन्न हुए लाटरी ड्रा के नंबर देता हूं, जो इस प्रकार थे:

6 जनवरी 63 –48 –60 –27 –81
13 जनवरी 44 – 1 –63 – 5 –25
20 जनवरी 37 – 9 –39 –21 – 1
27 जनवरी 80 –57 –15–14 –69

मैं लाटरियों से संबंधित सद्भावनाओं की दृष्टि से एक अन्य 'की'

(संकेतक) को प्रस्तुत करूंगा।

प्रत्येक माह के पहले ड्रा से संबंधित पांच संख्याएं इस विधि की गणना का आधार हैं तथा वे उसी महीने के बाकी तीन हफ्तों के लिए उपयोगी होती हैं।

1 ड्रा से संबंधित संख्याओं के इकाई मान में परिवर्तन करें। पहले में 3, दूसरे में 1, तीसरे में 4, चौथे में 1, पांचवें में 5 जोड़ें। फिर उन संख्याओं तथा इकाई मानों का योग करें। आखिरी नंबर को हासिल (Reserve) रख लें।

2. यही प्रक्रिया पुनः दोहराएं। महीने के पहले योग में 1 जोड़ लें, दूसरे में 4, तीसरे में 1, चौथे में 5 तथा पांचवें में 3 जोड़ें।
3. उन्हीं संख्याओं में क्रमशः 4, 1, 5, 3 तथा 1 जोड़ें।
4. उन्हीं संख्याओं में 1, 5, 3, 1, 4 जोड़ें।
5. पुनः उन संख्याओं में 5, 3, 1, 4 तथा 1 जोड़ें।

अब हमें संपूर्ण संख्याओं के पांच योग तथा इकाई मान के पांच योग प्राप्त हो जाएंगे। यह देखने में आएगा कि इकाई मान का योग दो संख्याओं में आया है। इन दोनों को आपस में जोड़कर तीसरी संख्या प्राप्त कर लें।

ये तीन संख्याएं महीने के बाकी तीन सप्ताहों में जरूर लाटरी ड्रा में विजयी संख्याएं साबित होनी चाहिए।

उदाहरणार्थः 6 जनवरी 1894 को रोम में लाटरी के निकाले 'ड्रा' के नंबर 63, 48, 60, 27, 81 रहे।

1. अब उनका इकाई मान ज्ञात कर लेते हैं:

	63=9	48=3	60=6	27=9	81=9
जोड़	3	1	4	1	5
कुल	12	4	10	10	14=50
इकाई	3	4	1	1	5=14
2.	9	3	6	9	9
	1	4	1	5	3
	10	7	7	14	12=50
	1	7	7	5	3=23
3.	9	3	6	9	9
	4	1	5	3	1
	13	4	11	12	10=50
	4	4	2	3	1=14

4.	9	3	6	9	9
	1	5	3	1	4
	10	8	9	10	13=50
	1	8	9	1	4=23
5.	9	3	6	9	9
	5	3	1	4	1
	14	6	7	13	10=50
	5	6	7	4	1=23

इस उदाहरण में हमारे पास इकाई योग 14, 23 हैं, जिन्हें जोड़ने पर 37 आता है। ये तीन नंबर 13, 20 तथा 27 जनवरी 1894 को हुए ड्रॉ के लिए आते हैं। परिणाम आता है:

13 जनवरी 44 - 1 -63 - 5 -25
20 जनवरी 37 - 9 -39 -21 - 1
27 जनवरी 80 -57 -15-14 -69

यह भी ध्यान दें।

14= 5
23= 5
37= 10= 1, जो नंबर दो बार आया।

यदि जो नंबर 'ड्रा' हुए उनके इकाई मान के योग में 14 जोड़ें तो वह परिणाम के इकाई मान के बराबर होगा जैसे:

9-3-6-9-9=36
जोड़ें 14
50=5
संभाव्य संख्या 14=5
" " 23=5

35 की इस संख्या को उसके पांच खंडों में बांटा जाता है-3, 1, 4, 1, 5 तो संभाव्य संख्याएं 17 तथा 26 आती हैं। उन्हें आपस में जोड़ने पर योग 43 आता है। संख्या 17, 26, 43 अगले तीन 'ड्रा' में आएंगे। परिणाम था:

10 फरवरी 57 -76 -59 -81 -74
17 फ़रवरी 68 -17 -42 -57 -31
24 फरवरी 43 -79 - 8 -13 -25

यहां पुनः सबसे बड़ा तथा सबसे छोटा 'ड्रा' नंबर इस नियम के मुताबिक ही आया। जब यूनिट इकाइयों के मान का योग संख्याओं के योग तथा उसमें 14 जोड़ने के बाद आए योग के बराबर हो, तो इस संख्या को सदैव सुरक्षित रखना चाहिए तथा इस दशा में संख्या 14 विजेता संख्या होगी।

अतएव 3 मार्च 1894 को 30, 19, 37, 35, 73 नंबर 'ड्रा' में निकले। उनके इकाई मान (Unit-value) थे:

3-1-1-8-1=14
+ 14
28

लेकिन यह भी जोड़ें

3-1-1-8-1
3-1-4-1-5
6-2-5-9-6=28

जो कि इकाई मान है।

लेकिन यह जोड़ें:

3-1-1-8-1
1-4-1-5-3
4-5-2-13-4=28
तथा 4-5-2-4-4=19
47

अतएव 47 बन गया 74 तथा 14 हमारा दूसरा नंबर बनेगा, जो 28 का गुणक है। बाद में हुए 'ड्रा' का परिणाम इस प्रकार रहा:

10 मार्च 22 - 74 - 44 - 43 - 81
17 मार्च 36 - 68 - 14 - 25 - 57
24 मार्च 72 - 14 - 36 - 2 - 40
31 मार्च 62 - 6 - 14 - 78 - 26

यहां पर हमारी संभाव्य संख्याएं कम से कम 4 बार 'ड्रा' में आईं। यह प्रतीक विज्ञान (kabala) अपरिवर्तनीय नहीं है, लेकिन इसका एक आधार अवश्य है, जो इसे अत्यधिक मूल्यवान बनाता है। इसके प्रतिमान इस प्रकार हैं:

संख्याएं 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9= 45 तथा 4+5 = 9, अतएव 9 की संख्या ही इकाई मान का आधार तथा सभी संभाव्यताओं की थाह पाने की चाभी है। 3. 1415=14 का मान, किसी वृत्त की त्रिज्या का उसकी परिधि से संबंधों की भी अभिव्यक्ति है। यह लगभग 3.14159 होता है।

पिको डेला मिरांडोला (Pico-della Mirandola) ने इस विषय पर लिखा

है तथा उससे मिलते-जुलते नंबरों की एक तालिका यह दर्शित हुए दी है कि लाटरी 'ड्रा' में निकले नंबर उससे किस प्रकार संबंधित हैं तथा भविष्य में कौन से नंबर निकलने की संभावना है। मैंने उनका गंभीरता से परीक्षण किया है तथा मैं उसका पूर्णरूपेण खंडन करता हूं।

यह असंभव है कि एक व्यक्ति जिसे 'ज्योतिषशाखा की महाविपत्ति' के रूप में जाना जाता हो, वह किसी चीज के बारे में सूक्ष्म रूप से इस प्रकार भविष्यकथन करने में समर्थ होगा।

अपेक्षाकृत एक अधिक तर्कसंगत विकास की विधि का प्रतिपादन बेनिनकासा (Benincasa) ने किया है। यह संख्याओं के जोड़े पर आधारित है जिनके एक क्रम में आने की संभावना ज्यादा होती है। जैसे 81 तथा 72, 53 तथा 16, 25 तथा 50, 87 तथा 84, 59 तथा 28, 22 तथा 44, 84 तथा 78, 56 तथा 22 आदि।

1894 के वर्ष में मैंने पाया कि लाटरी में 1 की संख्या 13 बार विजयी रही, 45 की संख्या 81 बार, एक अन्य लाटरी बाजियों में 45 का अंक 81 बार जीता। यह 'ड्रा' के 19 मामलों में हुआ, जो कि 84 मामलों में लाभ प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दों में, प्रति 'ड्रा' में 4.5 सफलता मिली। तथापि यह संख्याओं की एक प्रकार की पूर्ति ही है तथा कोई भी विकासवान प्रणाली इस प्रकार के परिणाम लाएगी।

मेरा उद्देश्य किसी प्रणाली की स्थापना करना नहीं है, बल्कि संख्याओं की एकरूपता प्रकट करना तथा पदार्थों में कार्यरत करना है, जिन्हें आमतौर पर संभाव्यता के क्षेत्र तक सीमित कर दिया जाता है। यहां पर सिर्फ बुद्धि तथा पाठकों की रुचि को दृष्टि में रखते हुए मात्र उसकी ओर तर्जनी संकेत करना संभव है। इनमें से एक तरीका पुराने लेखकों में से एक के चातुर्यपूर्ण कथन में दिया गया है, जो पंचभुज (pentagon) का प्रयोग करता है, जिस तरह से मैंने पंचक (pentacle) का प्रयोग किया था। उसके 'की नंबर' 7, 29 तथा 34 हैं।

वह अंतिम 'ड्रा' के पांच नंबरों को पंचभुज के पांच बिंदुओं पर व्यवस्थित करता है तथा A B C, B A D, C A D, D C B को क्रमशः आपस में जोड़ कर प्राप्त योग को 'E' से गुणा करता है तथा उससे भाग भी देता है। ऐसा करने से उसे तीन संख्याएं प्राप्त होती हैं, जिनका उपयोग स्वतंत्र रूप से अथवा एक-दूसरे के साथ करके अगले 'ड्रा' के संबंध में संभाव्य संख्याएं प्राप्त की जा सकती हैं।

ठीक इसी तरह का सिद्धांत संख्याओं के क्रॉस (cross of numbers)

में दिया जाता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह वर्ष के प्रत्येक महीने के लिए उपयुक्त होगा।

जनवरी माह को ही लें।

1

3 4 2

4

ये कतिपय रहस्यमय सूक्तों (cryptic verses) से संबंधित हैं। इनके संबंध में चतुष्पदी की आखिरी पंक्ति में कहा गया है 'दाहिने दस गुना तथा किनारे एक।' उपरोक्त कॉस में दाहिने हाथ की संख्या 2 है तो इस सूक्त के अनुसार मान होगा 10x2+1= 2, इसके अतिरिक्त हमारे पास 14, 44, 41, 34 की संख्याएं हैं।

उपरोक्त विधि को उचित सफलता तब प्राप्त हुई, जब 'ड्रा' के आंकड़ों से तुलना की गई। जनवरी 1894 के 'ड्रा' में 44, 21, 14 संख्याएं निकलीं। जनवरी 1895 में 44, जनवरी 1896 में 44, जनवरी 1897 में 34 तथा 41 लेकिन 'क्रॉस' से संबंधित सभी संयोजी (Combination) संख्याओं से संबंधित टिकट खरीदना लगभग असंभव है। गुप्त शृंखला (secret progression) के बाहर एक ही विधि है, जिससे लाटरी में आनेवाले नंबरों की भविष्यवाणी की जा सकती है, वह है सकारात्मक कड़ियों के चक्रीय नियम की प्रतीक्षात्मक अभिव्यक्ति। इसे लाटरी के विजयी नंबरों की घड़ी के अनुसार (horary) अधिसंभाव्यता देखकर भविष्यवाणी की जाती है, परंतु यह विधि उन लोगों की समझ से परे है, जिन्हें खगोल विज्ञान की जानकारी नहीं है। तथापि यहां पर संख्यात्मक अनुक्रम (numerical sequence) के अस्तित्व की मौजूदगी के विषय में पर्याप्त कहा गया है।

'प्रतीक ज्ञान' (kabala) की अनेक विधियां हैं, पर उनमें से बहुत सी प्रयोग में नहीं लाई जातीं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रथमतया पहला सिद्धांत तो तार्किकता पर खुद को पूरी तरह से निर्भर करना है। दूसरे शब्दों में, तथ्यों के बारे में फैसला लेने का औसत विवेक (common sense) का प्रयोग। इस संदेहरहित विधि को आम आदमी के लिए छोड़ देना चाहिए, क्योंकि बाहरी चीजों पर निरंतर निर्भरता की वजह से अंतर्ज्ञान (intuition) धुंधला जाता है।

विकास के क्रम में अंतईच्छा तथा स्वत:स्फूर्त प्रणाली पीछे छूट जाती है। लेकिन जैसा हम पिछले अध्यायों में अध्ययन कर चुके हैं कि व्यक्ति की अंतरात्मा (सौर चक्र सिद्धांत) पशुता तथा देवत्व के बीच, इच्छा तथा अंतर्ज्ञान के बीच झूलती रहती है। अनुभूति के क्षेत्र, जिसे इच्छा भी कहते हैं, में स्वत: स्फूर्त स्वभाव (auntomatic faculty) काम करता है। जब यह बुद्धि के क्षेत्र

में काम करता है, तो इसे अंतर्ज्ञान कहते हैं। भविष्यकथन का सारा दारोमदार इसी चीज पर है तथा यह संख्याओं की प्रतीकात्मकता से संबंधित है।

उनमें से एक विधि का यहां उल्लेख किया जा रहा है। लोग इस जादुई सूत्र को बीजमंत्र (Abracadabra) के नाम से जानते हैं तथा जो उस अनंत और असीम αβραχιδ, से निकलता है। परंतु मेरा विचार है कि उसे सृजनात्मक शब्दों के रूप में व्याख्यायित करना ज्यादा तर्कसंगत होगा। यह एक उल्टे त्रिभुज, एक आयत अथवा एक दोहरे समबाहु त्रिभुज का रूप अख्तियार कर लेता है। इसके दो रूप यहां पर दर्शित हैं।

ABRACADABRA	ABRACADABRA
ABRACADABR	BRACADABR
ABRACADAB	RACADAB
ABRACADA	ACADAB
ABRACAD	ACADA
ABRACA	CAD
ABRAC	A
ABRA	CAD
ABR	ACADA
AB	RACADAB
A	BRACADABR
	ABRACADABRA

उपरोक्त रूपाकृतियों से अंकविज्ञानियों ने भविष्यकथन की एक तरकीब खोजी, जिसने यह रूप ग्रहण किया:

एक सवाल, जो जितने शब्दों में सुविधाजनक तरीके से पूछा जा सकता है–उसके शब्दों को गिन लें तथा व्यवस्थित करें। प्रत्येक शब्द में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या को अक्षरों के स्थान पर रखें।

लाइन में मौजूद अंकों को क्रमशः आपस में जोड़ें। पहले से दूसरे को, दूसरे को तीसरे से, तीसरे को चौथे से, जब तक कि उनके जोड़े न बन जाएं तथा वे एक-दूसरे से जुड़ न जाएं। योग में से उस दशा में 9 घटाएं, जब यह 9 से अधिक हो। उसे निचले तल में व्यवस्थित किया जाता है, जिससे कि संख्याओं की दूसरी लाइन खींची जा सके।

अन्य संख्याओं तथा शब्दों के साथ भी यही प्रक्रिया दोहराई जाती है तथा क्रमशः उनका जोड़ा बनाकर योग किया जाता है तथा तीसरी लाइन बनाई जाती है। प्रत्येक लाइन में ऊपरवाली लाइन की अपेक्षा एक अंक कम होता

है। यह प्रक्रिया तब तक चलती है, जब तक केवल एक ही संख्या शेष रह जाती है। इस संख्या का उपयोग भविष्यकथन में किया जाता है। इस संख्या को उसके संबंधित समरूप ग्रह के साथ रखा जाता है तथा सवाल की प्रकृति के मुताबिक उसकी व्याख्या की जाती है।

एक उदाहरण संदेह को समाप्त कर देगा: एक व्यक्ति पूछता है– 'SHALL I GAIN MY DESIRE?' (क्या मेरी इच्छा पूरी होगी?) इस वाक्य में 5 शब्द हैं। अतएव 5 पहले रखा जाएगा। 'SHALL' में 5 वर्ण हैं, 'I' में एक, 'GAIN' में 4, 'MY' में 2, 'DESIRE' में 6, अत: पहली लाइन इस प्रकार होगी: 5 5 1 4 2 6, जब पूरा प्रतीक संकेत तैयार होगा तो कुछ इस प्रकार होगा:

5 5 1 4 2 6
1 6 5 6 8
7 2 2 5
9 4 7
4 2
6

यहां पर आखिरी संख्या 6 प्राप्त होती है, जो शुक्र से संबंधित है। जब प्रश्न के संदर्भ में इसकी व्याख्या की जाती है, तो वह इस प्रकार होगी– शांतिपूर्ण तथा संतोषप्रद एवं प्रसन्नतादायक परिणाम प्राप्त होगा अर्थात इच्छा पूरी होगी।

यदि यही परिणाम '8' की संख्या हो, तो इससे यह अर्थ निकला कि इच्छापूर्ति में विलंब अथवा संभावित निराशा हाथ लगेगी, क्योंकि 8 का अंक शनि से संबंधित है, जो वंचना का संकेत करता है।

अगर परिणाम 3 आता है, तो यह अंक बृहस्पति से संबंधित है जो उपलब्धि, वृद्धि, विस्तार तथा सौभाग्य का सूचक है।

6 शांतिपूर्ण परिणाम तथा प्रसन्नता लाता है। 5 यात्राओं, सक्रियता, चिंता, अस्थिरता आदि का द्योतक है।

2 अथवा 7 परिवर्तन, अनिश्चितता, हिचक का संकेत करता है, परंतु 7 स्त्रियों के प्रभाव अथवा सार्वजनिक संबंध में प्रभावकारी है तथा 2 कमजोर दिल तथा परिवर्तित इच्छा पर इरादे का संकेत करता है। क्योंकि 7 का अंक 'पूर्णता' का प्रतीक है तथा चंद्रमा 'स्त्रियों' का प्रतिनिधित्व करता है, अत: हम उसका गुप्त संकेत समझ सकते हैं।

'पत्थर जिसे भवन निर्माताओं ने ठुकरा दिया था, वह कंगूरा भी बन सकता है'–इस प्रकार की व्याख्या स्त्रियों के अधिकारों की दुहाई देनेवालों के दर्द

को संतुष्ट करेगी। मगर इसे वे व्यक्ति ही अनुभव कर सकेंगे, जो बुद्धिमत्तापूर्वक सारी चीजों को समझते हैं तथा सुरक्षित कथन करते हैं।

इस प्रतीक विधि (kabala) का अन्य स्वरूप इस प्रकार है:

यदि आखिर में आई संख्या सम (even) है, तो दाहिनी ओर के साथ एक त्रिभुज खींचा जाता है तथा ऊपरी रेखा के लिए तीन अन्य सम संख्याओं की तलाश की जाती है, जो इस क्रम में पड़ते हैं। यदि आखिरी संख्या विषम (odd), है तब बाईं ओर से त्रिभुज खींचना शुरू करते हैं तथा ऊपरी रेखा के लिए तीन अन्य विषम संख्याएं लिखी जाती हैं।

जब यह तय हो जाता है कि ये व्यवस्थित हो गए हैं, तो पहली बार ज़ो संख्या प्राप्त हुई थी, उसे तथा संपूर्ण योग को जोड़ते हैं। शेष जो आता है, उससे शगुन विचारते हैं।

जैसा कि उदाहरण दिया गया है कि आखिरी संख्या 9 है, जो एक विषम संख्या है तो त्रिभुज के बाईं ओर की तीन अन्य विषम संख्याएं होंगी–7 7 1, तत्पश्चात 9+7+7+1= 24= 6 अर्थात 6 वह संख्या है, जिससे भविष्यकथन में सहायता ली जाएगी तथा उसकी व्याख्या शुक्र से संबंधित परिणामों की होगी।

यहां यह उल्लेखनीय है कि भविष्यकथन हमेशा उस विधि से प्रभावित होगा, जो पहले ही निर्धारित की जा चुकी है, क्योंकि संख्याओं का अपने आप में कोई महत्त्व नहीं है। वे अपना महत्त्व हमारे विचारों द्वारा जोड़े गए संबंधों के चलते पाती हैं और इस अर्थ में उनका महत्त्व सिर्फ प्रतीकात्मक है। यदि जहां प्रकृति एक संख्यात्मक प्रतीकात्मकता का पालन करती हैं, तो हम आराम से कतिपय संख्याओं को बतौर प्रतीक इस्तेमाल कर सकते हैं और वस्तुतः सभी संख्याओं को उनके घटकों तथा इकाई मानों के साथ भी प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

अतः इस काम में लाई गई विधि महत्त्वपूर्ण होती है। यह अनुचित होगा कि प्रतीक ज्ञात करने के लिए व्यक्ति कोई एक विधि प्रयोग में लाए तथा व्याख्या के लिए दूसरी। अतएव आप यह निश्चित कर लें कि भविष्यकथन की किस विधि का प्रयोग करना चाहते हैं। तत्पश्चात उसी विधि को गणना तथा उसकी व्याख्या अर्थात भविष्यकथन के लिए व्यवहार में लाएं।

प्रकृति ऐसी प्रतीकात्मकता का प्रयोग करती है, जो बहुसंख्य व्यक्तियों के लिए अबूझ पहेली है तथा यह तथ्य इस तर्क को लागू करता है कि हमारी मान्यता के अलावा भी संख्याओं का प्रतीकात्मक महत्त्व है।

यह मेरे उस पूर्व कथन का विरोधाभासी प्रतीत होता है, जो मैंने संख्याओं के महत्त्व के विषय में कहा था, परंतु मैंने वह कथन एक प्रतीक के तौर

पर कहा था और वह तभी प्रतीक मालूम होता है, जब तक हम उसके वास्तविक महत्त्व से वाकिफ नहीं हो जाते तथा उसका प्रयोग मात्रात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति में नहीं करने लगते। प्रकृति का हमारी निजी चेतना से अलग अस्तित्व है। जैसा कि प्राकृतिक इतिहास हमें बताएगा, मगर प्रकृति चेतना से पृथक हमारी वैयक्तिक चेतना अस्तित्ववान नहीं रह सकती। परिणामत: हमारे विचार अथवा अनुभव प्राकृतिक अभिव्यक्ति से पृथक नहीं हैं। अतएव पूर्णत: प्रतीकात्मक तथा हमारे सर्वोत्तम भविष्यकथन वे हैं, जो प्रकृति की भाषा और आकृति के घनिष्ठ संबंधों से निकले हैं।

जब मैंने यह कहा कि प्रकृति प्रतीकात्मकता का प्रयोग करती है तथा इसमें ठीक उसी तरह चेतनता व्याप्त है, जिस प्रकार हममें। मेरा अभिप्राय ठीक वही है--दैवीय प्रज्ञा की अभिव्यक्ति। यह वास्तविकता है कि दैवी शक्तियां प्रकृति के माध्यम से अपनी चेतना की अभिव्यक्ति करती हैं, जबकि मनुष्य अपने शरीर के द्वारा।

खगोलीय गतियां उसी प्रतीकात्मकता का एक हिस्सा हैं, जिन पर हम विचार कर रहे हैं। प्रत्येक ग्रह किसी विशिष्ट दैवीय शक्ति के नाभिकीय केंद्र की शक्ति का प्रतीक है। उपग्रह और पुच्छल तारे भी प्रतीक रूप हैं। सूर्य का प्रयोग हम दैवीय शक्ति के प्रतीक के रूप में युगों से करते आ रहे हैं। यह ईश्वर द्वारा मनुष्य के लिए प्रथम तथा महान उपहार है।

परंतु शनि, बृहस्पति और इस सौर्य प्रणाली के अन्य ग्रह–उपग्रहों की भी अपनी उपस्थिति है तथा वे अपने क्रियाकलाप करते रहते हैं। ये ग्रह–उपग्रह उसी एक महान शक्ति के विभिन्न आयामों तथा गुणों के प्रतीक हैं। ये तथ्य गूढ़ व्यक्तियों की चेतना से अलग तथा समझ से परे हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि प्रकृति भी एक प्रतीक है तथा इसका महत्त्व तभी है, जब हम इसे ठीक से समझें। प्रकृति की भाषा समझी जा रही है और इसका उपयोग हम विश्वस्त ज्ञान के द्वारा धुंधले पहलू की व्याख्या करने में कर सकते हैं।

यदि अंतरिक्ष में कोई नियम लागू नहीं होता, यदि ग्रह मिश्रित कक्षा में गति करते, जैसा कि उनके बारे में दर्ज किया गया है तथा उनकी गतियां उनकी आपसी दूरियों के अनुपात में भिन्न होतीं, तो उनसे संबंधित संख्याएं अपना आधार अथवा महत्त्व खो चुकी होतीं तथा 2 x 2= 9, उसी तरह ठीक होता है जैसे 2+2= 4, यह विचार किया गया है कि संभवत: गणना की दशमलव प्रणाली इसलिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत की गई है, क्योंकि जब एक व्यक्ति 10 तक गिनती करता है, तो उसके पास आगे और कोई संख्या नहीं होती। यह सही हो सकता है।

संभवत: ऐसा है भी, परंतु यह इस उलझन को नहीं समझ पाती कि

आखिर मनुष्य के पास 10 ही संख्याएं क्यों हैं? हालांकि एक मनमौजी व्यक्ति इसे 12 भी बता सकता है, परंतु प्रकृति इसे यथासंभव शीघ्रता से पुनः 'दशमलव' के आधार पर स्थापित कर देगी जैसे कि वह एक गलती को सही कर रही हो। यह भी कहा गया है कि 10 से अधिक शून्य भी नहीं हो सकते, क्योंकि 1 तथा शून्य दैवीय अभिव्यक्ति की शुरुआत तथा अंत है। जब वे संयुक्त होते हैं तो सभी चीजों के स्रोत तथा अंतिम परिणाम होते हैं।

इसके अतिरिक्त सभी संख्याओं के जोड़ों का परिणाम भी होते हैं, जैसे 2 तथा 8= 10, 3 तथा 7= 10, 4 तथा 6= 10, 1 तथा 9 वही होता है, जो 1 और 0 के। परिणामस्वरूप 5 ही छूट जाता है, जिसका कोई जोड़ा नहीं बन पाता।

5 का अंक बुध का प्रतीक है, जो व्यक्ति में बुद्धि का कारक है, और जो अंतरिक्ष के मध्य में स्थित रहकर यह आभास देता है कि जो ऊपर है, वही नीचे भी है। अंकों का रहस्य उन सभी व्यक्तियों के लिए खुला पड़ा है, जो अपनी पांचों इंद्रियां खुली रखते हैं तथा अनुभूत वस्तुओं के गुणात्मक संबंधों की ओर आकृष्ट होते हैं।

यदि हम समन्वय की परिष्कृत अवधारणा रखते हैं, तो उसकी वजह यह है कि हमारे पास प्रकृति के समन्वय की परिष्कृत धारणा मौजूद है। अंकों द्वारा मात्राओं की अभिव्यक्ति की खोज से पूर्व आदमी के पास मात्रात्मक संबंधों को अभिव्यक्त करने की एक मानसिक अवधारणा मौजूद थी।

वीनस डी मिलो (एक प्रसिद्ध मूर्ति) की अवधारणा मूर्तिकार के मस्तिष्क में पत्थरों में आकार पाने के पूर्व विद्यमान थी। यह विचार तब तक कायम रहेगा, जब तक अंक कालचक्र में अपना दम न तोड़ दें। संख्याओं को विभिन्न तरीकों से विभिन्न रूपाकृतियों में सार्वभौमिक रूप से अभिव्यक्त किया गया है। ये रूपाकृतियां निश्चित नहीं हैं, मगर संख्याएं तथा ध्वनियां तब तक अस्तित्ववान रहेंगी, जब तक हमें दिखाई देना तथा सुनाई देना बंद नहीं हो जाएगा।

□□

विचार पढ़ने की हिन्दू रीति

पिछले अध्यायों में विचारों के ज्यामितीय संबंधों के बारे में जो विवेचन किया जा चुका है, उसे दृष्टिगत रखते हुए मेरा विचार है कि पाठक अब संख्याओं के माध्यम से विचार पढ़ने की प्रक्रिया के लिए स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर चुके होंगे। वस्तुतः विचार दो तरह के होते हैं—1. चेतन विचार जो चेतन मष्तिष्क के कार्यों का विस्तार है तथा 2. अचेतन विचार, जो अचेतन मष्तिष्क के कार्यों का विस्तार है।

अचेतन विचारों के उदाहरण तात्कालिक दूरसंवेदिता (टेलीपैथी) द्वारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। किसी भी निश्चित क्षण में मनुष्य का मस्तिष्क किन्हीं चीजों के प्रति सकारात्मक रहता है तथा किन्हीं के प्रति नकारात्मक। प्रत्येक कार्यशील मस्तिष्क अंतरिक्ष में अपनी तरंगें और अपना कंपन भेजता रहता है।

ये तरंगें दूसरे व्यक्तियों के मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। यदि दोनों के मष्तिष्क के सुर में सुर मिल रहे हैं, तो वह व्यक्तित्व का बोध भी कराती हैं। इस वजह से प्रभावित व्यक्ति तत्काल विचार भेजनेवाले व्यक्ति की मानसिक छवि सृजित कर लेता है तथा उस व्यक्ति की इंद्रियों को क्षणिक उपस्थिति का अनुभव होता है। उनके बीच, जैसा लोकोक्तियों में कहा गया है, 'आकाशवाणी हो जाती है।'

यद्यपि जांच से यह पता चलेगा कि ट्रांसमीटर इस तरह के आत्मप्रक्षेपण के बारे में न सिर्फ अनभिज्ञ रहेगा, बल्कि सामीप्य के बोध से भी विस्मृत रहेगा। यह निष्कर्ष एक बहुपरिचित, मगर अबूझ विशेषता के गहन अध्ययन के बाद निकाला गया है। इसके अनुसार, अवचेतन मस्तिष्क अथवा विचार प्रक्षेपित करनेवाला मस्तिष्क न सिर्फ दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क की उपस्थिति से वाकिफ होता है, बल्कि तात्कालिक रूप से खुद उस मस्तिष्क से संबंध स्थापित करने में भी समर्थ होता है। इस प्रकार के प्रक्षेपित विचारों को ग्रहणकर्ता अवचेतन प्रभाव की तरह ग्रहण करता है, जो वर्तमान में सक्रिय मस्तिष्क के क्षेत्र में इस तरीके से उमड़ पड़ते हैं, जैसे वे विचारों का सृजन कर रहे हों।

अत्यधिक संवेदनशील व्यक्ति न सिर्फ किसी की उपस्थिति से बोधगम्य

हो सकते हैं, बल्कि भविष्यदृष्टा भी हो सकते हैं। अवचेतन मस्तिष्क की ऐसी ही क्रिया अथवा समरूप क्रिया के माध्यम से हम यह ज्ञान प्राप्त करते हैं कि कतिपय व्यक्ति हमारे हितों के प्रतिकूल हैं, जो हमारे रुचिकर विषय हैं उनके बारे में हमारा मस्तिष्क मृदु व्यवहार करता है।

उसे हम आत्मविश्वास के साथ स्वीकार करते हैं। हमें यह सदैव खेद रहता है कि हमने अपने मस्तिष्क की 'प्रथम संवेदना' पर अमल क्यों नहीं किया। जैसा कि मैंने पिछले अध्याय में स्पष्ट किया है कि हमारे भीतर एक ऐसा हिस्सा है, जो विश्वात्मा से संबंधित है तथा वह सार्वभौमिक सिद्धांतों क़े कार्यभौमिक अनुभव में हमें सहभागी होने में सक्षम बनाता है।

विश्वात्मा अपने क्रम में सार्वभौमिक आत्मा से संबंधित है। विश्वात्मा ग्रहीय अथवा धरती की चेतना है। सार्वभौमिक आत्मा सौर क्षेत्र के केंद्र में मौजूद है जो आत्मिक, मानसिक तथा भौतिक रूप से इस प्रणाली का समन्वय केंद्र है। यही वजह है कि अवतार और मसीहा ब्रह्मांड के स्वामी को 'दिवा तारक' (Day Star) अथवा 'धर्म का सूर्य' कहते हैं।

विचारों के ज्यामितीय संबंध ऐसे हैं कि प्रत्येक विचार की अंकीय अभिव्यक्ति की सामर्थ्य रखते हैं। मालूम होता है कि इस तथ्य की जानकारी सबसे पहले पूरबवासियों (भारत) को हुई। यह उनमें से एक था, जिसका मैं पहले उदाहरण दे चुका हूं। यह आध्यात्मिक तथा मानसिक मामलों में रुचि संपन्न व्यक्तियों के संगम का अवसर था। मुझे एक स्वामी ने आमंत्रित किया और कहा कि हाथ में कोई चीज ले लो अथवा किसी वस्तु के बारे में सोचो। मैंने उसके आदेश का तुरंत पालन किया। मैंने इस बात की विशेष सावधानी बरती थी क्रिं वह वस्तु स्वामीजी से दृष्टिगत न हुई हो। जब वे मेरे कक्ष से अनुपस्थित थे, तो मैंने एक आने मूल्य का एक डाक टिकट लिया तथा उसे एक बड़े बक्से में रख दिया। बाद में उसे हाथ में ले लिया। तब मैंने स्वामीजी को बुलाया तथा बॉक्स में मौजूद डाक टिकट पर अपना ध्यान केंद्रित किया। स्वामीजी ने मुझसे एक संख्या बताने को कहा। जो संख्या पहले दिमाग में कौंधी, मैंने उसे स्वामी जी को बता दी। उन्होंने तत्काल मेरे द्वारा विचारित वस्तु बता दी। यह एक 'वर्ग' था, परंतु चौड़ा कम तथा लंबा ज्यादा, अत्यंत पतला, एक या दो रंग की तथा इसकी कीमत एक आना होगी।'

कहने की जरूरत नहीं कि मैं इस प्रयोग से अत्यंत प्रभावित हुआ। लेकिन तुरंत कहा कि जो संख्या पूछी गई थी, वह निरर्थक थी। यह प्रत्यक्षतः विचार पढ़ने का मामला था। घटना ने साबित किया कि मैं गलती पर था, क्योंकि वह शब्दों में वर्णित वस्तुओं को बिना खोले बताते तथा भावी घटनाओं की भविष्यवाणी भी करते, जो बाद में घटित होतीं। प्रत्येक अवसर पर वह मुझसे

एक संख्या बताने का आग्रह करते ।

अंततोगत्वा, उन्होंने प्रक्रिया के रहस्योद्घाटन द्वारा मेरे विश्वास को दृढ़ कर दिया। इसलिए मैं स्वयं ही उस प्रयोग को सफलतापूर्वक दोहराने में सफल हुआ तथा उस विधि का प्रयोग अनेक अवसरों पर व्यक्तियों के विचारों को बताने, घटनाओं की भविष्यवाणी तथा खोई वस्तुओं का पता लगाने में किया। यह एक ऐसा चरण है, जिसके लिए कोई व्यक्ति किसी अपेक्षित गुण रखने का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि यह पूर्णतः सलाहकार के खुद के अवचेतन मन की कार्यप्रणाली पर निर्भर है।

मेरा इरादा पाठकों को इस प्रक्रिया की आंशिक जानकारी देना है, जो वस्तुतः उन्हें इस बात के लिए सक्षम बनाएगी, ताकि वे खुद विचारों के संख्यात्मक संबंधों के बारे में प्रयोग कर सकें। मुझे याद है जब यह सीखने के बाद अपनी क्षमता जांचने के आरंभिक अवसरों में से एक अवसर पर शाम को मैंने एक महिला को अपनी डिनर टेबल के सामने अपने हाथ को गले पर रखे चिंतित मुद्रा में देखा।

मैंने उस पर तुरंत ध्यान दिया तथा उससे यह सुनकर कुछ आश्वस्त हुआ कि 'मैंने अपनी पहचान का लटकनवाला मूंगे का हार खो दिया है।' मैंने तुरंत उस खोए हुए हार को ढूंढ़ने का जिम्मा लिया तथा उससे एक संख्या पूछी। मैंने घोषणा की कि वह हार एक घोड़े के पास स्थित लोहे की पटरी अथवा पार्टीशन पर मिलेगा।

उसके बाद जो हुआ, वह सिर्फ एक कूटनीति स्रोत अथवा एक ड्रामा का कलाकार कहेगा कि यह 'व्यवसाय' है। मैं जानता था कि वह महिला तुरंत नदी के किनारे की ओर चली गई थी। मैं यह जानता था कि कंटीली झाड़ियों के पीछे ढोर तथा घोड़े चर रहे थे, मगर मुझे किसी लोहे के गेट अथवा रेस की बाबत कुछ याद नहीं आया।

तलाश का वह मशविरा तुरंत अमल किया गया। मैंने रास्ता दिखाया। हम लगभग आधा मील गए होंगे कि एक घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी। मैंने हंसते हुए टिप्पणी की कि आधा हार तो यह रहा। हम उस जगह पहुंचे, जहां घोड़ा खड़ा था। हमें इस बात से तत्काल संतुष्टि मिली कि घोड़ा एक लंबी रेल की लौह पटरी पर आराम कर रहा था, जिसे वहां बाड़ में आई दरार बंद करने के काम में प्रयुक्त किया गया था। हम वहां रुके तथा रोशनी की, तो पाया कि रास्ते में टूटा हुआ हार पड़ा था, जिसे संभवतः हम लोगों ने पैरों से कुचल दिया था।

एक ऐसी प्रकृति का सवाल मस्तिष्क में आया है, जिसका उत्तर सामान्य तरीके या जानकारी के आधार पर नहीं दिया जा सकता। 9 संख्याओं को

तुरंत रखें, जैसे वे सवाल उठते हैं तथा उसमें 3 की संख्या जोड़ें, भले ही यह संख्या पहले प्रयुक्त हुई हो अथवा नहीं। दसों संख्याओं का योग करें तथा उन संख्याओं की प्रकृति पर ध्यान दें, जो योग में शामिल हैं। संख्याओं की व्याख्या के लिए मैं आगे आनेवाले अध्यायों को संदर्भित करूंगा, क्योंकि विषय वस्तु अत्यंत विस्तृत है।

यह प्रक्रिया इस गुप्त तथ्य पर आधारित है कि यदि मस्तिष्क किसी वस्तु से संबद्ध है, तब संख्याएं स्वतः स्फूर्त मस्तिष्क से उनसे विचारों के वाहक के रूप में फूट पड़ेंगी तथा स्वयं ही उस प्रश्न के समाधान का माध्यम बनेंगी।

इसका एक उदाहरण ऐसे अभिलेख से दिया जा सकता है, जिसका खुलासा प्रतीक विज्ञानियों ने किया है। जैकब (ईसाई धर्म प्रवर्तकों में से एक) ने अपने पुत्रों के भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करते समय 'ज्यू' (Judah) यानी यहूदी को सिंहशावक कहा था। 'ज्यू से राजदंड अलग नहीं होगा, न ही कानून निर्माता उसके पैरों से, जब तक कि सिंहशावक आ नहीं जाता।' राजदंड रेगुलस है, कानून का निर्माता सेफस तथा सिंहशावक, कौर स्कार्पियो।

इसके माध्यम से हम मरणशय्या पर पड़े धर्माध्यक्ष के तात्कालिक भविष्यकथन का अध्ययन कर सकते हैं कि 'सिंह शावक आएगा।' (Shiloh shall come!) जो मसीहा के संख्यात्मक रहस्योद्घाटन को अंतर्निहित करता है।

अतएव जब हम संख्याओं के माध्यम से विचारों को पढ़ने की बात करते हैं, तब हम किसी प्रेषित के चेतन विचारों की बात नहीं करते हैं, न ही ग्रहणकर्ता के किसी विशिष्ट मानसिक गुण की, बल्कि हमारा आशय अवचेतन विचारों से है अथवा प्रेषित की बजाय ज्ञान से होता है, जिसका बाह्य अथवा चेतन मस्तिष्क समाधान चाहता है। अंक विज्ञान की विधि हमें स्वयं के द्वारा अथवा किसी अन्य के द्वारा इस दिशा में समाधान के लिए समर्थ बनाती है।

पूरब में, विशेषकर भारत में अंक विज्ञान का अध्ययन न सिर्फ उच्च गणितीय उद्देश्य से, बल्कि गुप्त अभिव्यक्ति तथा भविष्यकथन के उद्देश्य से निरंतर होता रहा है।

वे (भारतीय अंकविज्ञानी) वर्षों की गणना से 60 तक एक निश्चित क्रम में कर लेते हैं। तत्पश्चात इस चक्र के वर्ष को 2 से गुणा किया जाता है, जो प्राप्त होता है, उससे 3 घटाया जाता है, तब उसे 7 से भाग दिया जाता है। जो शेष बचता है, वह उस वर्ष फसलों की दशा की भविष्यवाणी इस क्रम में करता है:

1. महंगाई तथा अनुपलब्धता
2. बहुलता तथा सस्ता
3. औसत फसल और मंदी

4. महंगाई और गरीबी
5. प्रचुरता तथा सस्ता
6. पर्याप्त तथा मंदा दाम
7. अनुपलब्धता तथा अकाल जैसा दाम

इसके द्वारा हमें मालूम हो सकता है कि प्रत्येक चौथे वर्ष समरूप परिस्थितियों की संभावना रहती है तथा प्रति 7वें वर्ष अकाल पड़ता है।

भारतीयों के पास खोई हुई वस्तुओं को ढूढ़ने की विधि 'अरूढ़' भी है। तारक मंडल की संख्या का स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा की आयु तथा चौथाई को आपस में जोड़ते हैं तथा उसमें से 3 को घटाते हैं। जो योग आता है, उसको 7 से गुणा करते हैं। यदि शेषः

1 आता है	तो खोई वस्तु जमीन में गड़ी है
2 " "	खोई वस्तु किसी बर्तन या घड़े में है
3 " "	खोई वस्तु पानी में है
4 " "	खोई वस्तु खुले में पड़ी है
5 " "	खोई वस्तु किसी खोल या भूसे में है
6 " "	खोई वस्तु मिट्टी या खाद में है
7 " "	राख में है

मैंने इस विधि का परीक्षण नहीं किया है, परंतु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन सात जगहों में किसी वस्तु के पाए जाने की संभावना पर्याप्त नहीं है। तथापि, मैंने देखा है कि समान तथ्यों पर आधारित 'सल्यण' विधि द्वारा खोई वस्तुओं का बिल्कुल ठीक पता लग जाता है, मगर यह सिर्फ उस मकान तक ही सीमित होता है, जहां से शगुन विचारा जा रहा है।

मैंने संख्याओं के आधार पर सवालों के समाधान अपने आप ढूंढ़ने की तरकीब दी है। मस्तिष्क को उस सवाल पर केंद्रित रखें, जिसके संबंध में जानकारी प्राप्त करनी है। 9 संख्याएं व्यवस्थित की जाती हैं। उनमें 3 जोड़ा जाता है तथा योग को प्रश्न की प्रकृति के अनुसार संदर्शित किया जाता है:

उदाहरणः

What am I thinking of ?

9 8 5 6 2 7 1 4 2= 44
3
47

उत्तर होगा कि आप किसी मान, मापक, भार अथवा किसी पदार्थ के अनुपात तथा अपने किसी निश्चित संबंधों के बारे में सोच रहे हैं।

संख्याओं पर आधारित विचारों की व्याख्या संक्षेप में इस प्रकार है:

1. आप हैसियत, उन्नति, अपने से ऊपर की वस्तु, किसी गुरु अथवा पूर्णक, पराकाष्ठा अथवा शीर्ष महत्त्व और उसकी बराबरी या पतन के बारे में सोच रहे हैं।

2. आप दूरी, दूरस्थ वस्तु, यात्रा अथवा किसी विदेशी भूमि के बारे में सोच रहे हैं।

3. किसी वैयक्तिक घटना, बीमारी संभवतया बुखार, गरमी अथवा गुस्से के बारे में चिंतन।

4. घरेलू मामलों, परिवार, प्रेम तथा सुख, दिल अथवा किसी अभीप्सित (वांछित) वस्तु के बारे में सोच रहे हैं।

5. विवाह, समझ अथवा समझौता या करार, चीजों की एकता अथवा सुसंगति के बारे में चिंतन।

6. समाचार, भाई, संचार माध्यम अथवा भाषा के बारे में चिंतन।

7. घर, जमीन में गड़ी किसी वस्तु अथवा किसी जमीन या विस्तृत जल के बारे में, समुद्र, परिवर्तन अथवा हटाए जाने के बारे में सोचना।

8. किसी पुरातात्विक वस्तु के बारे में, विदेशी वस्तु के बारे में, किसी दूसरे देश के बारे में, पूरब के बारे में चिंतन।

9. नुकसान अथवा मृत्यु, त्रुटियुक्त करारों तथा पुनर्स्थापना के बारे में चिंतन।

10. किसी दुर्भाग्यशाली गठबंधन, दुःख देनेवाले करार, किसी विवाद के बारे में चिंतन।

11. किसी संपत्ति के मूल्य, किसी खान अथवा किसी भवन से संबंधित वस्तु के संबंध में।

12. सुखद माहौल, उत्सव, समारोह संबंधी किसी बैठक, उत्तम वस्त्रों अथवा निजी आराम के संबंध में चिंतन।

13. धन, सट्टे संबंधी लाभ के बारे में चिंतन।

14. छोटी यात्रा, समुद्री यात्रा अथवा किसी ऐसे मामले या संदेश के बारे में जो जल के पार हो, किसी महिला से संबंधों के बारे में चिंतन।

15. गमी अथवा मृत्यु, दाह संस्कार, शोक, हानि अथवा दुर्भाग्य के बारे में चिंतन।

16. एक सौभाग्यशाली तथा सुखद गठबंधन, पत्नी, अच्छी समझ अथवा करार के बारे में चिंतन।

17. सेवक अथवा किसी घनिष्ठ व्यक्ति के बारे में, किसी असुविधा बीमारी अथवा रोग के बारे में चिंतन।

18. किसी सुखद यात्रा, सोने की किसी वस्तु, प्रेम, घरेलू मामले अथवा आमोद-प्रमोद, भाई अथवा इच्छित संदेश के बारे में चिंतन।

19. बाधा, अवरोध, कारावास, एकांतवास अथवा किसी बच्चे के बारे में चिंतन।

20. यात्रा अथवा पत्र, किसी आनेवाली वस्तु, अपने से किसी दूसरे से वार्तालाप, सड़क मार्ग के बारे में चिंतन।

21. लुत्फ, धन, आर्थिक लाभ, कब्जे की वस्तु, किसी सफेद या रुपहले रंग की वस्तु, रुपये के बारे में चिंतन।

22. दुर्भाग्यशाली विवाह के विषय में, किसी बीमार साथी, किसी नुकसानदेह करार, परेशानियों, शत्रु अथवा प्रतिद्वंद्वी के बारे में चिंतन।

23. अच्छे रहन-सहन, अच्छी पोशाक, प्रचुर भोजन, पर्याप्त नौकर-चाकर, अच्छे स्वास्थ्य, प्राणियों के आराम तथा हैसियत के बारे में सोचना।

24. किसी अनिश्चित स्थिति के विषय में, पारिवारिक विवाद, बच्चों, किसी दुर्भाग्यशाली प्रयास, अवैध संबंधों के बारे में चिंतन।

25. अत्यधिक पाने की चिंता, ज्यादा संपत्ति, स्वर्ण, सूर्य, किसी चमकीली या प्रकाशवान वस्तु के बारे में चिंतन।

26. शांतिपूर्ण कब्जे, अच्छी संपत्ति, घर, समतल भूमि, नींद के बारे में चिंतन।

27. किसी निकट के स्थान अथवा कमरे, नाव से लघु यात्रा, भाई, संबंधी तथा किसी पत्र या संदेशवाहक के बारे में चिंतन।

28. अपने बारे में कल्पना, सफेद मोमजामे, कटोरी अथवा चांदी के बर्तन अथवा किसी नए व्यक्ति के बारे में चिंतन।

29. खराब स्वास्थ्य, रक्तचाप, कम किराये, गरीबी के समय के विषय में अथवा मुकदमे के विषय में सोचना।

30. सुखी बच्चों, सुखद अनुभव, मिलन, भाग्यशाली दहेज अथवा विरासत के बारे में चिंतन।

31. जमीन में दबी वस्तु, घर में घुसे सांप, किसी बिच्छू अथवा रेंगनेवाले जीव और किसी विदेशी भूमि के बारे में चिंतन।

32. किसी राजा, सुनहले वस्त्र अथवा पीतांबर, सूर्य, अपने व्यक्तित्व तथा चरित्र के बारे में चिंतन।

33. किसी सुखद संदेश, अच्छी हैसियत, भाई, किसी विशिष्टता के बारे में चिंतन।

34. आर्थिक लाभ, खाद्यान्न खरीदने अथवा अन्य आवश्यक वस्तुएं खरीदने, अनाज आदि, किसी मूर्तलाभ के बारे में चिंतन।

35. किसी महिला, जन्म, कोई योजना, कोई ऐसी चीज जो खुद से गोपनीय है, बंधन आदि के बारे में चिंतन।

36. सट्टे द्वारा हानि, बीमार शिशु, किसी असंतुष्ट परिवार, तंगी तथा परेशानी के बारे में चिंतन।

37. दुर्भाग्यशाली करार, दुःखद विवाह, किसी घर अथवा संपत्ति, गौशाला के विषय में चिंतन।

38. मलेरिया अथवा आंत्रशोध के ज्वर द्वारा मृत्यु, यात्रा, संदेश, बहन, पड़ोस के किसी तालाब या जलस्रोत के विषय में चिंतन।

39. किसी तंग स्थान अथवा मंदिर, किसी बाड़दार जगह, किसी राजा के एकांतवास अथवा निर्वासन के बारे में चिंतन।

40. धन, मूल्यवान वस्तु, गहने अथवा पोशाक, अनाज के मूल्य के विषय में चिंतन।

41. अपने तथा अपने शरीर, अपने परिधान, अभिषेक, भोजन, हैसियत, साख के बारे में चिंतन।

42. मित्र, गुणसंपन्न महिला, संरक्षिका अथवा उसकी कृपा, लोगों के सम्मेलन, किसी सभा के बारे में चिंतन।

43. पैतृक संपत्ति, वृद्ध व्यक्ति, पुराने भवन, खदानों के मूल्य, किसी कब्रिस्तान के बारे में चिंतन।

44. भाई, समुद्र अथवा बहुत दूर से किसी पत्र के आगमन, किसी धार्मिक पुस्तक, शास्त्रों, स्वास्थ्य के बारे में, निजी आराम तथा विलासिता के बारे में चिंतन।

45. विवाह, लाभ या हानि, किसी कम मूल्य की वस्तु, किसी आलोचना या आक्षेप, पक्षपात, भेदभाव, कपट के बारे में चिंतन।

46. मित्र, किसी हैसियतवाले सम्मानित व्यक्ति, सोने की किसी वस्तु, मूल्य, गहने तथा सोने की अंगूठी के बारे में चिंतन।

47. खुद के बारे में, न्याय, समता, मूल्य, भाव, वजन, अनुपात, शांति, संतुष्टि, विश्राम, मृत्यु विषयक चिंतन।

48. वस्त्रों के कक्ष, निजी स्थान, किसी छुपे हुए सेवक, महिला का स्वास्थ्य, दूर स्थान से संदेश आगमन के बारे में चिंतन।

49. हैसियत में परिवर्तन, मां, किसी विशिष्ट वस्तु, राजधानी, शक्तिसंपन्न महिला, किसी रानी के बारे में चिंतन।

50. दुखद यात्रा, मुसीबतजदा बहन, विषादपूर्ण संदेश, दफ्तर से बुलावे के बारे में सोचना।

51. लाभ, बाजी अथवा पण (एक प्रकार का जुआ), बच्चों, दूर से मिलने वाले धन, व्यवसाय के बारे में चिंतन।

52. व्यक्तिगत बीमारी अथवा मृत्यु, खोई वस्तु, छुपी चीज या

रहस्यात्मकता, नौकर, लाल कपड़े, गर्म खाना, डाक्टर, यमराज अथवा किसी रेंगनेवाले जंतु का विचार।

53. उच्च पद, राजा, शक्तिसंपन्न व्यक्ति, सोने का खोना, मृत सिंह के बारे में चिंतन।

54. खतरनाक बीमारी, मुसीबतजदा औरत, पत्नी, लड़की, समझौता या करार, चार दीवारों के बारे में चिंतन।

55. मृत्यु, खोए कागजात, खोया हुआ संदेश, युवा लड़की, भीड़, मित्र के बारे में सोचना।

56. समुद्र पार किसी दूसरे देश, समुद्री यात्रा, धार्मिक भीड़, प्रकाशन, जहाज, भूत के बारे में चिंतन।

57. हासिल संपत्ति, एक जखीरे या गोदाम, पेंशन अथवा विरासत, किसी पुरुष संबंधी के बारे में चिंतन।

58. कब्जे, निजी प्रभाव, वकील, जज, गुरु पुरोहित, निर्देश, वेद, ब्राह्मण, व्यक्तिगत संपत्ति के बारे में चिंतन।

59. मृत्यु कक्ष, अस्पताल, लड़का, घर की अग्नि, कोई उपक्रम अथवा खतरे के विषय में चिंतन।

60. धार्मिक समारोह, विदेशी राजा, ऋषि, समाधि, ब्रह्मा, स्वर्ग का सूर्य, ईश्वर तथा काल विषयक चिंता।

61. खाद्यान्न, व्यापार, शानदार वस्त्र, पुरुष मित्र, बाजार का स्थान अथवा विनिमय, नौकर, वैष्णव ब्राह्मण के बारे में विचार।

62. किसी लेखन अथवा करार, कोई उपक्रम, धन करार, कानूनी प्रक्रिया, हैसियत, निपुणता, पिता के बारे में सोचना।

63. मृत महिला, खोई संपत्ति, जिल्दसाजी का कागज या कफन, क्षीण चंद्रमा, पत्नी के दहेज तथा स्नान के बारे में चिंतन।

64. अपनी हैसियत, अर्जित संपत्ति, विरासत, वृद्ध व्यक्ति, अवधि, मोल-तोल अथवा विनिमय के बारे में चिंतन।

65. लघु यात्रा तथा वापसी, जाना तथा आना, पैदल चलना, बंद कक्ष, एक सौभाग्यशाली बंधन, बहन, मंत्र के बारे में चिंतन।

66. श्मशान के विषय में, चट्टानी भूमि, खनिज, डॉक्टर, मृत मित्र, जलता हुआ घर, सूखी भूमि या रेत के बारे में चिंतन।

67. मृत राजा, सोने का खोना, पत्नी का दहेज, कमरबंद, एक बीमार बच्चे के बारे में चिंतन।

68. बालिका, घरेलू विश्वास की स्थिति, सुरक्षा के बारे में चिंतन।

69. पोशाक, नौकर, जहाज, व्यापार, खाद्यान्न, विज्ञान से संबंधित वस्तु,

वेदांग से संबंधित कोई चिंतन।

70. पत्नी, करार, सार्वजनिक सभा, पूर्णमासी के चांद के बारे में सोचना।

71. घड़े अथवा जलपात्र के विषय में, पुराने साथ, मित्र-संगी साथियों के साथ संबंध, निजी कक्ष अथवा स्थान, जेल वार्डन के बारे में सोचना।

72. समृद्धि, राजसी मित्र, ब्राह्मण, धार्मिक बैठक, जूतों तथा जोड़ेवाली वस्तुओं के बारे में चिंतन।

73. भाई, हैसियत, शासक की मृत्यु, हड़बड़ी की यात्रा, क्रोधभरे संदेश, सम्मान, उत्तराधिकार, लेख के बारे में सोच।

74. चमकदार सूर्य, अत्यधिक चमक, आंखों की दृष्टि, गर्वीली पत्नी, ताकतवर शत्रु, शिकार के बारे में विचार।

75. सुखद स्थान, महंगी संपत्ति, मोक्ष, गड़े खजाने, ढोरों के बारे में सोचना।

76. पुत्र, ज्ञान प्राप्ति के स्थान या पाठशाला, विद्यालय भवन, दुल्हन, ब्रह्मचारी के बारे में चिंतन।

77. श्वेत पगड़ी अथवा धोबी, नौकरानी, दवा, पानी तथा पीने के विचार।

78. वृद्ध साथी, किसी संगठन, किसी पुराने गठबंधन, अस्पताल, कैदी का विचार।

79. स्वयं के बारे में, बढ़ोतरी तथा समृद्धि, हैसियत शक्ति तथा प्रभाव, अतिवादिता, पैरों, एक जोड़ी जूते, समझदारी, किसी न्यायाधीश अथवा वकील के बारे में सोचना।

80. लाभ, हानि के जोखिम के विषय में, अग्निकांड में नुकसान, विदेशी भूमि, दूरागत मृत्यु, प्रलय, समुद्री यात्रा के बारे में सोचना।

81. किसी धनी रिश्तेदार, सुंदर पोषाक, स्वर्णाभूषण, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पके फल के बारे में चिंतन।

82. शांतिपूर्ण मृत्यु, पर्याप्त दहेज, सुखद समाचार, हाथी की सवारी, लाभकारी यात्रा, बहन के बारे में चिंतन।

83. व्यापार, संधि अथवा करार, किसी संपत्ति के पट्टे के बारे में, प्रवेश द्वार अथवा मार्ग, दुल्हन अथवा चकलों के बारे में सोच।

84. पुत्री, तालाब अथवा स्नानगृह (हमाम), सार्वजनिक समारोह, सार्वजनिक त्यौहार, अवकाश, साफ मोमजामा, किसी प्रिय व्यक्ति के बारे में सोचना।

इस बिंदु पर आकर गणनाएं समाप्त हो जाती हैं। चूंकि गणना में संख्या को ही प्रयुक्त किया जाता है तथा कोई भी संख्या 9 से ज्यादा नहीं हो सकती। इसलिए $9^2+3=84$, जो समस्या का समाधान कर देगा। ध्यान देने पर पता चलेगा कि परिणामात्मक संख्याओं की अनेक व्याख्याएं मौजूद हैं, परंतु जब प्रतीक ज्ञान सुलझ जाता है, तब बहुत कम संदेह रह जाता है कि कौन-सी

व्याख्या उपयोग में लानी है। अतएव, घटकों में परिवर्तन करके मैंने 36 की संख्या प्राप्त की, 156 तथा 36=9, जबकि 156-3=153=9, 57 से 12, मैंने क्रम परिवर्तन करके 123 की संख्या प्राप्त की तथा 123-3= 120=12, तत्पश्चात एक चयनात्मक प्रक्रिया द्वारा एक विशिष्ट संकेत प्राप्त किया जाता है। संख्याओं के गुण कुछ अर्थों में प्रयुक्त होते हैं, पर वास्तव में ये घटनात्मक महत्त्व के ही होते हैं:

परिणामात्मक संख्या 36=9

क्रम परिवर्तन

156-3= 153= 9

165-3= 162= 9

516-3= 513= 9

561-3= 558= 9

615-3= 612= 9

651-3= 648= 9

परिणामात्मक संख्या 57= 12 अथवा 3

123-3= 120= 12 या 3

132-3= 129= 12 या 3

213-3= 210= 3

231-3= 228= 12 या 3

312-3= 309= 12 या 3

321-3= 318= 12 या 3

□□

खोई हुई वस्तुओं के संबंध में

प्रतीक विज्ञान का आधार समझ लेने के बाद भविष्यकथन को व्यावहारिक रूप से अनगिनत मामलों की ओर केंद्रित किया जा सकता है। किसी रोग के निदान से संबंधित प्रश्न, निवेश, वित्त, संपत्ति, हैसियत, व्यवसाय, घरेलू तथा सामाजिक मामले भविष्यकथन के प्रथम भाग द्वारा आसानी से सुलझाए जा सकते हैं। यदि इस विधि में संख्याएं वस्तुओं से संबंधित नहीं होतीं तो कोई हल नहीं निकाला जा सकता था। इस विषय में सलाहकार को अपना मस्तिष्क सिर्फ सामान्य प्रश्न अथवा वस्तु पर केंद्रित करना चाहिए। उसके पश्चात शृंखला की अन्य संख्याएं देनी चाहिए। आमतौर पर प्रश्नगत वस्तु का तत्काल पता चल जाता है तथा संख्याओं को तब नियमों के मुताबिक प्रयोग करना चाहिए।

जीवन से जुड़े समस्त मसलों का समाधान प्रस्तुत करना बेहद विस्तृत कार्य है। अतएव, मैंने खुद को सिर्फ वस्तुओं के खोने तक सीमित रखा है, जो संख्या प्रश्नकर्ता सलाहकार को बताता है, उसके आधार पर की गई गणना का परिणाम निम्नलिखित संख्याएं होती हैं, तो उत्तर इस प्रकार होगा:

1. वस्तु को मुख्य कक्ष में किसी सफेद मलमल के कपड़े के पास ढूंढना चाहिए। किसी गोरे बच्चे से भी पूछताछ करनी चाहिए।

2. वस्तु नौकरानी की मदद से ढूंढ़ी जाएगी, जो किसी कटोरे अथवा घड़े के आस-पास मिलेगी।

3. वस्तु रास्ते में अथवा कागजातों के बीच है।

4. वस्तु प्रश्नकर्ता के ही कब्जे में है, खोई नहीं है।

5. अपने आप मिल जाएगी। टोपी, पगड़ी अथवा सिर पर धारण करनेवाली किसी वस्तु में ढूंढ़ें।

6. उस स्थान पर, जहां जूते-चप्पल रखे जाते हैं। संभव है कि ताख, स्टैंड अथवा रैक में वस्तु हो।

7. नौकर से पूछताछ करें। घर की सफाई करनेवाली नौकरानी से पूछें।

8. वस्तु किसी अल्मारी अथवा लंबवत कगार पर, किसी नौकर अथवा

काम करनेवाले को मिलेगी।

9. वस्तु किसी बच्चे के पास है, जिसने कुछ कपड़ों के साथ इसे रखा है।

10. वस्तु वापस मिलेगी। मुख्य कक्ष में ही है।

11. ताल, पोखरा अथवा जलाशय के आस-पास छानबीन करें।

12. वस्तु खोई नहीं है, मगर मिल नहीं रही है। भूल गई है, जो कार्यस्थल, दफ्तर, किताबों अथवा कागजातों में कहीं है और सुरक्षित है।

13. घड़ी रखने के स्थान पर ढूंढ़ें। शाल अथवा उत्तरीय रखने के स्थान पर भी हो सकती है।

14. वस्तु पगड़ी अथवा टोपी के भीतर होनी चाहिए। अगर बाहर खोई है तो शौचालय, सीवर अथवा नाले में ढूंढ़ना चाहिए। वस्तु का मिलना संदिग्ध है।

15. पति या पत्नी से पूछें, यदि उससे वस्तु का पता नहीं लगता है तो ढोरों के बांधने की जगह अथवा अस्तबल में ढूंढ़ें।

16. आपका रसोइया खोई वस्तु ढूंढ़ निकालेगा। वस्तु अवश्य मिलेगी।

17. किसी ताख अथवा कैबिनेट के किसी भाग पर वस्तु रखी होनी चाहिए, जहां कला संबंधी वस्तुएं या कीमती वस्तुएं रखी जाती हैं।

18. घर ही में वह वस्तु खोई है तथा वस्त्रों के बीच में पड़ी मिलेगी।

19. किसी निर्जल, सूखे अथवा रेतीले रास्ते के आस-पास खोई वस्तु मिलेगी।

20. वस्तु खोई नहीं है, मगर भूल गई है। यह जल में मिलेगी अथवा किसी महीन कपड़े के करीब मिलेगी।

21. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास ही है। यह किसी बक्से अथवा खाने में दो भागों में मोड़कर रखी है।

22. वस्तु घर में किसी ताख पर रखी है तथा जल्दी ही मिल जाएगी।

23. वस्तु थोड़ी ही दूर है। दूसरे कमरे में तलाश करें, जहां कपड़े रखे जाते हैं।

24. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास ही है। खोने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।

25. प्रश्नकर्ता के व्यक्तिगत प्रभावों से वस्तु शीघ्र मिल जाएगी। किसी गोल व सफेद चीज की तलाश करें, वस्तु वहीं होगी।

26. घर के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति से खोई वस्तु के संबंध में पूछताछ करें। उसी ने इसे सुरक्षित रखा होगा।

27. खोई वस्तु को अस्तबल में ढूंढ़ें तथा गाड़ीवान या कोचवान से पूछताछ करें।

28. वस्तु पूरी तरह खो गई है। खुद को ढूंढ़ने की मशक्कत से अलग

रखें।

29. वस्तु के बारे में किसी पुराने नौकर या साइस से पता चल सकता है। वस्तु वापस की जा चुकी है।

30. बच्चों अथवा विद्यार्थियों से पूछताछ करने पर वस्तु वापस मिलेगी। वस्तु खेल में कहीं खो गई है।

31. वस्तु शौचालय अथवा घर की नाली में है। यदि भाग्य अच्छा होगा, तभी वस्तु वापस मिलेगी।

32. वस्तु निकट के बरामदे अथवा किसी कगार पर रखी मिलेगी।

33. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास ही है। अपने ही प्रयासों से मिलेगी। वस्तु संभवत: धोती या वस्त्रों में है।

34. वस्तु आग के पास होनी चाहिए अथवा फायर प्लेसवाले किसी मुख्य कक्ष में। वस्तु नजदीक ही है तथा शीघ्र मिल जाएगी।

35. वस्तु जल के निकट किसी गुप्त स्थान पर है अथवा दंपति के निजी कक्ष में भी हो सकती है। 'वाशिंग स्टैंड' के आस-पास भी ढूंढ़ें।

36. वस्तु आया अथवा बच्चों की दाई के साथ वापस आ जाएगी।

37. वस्तु पूजागृह अथवा निजी कक्ष में, परिसर में ही मिल जाएगी।

38. उस स्थान पर जाने के बाद वस्तु मिल जाएगी, जहां प्रश्नकर्ता ने स्नान किया था।

39. वस्तु गुम नहीं हुई है, परंतु ताख के किनारे दबी पड़ी है।

40. वस्तु प्रश्नकर्ता की धोती अथवा अन्य परिधानों में है। पगड़ी या लंगोटी में भी होना संभव है।

41. जहां पर प्रश्नकर्ता के (पति/पत्नी के) जूते, चप्पल रखे जाते हों, वहां पर वस्तु होने की संभावना है।

42. वस्तु बावर्ची या खानसामें के घर में है अथवा जल या घड़े के पास है।

43. वस्तु दूर नहीं है, वस्तु को गाड़ीवान के पंडाल या अस्तबल में ढूंढ़ें। वस्तु वापस मिल जाएगी।

44. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास ही है। इसे तेल के बर्तन अथवा दीपक में ढूंढ़ें। वस्तु को शुद्ध करने की जरूरत पड़ेगी।

45. वस्तु एकदम ठीक-ठाक हालत में है। किसी ताख में ढूंढ़ें।

46. प्रश्नकर्ता के पार्टनर ने वस्तु को सुरक्षित रख दिया है।

47. काम कर रहे दो नौकरों से पूछताछ करें। जो असहज दिखे, उससे ही जानकारी मिलेगी।

48. जहां पर पेयजल रखा जाता है, वस्तु वहीं पड़ी है।

49. वस्तु की सुंदरता नष्ट हो चुकी है तथा यह वस्तुतः गायब हो चुकी है। यदि मिलती भी है तो बुरी तरह क्षतिग्रस्त प्राप्त होगी।

50. वस्तु खोई नहीं है, बल्कि किसी बक्से में है। प्रश्नकर्ता के पास ही है।

51. वस्तु नहाने के स्थान, हम्माम या स्नानगृह से मिल जाएगी।

52. खोई वस्तु के संबंध में अपने पार्टनर या गृहस्वामी से पूछताछ करें। इसके संबंधी से मदद मिल सकती है। यह दूसरे हाथ में जा चुकी है।

53. वस्तु नौकर के कब्जे में है। वह उसे वापस लाएगा।

54. वस्तु परिवार के ही किसी व्यक्ति के पास है। बच्चों के कमरे में ढूंढ़ें।

55. वस्तु उस स्थान पर है, जहां बरसात का पानी बहने के लिए नाली बनी हो अथवा जहां पानी हो।

56. वस्तु निकट ही है। जहां पर प्रश्नकर्ता अंतिम बार ठहरा था, वहां से सूचना प्राप्त करें तो वस्तु मिल जाएगी।

57. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास ही है। वहु सैंडल बैग, हिप पॉकेट अथवा जहां खेल का सामान रखा जाता है, वहां हो सकती है।

58. वस्तु दो व्यक्तियों के हाथ में है। अतः मुश्किल से मिलेगी। वस्तु का इस्तेमाल कर लिया गया है।

59. किसी वृद्ध नौकर ने वस्तु को रखा है। यह रोटी अथवा केक या आटे में मिलेगी।

60. ऐसा प्रतीत होता है कि वस्तु इस तरह गायब हुई है कि मिलना मुश्किल है।

61. वस्तु घर के निचले हिस्से में मौजूद, जूते, चप्पलों के नीचे होने की संभावना है।

62. ढूंढ़ना छोड़ दें, वस्तु मिलेगी नहीं।

63. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास ही है तथा वह किसी पुराने व अंधेरे स्थान पर अथवा पुराने सामानों के बीच है।

64. वस्तु प्रश्नकर्ता के ही कब्जे में है। यह कहीं गुम हो गई है तथा भूल गई है। उचित समय पर मिल जाएगी। घर के अंधेरे कोनों तथा ऊंचे स्थानों पर तलाश करें।

65. वस्तु प्रश्नकर्ता के कब्जे से बाहर जा चुकी है तथा यह किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से ही मिलेगी।

66. वस्तु दो नौकरों के षड्यंत्र के द्वारा गायब हुई है, मिलना मुश्किल है। अपंग व्यक्ति से पूछताछ करें।

67. वस्तु का पता किसी युवा अथवा बच्चे द्वारा लगेगा।

68. वस्तु घर की छत पर है। नौकर उसे तलाशेगा।

69. वस्तु बहुत दूर उस स्थान पर है, जहां प्रश्नकर्ता अंतिम बार रुका था। किसी रिश्तेदार के प्रवेश द्वार के पास।

70. वस्तु प्रश्नकर्ता के पास, वहां है जहां पानी रखा जाता है।

71. वस्तु खोई नहीं है, बल्कि प्रश्नकर्ता के कब्जे में है। जल्दी ही नजर आ जाएगी।

72. प्रश्नकर्ता के ही कब्जे में किसी घड़े अथवा जलपात्र के पास वस्तु मौजूद है।

73. विभागीय जांच द्वारा वस्तु की प्राप्ति होगी।

74. विश्वासपात्र नौकर वस्तु ले आएगा।

75. वस्तु युवकों के हाथों में पड़ गई है। यह मिलेगी, परंतु विकृत दशा में अथवा मूल्यहीन होकर।

76. वस्तु घर में ही है, जहां अनाज अथवा रोटी रखी जाती है।

77. वस्तु थोड़ी दूरी पर ही स्थित है। एक नौकर उसे ढूंढ़ कर लाएगा।

78. किसी अनजान जगह में वस्तु है तथा बड़ी मुश्किल में है।

79. वस्तु आपके स्थान में ही है। वस्तु किसी लोहे या स्टील के सामान के निकट मिलेगी।

80. वस्तु प्रश्नकर्ता के कब्जे में दो हिस्सेवाली किसी वस्तु, बक्से अथवा किसी केस में है।

81. कपड़ों के बीच ढूंढ़ें। यदि वह मिल जाए तो वस्तुतः आप भाग्यशाली हैं।

82. चौके अथवा रसोई के स्थान में खानसामे से पूछताछ करें।

83. वस्तु युवा लड़की ढूंढ़ेगी। यह तालाब अथवा पोखरे के निकट है।

84. वस्तु घर में ही है। यह बॉक्स अथवा खाने में है।

संख्याओं पर आधारित उपरोक्त भविष्यकथनों में यह स्पष्ट है कि वे सुस्पष्ट तथा विशेष बिंदु की ओर संकेत करते हैं। यदि ये सत्य तथा विश्वसनीय हैं तो निःसंदेह उल्लेखनीय हैं। कम-से-कम मेरे निजी अनुभव में तो ये सही साबित हुए हैं तथा मैंने इनका अनेक अवसरों पर प्रयोग किया है। इस वजह से मैं उनके बारे में कुछ कहने की स्थिति में हूं।

यह भी उल्लेखनीय है कि भविष्यदृष्टा के हाथों में यह विधि पूर्णरूपेण सही साबित होती है। निःसंदेह, यह किसी भी भविष्यकथन की जड़ में होती है, भले ही उसका आधार संख्यात्मक हो अथवा प्रतीकात्मक आधार का कोई अन्य स्वरूप। यदि भविष्यकथन के गुण वहां मौजूद हैं, तो कोई भी प्रक्रिया या विधि प्रयोग में लाई जा सकती है, लेकिन इन विधियों में कुछ अन्य की

अपेक्षा ज्यादा सटीक परिणाम देने में समर्थ हैं।

यही वजह है कि उन्हें वरीयता दी जाती है। यदि भविष्यकथन की प्रज्ञा किसी व्यक्ति में मौजूद नहीं है और वह इस बारे में किसी को सलाह दे रहा है तो उसे किसी अन्य प्रज्ञासंपन्न व्यक्ति, जिसके अनुभवों से उसकी प्रज्ञा सिद्ध हो चुकी है, की सहायता लेनी चाहिए। इस मामले में अतिकुशल प्रतीक विज्ञानी भी असफल साबित होंगे, क्योंकि वे उसी चीज की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं, जो उनके सामने होती है।

यह आवश्यक नहीं है कि प्रतीक विज्ञानी के पास भविष्यकथन की प्रज्ञा भी मौजूद हो। उसका कार्य उसके पास आए अंकों की व्याख्या के साथ आरंभ व समाप्त होता है। बेहतर यह होगा कि वे आखिर से अंत तक भविष्यकथन करें। परिणामतः हम अधिकतर पाते हैं कि एक व्यक्ति जो संवेदनशील तथा अंतर्दृष्टि संपन्न नहीं है, वह अच्छा प्रतीक विज्ञानी साबित होता है, जो यह जानता है कि अंकों की किस तरह से व्याख्या की जाए, ऐसा व्यक्ति अच्छा 'माध्यम' बनने का श्रेय प्राप्त करता है, जैसे कि दुनिया में जिसके बारे में बातचीत की जाती है।

मुझे यह कहना है कि एक प्रतीक विज्ञानी को कभी भी 'माध्यम' नहीं बनाना चाहिए। एक प्रतीक विज्ञानी अपनी सूचना अध्यात्मवादियों अथवा मानसविदों के 'माध्यमों' से नहीं पाता, बल्कि वह अपनी सूचना सीधे प्रकृति से प्राप्त करता है, जिसकी प्रतीकात्मकता का अध्ययन उसने सीखा है।

यदि 'उच्चात्माओं' की भाषा को तल्लीनतापूर्वक सुना जाए, तो औसत प्रज्ञावाले व्यक्ति को भी उसमें अंतर्निहित ज्ञान का खुलासा हो सकता है और वे इसका ऐसे समय अथवा ऐसे तरीके से प्रदर्शन कर सकते हैं कि पूरा विश्व उससे लाभान्वित हो सकता है।

सचाई यह है कि हमने मानव ज्ञान में एक अक्षर भी नहीं जोड़ा है। ऐसी विशेषताएं मौजूद हैं, जिनमें हम संदेह से परे प्रकृति में कुछ अपरिचित अज्ञात शक्तियों की उपस्थिति को साबित कर सकते हैं, लेकिन वे आध्यात्मिक नहीं, बल्कि अधिकतर भौतिक ही साबित होती हैं तथा उनकी तुलना किसी भी अर्थ में एक भारतीय योगी के खुलेआम प्रदर्शन से नहीं की जा सकती।

अध्यात्मवादियों का चिंतन मात्र उन बातों का खुलासा करने में सक्षम है, जिसके बारे में विश्व को अब संदेह नहीं है। मगर यह अमरत्व की अवधारणा साबित करने में असफल रही है। वस्तुतः इससे आत्मिक उपस्थिति का संदेहयुक्त मामला सामने आता है। यदि वह इस प्रकार का दावा करती है तो यह मूढ़तापूर्ण

तथा हास्यास्पद नहीं है।

वर्तमान अनुमानित समस्याओं के संदर्भ में इसके योगदान को सम्मानपूर्ण ढंग से देखना चाहिए। वर्षों के धैर्यपूर्वक अध्ययन तथा शोध को कुछ अज्ञानी व्यक्तियों द्वारा सिर्फ विशेष मानसिक शक्ति अथवा आत्मिक संचार की संज्ञा दी गई है। मैं जिस आध्यात्मिक धारणा में विश्वास रखता हूं, उससे मैंने किसी भी निष्ठावान शोधकर्ता की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाई है।

□□

ग्रहों से संबंधित समय

इस विषय को समझने के क्रम में अब हम उस मुकाम पर आ गए हैं, जहां अपने अनुभवों को नियमों में परिवर्तित करने का समय आ गया है।

मैं इस प्रक्रिया में उन तीन सूत्रों का प्रयोग करूंगा, जिनका मैंने हल्का-सा उल्लेख तो किया है, लेकिन विस्तार से नहीं बताया है।

इसमें सबसे पहला सूत्र है नाक्षत्रिक। दूसरा है नामवाचक और तीसरा है अंक सूत्र। बाद के दो सूत्रों का वर्णन अगले अध्याय में विस्तार से किया जाएगा। मैं सबसे पहले नाक्षत्रिक सूत्र की चर्चा करना चाहूंगा, क्योंकि मैं इसे सांकेतिकता का आधार मानता हूं।

दिन के 24 घंटों का चक्र वर्ष के चक्र का प्राकृतिक संकेत है। प्रत्येक सुबह पूर्व में सूर्य उदय होता है, फिर वह मध्य आकाश से गुजरता हुआ पश्चिमी क्षितिज पर अस्त हो जाता है। इस प्रकार औसत रूप से दिन जहां 12 घंटे का होता है, वहीं रात के 12 घंटे मिलाकर 24 घंटे का पूर्ण दिन होता है।

21 मार्च और 23 सितंबर साल में केवल दो ऐसे दिन होते हैं, जब सूर्य ठीक छह बजे निकलकर शाम छह बजे अस्त हो जाता है। किसी भी स्थान के अक्षांक्ष के अनुसार गर्मियों में दिन बड़ा और शीतकाल में छोटा होता है।

दिन के 24 घंटे का चक्र दिन और रात में विभाजित होता है। दिन के 12 घंटे समान 12 भागों में विभाजित होते हैं, जिन्हें ग्रहीय घंटों के नाम से जाना जाता है।

इन ग्रहीय घंटों की गणना स्थानीय सूर्योदय के आधार पर की जाती है। इसमें पहले घंटे का स्वामित्व उस दिन के स्वामी के नाम पर होता है, जिसका वह स्वामी है, यथा:

☉ सूर्य स्वामी है रविवार का
☽ चंद्रमा स्वामी है सोमवार का
♂ मंगल स्वामी है मंगलवार का
☿ बुध स्वामी है बुधवार का
♃ बृहस्पति स्वामी है गुरुवार का

♀ शुक्र स्वामी है शुक्रवार का

♄ शनि स्वामी है शनिवार का

इस सूत्र के अनुसार रविवार के दिन सूर्योदय के बाद का पहला घंटा सूर्य, सोमवार को चंद्र आदि करेंगे। हर दिन समय के प्रहर का स्वामित्व एक निश्चित क्रम के अनुसार करते हैं। इस क्रम को निम्नांकित चक्र के माध्यम से और बेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

दिन	ग्रहीय घंटे											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रविवार	☉	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄
सोमवार	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉
मंगलवार	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽
बुधवार	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃	♂
गुरुवार	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿
शुक्रवार	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃
शनिवार	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀

उपरोक्त चक्र में वैसे तो सूर्योदय के बाद मात्र 12 घंटों का ही उल्लेख किया गया है, लेकिन इसे किसी भी दिन पूरे 24 घंटों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर सूर्योदय के 12वें घंटे पर शनि का स्वामित्व है तो 13वें घंटे पर हमने रविवार का क्रम फिर से दोहरा दिया। इस तरह 24वें घंटे पर शनि का स्वामित्व फिर से आ गया। अब देखिए रविवार के अगले दिन यानी सोमवार को पहले घंटे का स्वामित्व चंद्र के पास है और हमारे चक्र के अनुसार भी ऐसा ही है।

अब अगला चरण है स्थानीय सूर्योदय निर्धारित करना। स्थानीय सूर्योदय निकालने के लिए जो प्रचलित तरीका है (ग्रीनविच सूर्योदय में पश्चिमी रेखांश को जोड़ना) वह काफी गलत और अव्यावहारिक है। उपरोक्त तरीका ग्रीनविच पर विषुवांश निर्धारित करने के लिए तो सही हो सकता है, लेकिन जहां तक सूर्योदय निर्धारित करने की बात है, विभिन्न स्थानों के रेखांश परिवर्तित होने

से इसमें त्रुटि आ जाती है।

स्थानीय सूर्योदय निर्धारित करने की गणना कोई बहुत जटिल नहीं है, इसलिए मैं चाहूंगा कि अंकों में रुचि रखने वाले पाठक इसे समझें।

सूत्रः किसी भी स्थान के अक्षांश के log. tan. में सूर्य क्रांति के log. tan. जोड़िए। उपरोक्त जोड़ करने से जो मान प्राप्त होगा, वह उस अक्षांश पर सूर्य आरोहण अंतर के log. sine के मान के बराबर होगा।

यदि सूर्य की क्रांति दक्षिण में हो तो आरोहण अंतर में 90^0 जोड़िए और यदि सूर्य की क्रांति उत्तर में हो तो 90^0 घटाइए। फिर उसे 4 से गुणा करें। प्राप्त फल में डिग्री को मिनट तथा मिनट को सेकंड मान लें। इससे जो समय प्राप्त होगा, वो ही स्थानीय सूर्योदय समय होगा। हालांकि इस सूत्र से प्राप्त स्थानीय सूर्योदय में क्रांति के कारण वास्तविक स्थानीय समय से थोड़ा अंतर अवश्य होगा, लेकिन वो इतना कम होगा कि उसे नगण्य ही माना जा सकता है। परिणाम को और अधिक सही बनाने के लिए दिन में सुबह के छह बजे की क्रांति लेना अधिक फायदेमंद रहता है।

उदाहरणः ग्रीनविच पर पर 30 अप्रैल 1911 को सूर्योदय का समय निर्धारित करना है। एफेमरीज (पंचांग की तर्ज पर बनी एक अंग्रेजी पत्री, जिसमें ग्रहों की चाल डिग्री-मिनट में दी रहती है) से सूर्य क्रांति निकाली:

प्रातः 6 बजे- 14^0 26' उत्तर
ग्रीनविच का अक्षांश- 51^0 28' उत्तर
Log. tan. 14^0 26' - 9.41057
(+) Log. tan.51^0 28' - 0.09888
Sine Log. 18^0 51' = 9.50945
(+) 90^0.0
108^0. 51'
X4

=435 मिनट 24 सेकंड=7 घंटे 15 मिनट 24 सेकंड

उपरोक्त को 12.00.00 में से घटाने पर आया 4.44.36, यही सूर्योदय का मध्य समय है।

लेकिन पंचांग देखने से यह ज्ञात होता है कि सूर्य घड़ी की चाल से 2 मिनट 44 सेकंड पीछे था अर्थात घड़ी में जब दोपहर का समय हुआ उससे लगभग तीन मिनट पहले ही सूर्य मध्य आकाश पार कर चुका था। लिहाजा समय का और शोधन करना होगा।

$$\begin{array}{l} 4.\ \ 44.\ 36 \\ (-)\ \ 2.\ 44 \\ \hline 4.\ \ 41.\ \ 52 \end{array}$$

अत: हम इसे ग्रीनविच पर मध्य सूर्योदय समय मान सकते हैं। हालांकि अंतरिक्ष वैज्ञानिक इस समय में भी तमाम प्रकार के शोधन करते हैं, लेकिन हमें उन बारीकियों में जाने की आवश्यकता नहीं है।

आइए, अब हम इसी प्रक्रिया की मदद से उसी दिन लिवरपूल का सूर्योदय निकालते हैं। लिवरपूल का अक्षांश 53^0 25' है और सूर्य की क्रांति तो वही रहेगी।

$$\begin{array}{lrl} \text{Log. tan. } 53^0\ 25' & - & 0.12947 \\ (+)\ \text{"}\ \ \text{"}\ 14^0\ 26' & - & \underline{9.41057} \\ = \text{Log. Sine. } 20^0\ 17' & = & 9\text{–}54004 \end{array}$$

$$\begin{array}{lrr} (+) & 90^0 & 0' \\ & 20^0 & 17 \\ \hline & 110^0 & 17' \\ & (X) & 4 \end{array}$$

=441 मिनट 8 सेकंड=7 घंटे 21 मिनट 8 सेकंड

जैसा कि हमने अभी जाना कि 30 अप्रैल को लंदन में आरोहण अंतर 18^0 51' और लिवरपूल में 20^0 17' था। इन दोनों के बीच 1^0 26' का अंतर है और यदि हम इसे 4 से गुणा कर दें तो यह 5 मिनट 44 सेकंड होता है। यह अंतर अक्षांश में अंतर के परिणामस्वरूप आया है। कोई स्थान यदि लंदन की तरह ही ध्रुवोत्तर वृत्त पर हो तो वहां लंदन से करीब छह मिनट पहले सूर्योदय होगा। लेकिन लिवरपूल लंदन से 12 मिनट 16 सेकंड पश्चिम में है। इसलिए:

+12 मिनट 16 सेकंड
$\underline{-5 \qquad\qquad 44}$
+6 $\qquad$ 32

इसे ग्रीनविच औसत के सूर्योदय के समय में जोड़ देना है। पंचांग में इसका मान ठीक-ठीक दिया गया है, जो 4.37 पूर्वान्ह के बराबर होता है। अत:

लंदन में सूर्योदय 4 घंटे 37 मि. प्रात:
$\underline{+7}$

लिवरपूल में सूर्योदय का समय होगा 4.44, जो कि ग्रीनविच में सूर्योदय के समय में सिर्फ पश्चिमी देशांतर को जोड़ने से बहुत भिन्न है। 'मिस्ट्रीज ऑफ साउंड एंड नंबर' में इसी तरह का उदाहरण दिया गया है:

पंचांग के माध्यम से	4 ब. 37 मि. पूर्वान्ह
लिवरपूल पश्चिम	12 मि.
	4 घं. 47 मि.

उपरोक्त से यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ऐसी पद्धति में, जिसमें किसी घटना के समय की जानकारी 4 मिनट के भीतर होनी चाहिए, इन परिस्थितियों में एक भयानक भूल साबित होगी तथा तथ्यों के हिसाब से इसको व्यवस्थित करने के लिए ध्वन्यात्मकं मानों के साथ एक सीमा तक बाजीगरी करनी पड़ेगी।

प्रतीक विज्ञानियों द्वारा समय का विभाजनः प्राकृतिक होना चाहिए, कृत्रिम नहीं तथा ध्वन्यात्मक मान अपरिवर्तित रहना चाहिए।

हम सूर्योदय के समय प्राकृतिक दिन की शुरुआत से परिचित हैं। आइए, इस दिन की लंबाई ज्ञात करें:

सूर्योदय का समय	4घं	39मि.	52से.
लिया	12	0	0
	7	20	8
	(x)		2
दिन की लंबाई	14	40	16

अर्थात नियम यह है कि सूर्योदय के समय में 2 से गुणा करें। इससे रात की लंबाई पता चल जाएगी, जो 24 घंटों में से घटा दी जाएगी। फलस्वरूप दिन की लंबाई का पता चल जाएगा जो सूर्यास्त की दुगनी होती है।

सूर्योदय का समय	4घं. 39मि. 52से.
	x 2
रात का समय	9. 19. 44
घटाया जाएगा	24 0 0
दिन की लंबाई	14 40 16

तथा सूर्यास्त के समय 7घं 20मि. 8से. को 2 से गुणा करें

7 घं. 20 मि. 8 सै.

x 2

14घं 40मि. 16से. जैसा कि पहले था।

दिन की लंबाई को 12 से भाग दें, ताकि उस दिन के प्रत्येक ग्रह से संबंधित घंटे निकाले जा सकें। जैसे:

14घं 40मि. 16से. ÷12=1घं 13मि. 21 1/3 से यह मात्रा सूर्योदय के समय में क्रमवार जोड़ने से 12 ग्रहीय घंटों का आरंभ पता लग जाएगा।

उदाहरणः एक निश्चित दिवस को :

ग्रहीय घंटों का आरंभ
रविवार 30 अप्रैल 1911

1.	☉ 4.39.52	a.m.		8.	☉ 1.13.21	p.m.	
2.	♀ 5.53.13	a.m.		9.	♀ 2.26.42	p.m.	
3.	☿ 7 .6.34	a.m.		10.	☿ 3.40. 3	p.m.	
4.	☽ 8.19.56	a.m.		11.	☽ 4.53.25	p.m.	
5.	♄ 9.33.17	a.m.		12.	♄ 6 .6.46	p.m.	
6.	♃ 10.46.38	a.m.		13.	♃ 7.20 .8	p.m.	
7.	♂ 12. 0. 0	a.m.			रात्रि प्रारंभ		

उपरोक्त तालिका से यह दर्शित होगा कि सूर्योदय से दोपहर तक 6 ग्रहीय घंटे तथा दोपहर से सूर्यास्त तक भी 6 ग्रहीय घंटे प्राप्त होते हैं। पहले 6 ग्रहीय घंटे सकारात्मक हैं, जबकि बादवाले नकारात्मक। वर्तमान में हमारा आशय बाद वाले 6 घंटों से है।

टिप्पणी: हिंदू ज्योतिष पद्धति में इसे 'होरा' कहते हैं। किसी दिन की शुरुआत जिस ग्रह के 'होरा' से होती है, उसी ग्रह के आधार पर उस दिन का नाम रखा गया है। जैसे सूर्य का पहला होरावाला दिन रविवार।

ग्रहों से संबंधित अंक पहले ही दिए जा चुके हैं। यदि हम रविवार पर विचार कर रहे हों तो यह नियम इस प्रकार प्रवर्तित होगा:

रविवार

पूर्वान्ह			अपरान्ह		
☉	1	सकारात्मक	♂	5	नकारात्मक
♀	6	" "	☉	4	" "
☿	5	" "	♀	3	" "
☽	7	" "	☿	9	" "
♄	8	" "	☽	2	" "
♃	8	" "	♄	1	" "

इसका अर्थ यह हुआ कि रविवार अपरान्ह में पहले घंटे का स्वामी 0 है जिसका अंक 9 है। चूंकि यह नकारात्मक समय है, इस द्वारा किया जाता है, जो 9 का उल्टा है। अत:

	+	−	
☉	1	4	= 5

☽	7	2	=	9
♄	8	1	=	9
♃	3	6	=	9
♂	9	5	=	5
♀	6	3	=	9
☿	5	9	=	5

इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त ग्रहों के सकारात्मक तथा नकारात्मक मानों का योग या तो 5 आता है या 9, जहां से हम 5+9=14 का प्रतीकात्मक मान लेते हैं। (सात संयुक्त शक्तियों की पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग और नकारात्मक तथा सकारात्मक विशेषताएं।

उपविभाजन

हमें प्राकृतिक दिवस की भी लंबाई प्राप्त हो चुकी है। अब हमें इसे सात लगभग बराबर भागों में बांटना है। प्रत्येक भाग को क्रमिक नियम देने हैं तथा उसके बाद कोई संख्यात्मक मान। तब दिखाई देगा कि प्रत्येक भाग किसी ऐसी घटना को परिणाम देगा, जो उसकी प्रकृति से सुसंगत हो।

इस उद्देश्य के लिए 26 अप्रैल 1910 के मंगल की दोपहर के नकारात्मक समय को लें। दोपहर से लेकर सूर्यास्त तक का समय है–7घं 11मि। इसे 6 से बांटें तो हमें 1घं 11मि. 50से. प्राप्त होता है, जो मध्यान्ह के प्रत्येक ग्रहीय समय की लंबाई है। इसे 7 से बांटें। उससे समय का ग्रहीय उपविभाजन हासिल हो जाएगा, जो तकरीबन 10मि. 16से. का होता है।

नकारात्मक समय

♂	1. 11.50	अपरान्ह
⊙	2. 23.40	,,
♀	3. 35.30	,,
☿	4. 47.20	,,

मंगलवार, 26 अप्रैल 1910

सूर्यास्त 7. 11 ग्रहीय रूप 1घं 11मि. 50से. उपविभाजन 10मि. 16से.

	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
♂	1.11.50	⊙	2.23.40	♀	3.35.30	☿	4.47.20
⊙	1.22.6	♀	2.36.56	☿	3.45.46	☽	4.57.36

♀ 1.32.22	☿ 2.44.12	☽ 3.56.2	♄ 5.18.8
☿ 1.42.38	☽ 2.54.28	♄ 4.6.18	♃ 5.18.8
☽ 1.52.54	♄ 3.4.44	♃ 4.16.34	♂ 5.28.24
♄ 2. 3.10	♃ 3.15.0	♂ 4.26.50	☉ 5.38.40
♃ 2.13.26	♂ 3.25.16	☉ 4.37.6	♀ 5.48.56
Hor.♂	Hor.☉	Hor.♀	Hor.☿

उक्त संख्यात्मक मानों की सामग्री को परीक्षण में लाने के लिए हमें विभिन्न नामों का सहारा लेना पड़ेगा। उपरोक्त दिवस को न्यू मार्केट में संपन्न हुई घुड़दौड़ के विजेताओं के नाम इस प्रकार थे:

2.0 Boabdil
2.30 Brillante
3.0 Castellane
3.30 Ulster King
4.0 Paltry
4.30 Grain
5.00 Glacier

1 बजकर 53 मिनट से लेकर 2 बजकर 3 मिनट तक के समय का स्थायी चंद्रमा था। समय नकारात्मक था। हम उस राशि का पता लगाते हैं, जिसमें चंद्रमा उस दिन स्थित था। पंचांग द्वारा यह पता चला कि चंद्रमा वृश्चिक में था, जिसका स्वामी मंगल है तथा अंक 9 है।

Boabdil=261243=18= 9

2 बजकर 24 मिनट से 2 बजकर 34 मिनट तक के समय का स्वामी सूर्य था, जिसका नकारात्मक अंक 8 है।

Brillante=223154=17=8

2 बजकर 54 मिनट से 3 बजकर 5 मिनट तक के समय का स्वामी चंद्रमा वृश्चिक 0=9 में था अर्थात नकारात्मक –5

3.25 बजे से 3.35 बजे तक के समय का स्वामी मंगल था अर्थात सकारात्मक 9

Ulster King=236412252=27=9

3.56 से 4.6 बजे तक के समय का स्वामी चन्द्रमा था अर्थात नकारात्मक 2

Paltry 823421=20=2

4.27 से 4.37 बजे तक के समय का स्वामी था।

Grain=2215=10=1

यह प्रथम अपवाद है। 4.58 से लेकर 5.8 बजे तक के समय का स्वामी चंद्रमा वृश्चिक राशि में अर्थात 9 या नकारात्मक 5 में है।

Glacer = 23162=14=5

लेकिन उपरोक्त परिणामों को कुछ लोग संयोगवश तथा संभवतया जबरदस्ती निकाला हुआ मान सकते हैं। अब अगले दिन यानी 27 अप्रैल 1910 की घुड़दौड़ के परिणामों पर एक नजर डाल लेते हैं। उस दिन के विजेता इस प्रकार थे:

2.0	Betsy Jane	समय	♂
2.30	Desespoir	"	☽
3.10	Neil Gow	"	☉
3.45	Lady Frivoles	"	♄
4.15	Orne	"	☉
4.45	Acunha	"	☽

चंद्रमा अब धनु में था, जिसका स्वामी बृहस्पति तथा अंक 3 है, जिसका नकारात्मक 6 है।

Betsy jane = 21461315 = 23 = 5

जीता, नकारात्मक मंगल = 5

Desespoir = 41616822=30=3 चंद्रमा के समय में बृहस्पति ग्रह धनु (3) में स्थित जीता

Neil Gow=51322=13=4 सूर्य के नकारात्मक समय में जीता।

Lady Frivoles=314182637=35=8 जो शनि के समय में जीता।

Orne=2251=10=1 सूर्य के समय में जीता।

Acunha=12651=15=6 चंद्रमा के समय में बृहस्पति=3 अथवा उसके नकारात्मक 6 में जीता।

यहां पर मेरा आशय घुड़दौड़ की भविष्यवाणी करने के किसी तरीके का प्रतिपादन करना नहीं, अपितु सिर्फ ध्वनियों के महत्त्व, उनके संख्याओं या अंकों के साथ संबंधों तथा उन दोनों का प्रतीकात्मक ग्रह समयों से संबंध दर्शाना मात्र था, जो समूचे विषय को एक ही अवधारणा से जोड़ देते हैं। जैसे:

वृत्त=अनंत अथवा शून्य, क्योंकि सभी वृत्त एक-दूसरे के समान होते हैं

तथा एक ही केंद्र बिंदु की ओर अभिमुख होते हैं।

ग्रहीय समय के ज्ञान की व्यावहारिकता की व्याख्या करने से पूर्व मुझे उसका ठीक लेखा-जोखा प्रस्तुत करना चाहिए।

अनिश्चितता के सामान्य अनुभव में व्याप्त ग्रहीय समय के सवाल तथा उन्हें निर्धारित करने की रीति उसके साथ ध्वन्यात्मक मान की अत्यधिक संदेहपूर्ण समस्या मुझसे इस मामले में ध्यान देने की अपेक्षा करती है। इस मुद्दे के प्रमुख बिंदुओं की ओर इंगित करना मैं उन पाठकों के लिए जरूरी समझता हूं, जिन्होंने मेरी पुस्तक 'कॉस्मिक सिम्बॉलिज्म' का अध्ययन नहीं किया है।

भारत में अत्यंत प्राचीनकाल से ही ज्योतिषी सूर्योदय से समय की गणना करते थे तथा यह परिपाटी आज तक प्रचलित है। **भारत** के आम तबके में प्रचलित खगोलविज्ञान से मात्र मोटे अनुमान की ही अपेक्षा की जा सकती है, परंतु **भारत** में **जोशी** तथा ज्योतिष गणित में निपुण अन्य व्यक्ति सूर्योदय के समय की बिल्कुल ठीक गणना करने में सक्षम थे।

दूसरे शब्दों में, वे अपनी खगोल विज्ञान की तालिका की मदद से किसी भी समय सूर्य के देशांतर की गणना कर सकते थे। वे यह भी गणना कर सकते थे कि किस समय पर सूर्य आकाशीय क्षितिज पर किस देशांतर में होगा। उन्होंने दिन को 24 मिनटों के 60 कालखंडों में बांटा था। उसकी गणना सूर्योदय के समय से वे करते थे, जैसा कि हम दोपहर के समय से करते हैं। मोटे तौर पर राशिचक्र की प्रत्येक राशि के उदित होने में 5 घटिका या 120 मिनट लगते हैं अथवा प्रत्येक अंश के लिए 4 मिनट।

यहां पर कोई व्यक्ति सूर्योदय के बाद कितने घटिका तथा विघटिका (घंटे तथा मिनट) में पैदा होता है, इसका पता सूर्य की स्थिति से लग सकता है कि उस समय विशेष पर वह किस राशि तथा अंश पर था। परंतु प्राचीन ज्योतिषियों का कालमापन बहुत त्रुटिपूर्ण था और संभवतः सूर्य घड़ी समय मापने का उस वक्त का सबसे उपयुक्त ज्ञात माध्यम था, तथापि प्राचीन ज्योतिषियों ने प्रत्येक राशियों को 30 भागों में बांटा, जिसे 'त्रिशांश' कहते हैं तथा इसके प्रत्येक भाग के लिए 4 मिनट का समय निश्चित किया। उन्होंने सप्ताह के दिनों के वही नाम दिए, जैसे हमने (पश्चिम के लोगों ने) दिए। यही नहीं, भारतीय ज्योतिषियों ने भी राशियों का क्रम ठीक पश्चिमी विद्वानों की तरह निश्चित किया। ग्रहों तथा राशियों के स्वामी ग्रह भी एक जैसे ही थे।

पाश्चात्य ज्योतिषी कालांतर में दिन के उपविभाजन पर जोर देने लगे तथा

उन्होंने 'ग्रहीय समय' (Planetary hours) की प्रणाली ईजाद की। ग्रहीय समय सूर्योदय से सूर्यास्त तक के बीच के समय का बारहवां (1/12) हिस्सा है। विषुवत रेखीय प्रदेशों में यह सार्वभौमिक रूप से लगभग 12 घंटे का होता है, लेकिन उत्तरी अक्षांशों में दिन की लंबाई मौसम के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है।

यहां पर यह संदेह होता है कि क्या एक घंटे में निरपेक्ष 60 मिनट होने चाहिए अथवा ग्रहीय समय का 1/12वां हिस्से में आनेवाला समय। मेरे व्यक्तिगत मत में सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच के बराबर के समय को मापना चाहिए तथा ऐसे 6-6 कालखंडों को सूर्योदय से मध्यान्ह के बीच तथा मध्यान्ह से सूर्यास्त के बीच शामिल किया जाना चाहिए। कुछ ज्योतिषियों द्वारा गलती यह होती है कि वे इसकी गणना मध्यरात्रि से करते हैं। ऐसा करने से वे निरपेक्ष तथा ज्योतिष गणना का घालमेल कर देते हैं। परिणामस्वरूप मध्यान्ह के समय तक ठीक पहुंचने के बजाय वे कुछ ज्यादा समय ले लेते हैं।

इसके अलावा, सांकेतिकता के मामले में ध्वन्यात्मक मान का खिझानेवाला सवाल उन लोगों के दिमाग में गंभीर भ्रम की स्थिति पैदा कर देता है, जो कुछ शौकिया ज्योतिषियों के लेखन पर आधारित नियमों का पालन करते हैं। इस बिंदु पर मेरा सिर्फ यही विचार है कि प्रत्येक अक्षर, जो किसी शब्द या नाम के उच्चारण में अपना योगदान देते हैं, विशेषकर यदि वह कोई बलाघात अक्षर हो, उसे गणना में अवश्य लिया जाना चाहिए।

जैसे एक नाम 'Calliope' में i न सिर्फ 'दीर्घ' है, बल्कि यह बलाघात अक्षर भी बनाती है तथा यदि इसे छोड़ा जाता है, तो इसका अर्थ होगा कोई महत्त्वपूर्ण चीज छूट गई। मैंने हमेशा इसका प्रयोग किया है तथा इसका मान 1 है। कुछ अन्य ध्वन्यात्मक मान जो यहां पर शामिल हैं, वे मेरी अन्य पुस्तक 'कॉस्मिक सिम्बॉलिज्म' में मौजूद हैं।

अतः उद्देश्य यह होना चाहिए कि कोई ऐसी विधि ढूंढ़ी जाए जो मानों के नियम पर खतरा उतरने के साथ ही संबद्ध ग्रहीय समय में मामले में किसी किस्म का संदेह न छोड़े। ऐसी ही एक विधि मैंने ढूंढ़ी है। यह उस पुराने सिद्धांत पर आधारित है कि दिन की शुरुआत दोपहर से होती है, सूर्योदय से नहीं। इसे कैल्डियन व्यवस्था में भी स्वीकार किया गया है। इसमें प्रत्येक घंटे की लंबाई बराबर होती है, जैसे 60 मिनट की। संबंधित दिन, संबंधित घंटे तथा संबंधित समय के प्रतिनिधि ग्रह को ध्यान में रखना जरूरी है।

एक दिन 60 मिनटों के 24 घंटों का होता है। अध्ययन के बाद के पहले

घंटे का स्वामी उस दिन का ग्रह होता है। सभी समयों की गणना दिन के ग्रहों से की जाती है। संबंधित सारणी इस प्रकार है:

समय तालिका

गृह	दिन	काल						
☉	रविवार	12 ☉	1 ♀	2 ☿	3 ☽	4 ♄	5 ♃	6 ♂
☽	सोमवार	☽	♄	♃	♂	☉	♀	☿
♂	मंगलवार	♂	☉	♀	☿	☽	♄	♃
☿	बुधवार	☿	☽	♄	♃	♂	☉	♀
♃	गुरुवार	♃	♂	☉	♀	☿	☽	♄
♀	शुक्रवार	♀	☿	☽	♄	♃	♂	☉
♄	शनिवार	♄	♃	♂	☉	♀	☿	☽
राशि चिह्न		♒♑	♐♓	♏♈	♌	♎♉	♍♊	♋

पाठकों को दिखाने के उद्देश्य से उपरोक्त तालिका पर्याप्त होगी। इसमें स्पष्ट दृष्टिगोचर है कि बाएं से दाहिने कैल्डियन क्रमवाले ग्रह जैसे शनिवार के दिन, शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा ये धरती से जैसा दिखाई देते हैं अपनी गतियों के क्रम में रखे गए हैं।

मान लें, मुझे शुक्रवार 3 बजे अपरान्ह को शासित करनेवाला समय ज्ञात करना है। तीसरी आकृति (चार्ट की) तथा एक लाइन में हमें शुक्रवार के साथ शनि मिलता है तथा वह 1 घंटे रहेगा। 3 बजे से पहले 4 मिनट तक का स्वामी (शुक्र) है। यहां पर शनि के घंटे में शुक्र का समय चल रहा है। इसकी गणना इस प्रकार की जाती है।

दिन विशेष का स्वामी ♀ = 6
घंटा ♄ = 8
समय ♀ = 6

20=2

अतः इस अवधि के दौरान घुड़दौड़ में चंद्रमा से संबंधित नंबर का घोड़ा विजयी होगा। यदि चंद्रमा से संबंधित नाम रेस में अनुपस्थित है, तो चंद्रमा जिस राशि में स्थित है, उससे संबंधित नाम को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। अतः मान लें चन्द्रमा का प्रतिनिधित्व घुड़दौड़ में 2 या 7 के अंकों द्वारा नहीं हो रहा है, तो पंचांग देखने से हमें पता लगता है कि चंद्रमा उस दिन वृश्चिक

राशि में है। हमारी तालिका में वह राशि नीचे की ओर है तथा शुक्र के ठीक बाद उसका ग्रहीय समय शुरू हो रहा है। अतः मंगल ऐसा ग्रह है, जो चंद्रमा के स्थान पर रखा जा सकता है या उस घर में जिसमें चंद्रमा स्थित है। अतएव चंद्रमा से संबंधित अंकों 2 या 7 की अनुपस्थिति की दशा में मंगल से संबंधित अंक 9 की तलाश करनी चाहिए। कुछ अन्य उदाहरणों से इस मुद्दे पर रहा-सहा संदेह भी समाप्त हो जाएगा।

Plumption, 5 जनवरी 1912 दिन शुक्रवार=6
समय 1.15-बुध-5 उपग्रहीय समय शनि=8
658=19=10=1 नकारात्मक 8
Phyllis 836=17=8=जीता
1.45- बुध-5 उपग्रहीय समय बृहस्पति 3
653=14=5
Volauvent, 66366252=36=9 जीता
2.15 चंद्रमा 2- उपग्रहीय समय शनि-8
628=16=7
Bridge=223=7 जीता
2.45 चंद्रमा 2-उपग्रहीय बृहस्पति 3
623=11=2
Mint Tower =454462=25=7 जीता
3.15 शनि 8 उपग्रहीय समय शनि 8
688=22=4
Place Taker 831641212=28=1 जीता
3.40 शनि 8 उपग्रहीय समय शनि 8
688=22=4
Wavelass 616316=23=5 जीता

यहां पर हम देखते हैं कि छह में से पांच परिणाम रेस में भाग लेनेवालों के नामों के ध्वन्यात्मक मान तथा ग्रहदशा के आधार पर संभावित अंकों से सीधे मिलते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि "Volauvent" जो एक फ्रेंच नाम है तथा जिसका ध्वन्यात्मक मान 66366252=36=9

इसके विकल्पों का यहां प्रयोग किया गया है:

शनि 8-1 सूर्य
शुक्र 6-3 बृहस्पति
बुध 5-9 मंगल

चंद्रमा का मान इस मामले में 2 लिया गया है, जो शनि तथा बृहस्पति का

नकारात्मक है तथा शुक्र के समय यह सकारात्मक होता है। जहां तक पिछले विजेता Wavelass का सवाल था, जैसा कि लग्न कर्क के स्वामी चंद्रमा की प्रतीकात्मकता ने दर्शाया था, कुंडली के दूसरे घर धन संधि में था तथा उस पर यूरेनस, मंगल, शुक्र की शुभ दृष्टियां पड़ रही थीं और जो नेपच्यून की युति में था। कर्क तथा नेप्चून दोनों (Waves) सागर की लहरों के स्वामी हैं। चंद्रमा वह प्रेयसी (Loves) है, जो एक नाविक को प्यार करती है (Loveth) अथवा नहीं करती है, यह उसके चंचल चाबुक पर निर्भर करता है।

दूसरे स्थान पर उसी दिन का एक और उदाहरण देखें:

5 जनवरी, 1912, हेडॉक पार्क शुक्रवार=6

1.0 बुध-5 ग्र. उ. शुक्र 6

656=17=8

Claydon 231425=17=8 जीता

1.30 बुध- 5 उ. शुक्र 6

656=17=8

Lady Scholar, 314162232=24=6 जीती

2.0 चंद्रमा- 7 उपग्रहीया समय शुक्र 6

676=19=1

Climax 231412=13=4 जीता

2.30 चंद्रमा-7 उपग्रहीय समय शुक्र 6

676=19=1

Calliope 2131681=22=4 जीता

3 शनि 8 उपग्रहीय समय शुक्र 6

686=20=2

Jacobus 312626=20=2 जीता

3.30 शनि 8 उपग्रहीय समय शुक्र 6

686=20=2

Great Peter 221481412=25=7 जीता

यहां पर फिर से छह मानलों में से पांच में सीधे-सीधे ध्वन्यात्मक मान संबंधी तथा उपग्रहीय समय की आवृत्ति का नियम लागू होता है। मैं यह नहीं कह सकता कि 1.30 पर हुई घुड़दौड़ में 8 अथवा 1 के अंकों का प्रतिनिधित्व नहीं था। शनि 8 उस दिन शुक्र 6 की राशि में स्थित था। अतएव 6 विजयी रहा।

इसकी अनुमति उसी दशा में दी जा सकती है कि जब ऐसा नियमित हो तथा हम नियम से जो अपेक्षा करें।

Plumpton में संपन्न हुई अगले दिन की घुड़दौड़ इस अतिसाधारण विधि की विश्वसनीयता की पुष्टि करती है।

6 जनवरी 1912 शनिवार=8

1.15 बृहस्पति, 3 (आ.) सूर्य- 1

831=12=3

Beauty Bird 2641224=21=3 जीता

1.45 बृहस्पति, 3 (आ.) शुक्र 6

836=17=8

Penitent 8154154=28=1 जीता

2.15 मंगल, 9 (आ.) सूर्य 1

891=18=9

Saucepan 62685=27=9 जीता

2.45 मंगल, 9 (आ.) शुक्र 6

896=23=5

Early Closing 1231236752=32=5 जीता

3.15 सूर्य, 1 (आ.) सूर्य 1

811=10=1

Campamento 2148141546=36=9 जीता

3.40 सूर्य, 1 (आ.) सूर्य 1

811=10=1

Snap 6518=20=2 जीता

बाद के दो दृष्टांतों को छोड़कर सभी अन्य दृष्टांत इस नए सिद्धांत के अनुरूप हैं। यह भी देखा गया है कि हमने ग्रहों के सकारात्मक मान का उपयोग किया, सिवाय चंद्रमा के मामले के, जब वह किसी पुल्लिंग अथवा सकारात्मक ग्रह से संयोग बना रहा था, जैसे शनि, बृहस्पति तथा मंगल के साथ। यह भी देखा गया कि ध्वनियों के मान (जो अध्याय 7 में दिए गए हैं) के लिए पूरे नाम का प्रयोग किया गया है। सिर्फ सारणी के अथवा घटना के नियम समय का उपयोग किया गया।

किसी घटना के अनुमानित समय को कतई उपयोग में नहीं लाया गया और अंत में हमने सभी तथ्यों, दिन, घंटे तथा ग्रहों का समय तथा इन तीन कारकों के सकारात्मक मान के आपसी तालमेल का उपयोग किया। इसमें हमें 18 मामलों में 14 मामले इस सिद्धांत की पुष्टि में मिले।

मैं हेडॉक पार्क पर हुई घुड़दौड़ का एक अन्य उदाहरण देकर उदाहरणों का सिलसिला समाप्त करूंगा:

6 जनवरी 1912 शनिवार=8

1.0 बृहस्पति-3 (आ.) शनि 8

838=19=1

Barnet Fair 212514812=26=8 जीता

1.30 बृहस्पति 3 (आ.) शनि 8

838=19=1

Shaun Aboo 325126=19=1 जीता

2.0 मंगल-9 (आ.) शनि 8

898=25=7

Blunderbuss 2325412226=29=2 जीता

2.30 मंगल-9 (आ.) शनि 8

898=25=7

Borough Marsh 2264123=20=2 जीता

3.0 सूर्य -1 (आ.) शनि 8

818=17=8

Bembridge 214223=14=5 जीता

3.30 सूर्य -1 (आ.) शनि 8

818=17=8

Ilston 13645=19=1 जीता

यहां पर छह मामलों में से 5 हमारे साधारण नियम के मुताबिक हैं। मैं यहां पर उन बिंदुओं का जिक्र करना जरूरी नहीं समझता, जिस पर यह आधारित है। यदि विभिन्न ध्वनियों से जुड़े मानों के संबंध में कोई संदेह उत्पन्न हुआ हो अथवा यदि उस समय विशेष को शासित करनेवाले ग्रहों से संबंधित कालखंड के बारे में भ्रम की स्थिति हो तब कोई आनुषंगिक गलतियां दर्शा सकता है, परंतु सभी ध्वन्यात्मक मान मेरी 'कॉस्मिक सिंबॉलिज्म' जैसी कृतियों में दिए गए हैं। यहां पर सिर्फ एक ही नवीन तत्त्व है और वह है—समय विभाजन का अत्यंत प्राचीन तरीका।

कोई व्यक्ति स्थानीय समय के सूर्योदय को लेकर भ्रम में पड़ सकता है, परंतु ग्रीनविच समय के प्रयोग से मस्तिष्क में भ्रम की स्थिति नहीं उत्पन्न होगी। यह सवाल जरूर पूछा जा सकता है कि पूर्वी तथा पश्चिमी देशांतरों के लिए क्या जोड़ना-घटाना पड़ेगा?

इसका उत्तर यह है कि घटनाओं को ग्रीनविच समय के मापने जैसा कोई और बड़ा समय नहीं है। संभवतः इसका कारण इस तथ्य में मौजूद है कि ब्रह्मांडीय किरणों का वितरण केंद्रों से होता है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय मामलों

में ग्रहों के प्रभाव शासकों की जन्म कुंडलियों में दर्ज होते हैं। विश्व का संचालन तथा समय निर्धारण भी केंद्रों से होता है, जो गुप्त ब्रह्मांडीय राशियों के नाभिकीय पुंज से वितरित होते हैं। मगर हम बिना तथ्यों के कोई तर्क नहीं प्रस्तुत कर सकते तथा उपरोक्त घटनाएं स्पष्ट रूप से दर्शित करती हैं कि ग्रीनविच समय इस देश*में घटनेवाली सभी घटनाओं के लिए उपयोगी है।

यहां 24 में से 19 घटनाएं सीधे क्रम में ग्रहों के मान, नामों के ध्वन्यात्मक मान तथा विभिन्न कालखंडों के वैकल्पिक मान के अनुरूप फलीभूत हुई। 79 फीसदी सफलता भाग्यवादी संयोग के दायरे से परे हैं। अतः हम निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि हमारा मूल्यांकन ठीक था तथा समय विभाजन हमारे द्वारा खोजी गई विभाजन पद्धति और तथ्यों की कसौटी पर खरा उतरा।

मैंने जानबूझकर लोकरुचि की घटनाओं (घुड़दौड़) का चयन किया, क्योंकि उनका रिकॉर्ड मौजूद है तथा उनकी जांच आसानी से की जा सकती है। यह भी संभव था कि इस प्रकार के सर्वेक्षण को और आगे खींचा जाता और मेरे पास कुछ लगातार महीनों का रिकॉर्ड भी मौजूद था, परंतु मैं घुड़दौड़ की अनिश्चितता पर कोई पुस्तक नहीं लिख रहा हूं, बल्कि महज एक सिद्धांत का वर्णन कर रहा हूं कि दिन का आरंभ दोपहर (मध्यान्ह) से होता है। मैं यहां पर एक रहस्यात्मक प्रभाव भी दे रहा हूं कि वाकई में ऐसा है भी।

प्रत्यक्षतः कोई भी पद्धति, जो नाम के मान का उपयोग करती है, तुलनात्मक दृष्टि से अनुपयोगी है। उसका कारण यह है कि अधिकतर मामलों में एक या अनेक प्रतिस्पर्धी ऐसे होंगे, जिनके नाम के मान का बराबर इकाई महत्त्व होगा। उदाहरण के तौर पर Velca, Remiss, Sfax, Lady Senseless सभी एक ही प्रतिस्पर्धा में शामिल थे, जो Sfax द्वारा जीती गई। संक्षेप में बाह्यांतरण (Exclusion) की विधि का कोई व्यावहारिक महत्त्व नहीं है। सिर्फ चयन की एक वैज्ञानिक रीति ही विचार योग्य होगी।

यह दर्शित किया जा सकता है कि तीन कारकों के गुरुत्व मान पर आधारित तथा ब्रह्मांडीय किरणों के संबंध में टाल्मी (Ptolemy) तथा टाइको (Tycho) के सिद्धांत द्वारा समर्थित एक निश्चित चयन विधि एक वैज्ञानिक तथ्य है, जिसका कठोर परीक्षण कसौटी पर वर्षों से किया जाता रहा है तथा उसकी सफलता की दर 75 फीसदी से ज्यादा की जा रही है।

ग्रहीय समय की पद्धति के परीक्षण के लिए सप्ताह के प्रत्येक दिन दोपहर से 6 बजे तक प्रत्येक आधे घंटे की तालिका उपयोगी रहेगी:

---

*देश से लेखक का आशय सिर्फ ब्रिटेन के समय से है।

समय	12.0	12.30	1.0	1.30	2.0	2.30	3.0	3.30	4.0	4.30	5.0	5.30
रवि	2	2	7	7	6	6	8	8	9	9	4	4
सोम	5	5	6	6	1	1	7	7	8	8	4	4
मंगल	9	9	1	1	6	6	5	5	7	7	8	8
बुध	1	1	3	3	4	4	8	8	5	5	6	6
गुरु	6	6	3	3	4	4	9	9	8	8	1	1
शुक्र	3	3	2	2	4	4	5	5	9	9	6	6
शनि	7	7	2	2	8	8	9	9	5	5	4	4

यहां दिन, घंटों के प्रभावी ग्रहों के संयुक्त मान दिए गए हैं। समय उनके प्रभाव की शुरुआत को संकेत करता है। समय विशेष के प्रभावी ग्रह में इन मानो को अवश्य जोड़ा जाना चाहिए।

नियमः घंटा पूरा होने के पश्चात मिनटों को 4 से भाग दें। परिणाम में जो आएगा, वह उस दिन के स्वामी ग्रह से गणना होनेवाले उस समय विशेष पर प्रभावी ग्रह से संबंधित होगा।

उदाहरणः मंगलवार 2.35 पर क्या नियम लागू होगा? 35÷4=9, मंगल से गणना शुरू करने पर हम सूर्य तक पहुंचते हैं, तत्पश्चात 2.0=6 तथा 2.35=6+1 अथवा 7

यह विचार कि कोई व्यक्ति जीवन में संयोगवाली घटनाओं के मामले में प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों की गणना के माध्यम से भाग्यशाली संयोग का पता लगा सकता है, कोई असाधारण नहीं है। विज्ञान में रसायनशास्त्र का अध्ययन सम्यक रूप से तभी शुरू होता है, जब इसमें गणित जुड़ जाता है। जहां तक दुनिया का सवाल है, यह सभी जानते हैं कि दुनियावी मामलों में नक्षत्रीय प्रभाव पड़ता है।

यह धारणा है कि सूर्य प्रकाश तथा ऊष्मा का स्रोत है। वह सभी ग्रहों पर आकर्षणरूपी खिंचाव डालता है। इसमें धरती और चंद्रमा भी शामिल हैं। यह भी विश्वास किया जाता है कि चंद्रमा ही समुद्र में ज्वार का मुख्य कारक है तथा इसका अस्पष्ट रूप से पागलपन से भी परंपरागत संबंध है। यह प्रकाश को प्रक्षेपित करता है, परंतु हर व्यक्ति यह नहीं जानता कि चंद्रमा ऊष्मा अथवा ऐसी किरणें प्रक्षेपित करता है, जो धरती के वातावरण में आकर ऊष्मा तरंगों में परिवर्तित हो जाती हैं।

परंतु यह ऊष्मा, प्रकाश तथा गुरुत्वाकर्षण कौन देता है—नक्षत्र पुंजों से निकलनेवाली शक्तियां अथवा ग्रहों से निकलनेवाली शक्तियां? हम प्राचीन

विद्वानों को इस अपवर्जन के लिए दोषी नहीं ठहरा सकते। उन्होंने पूरी तरह इस बात की पहचान की कि प्रत्येक ग्रह ब्रह्मांड के हृदय में व्याप्त ऊर्जा को किसी-न-किसी रूप में प्रसारित करते हैं। उन्होंने निश्चित किया कि मंगल की रश्मियां उत्तेजक, शुक्र की शांत अथवा शामक, बृहस्पति की जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाली तथा शनि की रश्मियां जीवनीशक्ति को समाप्त करनेवाली होती हैं। थेल्स (Thales) लोगों की यह धारणा थी कि ब्रह्मांड एक तरल आधार या जल से निर्मित है। निःसंदेह उनका विश्वास इस बात में था कि जल 60 अंश के कोण पर क्रिस्टल बन जाता है तथा यह कोण किसी वृत्त की गणना के लिए प्रमुख रूप से महत्त्वपूर्ण है। यह भी देखा गया कि ग्रह 60 अथवा 120 अंश के कोण पर जितना एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं उतना 59, 61, 119 या 121 अंश पर नहीं।

हमेशा से हमारी गलती यह रही कि हमने प्राचीन विद्वानों को लापरवाह समझा, जैसा कि हम खुद को समझते हैं। तथ्य की बात यह है कि वे हमसे ज्यादा जानते थे। बल्कि मैं समझता हूं कि वे हमारे मुकाबले बहुत ज्यादा जानते थे। सिर्फ आधुनिक यंत्रों के द्वारा ग्रह नक्षत्रों को देखने और गणना के मामले में हम उनसे आगे हैं।

आधुनिक विज्ञान अभी इस नतीजे पर नहीं पहुंच पाया है कि क्या शनि की इस प्रणाली के दूसरे प्राणधारियों पर प्रभाव पड़ता है, जो अभी मनुष्यों पर कम पड़ता है। सौर्य प्रणाली की ऐक्यता की मुख्य अवधारणा की उपेक्षा करते हुए आधुनिक विज्ञान विभिन्न ग्रहों के आपसी संबंधों को स्थान नहीं दे पाया है। यह धारणा कि प्रत्येक चीज उपयोग के लिए अस्तित्व में है। दूसरा, ग्रह व्यवस्थाओं में वैज्ञानिक रुचि का कोई पर्याप्त कारण नहीं है तथा वे सूर्य से हजारों-लाखों मील दूर स्थित हैं, जिसके चारों ओर वे परिभ्रमण करते हैं।

ऐसा समझा जाता है कि वे ग्रह पूरी तरह बंजर और वीरान हैं तथा वहां मानवता जीवित नहीं रह सकती और उसके बावजूद वे गुरुत्वाकर्षण के बलबूते टिके हुए हैं तथा सूर्य से प्रकाश, ऊष्मा तथा जीवन ऊर्जा वहां तक अवश्य पहुंचती है। यह वैज्ञानिकों के लिए बड़े खेद की बात है कि वे किसी बीमारी के अत्यंत सूक्ष्म जीव के बारे में ज्यादा जानते हैं, बनिस्पत इसके कि वे धरती से हजारों गुना बड़े ग्रहों के बारे में कुछ भी नहीं जानते तथा जिनकी किरणों को रोगों के मामले में किसी जीवाणु से ज्यादा समझने की जरूरत है।

निःसंदेह ग्रहीय प्रभावों के बारे में यह सबकुछ एक अंधविश्वास हो सकता है, परंतु यह हमें घटनाक्रमों को ध्यान में रखते हुए विज्ञान बनाने से नहीं रोकता। यह धारणा कि चंद्रमा से समुद्री ज्वार का ताल्लुक है, अंधविश्वास हो सकता

है, परंतु यह हमें चंद्रमा की किरणों के घटने-बढ़ने के अनुपात में दैनिक समुद्र जल के घटने-बढ़ने पर ध्यान देने से नहीं रोकता। विज्ञान कारणों से संबंधित नहीं है, अपितु यह तथ्यों के कारणों के तालिकाकरण (Tabulation) तथा तुलना से संबंधित है।

अतएव यहां हम कारणों की दार्शनिक विवेचना से बच सकते हैं तथा पूरी तरह ध्वनि, संख्याओं, ग्रहीय गति के बीच संयोगों पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। उसके पश्चात हम एक ध्वन्यात्मक मानों के विज्ञान, अंक विज्ञान तथा ग्रहीय सांकेतिकता के विज्ञान की स्थापना कर सकते हैं। यह ब्रह्मांड तथा मनुष्य के संबंधों के बारे में काम करनेवाली एक व्यापक परिकल्पना हो सकती है, जिसे अभी स्वीकार किया जाना बाकी है।

समय विभाजन की अति प्राचीन विधि से दोपहर के समय से ग्रहीय घंटों की गणना दर्शित करने के पश्चात यह रुचि का विषय होगा कि इस ज्ञान का हमारे दैनिक जीवन में क्या उपयोग है?

मैंने पाठकों की सुविधा के लिए यहां पर रविवार की दोपहर से गणना किए जाने वाले 24 घंटों के संख्यात्मक मान का क्रम दे दिया है, जो कि उस प्रणाली में हमेशा सप्ताह का पहला दिन हुआ करता था और शनि सातवां या आखिरी।

इन मानों में हमें उनका मान जोड़ देना है, जो घंटा बीतने के बाद मिनटों का होगा। इस प्रकार हम शनिवार को 2 बजे, जो दोपहर से तीसरे घंटे की शुरुआत है, उसका मान 8 है। यदि हम 2 बजकर 24 मिनट का मान ज्ञात करना चाहें, तब 24 को 4 से विभाजित करें। 24÷4=6 तथा शनि से छठें ग्रहकाल की गणना करें, जो बुध=5 का है। दिन तथा घंटे का मान जोड़ने के बाद (8+5) हमें 13 प्राप्त होता है, जिसका इकाई मान 4 है। यह सूर्य की नकारात्मकता से संबंधित है। उसका महत्त्व आगामी पृष्ठों में दर्शाया गया है।

समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अपरान्ह	2	5	9	1	6	3	7
1 p.m	7	6	1	3	3	2	2
2	6	1	6	4	4	4	8
3	8	7	5	8	9	5	9
4	9	8	7	5	8	9	5
5	4	4	8	6	1	6	4
6	1	3	3	2	2	7	6

7	2	5	9	1	6	3	7
8	7	6	1	3	3	2	2
9	6	1	6	4	4	4	8
10	8	7	5	8	9	5	9
11	9	8	7	5	8	9	5
12	4	4	8	6	1	6	4
13	1	3	3	2	2	7	6
14	2	5	9	1	6	3	7
15	7	6	1	3	3	2	2
16	6	1	6	4	4	4	8
17	8	7	5	8	9	5	9
18	9	8	7	5	8	9	5
19	4	4	8	6	1	6	4
20	1	3	3	2	2	7	6
21	2	5	9	1	6	3	7
22	7	6	1	3	3	2	2
23	6	1	6	4	4	4	8

घंटों का विभाजन तथा मान

दिन	4	8	12	16	20	24	28	32	36	40	44	48	52	56	60
रवि	1	6	5	7	8	3	9	1	6	5	7	8	3	9	1
सोम	7	8	3	9	1	6	5	7	8	3	9	1	6	5	7
मंगल	9	1	6	5	7	8	3	9	1	6	5	7	8	3	9
बुध	5	7	8	3	9	1	6	5	7	8	3	9	1	6	5
गुरु	3	9	1	6	5	7	8	3	9	1	6	5	7	8	3
शुक्र	6	5	7	8	3	9	1	6	5	7	8	3	9	1	6
शनि	8	3	9	1	6	5	7	8	3	9	1	6	5	7	8

उपरोक्त तालिका का महत्त्व इस बात से है कि इससे किसी भी मिनट का संख्यात्मक मान पता चल सकता है।

प्रत्येक घंटे को 4 मिनट के 15 भागों में बांटा गया है। उसकी गणना उस दिन के स्वामी ग्रह से की जाती है। अतएव, एक शनिवार को उस दिन को शासन करनेवाले शनि का दिवस मान 8 रहेगा। घंटों की गणना दोपहर से होगी, पहले घंटे का स्वामी शनि होगा, उसके बाद बृहस्पति, तत्पश्चात

मंगल आदि। पुनः प्रत्येक आनेवाले घंटों का मान दिन के मान में जोड़ दिया जाएगा, जैसा कि पहले की तालिकाओं में दर्शित है।

समय विशेष ग्रह (Period Planet) की गणना भी दिन के ग्रह से होगी, जैसा कि दूसरी तालिका में दिखाया गया है। इसके मान को पहली तालिका से निकले मान में जोड़ना है।

उदाहरणः 2 सितंबर मंगलवार 1913 को 5.25 बजे अपरान्ह का मान क्या होगा:

पहली तालिका 5 बजे से 6 बजे के बीच शासन करने वाले ग्रह को दर्शाती है...8

दूसरी तालिका 24-28 मिनट को मंगलवार को दिखाता है...8

16

इस प्रकार हम तुरंत इकाई मान 7 प्राप्त करते हैं, जो चंद्रमा का अंक है। अतः हम जानते हैं कि 7 का मान 5.25 के बाद तीन मिनट तक प्रभावी रहेगा, क्योंकि यह अंक चंद्रमा के प्रत्यक्ष तथा सकारात्मक प्रभाव में है।

मान लें एक बच्चा बुधवार को सुबह 3.45 बजे पैदा हुआ तो सर्वप्रथम यह जांनने की जरूरत है कि उसका अंक क्या है तथा वह किस गृह के प्रभाव में है। प्रथम तालिका के अनुसार मंगलवार दोपहर से 15 घंटे के बाद अंक 1 के अधीन है तथा तालिका दो उस घंटे के 45 मिनट बाद का समय अंक 5 के अधीन है। अतएव 1+5=6 नंबर प्राप्त होता है, जो बच्चे का जन्मांक है। अब चूंकि अंक 6 शुक्र का है इसलिए बच्चा शुक्र ग्रह के अधीन होगा।

कल्पना करें कोई प्रतियोगिता किसी विशिष्ट समय पर शुरू हो रही है। उदाहरण के लिए घुड़दौड़ हो रही है। इन तालिकाओं के माध्यम से हम विजेता प्रतियोगी का नाम अथवा संख्या निश्चित कर सकते हैं। बहुत बड़े मामले में जहां भाग्यशाली संयोग की धारण बाधित होती हो, उस दशा में प्रतिस्पर्धा शुरू होने के समय का मान तथा प्रतियोगी के नाम अथवा संख्या के मान पर ध्यान दिया जाएगा।

परंतु जब यह पाया जाए कि वह समय महत्त्वपूर्ण है, जो उनके (ग्रहों) शासन से प्रभावित होता है तथा उसकी प्रकृति के किसी भी कार्य संपादन के विषय में समय के चयन में उनका प्रयोग किया जा सकता है तो स्वामी ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन हमें भविष्यवाणी करने में समर्थ भी बनाता है। परिणाम की भविष्यवाणी में शब्दों के अवयव, संदेश की प्रकृति आदि को इस नियम के मुताबिक ध्यान में रखना चाहिए।

ग्रहों का प्रभाव और महत्त्व इस प्रकार है:

ग्रहों के संकेत

जिनका मूलांक 1 है वे व्यक्ति स्वतंत्र, अभिमानी, विशाल हृदय, धोखाधड़ी से घृणा करनेवाले तथा हर दशा में जोखिम मोल लेनेवाले होते हैं। वे निडर, रूखे, भूरी या नीली आंखोंवाले तथा शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ चुस्त-दुरुस्त होते हैं। दूसरों को प्रशासित करने में सक्षम तथा विश्वास एवं प्राधिकार की हैसियत बनानेवाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति हृदय की बीमारियों, रक्तचाप तथा दाहिनी आंख से संबंधित बीमारियों से पीड़ित होते हैं।

ऐसे समय में किसी अभीप्सित वस्तु के संबंध में विचार हो रहा है तो वह पूर्व दिशा में तलाशनी चाहिए तथा पूर्णमासी के प्रकाश में वस्तु को लाना चाहिए।

अंक 2 का स्वामी नकारात्मक पहलूवाला चंद्रमा होता है। यह दुर्भाग्यशाली साबित होता है। विशेषकर स्त्रियों, परिवर्तनों आदि से जुड़े मामले इसी अंक की देन होते हैं। ऐसे समय में खोई वस्तुएं बमुश्किल ही मिलती हैं। जो व्यक्ति इस अंक से संबंधित होते हैं, वे अविश्वसनीय तथा चंचल होते हैं। ऐसे वक्त में की गई यात्राएं दुर्भाग्यशाली साबित होती हैं। ऐसे वक्त में पहुंचे पत्र, दुर्भाग्यपूर्ण समाचारों के तथा प्रायः वंचना के होते हैं।

अंक 3 का स्वामी बृहस्पति होता है। यह एक सौभाग्यवर्धक समय है। इस ग्रह द्वारा संकेतित व्यक्ति उदार, यहां तक कि फिजूलखर्च भी होते हैं। अपने नुकसान की कीमत पर भी ये दूसरों की सहायता करते हैं। ये अच्छे रहन-सहन के शौकीन, विचारों में आडंबरी, ठाठ-बाट से रहनेवाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का ललाट चौड़ा एवं भव्य, आंखें थोड़ी बाहर निकली हुईं, लंबे दांत, लहराते हुए या घुंघराले घने बाल होते हैं। लेकिन प्रौढ़ावस्था में ये गंजे हो जाते हैं।

इस समय में खोजी गई वस्तु उत्तर-पूर्वी दिशा में तलाशने पर मिल सकती है। यदि वस्तु चोरी हो गई है तो उसे लानेवाले के लिए ईनाम की घोषणा करके वस्तु दोबारा हासिल की जा सकती है। ऐसे व्यक्तियों को यकृत तथा प्लीहा (किडनी), रक्त संकुलता (Congestion), अपच तथा उदर वायु की तकलीफ हो सकती है।

यह एक भाग्यशाली समय है, जिसमें व्यक्ति कानूनी सलाह, धर्मगुरुओं से सलाह ले सकते हैं तथा न्यायाधीश व मजिस्ट्रेट की अनुकंपा प्राप्त कर सकते हैं। यह किसी भी वित्तीय मामलों तथा व्यापार के लिए भाग्यशाली समय है। मगर पशुओं का बेचना या व्यापार करना दुर्भाग्यशाली साबित हो सकता है।

ऐसे वक्त में मिले पत्र धन, व्यापार, न्याय तथा सर्वदा किसी लाभ से संबंधित होंगे। इस दौरान मिली सूचना विश्वसनीय होगी।

अंक 4 का स्वामी सूर्य है, परंतु यह नकारात्मक तथा दुर्भाग्यशाली है। जिन व्यक्तियों पर यह अंक लागू होता है, वे दंभी, अभिमानी, सनकी, दबंग, आडंबरप्रिय तथा धर्मान्ध होते हैं।

ऐसे समय में चाही गई वस्तु विरले ही मिलती है, मगर अमावस्या के दिन मिल भी सकती है। इनकी खोज उत्तर-पश्चिम दिशा में करनी चाहिए। ऐसे वक्त में मिले पत्र हैसियत व ख्याति में कमी तथा कई बार खतरनाक और घातक भी साबित हो सकते हैं।

इस अंक के अधीन पैदा हुए व्यक्तियों को रक्त संबंधी बीमारियां होती हैं। अधिकतर जीवनीशक्ति की कमी से ऐसे व्यक्ति पीड़ित रहते हैं। यह एक दुर्भाग्यशाली समय है। इसमें कुछ भी नया या महत्त्वपूर्ण कार्य या किसी प्राधिकारी आदि से मिलने का कार्य, यात्रा, गृहप्रवेश आदि नहीं करना चाहिए।

अंक 5 बुध से शासित होता है। जिन व्यक्तियों पर यह अंक लागू होता है, वे प्रायः लंबे तथा पतले होते हैं, परंतु ऐसे व्यक्ति यदि छोटे कद के हुए, तो वे अत्यंत हल्के, सक्रिय और देखने में कुछ-कुछ मुर्झाए प्रतीत होते हैं। आंखें छोटी, परंतु तेज होती हैं, व्यक्ति बहुत चौकस तथा व्यापारिक बुद्धि का दिखता है। हाथ पतले तथा चाल तेज तथा फुर्तीली होती है।

ऐसे समय में खोई वस्तुएं प्रायः चोरी गई होती हैं, जो बाद में उत्तर दिशा में तलाश की जाएं। तो अक्सर मिल जाती है।

ऐसे वक्त में मिले पत्र प्रायः लेखन संबंधी अथवा व्यापारिक कागजात, शैक्षिक मामलों, पुस्तकों, युवा लोगों को प्रभावित करनेवाले मामले, कभी-कभार लघु यात्राओं तथा स्वास्थ्य से संबंधित होते हैं।

इस अंक से संबंधित समय में पैदा हुआ जातक मुख्यतः स्नायु, मस्तिष्क तथा वाणी संस्थान को प्रभावित करनेवाले रोगों से पीड़ित होता है। ऐसे व्यक्ति तंत्रिका संबंधी रोगों, चक्कर आने, मानसिक दुर्बलता, चर्मरोग, मिरगी, इंद्रिय और स्मृति संबंधी बीमारी से भी पीड़ित हो सकते हैं।

अंक 6 का स्वामी शुक्र है। जो व्यक्ति इस अंक से संबंधित हैं, वे दयालु, भद्र, विनीत, मिलनसार प्रवृत्ति के तथा कला एवं संस्कृति प्रेमी होते हैं। कई बार अपनी सरलता और आमोदप्रियता से अपना नुकसान कर डालते हैं। उनका शरीर सुंदर व सुडौल होता है। उनके बाल रेशम जैसे मुलायम, हल्के भूरे तथा चमकीले होते हैं। कुछ मामलों में बेहद काले और घने होते हैं। उनकी आंखें काली, नीली अथवा जैसा उनके शरीर के उपयुक्त हो, हो सकती हैं। आमतौर पर पुरुषों में वे अच्छी दिखती हैं तथा महिलाओं में सुंदर होती हैं। आकर्षण उनका मुख्य गुण है।

यह समय सेक्स से संबंधित सभी मामलों के लिए, सौंदर्य से जुड़ी प्रत्येक

वस्तु, फैशन तथा आनंद से जुड़ी समस्त वस्तुओं के लिए अच्छा होता है। यह समय मकान, सगाई, विवाह के लिए उपयुक्त है। घरेलू मामलों, नए घर के लिए भी यह समय श्रेष्ठ है। यात्रा के लिए यह समय अच्छा होता है, पर इसमें लंबी यात्राएं नहीं होतीं। इसमें मुख्यत: घरेलू तथा सामाजिक प्रकृति के कार्य, आवागमन, बाजार, मित्रों के घर जाना आदि लगा रहता है। ऐसे समय में खोई वस्तुएं पश्चिम दिशा में मिल सकती हैं।

शुक्र के प्रभाववाले जातक उन्मादी, सेक्स संबंधी बीमारियों, गले तथा किडनी के रोगों, त्वचा, शिराशोथ (Phlebitis) आदि से पीड़ित होते हैं।

ऐसे समय पर प्राप्त होनेवाले पत्र प्राय: घरेलू, सामाजिक मामलों और कभी-कभी प्रेम संबंधी भी होते हैं।

अंक 7 का स्वामी चंद्रमा है। ऐसे व्यक्ति जिन पर यह अंक लागू होता है, आमतौर पर सुडौल शरीरवाले परंतु पीतवर्ण के होते हैं। उनकी आकृति गोल-मटोल तथा रंग वर्णहीन होता है। हाथ तथा पैर छोटे होते हैं। मस्तिष्क बड़ा होता है। ऐसे व्यक्ति आत्मकेंद्रित तथा आत्मप्रशंसक होते हैं। चंद्रमा ऐसे समस्त व्यक्तियों को शासित करता हैं, जो सार्वजनिक सेवा में हैं। यह सार्वजनिक निकायों, सरकारी अथवा स्थानीय निकायों का भी संकेत करता है। ऐसे समय में गायब अथवा अभीप्सित वस्तु सार्वजनिक सूचना देने पर मिल सकती है, उसे उत्तर दिशा में ढूंढ़ा जाना चाहिए। उस वस्तु के पूर्णमासी को मिलने की संभावना रहती है।

चंद्रमा के प्रभाव में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को सीने, उदर, अपच, चोट, बाईं आंख तथा मस्तिष्क संबंधी बीमारियां हो सकती हैं।

यह समय संरक्षकों तथा सभी सार्वजनिक मामलों, स्थानीय निकायों, यात्राओं, समुद्री यात्रा, समस्त परिवर्तनों, विज्ञापन आदि के संबंध में अच्छा है।

ऐसे वक्त में प्राप्त पत्र यात्रा तथा परिवर्तन के होते हैं। महिलाओं का प्रभाव जरूर जुड़ा रहता है। यह समय चंद्रमा द्वारा शासित 2 के अंक से ठीक विपरीत यानी अच्छा है। तथापि सर्वोत्तम यही होगा कि ऐसे समय में कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय, किसी योजना में तब्दीली अथवा प्रबंध संबंधी निर्णय न लिए जाएं। यह सार्वजनिक मामलों, सार्वजनिक निकायों, सरकारी कार्यों के लिए विशेष रूप से अच्छा है।

8 का अंक शनि द्वारा शासित होता है। यह अशुभ समय है तथा लगभग प्रत्येक मामले में खराब साबित होता है, परंतु यह जमीन तथा उससे संबंधित उत्पाद (खनिज, फसलें आदि) मामलों के लिए अच्छा भी होता है।

जिन व्यक्तियों पर यह लागू होता है, वे काले, कमजोर इच्छाशक्तिवाले, देखने में ही रोषयुक्त, झुकी हुई चालवाले, कठिनता से विश्वास योग्य स्वार्थी

तथा एक हद तक भौतिकवादी होते हैं।

यह समय सिर्फ बूढ़ों तथा विकलांगों के साथ व्यवहार के लिए ठीक है। यह मिट्टी से पैदा होनेवाली चीजों जैसे फसलों के लिए उपयुक्त है, परंतु ऐसे मामलों में जहां समय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, ऐसे समय में किए गए करार वर्षों में फलीभूत होते हैं।

शनि के प्रभाववाले समय में गायब होनेवाली वस्तु विरले ही वापस मिलती है। वैसे इनकी तलाश दक्षिण दिशा में करनी चाहिए। अगर वस्तुएं मिलती भी हैं तो बहुत ज्यादा समय गुजर चुका होता है।

ऐसे वक्त में मिले पत्र प्रायः मृत्यु, बीमारी, दुःख, दुर्भाग्य, अंधेरे, शोक अथवा देरी से संबंधित होते हैं। यह ऐसा समय नहीं है, जिसमें कोई कार्य आरंभ किया जाए। हिब्रू लोग इस दिन छुट्टी और अवकाश मनाते थे।

ऐसे वक्त में बीमार पड़े व्यक्ति की बीमारी लंबी खिंचेगी तथा अत्यधिक खर्च व देखभाल के बाद ही ठीक होगी। ऐसे वक्त में कोई भी दिमागी कार्य अत्यंत सावधानी से करना चाहिए, क्योंकि उसके गलत होने की संभावना रहती है। शनि से संबंधित बीमारियां हड्डियों तथा जोड़ संबंधी, टी.बी., अवसाद तथा धार्मिक उन्माद हैं।

अंक 9 का स्वामी मंगल है। जिन व्यक्तियों का मूलांक या जन्मांक 9 होता है वे रूखे तथा भूरे रंग के होते हैं। उनकी आंखें चमकीली होती हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः बलशाली तथा उग्र स्वभाव के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का विरोध करने से अच्छा है, उन्हें मना लेना।

वे बदमिजाज, आक्रामक तथा अत्यधिक अधीर होते हैं तथापि ऐसे व्यक्ति खुले स्वभाव के तथा वाचाल होते हैं। ऐसे व्यक्ति जब बोलते हैं तो उसका अर्थ तथा अभिप्राय तुरंत समझ में आ जाता है।

ऐसे वक्त में खोई वस्तुएं या तो तुरंत मिल जाएंगी अथवा कभी नहीं भी मिलेंगी। उन्हें पश्चिम दिशा में ढूंढ़ना चाहिए।

मंगल से संबंधित बीमारियां मस्तिष्क, चेहरे तथा पाचन तंत्र की भी हो सकती हैं। बुखार, दुर्घटनाएं, त्वचा संबंधी रोग, खुजली, सूजन, कटना या जलना, फोड़े, क्षय रोग आदि मंगल से संबंधित पीड़ाएं हैं। ऐसे वक्त में आए पत्र विवाद, धोखाखड़ी, चोरी, झूठ, अग्नि, दुर्घटना, बुखार, ऑपरेशन तथा त्रासदियों से संबंधित होते हैं।

मंगल के समय में मिली सूचना अथवा विचार अविश्वसनीय होते हैं। जल्दबाजी में कुछ नहीं करना चाहिए। सूचनाओं को भलीभांति जांच-परख कर विवेकपूर्ण तरीके से कार्य करना चाहिए।

संदेहास्पद मामलों के निर्णय में मूख्य भूमिका निभाते हैं। अतः प्राचीन समय में लोग कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य अनुकूल समय में ही किया करते थे।

कुछ विद्वानों ने ग्रहीय समय की शुरुआत को अर्द्धरात्रि से माना है, जबकि कुछ अन्य विद्वानों ने सूर्योदय के समय से। यदि सूर्योदय का ही समय लेता है तो खगोलीय सूर्योदय को लेना चाहिए।

मैंने समय के उपयोग की प्राचीन विधि से दैनिक जीवन की घटनाओं की सुसंगति का अनुभव किया है और इसी वजह से मैं उसे प्रयोग में लाने की वकालत करता हूं।

□□

घटनाओं की आवर्तिता

जब हम संयोगवाली घटनाओं के विषय में बात करते हैं, तो वस्तुतः हम उन घटनाओं को संचालित करनेवाले नियमों के विषय में अपनी अनभिज्ञता ही जाहिर करते हैं। हम गंभीरतापूर्वक यह नहीं मानते कि कोई प्राकृतिक कारण उन घटनाओं के पीछे अनुपस्थित है। जब कोई ज्योतिषी किसी निश्चित घटना की भविष्यवाणी करता है, जो बाद में सही साबित नहीं होती, तो हम संयोगों की बात करने लगते हैं।

लेकिन इस भविष्यवाणी से हमें यह नहीं समझना चाहिए कि हमने भविष्यवाणियों की संभावना का कोई वैज्ञानिक तरीका प्रतिपादित किया है। 'संयोग' शब्द किसी तथ्य का वैज्ञानिक कथन है। अतः हम यह स्वीकार करते हैं कि किसी घटना के घटित होने के समय और परिस्थितियों का वर्णन ऐसा भविष्यकथन है, जो घटना की प्रकृति और समय के बारे में सत्य है।

अनेक संयोग जब इकट्ठे हो जाते हैं, तो एक नियम बन जाता है। यदि कुछ सेब पेड़ों से टूटकर अंतरिक्ष में जाते तथा कुछ टूटकर पड़ोसी के बगीचे में गिरते तो गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज शायद कतई नहीं हुई होती। बहुत पहले जब जमीन पर गिरनेवाली वस्तुओं के बारे में यह समझा जाता था कि वे हवा से हल्की होने की वजह से जमीन पर गिरती हैं। यदि वह वैज्ञानिक विचार बना रहता तो बहुत सी समस्याएं बनी रहतीं।

खैर, तथ्य यही है कि सभी वस्तुएं धरती की परिधि की स्पर्शज्या से लंबवत गिरती हैं। ऐसी ही कोई घटना जब एक वैज्ञानिक के मस्तिष्क में संयोगवश आ गई तो घटना ने पूरी दुनिया को चौंका दिया। फलस्वरूप गुरुत्वाकर्षण का नियम प्रतिपादित हुआ।

आधुनिक विज्ञान ने इस विषय पर काफी कुछ कहा है, जो न्यूटन के सिद्धांत का विरोधाभासी है। आज यह सिद्धांत कुछ विशेषताओं की वजह से लड़खड़ा गया है, जो इस बात का संकेत है कि यह गुरुत्व का आकर्षण नहीं हो सकता, क्योंकि इसके तथ्य गुरुत्व के सिद्धांत से मेल नहीं खाते।

जब यह देखा गया कि अणुओं के भीतर की खाली जगह आकाशीय

खाली जगह से नकारात्मक है, तो द्वार के किनारे पर ही ध्यान देना सुविधाजनक हो सकता है, बजाय इसके कि इस उत्तर की तलाश में दरवाजे पर लिखे 'खींचों' के स्थान पर वैज्ञानिक 'धक्का दो' पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, पदार्थ आकाशीय तत्त्व से धक्के के द्वारा धरती की ओर खिंच सकते हैं, बजाय धरती के 'द्रव्यमान' द्वारा खिंचने के। तब संयोगों के लिए ज्यादा तर्क प्रस्तुत किया जा सकता है।

कल्पना करें कि हर चीज को पीछे धकेलने की बजाय हम संयोगों के क्षेत्र को वही समझते, तो हमारा प्रयास एक ऐसे नियम की तलाश करना होगा, जो न सिर्फ तथ्यों को अपने में समाहित करे, बल्कि समान प्रकृतिवाले तथ्यों के बारे में भविष्यकथन भी प्रस्तुत करे। मैं भविष्यकथन का एक विवेकपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत करने का साहस करूंगा, जो कार्यपद्धति का रूप ले सकता है।

हम ब्रह्मांड के व्यक्तित्व अथवा सृजनात्मक शक्ति के स्वरूप पर पहले ही विचार कर चुके हैं। हम देख चुके हैं कि एक प्रतीक, जो आकृति विज्ञान प्रणाली से संबंध रखता है, के माध्यम से हम इस सृजनहार के गुणों से थोड़ा बहुत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जो इस ब्रह्मांड की आत्मा में समाया हुआ है।

आइए, ब्रह्मांड को एक शक्ति मान लें। रोजी क्यूरियंस ऐसा मानते भी थे तथा उसे आदम कादमॉन (Adam Kadmon) कहते थे। स्वीडनबॉर्ग इसे 'द ग्रैंडमैन (The Grandman) कहते थे।

ज्योतिषी युगों से राशिचक्र को मानव शरीर के विभिन्न भागों से संबंधित करते आ रहे हैं। मेष का संबंध उन्होंने मस्तक, वृष का गले, मिथुन का बांहों तथा पैरों का संबंध मीन राशि से बताया। 'जैसा ऊपर वैसा ही नीचे' वह महान शक्ति छोटी-से-छोटी वस्तु, पदार्थ में व्याप्त है। राशिचक्र का दुनियावी मामलों से संबंध है। अनेक शताब्दियों से अनुभववाद ने राशियों से धरती के अनेक क्षेत्रों, साम्राज्यों, शहरों, कस्बों के संबंध को स्थापित किया है।

इसमें वैज्ञानिक अनुभववाद की प्रणाली अपनाई गई। एक विष लें, देखते हैं कि जब यह किसी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करवाया जाता है, तो इसका क्या असर होगा। इस प्रयोग से कुछ परिणाम सामने आते हैं। तत्पश्चात विषनाशक की तलाश की जाती है कि कुछ तो होगा, जो विष को प्रभावहीन करेगा। अथवा जीवाणुविज्ञानी जीवाणुओं को तैयार करता है तथा उसका जीवधारियों के शरीर पर असर देखता है। वह यह भी प्रयोग करता है कि जीवाणु के लिए कौन-सा माध्यम (वातावरण) उपयुक्त रहेगा तथा किस विधि से वातावरण को उस जीवाणु से मुक्त रखा जाएगा। तत्पश्चात इस अनुभव के सहारे उसने दो बड़े तथ्य हासिल किए:

1. अमुक जीवाणु अमुक परिस्थितियों में जीवधारियों को रोगग्रस्त बनाएगा।

2. अमुक माध्यम जीवाणु को समाप्त करेगा।

ज्योतिष विज्ञानी भी ठीक यही विधि अपनाते हैं। वे विभिन्न राशियों में भिन्न-भिन्न ग्रहों के प्रवेश करने से उत्पन्न परिणामों को ध्यान से देखते हैं। उन्होंने ग्रहों की प्रकृति का निर्धारण किया है तथा सावधानी एवं धैर्यपूर्वक उनकी प्रकृति में संशोधन का रास्ता भी तलाशा है। तत्पश्चात निगमनात्मक (deductive method) पद्धति का प्रयोग किया गया। जैसे—कारण तथा परिणाम का अनुमान लगाया गया। भूतकालिक गणनाओं से ग्रहों की स्थितियों के प्राचीन परिणामों को निश्चित करने में मदद मिली जबकि विवरण संबंधी गणनाओं से ठीक उसी तरह की भविष्य की परिस्थितियों में क्या घटेगा, ये बताने में वे सफल हुए।

जब दो बादल आवेशित होते हैं—एक धनावेषित तथा दूसरा ऋणावेषित, तो वे आपस में टकराते हैं, परिणामस्वरूप बिजली (तड़ित) चमकती है। ठीक उसी तरह से जैसे बैटरी के दोनों 'टर्मिनल' एक साथ हुआ जाएं।

वर्तमान में ज्योतिष विज्ञानियों ने यह पता लगा लिया है कि मंगल एक धनात्मक ग्रह है तथा यह ऊर्जा प्रक्षेपित करता है, जबकि शनि एक ऋणात्मक तथा ठंडा ग्रह है। स्वाभाविक है कि यह देखना बड़ा रोचक होगा कि जब वे ग्रह आकाश में युति (conjunction) में होते हैं।

उन पर ध्यान देने के दो रास्ते हैं। पहला, 'प्रतीक्षा करो और देखो' तथा दूसरा, भूतकालिक घटनाएं। ग्रहों की उनकी कक्षाओं में गतियों की जानकारी होने पर उससे की गई गणना एवं सारणी के माध्यम से वे इन ग्रहों की भूतकालिक युतियों को जानने में समर्थ थे। खगोल विज्ञान, घटनाक्रम तथा इतिहास के माध्यम से शनि तथा मंगल की विभिन्न राशियों में युति का परिणाम बताना सामान्य बात थी। कहने की जरूरत नहीं है कि इन ग्रहों की युति का परिणाम बुरा तथा रहस्यात्मक होता है।

प्रत्येक वर्ष के अंत में इन राशियों की युति होती है और यह युति प्रत्येक अवसर पर अगली राशि में होती है। अत: 265 वर्षों में ये 9 चक्कर पूरा कर लेते हैं तथा राशिचक्र में उसी स्थान के निकट आ जाते हैं।

यदि हम बीते वर्षों की युतियों की जांच करें, तो स्पष्ट होगा कि एक जैसी राशियों से शासित देशों में समान रूप से इन युतियों के दुष्परिणाम मिले।

धनु स्पेन तथा इटली देशों की स्वामी राशि है। इसके विपरीत मिथुन अमरीका को, वृश्चिक भारत को, कुंभ रूस को, पुर्तगाल को मीन, इंग्लैंड को मेष, आयरलैंड को वृष, स्कॉटलैंड तथा हालैंड को कर्क, फ्रांस को सिंह राशियां शासित करती हैं। इस संदर्भ में हम कुछ घटनाओं पर ध्यान देंगे:

1897 नवंबर, धनु राशि में शनि और मंगल की युति। हिस्पानो-अमरीका का युद्ध 1898

1899 उसी राशि में युति। इटली के सम्राट हम्बर्ट की हत्या।

1901 दिसंबर मकर में शनि-मंगल युति। वंदेमातरम आंदोलन 1902

1903 दिसंबर कुंभ में युति, रूस-जापान युद्ध 1904

1905 दिसंबर कुंभ में पुनः युति, रूसी विद्रोह 1906 'लाल रविवार' (Red Sunday)

1907 दिसंबर मीन में युति, पुर्तगाल के सम्राट तथा राजकुमार की हत्या, बाद में क्रांति

1909 दिसंबर मेष में युति, किंग एडवर्ड सप्तम की मृत्यु 1910 'प्रजातंत्र का प्रभुत्व' 1910

1911 अगस्त वृष में युति

1913 अगस्त मिथुन में युति

भविष्य में क्या घटेगा, यह भूतकाल में घटी समान परिस्थितियोंवाली घटनाओं का संदर्भ देकर अच्छी तरह बताया जा सकता है। वृष में शक्ति और मंगल की आखिरी युति 1881 में थी। इस वर्ष आयरलैंड में कृषकों के बीच भारी उथल-पुथल रही तथा फीनिक्स पार्क में बर्क तथा कैवेंडिश की हत्या हुई थी।

265 वर्ष के लंबे समय का उपयोग करते हुए उसके समानांतर हम निम्नलिखित घटनाएं पाते हैं:

1644 मेष में शनि-मंगल की युति
+265 मार्स्टन मूर के शाह समर्थकों का तख्ता पलट 1644
1909 लोकतंत्र का प्रभुत्व स्थापित 1910
किंग एडवर्ड की मृत्यु 1910

1646 वृष में शनि-मंगल की युति
+265 आयरिश विद्रोह 1646
1911 आयरिश विरोध 1911

1648 शनि-मंगल की युति मिथुन में
+265 क्रॉमवेल द्वारा लंदन की विजय, 1648 किंग चार्ल्स का पलायन
हाउस ऑफ लाड्र्स विघटित 1648
1913 किंग चार्ल्स का सिर काट डाला गया 1649 में

1650 शनि-मंगल कर्क में
+265 हालैंड की भयानक बाढ़ 1650, क्रॉमवेल द्वारा स्कॉटलैंड
1915 पर जीत।

अब प्रश्न उठ खड़ा होता है कि अंक विज्ञान का ग्रहीय समय से क्या संबंध है? मोटे अर्थ में वह प्रकृति के आकृति विज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन की दिशा तय करती है। अगर कोई महाशक्ति खगोलीय माध्यम से हम तक संकेत भेज सकती है, तो अंकों के माध्यम से वह ऐसा क्यों नहीं कर सकती? यदि हम ग्रहीय समय के आधार पर घटनाओं की अपवर्तिता की तलाश कर सकते हैं, तो अंकों के क्रम के आधार पर ऐसा क्यों नहीं कर सकते?

हमें सिर्फ एक बात याद रखनी है कि ब्रह्मांड में कोई भी चीज संयोग के सहारे घटित नहीं होती, बल्कि वह नियमबद्ध होती है। हमें ऐसे सारे परीक्षणों को कथनों के रूप में तब्दील करना होगा, जो कम-से-कम ऐसे किसी ज्ञात नियमों के खिलाफ नहीं हैं, भले ही उनकी किन्हीं ज्ञात नियमों से पुष्टि नहीं होती है। किसी नियम में सभी तथ्यों का समाविष्ट होना चाहिए। किसी सिद्धांत को पर्याप्त लचीला होना चाहिए, ताकि वह नए अनुभवों या परीक्षणों को समावेश कर सके। ब्रह्मांड का बोधगम्य सिद्धांत विभिन्न प्रकार की व्याख्याओं की गुंजाइश छोड़ता है।

हिंदुओं का विचार है कि मानव की पूर्ण आयु 120 वर्ष होती है। टॉल्मी, जिसका हिंदू सिद्धांत से कोई संबंध नहीं था, ने ग्रहों की अवधि का उल्लेख इस प्रकार किया है:

चंद्रमा 4, बुध 10, शुक्र 8, मंगल 15, बृहस्पति 12, शनि 30 वर्ष। ये सभी समय 120 वर्ष की आयु में समावेशित थे, जो दोनों पद्धति में कम-से-कम उभयनिष्ठ हैं। इसके द्वारा हम बहुत रोचक प्रतीक (Kabala) प्राप्त करते हैं, जो इस प्रकार है:

चंद्रमा	120 में	4	वर्ष=30
शनि	120 में	30	वर्ष= 4

शनि तथा चंद्रमा दोनों विपरीत प्रकृतिवाले ग्रह तथा विरोधी राशियों के स्वामी हैं।

बुध	120 में	10	वर्ष=12
बृहस्पति	120 में	12	वर्ष=10

बृहस्पति तथा बुध दोनों विपरीत प्रकृतिवाले ग्रह तथा विरोधी राशियों के स्वामी हैं।

शुक्र	120 में	8	वर्ष=15
मंगल	120 में	15	वर्ष= 8

शुक्र तथा मंगल की प्रकृति भिन्न है तथा वे विरोधी राशियों के स्वामी हैं। इस पूरी पद्धति को सांकेतिक रूप से इस प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है।

ग्रह	राशिचिह्न	अवधि	अवधि	राशिचिह्न	ग्रह
♂	♈ ♏	15	8	♎ ♉	♀
♃	♐ ♓	12	10	♊ ♍	☿
♄	♑	30	4	♋	☽

इस 'स्कीम' के बाहर सूर्य है, जो सिंह राशि का स्वामी है तथा उसकी अवधि 1 वर्ष = 360^0 है, जो 120 का तीन गुना है। यह देवत्व का अथवा एकता में 'त्रिगुण' का प्रतीक है। इसे आकृति विज्ञान में एक समकोण त्रिभुज को घेरे हुए वृत्त के रूप में दिखाया जा सकता है।

मंगल की अवधि को शुक्र की अवधि से गुणा करने पर = 15x8 120 वर्ष

बृहस्पति तथा बुध की अवधि = 120 वर्ष तथा,

शनि तथा चंद्रमा की अवधि का गुणनफल = 120

एक दिन में सूर्य अपने आभासी आकाशीय मार्ग का चक्कर पूरा कर लेता है तथा 1^0 आगे बढ़ जाता है तथा 361^0 पूरा करता है। यह 19x19 के बराबर होता है। टॉल्मी सूर्य की अवधि को 19 वर्ष बताता है। यह भी पाया गया है कि सूर्य तथा चंद्रमा प्रत्येक 19वें वर्ष राशिचक्र के एक ही बिंदु पर होते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि आकाशीय संकेतों, खगोलीय आवृत्ति के बीच तथा प्रतीक विज्ञान एवं अंक विज्ञान के बीच आपसी संबंध है।

गणना के सिद्धांतों पर विचार करते समय ही हम यह देख चुके हैं कि अंक या संख्याएं तब तक ही परिमाणात्मक अभिव्यक्ति करती हैं, जब तक हम उनका संकेतों या प्रतीकों के रूप में प्रयोग नहीं करते। जब हम उनका प्रतीकों के रूप में प्रयोग करते हैं तो उनके गुण-धर्म में आमूल-चूल परिवर्तन आ जाता है तथा वे महत्वपूर्ण हो उठती हैं। हम यह भी देख चुके हैं कि ऐक्यता=1 को शाश्वतता की अनिश्चित दशा के रूप में भी उल्लिखित किया जा सकता है, जैसे 1=.9 से लेकर अनंत तक। ऐसा भी कहना संभव है कि 1=1+)(, वहां ')(' अनिश्चित तत्त्व है। हमें यह जानना चाहिए कि अमीबा (Amoeba) एक व्यक्ति तत्त्व है, जो प्राकृतिक इतिहास विकास के पैमाने पर निरंतर विकास की अवधारणा की ओर ले जाता है।

मात्रात्मक संबंधों का कोई निश्चित मान नहीं होता। हम 2+2=4 कह सकें, इसके पूर्व हमें यह भाव लेना पड़ता है कि एक गुणात्मक मान है, जो

वस्तुओं को एक साथ रखने से संबंधित है। यहां पर हम अंकों को मात्रात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति के साथ ही गुणात्मक विशेषताओं का भी वाहक मान रहे हैं। हम इस अंतर का प्रयोग क्रिकेट के 11 अथवा नौकायन के 8 खिलाड़ियों के चयन के समय करते हैं। यह सिर्फ 11 अथवा 8 खिलाड़ियों का सवाल नहीं है, बल्कि 11 क्रिकेट खिलाड़ियों तथा 8 नाविकों का प्रश्न है। अतः तथ्य यह नहीं है कि 11 व्यक्ति मिलकर क्रिकेट की टीम का निर्माण करते हैं और इसी से हमें क्रिकेट खेलने का ज्ञान हो जाना चाहिए।

नैतिक मूल्य भी अंकों से वैसे ही जुड़े हुए हैं, जैसे कि उनसे विनिमय मूल्य। शेक्सपीयर ने इस तथ्य को इन शब्दों में व्यक्त किया है 'संतुष्ट व्यक्ति को भरपूर मिलता है।' कोई भी व्यक्ति एक छोटे बच्चे को 1 पेनी तथा एक मजदूर को 1 शिलिंग देकर बच्चे से ज्यादा काम ले सकता है, जबकि संतुष्टि दोनों को एक बराबर हो सकती है। यद्यपि मजदूर की जरूरत बच्चे से एक समय में 11 गुना ज्यादा नहीं हो सकती। यहां पेनी तथा शिलिंग ने विनिमय मूल्य के अलावा नैतिक मूल्य भी प्राप्त कर लिया। अतः दोनों प्रतीकात्मक हैं तथा कुछ परिस्थितियों में सामान्य मूल्य अंतर्विष्ट करते हैं, अतएव 1=1+11 इस तथ्य की अभिव्यक्ति संभव है।

प्रकृति का संबंध क्षमता से ज्यादा क्षमता के गुण से है। दूसरे शब्दों में, वर्तमान परिस्थितियों की अपेक्षा भविष्य की संभावनाओं से ज्यादा है। परिणामस्वरूप हम पाते हैं कि प्रकृति की अभिव्यक्ति का मान निश्चित नहीं है, बल्कि उसमें समूचे का योग विद्यमान रहता है, जिसे +)(^{n} द्वारा दिखाया जाता है, जिसे हम अनंत विकास मानते हैं। उदाहरण के लिए जिस तरह से 'Adam' = 1+4+4= 9+)(^{n}।

किसी व्यक्ति के पास क्या उपलब्ध है—सवाल यह नहीं, बल्कि यह है कि वह चाहता क्या है—इससे उसके निश्चय तथा प्रयास की दिशा तय होती है। यह आदमी की जरूरतें ही हैं, जो किसी वस्तु को मूल्यवान बनाती हैं तथा पूंजी और क्षमता के लिए अवसर पैदा करती हैं।

इस प्रकार हम 8 के अंक तथा शनि के लिए एक नया मान पाते हैं, जो अभाव का प्रतीक है। हम उसे समस्त संघर्षों के कारण के रूप में देखते हैं, परिणामस्वरूप 8 का अंक विकास के प्रतीक के रूप में बदल जाता है। चूंकि विकास में वृद्धि, विस्तार तथा बौद्धिक क्षमता की प्राप्ति एवं अभिव्यक्ति शामिल है, अतः हम पाते हैं कि 8 मुख्यतः 3 है।

ब्रह्मांड में प्रत्येक वस्तु बहाव की दशा में है, जहां यथास्थिति की दशा अस्थिर शांति है। हम पाते हैं कि प्रतिक्रिया ही नियम है। प्रत्येक उत्थान के लिए पतन, प्रत्येक उभार के लिए अवनति, प्रत्येक दोपहर के लिए शाम,

प्रत्येक बाढ़ के लिए एक सूखा निश्चित है।

इस प्रकार की अनुभूति सार्वभौमिक और आम आदमी द्वारा पूरी तरह मान्यता प्राप्त है, जो संभवतः अपनी शुरुआत स्टॉक एक्सचेंज के कुछ अभागे सट्टेबाजों के साथ करता है:

"उत्थान के बाद पतन
तेजी के बाद मंदी
सनसनाहट और बड़े सिगार के बाद
सिगरेट और धुएं के छल्ले ही रह जाते हैं।"

यह क्रिया और प्रतिक्रिया के नियमों की अभिव्यक्ति करता है, जो ब्रह्मांड की स्थिरता का कारण है।

हम पहले ही देख चुके हैं कि 8 का अंक अभाव का प्रतीक है। मृत्यु, हानि, बर्बादी, घायल होना तथा विकलांगता जैसी स्थितियां इस दुर्भाग्यपूर्ण अंक के साथ जुड़ी हुई हैं। यह शनि से संबद्ध है। जिस ग्रह की रश्मियां हमारे धरतीवासियों के लिए जिसका अंक 4 है, सर्वाधिक घातक होती हैं तथा हमारे उपग्रह चंद्रमा, जिसका संबंधित अंक 7 (वृद्धि) तथा 2 (घटाव) है।

आइए, इस प्रभाव को हम ब्रह्मांडीय नियमों के संदर्भ में तलाश करें। शनि 1898 में धनु राशि में मौजूद था। इस तिथि के कई शताब्दियों पूर्व परीक्षणों द्वारा यह जान लिया गया था कि धनु राशि स्पेन को शासित करती है। स्पेन के किंग अथवा डॉन सीज़र डी बाज़ान (Don Caesar de Bazan) के प्रति असम्मान जताने का कोई इरादा नहीं था, परंतु देश का भविष्य धनु राशि तथा कई आक्रामक ग्रहों से संबंधित था। जैसा कि कैप्लर ने उल्लेख भी किया था, जो यह अस्वीकार नहीं कर सका कि 'कोई अनैच्छिक तथा ईश्वर प्रेरित कोई परिवर्तनकारी अचूक मानवीय घटना होनेवाली है।'

1898 को हम पाते हैं कि इस आशंका के अनुरूप स्पेन अमेरिका के साथ अनपेक्षित तथा दुर्भाग्यपूर्ण युद्ध में उलझ गया। स्टॉक एक्सचेंज में भारी मंदी छा गई तथा सरकारी शेयरों के हजारों शेयरधारक तबाह हो गए। स्पेन ने वेस्ट इंडीज तथा फिलीपींस पर अपना कब्जा भी खो दिया और उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा तथा बहुत भारी मुआवजा उस पर थोपा गया। तकरीबन एक लाख व्यक्ति इस लड़ाई में मारे गए। स्पेन के लिए निश्चय ही यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण समय था।

तब से स्पेनिश 'मेन' का नया अर्थ हो गया था, क्योंकि यह अमेरिकी नौसैनिक जहाज के बच जाने से अधिकृत रूप से निश्चित हो गया था। इसे स्पेनी सेना ने नहीं उड़ाया था, बल्कि यह अपने ही बारूद के धमाके की चपेट में आ गया था। विस्फोट बाहर नहीं बल्कि जहाज के भीतर ही हुआ

था। यदि हम शनि तथा 8 के अंक को धनु राशि से अलग कर सकते (1+8+9+8=26=8) तो युद्ध का कोई पर्याप्त कारण नहीं मौजूद था।

इसके अलावा हमें युद्ध की और कोई वजह नहीं मिलती, तथापि यह भी महत्त्वपूर्ण है कि तत्कालीन ज्योतिष विद्वानों ने अमेरिका और स्पेन के महान संघर्ष के विषय में पहले से ही भविष्यवाणी कर दी थी। इसके साथ ही उन्होंने गेहूं के दामों में वृद्धि, जन-धन की बड़े पैमाने पर हानि तथा स्पेन द्वारा राज्य क्षेत्र के बनाए रखने, सरकार द्वारा शेयर बाजार के आगामी वर्ष में पुनर्निर्माण की भविष्यवाणी कर दी थी।

रूस-जापान युद्ध 1905 में हुआ था और ठीक उसी तरह से रूस पर शासन करनेवाली कुंभ राशि में शनि के संचरण से यह स्थिति उत्पन्न हुई थी। रूस की हार की भविष्यवाणी ऐसे लोगों के लिए आसान थी, जो प्रकृति की प्रतीकात्मकता के संकेत समझ लेते हैं। इतना ही नहीं, क्रांति की भी विशिष्ट भविष्यवाणियां की गई थीं, क्योंकि मंगल और शनि की युति कुंभ में हो रही थी। जब शनि मीन राशि में प्रविष्ट हो गया, जो पुर्तगाल को शासित करती है, तो वहां पर अशांति, जन असंतोष भड़क गया, जिसकी चरम अभिव्यक्ति सम्राट तथा युवराज की हत्या के रूप में हुई और उसने राजतंत्र को पदच्युत कर दिया था।

अब, यदि इन देशों की मुख्य प्रतिभूतियों से संबंधित मानों पर नजर डालें, तो हम पाएंगे कि शनि के प्रभावों में आकर उनकी झलक मंदी के रूप में दिख रही थी। स्पेनिश फोर्स (शेयर बाजार से संबंधित) युद्ध से पूर्व 80 अंक पर थे, जो 1898 में 30 के नीचे तक लुढ़क गए थे।

रूस में भी उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव देखने में आया

5 प्रतिशत ऋण (1822)

1897=154 1906=90

4 प्रतिशत बांड

1896=105 1906=71

3 प्रतिशत बांड

1898=96 1907=61

3.5 प्रतिशत स्वर्ण ऋण (1894)

1897=103 1906=60

उपरोक्त आंकड़े 1895 से 1907 तक के अर्से के भीतर विभिन्न प्रतिभूतियों के उच्चतम तथा निम्नतम दरों के हैं। हम पाते हैं कि प्रतिभूतियों की 12 वर्ष में निम्नतम दर तब थी, जब शनि प्रभावकारी था।

पुर्तगाल का 3 प्रतिशत स्टॉक 1906 में 72 अंकों पर था। 1908 में शनि

के प्रभावांतर्गत यह लुढ़क कर 58 तक पहुंच गया।

तुला द्वारा शासित होनेवाले जापान में रूस की तरह शनि के प्रभाववाली मंदी नहीं दिखाई दी। 1906 में 4.5 प्रतिशत वाले बांड 97 अंकों के अधिकतम बिंदु तक पहुंच गए थे। 1910 में जब बृहस्पति=3 (वृद्धि तथा विस्तार) तुला में स्थित था, तो कीमतें 102 अंकों तक चढ़ गई थीं।

उपरोक्त साक्ष्य स्पष्ट रूप से ग्रहों की गतियों के मानव जीवन पर पड़नेवाले प्रभाव के बारे में सभी संदेहों को दूर करता है तथा हम कैप्लर के निष्कर्ष को ठीक कह सकते हैं।

मानों के नियमों के संबंध में अंकों की प्रतीकात्मकता का तब तक ठीक पता नहीं चलता, जब तक ब्रह्मांडीय तत्त्वों का अध्ययन, सौर प्रणाली के ग्रह, राशिचक्र की राशियों, चंद्रमास के चक्रों का अध्ययन नहीं किया जाता। ग्रह दशाएं तथा चंद्र-सौर चक्र मानवीय संबंधों के उतार-चढ़ाव और संबंधित परिवर्तनों या मूल्यों में कमी-बढ़ोतरी को निर्धारित करती हैं।

शनि का चक्र 30 वर्ष, बृहस्पति का 12, मंगल का 15, सूर्य का 19, शुक्र का 8, बुध का 10 तथा चंद्रमा का 4 वर्ष का होता है। ग्रहणों का चक्र 18 वर्ष 10½ दिन का भी होता है, जो 3 चक्रों में 54 वर्ष 1 महीने तथा 36 चक्रों में 649 वर्षों का होता है।

इसके पश्चात ये ग्रहण आरंभ हो जाते हैं तथा उसके बाद उस वर्ष के उन्हीं दिनों से उनकी पुनरावृत्ति शुरू हो जाती है, वे व्यक्ति जिन्होंने मध्य ग्रहण के परिणामस्वरूप तथा आयुषंगी शारीरिक परिणामों के बारे में अध्ययन किया है, वे पाते हैं कि ऐसा तब होता है, जब चंद्रमा धरती के सबसे नजदीक होता है। ऐसे व्यक्ति यह भी मानने को तैयार होंगे कि इसका व्यक्तियों पर एक प्रभाव पड़ता है। टाइको (Tycho) ने ग्रहणों की प्रतीकात्मकता को स्वीकार किया है तथा अपनी व्याख्या के उदाहरण भी दिए हैं, जबकि कैप्लर ने मानवता के साथ उनके कारण-संबंधों की भी वकालत की है।

यह प्राचीन विश्वास है, जो अधिकतर आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों की अपेक्षा, परीक्षणों के मुताबिक ज्यादा सटीक बैठता है। इसे वर्षों से अध्ययन का विषय बनानेवाले व्यक्तियों की आधिकारिता के आधार पर स्वीकार किया जा सकता है। मानों की समस्या के संबंध में ग्रहण द्वारा पड़नेवाले दुष्प्रभावों को लागू किया जाए तो 'A' किसी के जन्म के समय सूर्य के स्थान पर होगा, जो शासक अथवा अध्यक्ष है। 'B' चंद्रमा के स्थान पर तथा 'CC' एवं 'DD' क्रमशः भूमध्य रेखा तथा क्षितिज होगी:
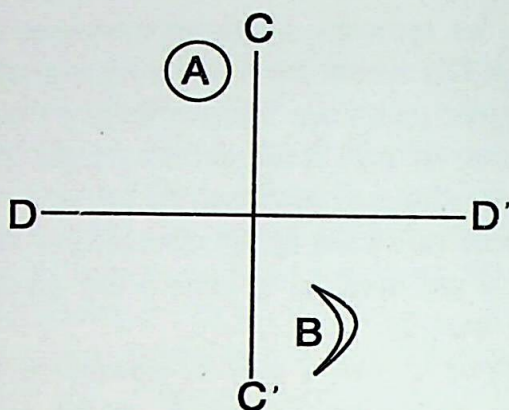
यह पता चलेगा कि जब भी सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण इनमें से किसी बिंदु पर पड़ेगा, उस वक्त बीमारी का दौर, दुर्भाग्य, हानि तथा तबाही आएगी। ऐसा समय ग्रहण से उतने दिनों बाद आएगा, जब प्रकाश पुंज ने क्षितिज को आखिरी बार पार किया हो। यह अवधि उन दिनों की चार गुनी होती है, जो प्रकाशपुंज की क्षितिज से दूरी तय करने में लगती है।

उदाहरण के लिए 3 जून 1909 की रात पूर्ण चंद्र ग्रहण हुआ था, जो किंग जॉर्ज पंचम की कुंडली में 'A' बिंदु पर पड़ रहा है, जो तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स थे। ग्रसित चंद्रमा पश्चिमी क्षितिज से लगभग 90 अंश पर है, तब 90x4=360 दिन, इस ग्रहण का प्रभाव होगा, जो मई 1910 तक पहुंचता था, जो 1 सितंबर 1909 उनके जन्मदिवस से 90 दिन के भीतर था।

उसी वर्ष तथा उसी महीने ध्यान देने योग्य सूर्य ग्रहण भी था, जो 'D' स्थान पर किंग एडवर्ड की कुंडली में विद्यमान था। ग्रहण 17 जून को 11.30 बजे रात को हुआ, तब सूर्य पश्चिमी क्षितिज से 82.5 अंश पश्चिमी क्षितिज पर था तथा ग्रहण के प्रभाव का समय 7 सितंबर 1909 को आरंभ हुआ था। सूर्य पूर्वी क्षितिज में 97.5x4=390 दिन, ग्रहण समाप्त होने का समय अर्थात लगभग 12 जुलाई 1910 था। इसी अवधि में एडवर्ड की मृत्यु हो गई।

यदि हम एक व्यक्ति के बजाय एक राष्ट्र की कुंडली पर ध्यान केंद्रित करें, तो पाएंगे कि यह नियम उसके संबंध में भी सटीक बैठता है, परंतु यह कथन इस आपत्ति के लिए भी स्थान देता है कि जहां एक ओर किसी व्यक्ति की कुंडली का उसकी जन्मतिथि के आधार पर ठीक-ठीक पता होता है, वहीं एक राष्ट्र की कुंडली अनुभवजन्य तथा दीर्घकालीन परीक्षणों के आधार पर निश्चित की जाती है।

हमें यह निश्चित तौर पर ज्ञात नहीं है कि किस आधार पर प्रकृति राष्ट्रों को शासित करनेवाले राशिचक्रों का बंटवारा करती है अथवा वह किस प्रकार किसी राशि विशेष के प्रभावों के द्वारा किसी राष्ट्र विशेष के भाग्य का निर्धारण करती है। लेकिन हम यह अनुभवों के आधार पर जानते हैं कि कतिपय विशिष्ट रीति से मानव राशियों तथा राष्ट्रों में संबंध है।

इस तथ्य पर विवाद की गुंजाइश नहीं है। इसका कारण संभवतः अस्पष्ट है, अतः पूरी प्रणाली को मानव के लिए स्वीकार करना सुविधाजनक होगा। एक विशिष्ट अर्थ में यह मानव चेतना तथा अनुभव में बोधगम्य है। शनि जो कष्ट या तंगी का ग्रह है, जीवन में प्रत्येक 7वें, 8वें या 9वें वर्ष में अपनी स्थिति से लोगों को परेशान करता है। लेकिन 15वें वर्ष में विशेष तौर पर उसका दुष्प्रभाव इसकी युति अथवा 7वें स्थान पर जाने से होता है, जबकि बृहस्पति धनधान्य में प्रत्येक चौथे वर्ष वृद्धि और विस्तार करता है तथा उसका विशेष प्रभाव प्रत्येक 12वें वर्ष देखने में आता है।

किसी माह विशेष में घटित होनेवाली घटना प्रत्येक 19वें वर्ष उसी माह में लगभग उन्हीं विधियों में दोहराई जाती है, क्योंकि ग्रह पुंज प्रत्येक 19वें वर्ष अपनी स्थितियों को दोहराते हैं। अतः जन्मपत्री में 19 वर्ष पूर्व की घटनाओं की पुनरावृत्ति की संभावना रहती है। इस नियम को पारस्परिक क्रमिकता (correlated successiveness) कहा गया है।

यह प्रकृति द्वारा मानों के नियमों को व्यवस्थित करने तथा वस्तुओं का संतुलन बनाए रखने के लिए प्रयोगों में लाई जाती है। यह भाग्य की भिन्नता को उच्च्र सोपानों तक ले जाता है और इस प्रकार मानव के विभिन्न समूहों में पारस्परिक निर्भरता को प्रोत्साहित करता है। यह सच है कि एक व्यक्ति शासन करता है, दूसरा शासित होता है। एक व्यक्ति के पास प्रचुर मात्रा में धन-धान्य होता है तो दूसरा कंगाल होता है, परंतु यह भी सच है कि कोई भी चीज तभी प्रभाव में आती है, जब तक कि नीचेवाले की सहमति न हो। हम जन्मकुंडली में देखते हैं कि सूर्य अपनी लाभकारी दृष्टि से किसी ग्रह को देख रहा है, परंतु वह लाभ देने में तब तक सक्षम नहीं है, जब तक कि चंद्रमा कुंडली में उसी दृष्टि या समान दृष्टि से न देखे। यही वजह है कि सार्वभौमिक शांति एवं सद्भाव के उस महान दिन की शुरुआत अनिश्चितकाल तक के लिए टल जाती है।

एक राजा जनता की इच्छानुसार ही शासक बनता है। कोई भी व्यक्ति बिना प्रजा के राजा नहीं बन सकता। अतएव हम यह देखते हैं कि प्रकृति के आर्थिक नियमों में से एक यह है कि संपन्न व्यक्ति विभिन्न व्यक्तियों पर निर्भर रहते हैं, जबकि निचले तबके के व्यक्ति अपने अस्तित्व का उद्देश्य

तथा सहमति ऊपरी वर्ग से प्राप्त करते हैं।

एक व्यक्ति जिसके नाम का अंक 3 है, वह खर्चीलेपन के बावजूद धनी हो सकता है तथा अपनी संपत्ति को मुक्त हस्त से व्यय कर सकता है। दूसरी ओर, जिसके नाम से संबंधित अंक 8 है, वह मितव्ययिता, धैर्य, इच्छाओं को मारकर तंगी तथा कठिनाई से बचत करने के बाद ही संपन्न हो सकता है। बृहस्पति जिन पर मेहरबान रहता है, उसकी सुख-संपत्ति में वृद्धि करता है, स्वतंत्रता और आजादी देता है, जबकि शनि संबंधित व्यक्तियों को समय के साथ समझौता करने तथा बंधकर रहने पर विवश करता है।

दूसरी ओर, मंगल सर्वदा जोखिम भरे कार्यों की प्रेरणा संबंधित व्यक्ति को देता रहता है। वह किसी खान में होनेवाले विस्फोट के तार अथवा बारूद के लिए माचिस की तरह 'स्पर्श करो और भागो' जैसी प्रवृत्ति के साहस को प्रेरित करता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक दशा में व्यक्ति की प्रवृत्ति वैसी ही बनी रहती है। जैसा कि इमर्सन ने बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण टिप्पणी की है 'जिसकी इच्छा करते हो, वह ले लो, मगर उसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।' (Take what thou wilt, but pay the price)।

मंगल तथा 9 के अंक से संबंधित व्यक्ति की प्रवृत्ति सकारात्मक तथा आक्रामक होती है। उसका प्रदर्शन वह नियम कानूनों की अवहेलना, हिंसाचार तथा खुद को कानून के शिकंजे में फंसाकर कर सकता है, अथवा वह कोई ऐसा बड़ा काम कर सकता है, जिसमें बहुत ऊर्जा, ताकत, साहस, उत्साह आदि की जरूरत पड़ती हो। ऐसा करने से उसे सम्मान तथा बहुत लाभ हो सकता है। मानों से संबंधित नियमों के अध्ययन के आरंभिक चरण में हम पाते हैं कि अंक एक निश्चित विशेषता को दर्शाते हैं, परंतु वे अपनी अभिव्यक्ति की विधि के बारे में रंचमात्र भी संकेत नहीं करते। 8 के अंक का प्रभाव रक्षण, परिरक्षण, संतुलन जैसे गुणों को जन्म दे सकता है। गुण निजता की अभिव्यक्ति है, जैसी कि वह व्यक्तित्व के रंगीन आइने तथा वातावरण में दिखाई देती है।

अंक इस अभिव्यक्ति को समझने की कुंजी है, परंतु वे हमें इस बात की जानकारी नहीं देते कि कोई व्यक्ति उन गुणों का धारक है अथवा वे गुण उसमें अंतर्निहित हैं, तथापि प्रकृति अपनी थाती के प्रति सतर्क रहती है तथा मानव के भाग्य के मामले में ऊर्जा संरक्षण के नियमों का पालन करती है, ठीक उसी तरह से जैसे खगोलीय मामलों में। प्रकृति प्रत्येक विकसित होनेवाली वस्तु के बारे में न्यूनतम प्रतिरोध का सिद्धांत अपनाकर उन्हें जन्म का उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है।

उसी तरह शनि=8 उत्पादन अथवा आपूर्ति के समापन द्वारा किसी वस्तु

को दुर्लभता प्रदान कर सकता है। ऐसे मामलों में वस्तु का मूल्य क्षणिक रूप से ऊपर चढ़ जाएगा। दूसरी ओर यह वस्तु की मांग को खत्म कर सकता है। जिसका परिणाम कीमतों में गिरावट होगा। 8 के अंक अथवा किसी अन्य अंक की व्याख्या की यह कुंजी प्रतीक विज्ञान के रहस्य अथवा ज्योतिष विज्ञान में है, जो सफलतापूर्वक वर्षों पूर्व के संबंध में अपनाई जाती रही है। इसका प्रयोग बाजार की न सिर्फ बड़ी गतिविधियों के संदर्भ में किया जाता रहा है, बल्कि मासिक अथवा दैनिक उतार-चढ़ाव के संबंध में उसे प्रयुक्त किया जाता रहा है। पूरा मामला कैप्लर के इन विचारों की पुष्टि के सबूत के रूप में है, जिसके मुताबिक दुनियावी घटनाएं आकाशीय परिवर्तनों की सहवर्ती होती हैं।

एक समान कारण उपस्थित रहता है, तो हमारा तर्क होता है कि उनका परिणाम भी एक जैसा ही होगा और यह तथ्य कि ऐसे परिणाम बारंबार देखने में आते हैं, न सिर्फ हमारे तर्क की वैधता की पुष्टि करता है, बल्कि घटनाओं की आवर्तितता के विषय में नियमों की स्थापना में भी हमारी मदद करता है। यदि वे परिणाम उच्चतर कारणों से नहीं होते, तो वे इस नियम पर खरे नहीं उतरते, जो ऊपरी तौर पर मानव के नियंत्रण में दिखाई देते हैं।

हम पहले ही देख चुके हैं मंगल ऊर्जा तथा प्रशासनिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। जब यह दूषित होता है तो इसकी असामान्य अभिव्यक्ति हिंसा, संघर्ष, अराजकता के रूप में देखने में आती है। आमतौर पर यह स्वतंत्रता का संकेत करता है। असामान्य स्थिति में यह स्वेच्छाचारिता का द्योतक हो जाता है। शनि को हमने अंक 8 से संबंधित पाया है जो विनाश, क्रांति तथा उथल-पुथल का संकेत करता है। दोनों ग्रह जब एक साथ सक्रिय होते हैं, तो जनभावनाओं का ज्वार, हिंसा तथा मौत के तांडव के नजारे देखने में आते हैं।

यह भी देखा गया है कि इंग्लैंड को शासित करनेवाली राशि मेष है, जिसका स्वामी मंगल है तथा यह 9 के अंक की रश्मियों से संबंधित है तथा रंग लाल है। ब्रिटेन के बारे में 'आल रेड' पद का इस्तेमाल सुसंगत रूप से किया जाता है। मानव बुद्धि का कोई खेल ही है, जो दो गोलार्धों के बीच विस्तृत ब्रिटिश साम्राज्य को एटलस में लाल रंग से दिखाया जाता है।*

अत: हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि मंगल अपने द्वारा शासित देशों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न करेगा, जब वह अपनी राशियों में होगा। यदि मंगल किसी देश को शासित करनेवाली राशि में शनि की युति में विद्यमान है, तो उसका प्रभाव खतरनाक होगा।

*** सेफेरियल 20वीं सदी के प्रारंभ में इंग्लैंड की भौगोलिक स्थिति की बात करता है, जब ब्रिटिश साम्राज्य भारत तथा अन्य कई देशों तक फैला हुआ था, जो अब सिमटकर बहुत छोटा हो गया है।**

वस्तुतः हम ऐसा पाते भी हैं। 1879 में मेष राशि में शनि और मंगल की युति विद्यमान थी, उसका परिणाम अफगान तथा जुल्लु (Zulu) युद्ध के रूप में सामने आया। जब शनि-मंगल की युति वृष राशि में हुई, तो वृष से शासित होनेवाले आयरलैंड में किसान आंदोलन भड़क उठा।

1883 में यह युति मिथुन राशि में पड़ी, जो मिस्र को शासित करता है, जिसका तात्कालिक परिणाम सूडान युद्ध तथा खार्तूम त्रासदी के रूप में सामने आया। हम राशिचक्र के पूरे वृत्त की तलाश कर सकते हैं, तब तक रिक्त जगह रहेगी, जब तक कि 1904 में इन ग्रहों की युति कुंभ में नहीं हो जाती। 1905 में जापान के हाथों रूस की पराजय हुई तथा 'लाल रविवार' की अपमानजनक त्रासदी घटी।

अब हम 1909-10 की ओर आते हैं। उस वर्ष लॉयड जॉर्ज क्लिक की घातक सोशलिस्ट नीति, डाक तथा कोयले की हड़ताल, 1912 के असंभावित युद्ध तथा सुफ्रागेट (Suffragette) विद्रोह देखने में आते हैं। 1879 से 1909 तक के 30 वर्षों में राशिचक्र के तकरीबन प्रत्येक भाग में इस युति के समान परिणाम देखने में आते हैं। यदि हम 1879 से 30 वर्ष पीछे लौटें, तो 1849 में सिख युद्ध सामने आता है।

दूसरी युति 1851 में हुई, उसके तुरंत बाद रूस का युद्ध प्रारंभ हुआ। इसका तात्कालिक प्रभाव नेपोलियन के विद्रोह तथा ब्रिटेन के हितों को धक्का लगने के रूप में सामने आया। इसके और 30 वर्ष पीछे हम जाते हैं, तो शनि और मंगल की मेष में युति हो रही थी, जिसका नतीजा कैटो स्ट्रीट षडयंत्र, लार्ड लोंडोंडरी (तात्कालिक विदेश मंत्री) द्वारा आत्महत्या के रूप में सामने आया।

अतः चाहे हम शनि तथा मंगल (9+8) की प्रत्येक दो वर्ष बाद क्रमिक राशियों में होनेवाली युतियों अथवा उसी राशि में 30 वर्ष बाद की युति के परिणाम देखें, वह क्षुब्धकारी तथा विनाशकारी ही है। लेकिन जब हम 265 वर्ष के चक्र को ले सकते हैं, जो अपने में अनेक लघु चक्रों को अंतर्निहित करता है, तो हम पाते हैं कि वही ग्रह राशिचक्र के ठीक उसी भाग में संयुक्त हो जाते हैं।

इस प्रकार, 1909-10 की कड़ी से 1644 ई. सामने आती है। इसी वर्ष मार्स्टोन मूर के शाही समर्थकों को उखाड़ फेंका गया था। सन् 1644 से इस चक्र को पुनः लें तथा 1379 ई. में आएं, तो हमें वाट टेलर के नेतृत्व में विद्रोह मिलता है। पुनः 1114 की ओर नजर घुमाएं, तो उस वक्त इंग्लैंड, हेनरी प्रथम द्वारा बेल्जियम के राबर्ट और फ्रांस के विरुद्ध छेड़े गए युद्ध की वजह से परेशान था। इसके आगे भी 849 तक जाएं, तो एगबर्ट के काल

में डेनमार्क का आक्रमण मिलता है।

इससे पूर्व ब्रिटिश मामलों का इतिहास अत्यंत धुंधला मिलता है। अतः हम उसे छोड़ सकते हैं। यह चक्र मेष के अलावा दूसरी राशियों द्वारा शासित होनेवाले देशों के संबंध में भी पाया गया है। निःसंदेह हमें इन देशों में शनि और मंगल की युति से जुड़ी घटनाओं की आवर्तितता का सबूत मिलता है।

शनि तथा बृहस्पति की युति जिस राशि में होती है, उस राशि से शासित होनेवाले देशों में व्यापक परिवर्तन देखने में आते हैं। इस लिहाज से यह युति शनि और मंगल की युति से भिन्न है। जहां पश्चातवर्ती प्रत्येक दो वर्ष में क्रमिक राशियों में होता है, वहीं बृहस्पति व शनि अनेक दशक उसी तिहरेपन (Triplicity) में पड़े रहते हैं।

वर्तमान में वे 1842 से सांसारिक त्रिकोण में हैं और वृष, कन्या और मकर राशियों में मौजूद थे। प्रत्येक 20 वर्षों के अंतराल पर ये ग्रह इनमें से किसी एक राशि में युति में होते हैं, जैसे 1842 में मकर, 1861-62 में कन्या में, 1901 में तुला राशि में, 1921 में कन्या, 1941 में वृष, 1961 में मकर, 1981 में तुला राशि में ये युति में रहे। हम पाते हैं कि 7 आवर्ती युतियों के पश्चात इस तिहरेपन में परिवर्तित होता है।

यहां 'सांसारिक त्रिकोण' से शासित होनेवाले देश जिनमें भारत, न्यूजीलैंड, ग्रीस, टर्की, मेक्सिको, आयरलैंड, फारस शामिल हैं, में बड़े परिवर्तन देखने को मिलेंगे। ये परिवर्तन अंततोगत्वा अच्छे परिणाम देंगे तथा यहां लाभप्रद कानून अथवा ठोस संविधान* की स्थापना हो सकती है।

1891 के पश्चात यह युति जापान, रूस, अमेरिका तथा मिस्र को प्रभावित करेगी, परंतु जहां तक इस तिथि तक इतिहास की जानकारी है, उन देशों में जहां 1842 से व्यापक उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। उनमें इस चक्र के पूरा होने पर और परिवर्तन देखने को मिलेंगे** भारतीय विद्रोह मकर में दोनों ग्रहों की युति के परिणामस्वरूप सामने आया, जो भारत को शासित करनेवाली राशि है।

रूस का टर्की पर आक्रमण, ब्रिटेन के हितों को बढ़ावा आदि घटनाओं ने तब जन्म लिया, जब कन्या राशि में इन ग्रहों की युति थी। कोअर्सियन अधिनियम, पारनेल विद्रोह, किसान असंतोष, लार्ड फ्रेडरिक कैवेंडिश (आयरलैंड के विदेशमंत्री) की हत्या तभी हुई, जब इन ग्रहों की युति वृष राशि में हुई। छोटे-मोटे कारण आवृत्ति के नियमों के अनुरूप राशिचक्रों के पारस्परिक प्रभाव

---

* यह भविष्यवाणी बीसवीं सदी के प्रारंभ की है जो इन देशों के स्वतंत्र होने तथा अपना संविधान शासन लागू होने से फलीभूत हो चुकी है।

** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857

या तो कालचक्र को मंथर कर देते हैं तथा दूसरे इसकी गति तीव्र कर देते हैं, परंतु बड़े प्रभाव स्वयं ही अपने लक्षण दिखाते हैं तथा मानव के विचारों एवं नीतियों को ऐसा मोड़ दे देते हैं, जिसके बारे में हम विचार कर रहे हैं।

इस आवर्ती नियम की कुछ अन्य विशेषताएं भी हैं, जो अंकों के क्रम पर आधारित हैं। इनमें से कुछ के उदाहरण 'मैनुअल ऑफ आकल्टिज्म' में दिए गए हैं। जिसे हम घातक समय कहते हैं, वे एक निश्चित समयावधि के बाद व्यक्ति के जीवन में आते हैं। यह समय व्यक्ति के मूलांक पर निर्भर करता है।

ये इस प्रकार के हैं जैसे 13 तथा 16 का इकाई मान। यह क्रम किसी भी आधारभूत तिथि में इसका अपना इकाई मान जोड़ने से प्राप्त होता है, जैसे 1870=16, जिसे 1870 में जोड़ने से 1886=23 प्राप्त होता है। इस प्रक्रिया को निरंतर दोहराते जाएं। उदाहरण के लिए नेपोलियन प्रथम का जन्म 1769 में हुआ था। उसका अंकीय क्रम इस प्रकार होगा:

1769=23 जन्म का अंक
23
1792 क्रांति*
23
1815 वाटरलू**

अन्य तथा और सामान्य क्रम इस प्रकार होगा:

1769=23
23
1792=19
19
1811=11

1811 का वर्ष नेपोलियन के भाग्य के मामले में एक बड़ा मोड़ साबित हुआ था। इस वर्ष वेलिंगटन ने फ्रेंच प्रायद्वीप पर अपनी पहली जीत दर्ज की थी और बाद में बादाजोज़ (Badajoz) भी उसके आधीन आ गया। नेपोलियन 1815 में 46 वर्ष का हुआ और उससे यह क्रम प्राप्त होता है:

1815
46
1861 = 16

यह घातक संख्या है, जो 'टूटी मीनार' से प्रतीकात्मक रूप से संबंधित है।

* संदर्भ फ्रांसीसी क्रांति का है।

** वाटरलू का युद्ध, जिसमें नेपोलियन की पराजय हुई थी।

किसी साम्राज्य के गठन अथवा किसी राष्ट्र के इतिहास की किसी महत्त्वपूर्ण कड़ी (घटना) को मूलांक के रूप में लेने के उदाहरण मेरी पूर्व की कृतियों में मौजूद हैं। जॉर्ज प्रथम का ब्रिटेन की राजगद्दी पर आरूढ़ होना तथा 1714 में हनोवेरियन साम्राज्य (Hanoverian Dynasty) की स्थापना से जो क्रम हमें मिलता है, वह इस प्रकार है–1727, 1744, 1760, 1774, 1793 तथा 1813, जो जॉर्ज द्वितीय के राजतिलक, स्टुअर्ट के विद्रोह, जॉर्ज तृतीय के सत्तारूढ़ होने, अमेरिकी विद्रोह, फ्रांसीसी क्रांति तथा महासंघ (Great alliance) से संबंधित है। नेपोलियन के पतन के वर्ष 1815 से हमें 1830 प्राप्त होता है, जिससे चार्ल्स दशम के पतन तथा पश्चातवर्ती क्रम में रॉब्सपियरे के पतन का भी सीधे-सीधे संकेत मिलता है।

शैली (अंग्रेज कवि) का जीवनवृत्त अंकों की आवृत्ति का बड़ा रोचक उदाहरण है:

शैली पैदा हुआ 1792=19

19

1811 ऑक्सफोर्ड से निष्कासित

11

1822 दुनिया से निष्कासित

पुनः वर्ष 1822 का इकाई मान 13 है, जो टैरोट तालिका में 'फसल काटता हुआ कंकाल' अर्थात मृत्यु से संबंधित है। 1822 में उसने 30 वर्ष की आयु पूरी की। उसे जोड़ने पर 1852=16 प्राप्त होता है, जिसका संकेत है 'टूटी मीनार'। सभी व्यक्तियों पर इस प्रकार की प्रतीकात्मकता लागू नहीं होती। परंतु सभी व्यक्तियों पर घटनाओं की आवृत्ति की बात अवश्य लागू होती है तथा यह बारंबार पाया जाता है कि जन्मतिथि के बजाय जीवन से संबंधित पहली बड़ी और महत्त्वपूर्ण घटना को लेना पड़ता है। मेरे अपने मामले में पाता हूं:

1868=23 पिता की मृत्यु

23

1891 माता की मृत्यु

हाउस ऑफ ब्रंसविक (House of Brunswick) ब्रिटिश सत्ता के अंतर्गत किंग विलियम चतुर्थ के माध्यम से आया। उससे संबंधित घटनाओं को हम ले रहे हैं:

1830=12 विलियम चतुर्थ का राज्यारोहण

12

1842=15 स्काइंड युद्ध (Scinde War)

15

1857 = 21 भारतीय विद्रोह (गदर) (Indian Mutiny)

21

1878 = 24 अफगान युद्ध

24

1902 = 11 एडवर्ड तृतीय का राज्यारोहण
बोअर युद्ध का अंत

11

1913 = 14 बाल्कन युद्ध

जर्मन राज्य की स्थापना 1871 में फ्रांस के साथ युद्ध के बाद हुई। वह भी उसी श्रृंखला की ओर संकेत करता है।

1871 जर्मन साम्राज्य स्थापित

17

1888 कैसर विल्हेम तृतीय को राजगद्दी

25

1913 उपरोक्त

पीटर प्रथम सर्बिया की गद्दी पर 1903 में सत्तारूढ़ हुआ। 1903=13 अर्थात मृत्यु, फसल काटता कंकाल (टैरोट के मुताबिक)। 1912 से पहले यह अंक पुनः तिथियों में प्रकट हुआ तथा तब बाल्कन युद्ध छिड़ गया। निम्नलिखित जन्मपत्री रुचिकर होगी:

29 जून 1844 सुबह=28-6-44

योग 24=6 शुक्र

युतियां:

चंद्रमा तथा शुक्र

चंद्रमा तथा शनि

शनि तथा सूर्य

यह एक दुर्भाग्यपूर्ण भविष्य का द्योतक है। अतएव हम उम्मीद करते हैं कि सर्बिया बाल्कन में युद्ध से भलीभांति विरत नहीं हो पाएगा।

प्रतीक विज्ञानी 15, 34, 65, 111, 175, 260, 369 वर्षों के चक्र को प्रयोग में लाते हैं, जो शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध तथा चंद्रमा के हैं।

आयरलैंड के मामले में सूर्य के संवैधानिक प्रभाव का उदाहरण इस प्रकार है:

1801 संघ
111 सूर्य का चक्र
1912 अलगाव

प्रतीक विज्ञानी आगे भी कालों का विभाजन करते हैं और उनको इस प्रकार विस्तारित करते हैं:

शनि	3	9	15	45	वर्ष
बृहस्पति	4	16	34	136	''
मंगल	5	25	65	325	''
सूर्य	6	36	111	666	''
शुक्र	7	49	175	1225	''
बुध	8	64	260	2080	''
चंद्रमा	9	81	369	3321	''

यहां यह देखा जाएगा कि सभी ग्रहों के न्यूनतम वर्षों का योग 42 है। हमारे महत्त्व का मानदंड तीन त्रिभुजों पर लागू होता है। सभी वर्षों के योग 7 के गुणक हैं। नामत: 6 गुना, 40 गुना, 147 गुना तथा 1114 गुना। यह समय ज्योतिष विज्ञान के समय से भिन्न है। कैल्डियन्स के मुताबिक इनके मान निम्नलिखित हैं:

चंद्रमा के लिए	4 वर्ष
बुध '' ''	10 ''
शुक्र '' ''	8 ''
सूर्य '' ''	19 ''
मंगल '' ''	15 ''
बृहस्पति ''	12 ''
शनि ''	30 ''

तथापि प्रतीक विज्ञानी ग्रहों के मान को इन समयों से निकालते हैं तथा शनि को 6, बृहस्पति को 7, मंगल को 2, सूर्य को 3, शुक्र को 4, बुध को 8 तथा चंद्रमा को आधारभूत अंक देते हैं। इनका उपयोग हिब्रू विधि के अनुसार नामों की गणना में होता है।

प्रतीक विज्ञान के क्रम द्वारा ग्रहों के 'की नंबर' निकाले जाते हैं। जैसे–शनि 8, बृहस्पति 3, चंद्रमा 2, बुध 5, मंगल 9, सूर्य 4, शुक्र 6, जैसा कि देखा जाएगा, वे ऐसे अंक हैं, जो पहले से ही बारंबार हेडेन तथा दूसरों के द्वारा उनसे जुड़े हुए हैं। इनकी विशिष्टता यह है कि सूर्य का नकारात्मक अंक 4 है तथा चंद्रमा का सकारात्मक अंक 7 है। ये अंक अकेले उन ग्रहों के संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं।

कैल्डियन्स द्वारा प्रतिपादित सूर्य के 19 वर्ष के समय के साथ घटनाओं की आवर्तिता का गहरा संबंध है, क्योंकि प्रत्येक 19वें वर्ष सूर्य और चंद्रमा अपनी कलाओं का निर्माण करते हैं अथवा इसके करीब पहुंचते हैं। चंद्रमा के आरोह में घटाव भी लगभग 19 वर्ष का समय लेता है। उसके बाद दो या तीन एक ही किस्म के क्रमिक ग्रहण एक ही देशांतर पर 19 वर्ष के अंतराल पर होते हैं।

अत: 22 जनवरी रविवार 1860 को 2^0 देशांतर पर एक सूर्यग्रहण था, तो अगला 1879 को 22 जनवरी 2^0 देशांतर, तीसरा 22 जनवरी 1898 को 2^0 पर पड़ेगा। प्राचीनकाल से ही ग्रहणों को मनुष्य जीवन को प्रभावित करनेवाले अपशकुन के रूप में देखा जाता रहा है तथा उनके प्रतीकात्मक महत्व को मान लिया गया, जबकि भौतिक गुणों की तुरंत दृष्टि से ग्रहणों ने हालिया वैज्ञानिकों के बीच पर्याप्त महत्त्व प्राप्त कर लिया है।

यह निर्विवाद रूप से देखा गया है कि ग्रहों की रश्मियों के मंद पड़ते ही (ग्रहण के समय) निश्चित शारीरिक परिवर्तन देखने में आते हैं। यह विशेष रूप से उन भागों में होता है, जहां यह ग्रहण दिखाई देते हैं अथवा हम ग्रहणों के प्रतीकात्मक महत्त्व मानते हैं, क्योंकि उनकी राशिचक्रीय स्थिति के साथ एक प्रकार की आवर्तिता जुड़ी हुई है, जो किसी भौगोलिक क्षेत्र में नहीं मानी जाती। 19 वर्ष के इस समय को 5वीं शताब्दी में मेटन (Meton) के समय से खगोलीय महत्त्व का माना जाता है तथा शकुन विचारने के काम में लाया जाता रहा है।

टॉल्मी तथा दूसरे खगोल विज्ञानियों ने इसके प्रतीकात्मक महत्त्व को स्वीकार किया है। कैप्लर ने अपने अनुभवों के आधार पर इसे स्वीकार किया तथा सुझाया कि मानवीय संबंध खगोलीय शक्तियों के माध्यम से प्रभावित हो रही है। यदि ऐसा है तो यह मामला साबित भी होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर एक वृहत सूर्य ग्रहण यूरोप में 17 अप्रैल 1992 को, 27^0 देशांतर तथा 43^0 उत्तरी अक्षांश पर हुआ। बाल्कन युद्ध उन्हीं दिनों शुरू हुआ।

महत्त्वपूर्ण तथ्य यह था 14 अक्टूबर 1912 को 27^0 का अर्थात ग्रहण के ठीक विरोधी स्थान पर पड़ा था। युद्ध अपनी गति से चला और समाप्त

हो गया। सहयोगी राष्ट्र भलीभांति जानते थे कि शक्तियों का हस्तक्षेप नैतिकतावश ही है। शक्तियों के लिए स्थिति पर नियंत्रण पाना अत्यंत खतरनाक था, जो वे कर रही थीं। शक्तियों के विरुद्ध होने के बावजूद वे लड़ते रहे और टर्की को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

परंतु जब विजित क्षेत्र के बंटवारे पर बहस होने लगी, तो सहयोगी राष्ट्रों में से सक्रिय भूमिका निभानेवाले रोमानिया को ऊपरी तौर पर ताक पर रख दिया गया। यह इस तरह से घटित हुआ, जब मंगल ग्रहण के अंश अर्थात 27^0 देशांतर के ऊपर संचरण कर रहा था। सहयोगी राष्ट्रों के बीच आपस में ही युद्ध आरंभ हो गया। रोमानिया ने शीघ्रता से बुल्गारिया पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और युद्ध के रंगमंच पर अग्रणी भूमिका में आ गया।

इस प्रकार, उसने पूरी स्थिति को उलटकर यूरोप को ही चुनौती दे डाली। यहां हम देखते हैं कि एक महत्त्वपूर्ण सूर्य ग्रहण यूरोप में पड़ने से विश्व के उस हिस्से में परेशानियां उठानी पड़ीं तथा दो बड़े संघर्षों की शुरुआती तिथियां 'मार्शल' मंगल ग्रह के सूर्यग्रहण के समवर्ती रेखावाली स्थिति में होने की तिथि से पूरी तरह मेल खाती है।

जहां तक व्यक्तिगत मामलों की बात है, दीर्घकालीन अध्ययनों के पश्चात पाया गया है कि घटनाओं की प्रकृति पुनरावृत्ति की होती है तथा कुछ मामलों में इनका आवृत्तिकाल 19 वर्ष का होता है, जैसे जब किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली के महत्त्वपूर्ण बिंदु पर ग्रहण पड़ता है, अन्यथा उनकी आवृत्ति नहीं होती। किंग एडवर्ड सप्तम के जन्म के समय धनु राशि 26 अंश पर लग्न में विद्यमान थी। इस अंश पर धनु की विरोधी राशि मिथुन में 1852, 1871, 1890, 1909 में सूर्य ग्रहण पड़े थे।

ये वर्ष किंग एडवर्ड के जीवनकाल के बुरे समय, दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से संबंधित है, जो अंततोगत्वा मृत्यु की ओर ले गए, जिसकी भविष्यवाणी भी की गई थी, जो सौरग्रहण की शृंखला की अंतिम कड़ी के एक वर्ष के भीतर ही घटित हुई थी। कुछ दूसरे मामलों में पाया गया है कि शनि का आधा समय=15 वर्ष, जो मंगल का पूरा समय है, अशुभ सूचक होता है और तब प्रभावी होता है, जब शनि कुंडली के किसी महत्त्वपूर्ण घर में संचरण करता है।

ग्रह दशाओं का प्रतीकात्मक अर्थ में अध्ययन से रोचक संख्यात्मक तथ्य प्राप्त होते हैं, जिसका घटनाओं की आवर्तिता के नियम के लिहाज से महत्त्व है। यदि हम ग्रहों के कैल्डियन समय को ग्रहों के दृश्यमान वेग के क्रम में रखें:

शनि	बृहस्पति	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्रमा
30	12	5	8	10	4

तथा उससे न्यूनतम उभयनिष्ठ गुणनफल (least common multiple) 120 को विभाजित करें, तो हमें ये अंक प्राप्त होते हैं:

4	10	8	15	12	30

ठीक वही मान, लेकिन विपरीत क्रम में प्राप्त होते हैं। कैल्डियन तथा भारतीय दोनों ज्योतिष पद्धतियों में ग्रहों के चक्र का पूरा समय 120 वर्ष माना जाता है। हम इन समयों में ध्रुवीय लोगों के निश्चित संबंध को देख सकते हैं। शनि तथा चंद्रमा अपनी राशियों मकर तथा कर्क के मद्देनजर एक-दूसरे के विरोधी हैं। बृहस्पति तथा बुध अपनी राशियों धनु, मिथुन, मीन, कन्या के संदर्भ में विरोधी हैं। इसी प्रकार मंगल तथा शुक्र अपनी-अपनी राशियों मेष, तुला तथा वृश्चिक एवं वृष के संदर्भ में परस्पर विरोधी हैं।

इस दशा में यदि 120 वर्ष का समय 360^0 के वृत्त से संबंधित हो तो इससे संबंधित 45^0, 90^0, 135^0, 180^0 अंशों से संबंधित समय, जो दुर्भाग्यपूर्ण माने जाते हैं, क्रॉस के ऊपर अंकित होते हैं। व्यक्ति के जीवन के 15, 30, 45, 60, 75, 90 तथा 105वें वर्ष खतरनाक होते हैं। दूसरी ओर 60 तथा 120 अंश के कोणों से संबंधित वर्ष लाभप्रद होते हैं। वे हैं–20, 40, 80 तथा 100वां साल। चूंकि व्यक्ति का जन्म शून्य से मेल नहीं खाता तथा व्यक्ति 120 वर्षों के क्रम में जन्म लेते रहते हैं। समय व्यक्तियों की विभिन्न आयु पर निर्भर होता है। 120 वर्षों के इस चक्र की जड़ भारतीय दशा भुक्ति पद्धति में अंतर्निहित है।

यदि हम ग्रहों के अंकों को उनके समय के अनुसार रखें तो हमें इकाई श्रृंखला का आधार मिल जाएगा:

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
♓	⊙	☽	♃	⊙	☿	♀	☽	♄	♂
	+	—		—			+		

प्रथम और आखिरी पद को जोड़ने से 0+9=मंगल=9 प्राप्त होता है, 1+8=9, 2+7=9, 3+6=9, 4+5=9 यहां हम सूर्य और शनि, बृहस्पति और शुक्र के योग पाते हैं। चंद्रमा का सकारात्मक और नकारात्मक 2+7=9 है और अंत में सूर्य के ऋणात्मक अंक 4 से बुध के अंक 5 का जोड़ा बनता है। जिसे अन्यत्र ('कॉस्मिक सिंबॉलिज्म' में) नकारात्मक सूर्य का विकल्प बताया गया है। यह अध्याय समाप्त करने से पूर्व यह सवाल जरूर पूछा जा सकता है कि घटनाओं की आवर्तिता के पीछे किस किस्म का आध्यात्मिक नियम

काम करता है।

हम यह उत्तर दे सकते हैं कि क्षतिपूर्ति का नियम हर जगह काम करता है। जैसे कोई आत्मा उच्च सूर्य (Aphelion) में है। वह किसी दिन निम्न सौर (Perihelion) में बदल जाएगी। सूर्य के प्रकाश में आलोकित व्यक्ति किसी पूर्ण दिवस में अपनी महत्त्वाकांक्षा के लक्ष्य को प्राप्त हो जाएगा। आगे, हम यह जानते हैं कि जैसे वह प्रत्येक परिवर्तन की ओर जाएगा, वह अस्तित्व के हृदय क़े निकटतर होगा। विक़ास का नियम चक्रीय अथवा आवर्ती होता है। यह चक्र कभी भी उल्टा नहीं घूमता अथवा अवनतिशील नहीं होता, बल्कि निरंतर विकासोन्मुख रहता है।

सतही अध्ययनकर्ताओं के मस्तिष्क में यह विचार आता है कि कोई गुरुत्वीय वस्तु मानवता के प्रति अधोन्मुखी है या निश्चित धुरी के इर्द-गिर्द ही घूम रही है। गहन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जब यह वस्तु पुनः एक स्थान पर लौटती है तो वस्तुतः यह प्रत्येक परिवर्तन पर अपने गुरुत्व केन्द्र के और निकट होती जाती है। परिवर्तन में वृद्धि जब कई हजार गुना होती है तभी अनुभव में आती है अन्यथा नहीं।

20 शताब्दी के काल में पृथ्वी सूर्य के अधिक निकट ~;ई है जबकि चंद्रमा धरती से और दूर हुआ है, परंतु दोनों की गतियों में परिवर्तन आया है। धरती अपनी धुरी के चारों ओर घूमने में पहले की अपेक्षा कम समय लगा रही है। हम गुरुत्व .केंद्र के और निकटतर होते जा रहे हैं।

श्रेष्ठ मानव देवतुल्य हो रहा है तथा हम सब और ज्यादा मानवीय हो रहे हैं। विकास की यह प्रक्रिया अब भी जारी है, पर क्रमिक तथा मंथर गति से। बेशक महसूस न किया जा सके, पर निश्चित तौर पर हमें आशावादिता के सिद्धांत की पुष्टि के लिए ब्रह्मांडीय नियमों के अतिरिक्त किन्हीं अन्य नियमों की जरूरत नहीं है।

आवर्तिता का नियम, चक्रीय विकास तथा गुरुत्वाकर्षण इस बात की पुष्टि करता है कि क्षतिपूर्ति का नियम काम कर रहा है और यही हमारे मान संबधी नियमों का आधार है, जिसके बारे में हमने आंशिक रूप से विचार किया। हमने मूल्यों के नियमों से यह जाना कि उतार-चढ़ाव, वृद्धि-घटोतरी, लाभ-हानि सभी सापेक्षिक दशाएं हैं तथा अस्थायी हैं। जिनका ऐसी प्रणाली में जो निरंतर विकासोन्मुख है, कोई स्थायी मूल्य नहीं है, परंतु यह हमें अवसर का माध्यम प्रदान करती है, जिसमें हमारी बुद्धि और ताकत के प्रयोग की आवश्यकता होती है। पुरानी कहावत है 'जरूरत तभी होती है, जब शैतान पीछे पड़ा हो।' यह इसी तथ्य की एक और आभिव्यक्ति है कि 'आवश्यकता अविष्कार की जननी है।' ठीक उसी तरह जैसे 'दुःख विकास का कारण है।'

बिना बाधा और कष्ट के, बिना जरूरत और दुःख के विस्तार की दिशा में कोई रचनात्मक प्रयास नहीं होगा तथा बिना प्रयास के शक्ति और बुद्धि का कोई विकास नहीं होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार ब्रह्मांड का प्रतीकात्मक अध्ययन हमें 'दैवी अर्थशास्त्र' (Divine Economy) और ज्यादा न्यायपूर्ण अवधारणा की ओर ले जाता है। जब इसका अंतिम समीकरण हल किया जाता है, तो यह सिर्फ ईश्वर के अवढ़रदानी स्वरूप का ही ध्यान दिलाता है।

क्षणिक रूप से यह हमें अपने अवसरों को सुधारने में मदद कर सकता है तथा समय रहते, अपनी बुद्धि व क्षमता के प्रयोग रहते हम जीवन को उत्तम बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए हमारे पास अंकों का प्रतीक विज्ञान तथा व्याख्या के दूसरे साधन मौजूद हैं। यहां मैंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि $1=1+\chi^n$ तथा 8=3, यदि इसमें मुझे थोड़ी भी सफलता मिलती है, तो यह प्रतीकात्मक सिद्धांत को और मूल्यवान बनाएगी तथा इसे अवसरवादिता की वैदिक ऋचाओं जैसी स्थिति तक पहुंचाएगी और वहीं यह एक नए नैतिक नियमों की दार्शनिक विवेचना को भी आमंत्रित करेगी, जो मानव विकास के वैज्ञानिक तथ्य से संबंधित है तथा निजी महत्त्वाकांक्षा की नैतिक घटना है।

मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि न प्रतीक विज्ञान और न ही ज्योतिष कोई धर्म है और मैं इस कथन से फिरने का कोई कारण भी नहीं देखता। मैं यह सोचने के लिए बाध्य हूं कि दोनों विषय सच्चे धर्म की संचरना में अपना कुछ योगदान दे सकते हैं, जो ब्रह्मांड के प्रतीकात्मक मान तथा ईश्वर की मनुष्य की ओर अभिव्यक्ति है। इमर्सन ने अपने निबंध 'आइडियलिज्म' में यह विचार दिए हैं, जिनका मैं अपनी स्मृति के आधार पर उल्लेख कर रहा हूं।

'विश्व के आदर्शवादी विचार ईश्वर में निहित हैं। वह समस्त घटनाओं, व्यक्तियों तथा वस्तुओं को देखता है, उनका कष्टपूर्वक अंबार नहीं लगाता, परमाणु-दर-परमाणु, क्रिया-दर-क्रिया भूतकाल में तब्दील हो रही है, परंतु एक विशाल चित्र दृश्यमान शाश्वतता पर ईश्वर के हाथों अंकित है, जो मानव हृदय के शाश्वत चिंतन के लिए है।'

हमारे ऊपर जो यह नियम थोपा गया है कि $2^2=4$ (भौतिक रूप से) होता है। यह ब्रह्मांड के परिवर्तित संबंधों के साथ बदल सकता है तथा यह प्रतीत हो सकता है कि दृश्यमान परिवर्तन हमारी चेतना में हो रहे परिवर्तनों से संबंधित हो जाए। जब से दुनिया ने जन्म लिया, तब से महामानव के चित्रों, ईश्वर के प्रति उसके प्रेम में रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं आया है।

□□

मानों का समन्वय

हम यह देख चुके हैं कि गुणों की अभिव्यक्ति, जैसे इच्छा का परिमाणात्मक मानों से निश्चित संबंध है। इच्छा ब्रह्मांडीय ऊर्जा की अभिव्यक्ति है। यह ज्ञान सभी भौतिक, रासायनिक तथा चुंबकीय शक्तियों की भी अभिव्यक्ति है। इसके अंकीय संबंध भी हैं क्योंकि ये ब्रह्मांडीय, रासायनिक तथा चुंबकीय ऊर्जा जीवन का ही दूसरा नाम है, जिसका अपना ही गणित है।

यदि हम 0 से 9 तक के अंकों में प्राप्त अंकीय श्रृंखला को लेते हैं, तो पाएंगे कि सम तथा विषम, सकारात्मक तथा नकारात्मक, पुरुष तथा स्त्री के अंकों के निरंतर योग से एक अन्य श्रृंखला प्राप्त कर लेंगे, जिसका वही मान रहता है परंतु उसका क्रम भिन्न होता है। प्रत्येक नई कड़ी में 9 का मान अनुपस्थित रहता है, जैसा कि निम्नलिखित रूपाकृति में दर्शाया गया है:

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9
1 3 5 7 9 2 4 6 8
4 8 3 7 2 6 1 5
3 2 1 9 8 7 6
5 3 1 8 6 4
8 4 9 5 1
3 4 5 6
7 9 2
7 2
9

संख्याओं के युग्म (जोड़े) के प्रथम योग में हमें 1, 3, 5, 7, 9 की कड़ी मिलती है, जिसमें सारी विषम संख्याएं शामिल हैं। उसके पश्चात 2, 4, 6 और 8 आते हैं, जिनमें सभी सम संख्याएं शामिल हैं। अगली पंक्ति में पहले और बाद के अंक 4 तथा 5, 9 के जोड़े हैं। उसी प्रकार शेष 3 और 6 तथा 5 और 4 इत्यादि हैं। परंतु 9 का अंक नहीं है। यह पुनः चौथी पंक्ति में दिखाई देता है परंतु उसमें 4 तथा 5 के अंक नहीं हैं। पांचवीं पंक्ति

में 9 नहीं है। परंतु अंक 2 और 7 से समान मान की कमी पूरी जाती है। छठी पंक्ति में 2 3 6 7 मिलकर दो नौ बनाते हैं जो अनुपस्थित है। सातवीं पंक्ति में 1 2 7 8 9 मिलकर तीन नौ बनाते हैं, जो अनुपस्थित है। आठवीं पंक्ति में 1 3 4 5 6 8 मिलकर तीन नौ का निर्माण करते हैं परंतु वह नहीं है। नवीं पंक्ति में 1 3 4 5 6 8 9 चार नौ का निर्माण करते हैं, जो अनुपस्थित हैं। सबसे अंत में हम पाते हैं कि 9 का इकाई मान वापस आ गया है। यहां हम देखते हैं कि संपूर्ण सप्तक की अभिव्यक्ति की संभावित विभिन्नता को 10 प्रकार से रखा जा सकता है और अंत में 9 की संख्या में अपना समाधान वे स्वयं प्रस्तुत करते हैं, जो 'एडैमिक रेस' की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। 12x12=144, जो हिब्रू प्रतीक विज्ञान के मुताबिक ADM का मान है।

पहली दो पंक्तियों में कुल मिलाकर पांच नौ हैं। अगली दो में चार तथा अगली दो में 3, उसके अगली दो में 2 तथा अंतिम दो में एक नौ रहता है। इस प्रकार उन पंक्तियों से हमें 10 8 6 4 1 अथवा 29 जोड़े प्राप्त होते हैं, जो अंत में 9 के एकल मान में तब्दील हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में यह देखा जाता है कि अंतिम समाधान चंद्रमा से संबंधित अंकों 7 तथा 2 के माध्यम से प्राप्त होता है।

प्रथम सकारात्मक है, तो दूसरा नकारात्मक। दोनों परिवर्तनीयता के गुणों से संबंधित हैं। चंद्रमा के ये दोनों अंक नील-हरित (Blue-green) तथा पीत-हरित (Yellow-green) रंग की रश्मियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपने में आत्मा के दो पहलुओं-प्राकृतिक अथवा जीवनी शक्ति के विकास तथा आध्यात्मिक या मानसिक विकास को अंतर्निहित करते हैं।

इस प्रणाली में हम देखते हैं कि मानवीय अभिव्यक्ति के समस्त सुर जैसा कि वे अंकीय मानों द्वारा दर्शाए जा सकते हैं, 1 से 9 तक के अंकों में शामिल हैं। क्रमिक रूप से जोड़ों अथवा केंद्रीयकरण के माध्यम से हम अंत में परिवर्तनीयता के तत्त्व से मानवता=9 की एकल अभिव्यक्ति तक पहुंचते हैं।

इस प्रणाली से हमें प्रत्येक गणना विधियों का केंद्रण भी प्राप्त होता है। परीक्षण के लिए चाहे जो पंक्ति हम लें, हम प्रथम और आखिरी, दूसरी और आखिरी से एक कम इत्यादि पाएंगे। प्रत्येक पंक्ति नौ में जुड़ती है तथा यह अपने आपमें ग्रहीय मान की अभिव्यक्ति होती है, जो उसके साथ जुड़े अनुभवों द्वारा सुनिश्चित की जाती है।

इस प्रणाली में सूर्य (सकारात्मक)	=	1
शनि		8
		9
बृहस्पति से संबंधित अंक		3

शुक्र से संबंधित अंक	6
	9
बुध से संबंधित अंक	5
सूर्य (नकारात्मक) से संबंधित अंक	4
	9
मंगल, जो हमारे पैमाने का मूल है	9
चंद्रमा, जो परिवर्तनशीलता का कारण है।	
सकारात्मक 7 तथा नकारात्मक 2	= 9

उपरोक्त नैसर्गिक जोड़ों का निर्माण करते हैं। यदि हम मंगल=9 को मानव अथवा लघु ब्रह्मांड का प्रतीक मानें, तब चंद्रमा से संबंधित अंक 7 तथा 2 परिवर्तनशीलता के गुणों का संकेत करेंगे, जो किसी व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करता है। इसके द्वारा हम ब्रूनों के कथन की सचाई प्राप्त कर सकते हैं—अनंत परिवर्तनशीलता ईश्वर का शाश्वत यौवन है।

यदि हम सकारात्मक मानों 1 3 5 7 9 को लें, तो हम पाते हैं कि वे सूर्य, बृहस्पति, बुध, चंद्रमा तथा मंगल से संबंधित हैं, जबकि नकारात्मक मान 2 4 6 8 चंद्रमा, सूर्य, शुक्र तथा शनि से उनके नकारात्मक पहलू से संबंधित हैं। इनके जोड़े बनाने पर प्रत्येक युग्म का मान 10 होता है। सिर्फ 5 का अंक बिना जोड़े के बच जाता है। अतएव 10 को पूर्ण संख्या माना गया है, जबकि 5 के अंक का संबंध विभेद, विवेक तथा बुद्धिमत्ता से माना गया है। यह मानवता के वर्तमान जाति-मान (Race-value) के रूप में प्रयुक्त होता है। यह सापेक्षता की दुनिया के बीचोबीच स्थित मनुष्य, परिवर्तन तथा विरोधाभासियों के युग्म के रूप में प्रयुक्त होता है।

हम अपने दैनिक जीवन तथा अनुभव में इन अंकों को महत्त्व दे सकते हैं। इसलिए कि जब उन्हें व्यक्ति विशेष के ऊपर लागू किया जाता है, तो वे उसके गुणों तथा भाग्य की जानकारी देते हैं। इस पुस्तक के पहले हिस्से में कुछ अंश तक ऐसा किया गया है, जिसका यहां पर विशिष्ट मामलों के आधार पर विस्तार किया गया है, जो असामान्य संकेत देते हैं। यह मान लें कि निम्नलिखित गुणों का अग्रलिखित अंकीय मानों से तालमेल है:

गरिमा	1	गर्व
लचीलापन	2	ढुलमुलपन
उदारता	3	मर्यादाहीनता
व्यावहारिकता	4	आडंबर
प्रज्ञा	5	जिज्ञासा
भद्रता	6	लापरवाही

लक्ष्य	7	पूर्वाग्रह
विवेक	8	भीरू
उत्साह	9	धर्मान्धता

हम पाएंगे कि सामान्य गुणों की तरह असामान्य गुणों की भी गणना होनी चाहिए। यह असामान्यता विभिन्न ग्रहों के विरोधी होने, उनसे निकलनेवाली रश्मियों के विरोधी होने इत्यादि से उत्पन्न होती है, जो यहां पर नहीं दी गई हैं, मगर इस स्थान पर उन पर ध्यान दिया जा सकता है।

तदुपरांत जन्म दर की गणना में आनेवाले अंकों पर ध्यान देना चाहिए। जैसा कि तीन के वर्गों के प्रतीक में पहले किया गया था तथा वह किसी अन्य अंक की मध्यस्थता द्वारा किसी गठजोड़ में शामिल नहीं किया गया था। ऐसे अंक विरोधी कहे जाते हैं, यदि वे उसी लंबवत अथवा क्षैतिज रेखा में हैं।

विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत है–सेंट लुई 23 अप्रैल, 1218 को पैदा हुए थे। तीन के वर्ग के मुताबिक प्रतीकात्मक रूप से इस प्रकार व्यक्त किया जाएगा:

योग=6, शुक्र

योग शुक्र से संबंधित है, जो भद्रता का संकेत देता है। ग्रहों की युतियों द्वारा भी हम पाते हैं कि सूर्य, बृहस्पति की युति में गुणों तथा भाग्य का निर्धारणकर्ता है। लेकिन बुध तथा निम्न तल पर सूर्य की भी युति है, जो इस संत के उदार चरित्र की व्यावहारिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इससे ज्यादा गुणों की सहज और सटीक अभिव्यक्ति हमारे द्वारा प्रस्तुत प्रतीक के प्रथम भाग में थी।

यहां पर बृहस्पति तथा चंद्रमा एवं चंद्रमा तथा सूर्य का विरोधाभास दर्शाया गया है, जबकि चंद्रमा (2) तथा बृहस्पति (3) बिना किसी मध्यवर्ती तथा समन्वयकारी तथ्य की उसी लंबवत रेखा में हैं। यहां शुक्र (6) तथा चंद्रमा (2) भी बिना 8 के अंक के हस्तक्षेप के सूर्य (4) के साथ होने चाहिए।

नेपोलियन प्रथम के आरेख में हम सूर्य तथा शनि एवं सूर्य और मंगल

का विरोधाभास पाते हैं। मिल्टन के आरेख में हम सूर्य को शनि के विरोध में पाते हैं। कैग्लिओस्ट्रो (Cagliostro) के मामले में सूर्य के विरोध में मंगल को पाते हैं। लुई सोलहवें के मामले में हम चंद्रमा को बृहस्पति के विरोध में पाते हैं, परंतु सेंट लुई की तरह बृहस्पति और सूर्य की युति नहीं मिलती लेकिन उसके विपरीत सूर्य और शनि तथा चंद्रमा और शनि की पापपूर्ण युतियां पाई जाती हैं, जो भाग्यशाली राजाओं में अनुपस्थित रहती हैं।

इसी प्रकार ग्रहों के बीच एक 'त्रिक' इस तथ्य द्वारा निर्मित होता है कि दो अंक आरेख में एक ही पंक्ति में सर्वोच्च स्थिति में होते हैं तथा दूसरा अन्य पंक्ति में मध्य स्थिति में होता है। अतएव नेपोलियन प्रथम के आरेख में 9 तथा 4 के अंक एक ही पंक्ति में हैं तथा वे दूसरी पंक्ति में मौजूद 6 के अंक के साथ एक त्रिभुज का निर्माण करते हैं। अतः हमें मंगल तथा शुक्र एवं सूर्य और शुक्र और आधार रेखा पर सूर्य तथा मंगल का त्रिक प्राप्त होता है।

यही संयोग कैग्लिओस्ट्रो के मामले में भी मिलता है। सेंट लुई तथा लुई सोलहवें के मामले में में 3-5-2 अर्थात चंद्रमा एवं बुध, बुध तथा बृहस्पति का त्रिकोण प्राप्त होता है। यही संयोग क्वीन विक्टोरिया के मामले में भी दोहराया गया।

अतः गुणों तथा भाग्य के अनुमान में अंकों के प्रयोग के विभिन्न मामलों में हम पर्याप्त जानकारियां हासिल कर सकते हैं। यदि हम इन अंकों को विभिन्न ग्रहों से संबंधित तथा व्यक्ति की जन्मतिथि से जुड़ा मानते हैं। तत्पश्चात उनके (ग्रहों के) युतियों, विरोधाभासों तथा त्रिकों की तलाश करते हैं तथा इन सबके तालमेल से उत्पन्न हुए परिणामों की गणना करते हैं तथा इस आरेख के योग को किन्हीं विशिष्ट रश्मियों के संकेत के रूप में लेते हैं, जिससे पूरी प्रकृति संबंधित है।

बोरबॉन के आरक्षी, ड्यूक ऑफ बोरबनाइस चार्ल्स के मामले को लें। वह 25 फरवरी 1489 (नई शैली के अनुसार *) अथवा पुरानी शैली में 16 फरवरी 1489 को पैदा हुआ था। इसके अनुसार उसका आरेख इस प्रकार होगा:

		9
		5
2	8	

---

* पश्चिमी कैलेंडर में तात्कालिक तौर पर दिनों की गणना की दूसरी प्रणाली प्रचलित थी। इसीलिए यहां सेफेरियल ने पुरानी गणना पद्धति तथा नई गणना पद्धति का उल्लेख किया है।

योग=26=8 शनि

युतियां मंगल तथा बुध, चंद्रमा तथा शनि

यहां पर मंगल तथा बुध की युतियां अत्यधिक मानसिक सक्रिय तथा तार्किकता का संकेत करती है, जबकि चंद्रमा से शनि की युति उसकी विकलांगता एवं दुर्भाग्य का संकेत करती हैं। उसका प्रधान अंक (8) अशुभ है तथा शनि के इकाई मान से संबंधित है। इस अशुभ संयोग का निदान करनेवाला त्रिक उपस्थित नहीं है। वह रोम का घेरा डालते समय गोलाबारी में 38 वर्ष की अल्पायु में ही मारा गया।

लार्ड ब्रोहम का व्यक्तित्व सुदृढ़ तथा उनका लक्ष्य नियत था, जैसा कि उनके आरेख से देखा भी जा सकता है।

	1	9
	7	
	8	

योग=34=7

युतियां:

सूर्य तथा मंगल

सूर्य और चंद्रमा

चंद्रमा एवं शनि

यह चार्ल्स द्वितीय के आरेख में नदारद है, जो सिर्फ शुक्र तथा बृहस्पति की संतोषप्रद युति को दर्शाता है, जो सर्वोत्तम उदारता, भद्रता को शनि के आधारभूत गुणों के साथ दर्शाता है। 8 के अंक का संकेत आरेख के योग में दोहराया गया है, जो अशुभ है। जहां तक भौतिक मामलों का प्रश्न है:

3		
6		
	8	

योग = 17 = 8 (शनि)

युति- बृहस्पति तथा शुक्र

यह ध्यान रखना चाहिए कि 4 के अंक का मान 5 की तरह नहीं है। यद्यपि दोनों सूर्य के लिए प्रयुक्त होते हैं, परंतु 1 का सीधा संबंध गुणों से तथा 4 का भौतिक समृद्धि से है। इसी प्रकार 7 तथा 2 आरेख में समान महत्त्व के नहीं समझे जाते। 7 का संबंध जहां लक्ष्य तथा गुणों से है, वहीं 2 भौतिक तथा परिस्थिति परिवर्तन का संकेत करता है। अतएव सूर्य (4) तथा शनि (8) की युतियों से पूरी तरह भिन्न है। प्रथम मामले में भौतिक दृष्टि से विपन्नता का संकेत है तथा दूसरे में प्रतिष्ठा तथा सम्मान में कमी का।

यह विचार प्रकट किया गया है कि जन्म के महीने के निरपेक्ष भाव को लेने के बजाय जैसे जनवरी के लिए 1, फरवरी के लिए 2, उस ग्रह के मान को लेना ज्यादा सुविधाजनक रहेगा, जो उस राशि का स्वामी है, जिसमें जन्मकालीन सूर्य स्थित है। यह जब प्रतीक विज्ञानियों के परंपरागत विधि के सम्यक अनुक्रम में होता है, जो पंचांग (Ephemeris) देखने के लिए अपरिहार्य है, जैसे प्रत्येक माह में एक ऐसी तिथि होगी, जिसमें सूर्य राशि परिवर्तन करता है। यह तिथि महीने की बीसवीं तारीख के करीब होती है। यद्यपि वांछित महीने तथा वर्ष में 1 से 3 दिनों का अंतर हो जाता है। इसका कारण निरपेक्ष माह तथा खगोलीय माह में अंतर है।

इसके अलावा इस विधि (आरेख) में सप्ताह का वास्तविक दिन ध्यान में रखा जाएगा, जिस दिन व्यक्ति पैदा हुआ था, उस दिन के स्वामी ग्रह को उपयोग में लाया जाएगा। जो इस विद्या को सीखने के इच्छुक हैं, उन्हें दोनों भिन्न पद्धतियों की परख करनी चाहिए तथा जो बेहतर परिणाम दे, उसको ध्यान में लाना चाहिए।

यह स्वीकार करना पड़ेगा कि निरपेक्ष तिथियों तथा उनमें पैदा हुए व्यक्तियों के गुणों तथा भाग्य में उस वक्त कोई आवश्यक संबंध नहीं मिलेगा, जब हम प्रकृति की अभिव्यक्तियों में संख्यात्मक नियम को ही खारिज कर दें। तथापि हम गैरपरंपरागत होने के बावजूद इन अवधारणाओं से संपृक्त होकर देखें, तो पाएंगे कि सापेक्ष तथा वांछित श्रेणियों में घटनेवाले समस्त संयोगों को शामिल करने का अवसर तथा कारण मौजूद है।

प्रतीक विज्ञान की विधि की तुलना के लिए तिथि तथा उनसे संबंधित अंकों का उल्लेख ठीक रहेगा।

सप्ताह के दिन

सप्ताह का दिन प्रत्येक दिन दोपहर से आरंभ होता है। रविवार का स्वामी सूर्य होता है तथा उस वक्त अंक 1 होता है, जब सूर्य पुरुष तथा विषम राशि

में होता है। तब 4 अंक होता है, जब सूर्य स्त्री अथवा सम राशि में स्थित होता है।

सोमवारः जब चंद्रमा पुरुष राशि में हो, तो 7 अंक होता है। 2 अंक तब होता है, जब चंद्रमा सम अथवा स्त्री राशि में हो।

मंगलवार	अंक 9
बुधवार	अंक 5
बृहस्पतिवार	अंक 3
शुक्रवार	अंक 6
शनिवार	अंक 8

महीने के दिन

1-20 जनवरी तक का स्वामी शनि अंक 8
21 जनवरी से 19 फरवरी का स्वामी शनि अंक 8
20 फरवरी से 19 मार्च तक का स्वामी बृहस्पति अंक 3
20 मार्च से 19 अप्रैल तक का स्वामी मंगल अंक 9
20 अप्रैल से 20 मई तक का स्वामी शुक्र अंक 6
21 मई से 20 जून तक का स्वामी बुध अंक 5
21 जून से 22 जुलाई तक का स्वामी चंद्रमा अंक 7
23 जुलाई से 22 अगस्त तक का स्वामी सूर्य अंक 1, 4
23 अगस्त से 22 सितंबर तक का स्वामी बुध अंक 5
23 सितंबर से 22 अक्टूबर तक का स्वामी शुक्र अंक 6
23 अक्टूबर से 21 नवंबर तक का स्वामी मंगल अंक 9
22 नवंबर से 21 दिसंबर तक का स्वामी बृहस्पति अंक 3
22 दिसंबर से 31 दिसंबर तक का स्वामी शनि अंक 8

नोटः जून, जुलाई तथा अगस्त महीने में जन्म लेनेवाली कन्या जातक का अंक ग्रह से संबंधित लिंग के अनुसार होगा, जैसे चंद्रमा के लिए 2 तथा सूर्य के लिए 4, पुरुष जातकों के लिए चंद्रमा के मामले में 7 तथा सूर्य के मामले में 1 अंक होगा।

ध्वन्यात्मक मान

ध्वन्यात्मक मानों के विषय में पर्याप्त मतभेद हैं, जहां उच्चारण में भिन्नता है, वहां मतभेदों का उठना अवश्यंभावी है। अंग्रेजी के सुपरिचित अक्षरों के समानार्थी हिब्रू अक्षरों तथा किसी शब्द के ध्वन्यात्मक से इतर लागू होनेवाले मान के संबंध में हिब्रू गणना में इस प्रकार की कठिनाई नहीं है। अतः हिब्रू तालिका के मुताबिक Aboyeur (Fr.) के नाम का मान 1271562=24=6

होगा। इसके बारे में संदेह नहीं है, परंतु जब हम सार्वभौमिक अथवा ध्वन्यात्मक मान की ओर आते हैं, जिसके बारे में मैंने कहा है कि व्यावहारिक दृष्टि से यह सबसे ज्यादा संतोषजनक है तो हमें इस प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है कि दो व्यक्ति एक ही शब्द के दो ध्वन्यात्मक मान दे सकते हैं। अतएव Aboyeur को 126162 (A-bo-yur) की तरह कूटबद्ध किया जा सकता है, परंतु फ्रेंच बोलनेवाला एक अध्येता इसे 226112 (A'-bwah-Yxr) की तरह कूटबद्ध करेगा। हालांकि अंग्रेजी लिप्यांतरण इसे पूरी तरह प्रकट नहीं कर पाता। एक विधि से नाम की गणना 1 8=9 होगी तथा दूसरी विधि से 14=5. चूंकि 9 तथा 5 कुछ पद्धतियों में एक-दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापित किए जा सकते हैं। अत: दोनों यह सोचेंगे कि उन्होंने इस शब्द को ठीक कूटबद्ध किया है।

अपेक्षाकृत ज्यादा जटिल मामला एक आस्ट्रेलियाई घोड़े URELIA 162131=14=5 (U-reel-ya) का होगा, जो असंगत लेखनीकार देंगे। उपान्तिम अक्षरों को बदलकर जोर देंगे, तो उनके लिए 'You're another' उपयुक्त उत्तर प्रतीत होता है।

मानी हुई बात है कि हम अपने परिमाणों के विषय में सहमत हैं। कोई भी गणना पद्धति ध्वन्यात्मक पद्धति के मुकाबले निश्चित रूप से ज्यादा संतोषप्रद नहीं है। लेकिन मैंने हमेशा इस बात पर जोर दिया है तथा यहां पर एक बार फिर दोहरा रहा हूं–"प्रत्येक पद्धति को उसकी व्याख्या प्रणाली के अनुसार ही प्रयुक्त करना है।" इस विषय में कोई संदेह न रह जाए।

मैंने दो मामलों के दृष्टांत प्रस्तुत किए हैं–अभिलेख की प्रतीकात्मक व्याख्या के लिए हिब्रू पद्धति प्रयोग में लाई जाती है। जैसे 'Zohar' में। यह विशेषतया बाइस वृहत तालिका (Twenty two major keys) द्वारा भविष्यकथन की व्याख्या के अनुकूल है तथा पाइथागोरियन वर्णमाला का प्रयोग उस पद्धति में प्रयुक्त होनेवाली व्याख्या के संबंध में किया जाता है। अत: इस मामले में संदेह नहीं होना चाहिए। यदि लोग गणना की एक पद्धति प्रयोग में लाएं तथा व्याख्या की दूसरी; और उन्हें इसमें कोई सत्यता न मिले, तो उनकी इस गलती को आसानी से दूर किया जा सकता है।

नि:संदेह, यह संभव है कि कोई व्यक्ति अपनी गणना पद्धति का प्रयोग करे, परंतु इसकी उपयुक्त व्याख्या की पद्धति पाना ज्यादा दुष्कर कार्य है।

मैंने अंग्रेजी वर्णमाला की दशमलवात्मक गणना द्वारा बेहद रोचक परिणामों को देखा है।

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J
1	2	3	4	5	6	7	8	9	
K	L	M	N	O	P	Q	R	S	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	
T	U	V	W	X	Y	Z			

जब अक्षरों को राशियों के संबंध में लिया जाता है तथा उसको किसी प्रतिस्पर्धी नामों पर प्रयुक्त किया जाता है, तो परिणाम अत्यंत रोचक निकलता है। इस पद्धति में अक्षर इस प्रकार रखे जाते हैं:

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
AN	BO	CP	DQ	ER	FS
तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
GT	HU	IJVW	KX	LY	MZ

दिन को 24 घंटों में विभक्त करें तथा इसे विषुवतीय सूर्योदय (6 बजे ग्रीनविच) से घटना तक की गणना करें। शुरुआत दिन के स्वामी ग्रह तथा उससे संबंधित अंक से करें। जैसे—सोमवार को चंद्रमा 7, मंगलवार को मंगल 9 आदि। तत्पश्चात घटना घटित होनेवाले घंटे से मेल खानेवाले ग्रह को उसकी राशिचक्र में स्थिति को ध्यान में रखा जाएगा और संभावित विजेता के नाम के प्रत्येक अक्षर का मान अंकित किया जाएगा। इनकी गणना की जाएगी तथा उसे इकाई मान में तब्दील किया जाएगा। वे घटना घटित होनेवाले घंटे के स्वामी ग्रह से संबंधित पाए जाते हैं।

लेकिन परीक्षण के पश्चात यह पाया जाएगा कि हम ऐसे शून्य के वर्णमाला के साथ चाहे कितना ही कठोर श्रम क्यों न कर लें, हम ग्रहों तथा अक्षरों से जुड़े मानों के बीच कतिपय संबंधों के उल्लेख से ज्यादा और निकट नहीं जाएंगे, जो किसी क्षण परिवर्तनीय क्रम में होता है।

ईश्वर की भाषा का महत्त्व तभी है, जब हम उसे पढ़ने में समर्थ हों तथा ऐसे मामलों में यह बिना किसी अस्पष्टता के अपना स्पष्ट संदेश दे सके। हमें किसी गणना की जरूरत नहीं है, सिवाय यह प्राप्त करने के कि कौन-सा ग्रह आकाश में प्रमुख स्थिति में होने की वजह से सबसे ज्यादा महत्त्व का है, जैसा कि कुछ उदाहरण वस्तुतः इसे दर्शाएंगे।

ये संकेतक ज्योतिष के अनुसार वर्ण, नाम, अंक, प्रकृति की रूपाकृति को रेखांकित करते हैं। जिनकी मदद में कोई व्यक्ति किसी प्रभावी अंक की तलाश कर सके तो दूसरा व्यक्ति प्रभावी रंग की तथा तीसरा अन्य प्रभावी ध्वनि की।

नीचे तत्संबंधी कुछ दृष्टांत प्रस्तुत हैं:

किसी समय विशेष में मंगल लग्न में अपनी ही राशि मेष में स्थित होने की वजह से Rubra (लाल) ने पांच प्रतिस्पर्धियों के बीच घुड़दौड़ जीती। उल्लेखनीय है कि लाल रंग का स्वामी मंगल है।

चंद्रमा लग्न में सैन्य राशि मेष में था। 'The White Knight' ने अनेक प्रतिस्पर्धियों के बीच मुकाबला जीता। यहां पर चंद्रमा 'White' है तो मंगल 'Knight'।

चंद्रमा अपनी ही राशि कर्क में होने की वजह से अन्य ग्रहों से बलशाली था। इस मामले में 'Cream of the Sky' विजयी रहा।

मंगल किसी कुंडली के दशम भाव में है। अत: उसका सबसे उल्लेखनीय चरित्र था। इस मामले में 'Rubio' विजयी रहा।

उपरोक्त उदाहरण नि:संदेह ऐसे अध्ययनों के अतिसाधारण पद्धति के दृष्टांत भलीभांति प्रस्तुत करते हैं।

□□

चक्रों का प्रतीक विज्ञान

ऐसा प्रतीत होता है कि दशमलव गणना पद्धति, चक्रीय आवृत्तियों के नियम की अपरोक्ष मान्यता थी। इसके पीछे कोई तर्क नहीं है कि इकाई 1 से 13 तक क्यों नहीं ज़ानी चाहिए। हिब्रू लोग 12 तक की इकाई के बारे में सोचते थे, परंतु गणना दहाई में करते थे। दहाई में गणना करना सार्वभौमिक पद्वति रही है।

अतएव, हमारे पास बारह राशियों से संबंधित बारह महीने तथा सात ग्रहों से संबंधित सप्ताह के सात दिन हैं। समस्त पूर्वी देशों का झुकाव दशमलव गणना पद्धति की ओर रहा है। इस चक्रीय गणना नियम की मान्यता न सिर्फ विज्ञान में है बल्कि वाणिज्य, वित्त, यहां तक कि कृषि में भी है। अत: यह विचार कि घटनाएं नौ अंकों के संदर्भ में घटती हैं, अपने आप में कोई आपवादिक कथन नहीं है।

यह तथ्य कि विशिष्ट मामलों में इनके प्रयोग से आश्चर्यजनक ढंग से ठीक परिणाम निकलते हैं, प्रतीक विज्ञानियों के ही विचारों की पुष्टि करता है, जो 9 के अंक को वैसा ही मानते हैं, जैसे कीमियागीर अपने 'रेड ड्रेगन' (Red Dragon) को सामान्य विलायक की एक श्रेणी मानते हैं। अत: किसी भी संख्या को उसके इकाई मान में परिवर्तित कर लेने तथा उसमें 9 जोड़ने से वही इकाई मान क्रमश: प्राप्त होगा। जैसे–1920=12=3, 1929=21=3, 1938=21=3 आदि। अत: उन व्यक्तियों के लिए जो अंकों की महत्ता में विश्वास रखते हैं, इस चक्रीय क्रम के कारक का प्रयोग विशेष संकेतक का काम करता है।

इस प्रकार का कारक व्यक्ति के नाम के अंकीय मान में पाया जाता है, जैसा कि हम विगत अध्याय में पढ़ चुके हैं। इसे जब व्यक्ति के जन्म के वर्ष अथवा किसी बड़ी आपदावाले वर्ष के साथ प्रयुक्त किया जाता है; जब इसे टैरोट (भविष्यकथन) में सीमित किया जाता है, तो यह प्रतीकात्मक महत्त्व

ग्रहण कर लेता है, परंतु टैरोट लोकप्रिय माध्यम होने के बावजूद व्याख्या की एकमात्र पद्धति नहीं है।

एक प्रतीक चक्रीय नियम के संबंध उदाहरण के योग्य है।

इस प्रतीक के अनुसार, 1815 का वर्ष लिटिल कार्पोरल वायोलेट (Little Corporal Violet—नेपोलियन) के भाग्य से संबंधित अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

नेपोलियन 1769 में पैदा हुआ, 1815 में उसने 46 वर्ष की आयु पूरी की। यदि अब हम 1815 में 46 जोड़ दें तो हमें 1861=1+8+6+1=16 प्राप्त होता है। टैरोट तालिका में 16 की संख्या का संकेत 'टूटी मीनार' दिया गया है। नेपोलियन के मामले में ऐसा ही हुआ था। शत्रु से पराजित, राजमुकुट पहले ही छीना जा चुका था। 16 का संकेत अवनति, बर्बादी का भय, तबाही तथा बंध्याकरण है।

दक्षिण अफ्रीकी सीसिल रोड्स 1853 में पैदा हुआ तथा 1902 में 49 वर्ष का हुआ। 1902+49=195=16 फिर से संकेत 'टूटी मीनार' का था। मिस सोफिया हिकमैन, जो रॉयल फ्री अस्पताल की थीं, उन्हें रिचमंड पार्क में 19 में जहर खाकर मरा हुआ पाया गया। उनका जन्म 22 जून 1874 को था तथा 1903 में 30 वर्ष की आयु में पहुंची थीं। यदि 1903 में 3 तो 1933=16 का संकेत मिलता है।

फ्रेंच राष्ट्रपति मिस्टर कार्नाट 1837 में पैदा हुए थे तथा 1894 वर्ष की आयु प्राप्त की। 1894+57=1951=16

महाकवि शैली 1792 में पैदा हुआ। 1822 में वह 30 वर्ष का 1822+30=1852=16, जो उसकी मृत्यु का संकेत करता है।

अतः यह देखा जाएगा कि 16 की संख्या तथा 13 की संख्या (फसल काटता कंकाल) टैरोट की तालिका के 22 संकेतकों में मृत्यु के सबसे घातक एवं महत्त्वपूर्ण संकेतक हैं।

अनेक मामलों में निश्चित घटनाओं का क्रमानुसार घटित होना 'अल्फ्रिडेरिज' (Alfridaries) के निर्माण की ओर ले जाता है। इस तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि जीवन जीवन-चक्र में ग्रहीय प्रभावों के क्रमिक संयोगों के अधीन है। इसकी शुरुआत चंद्रमा या सूर्य से होती है अर्थात जो व्यक्ति दोपहर बाद पैदा होते हैं, वे सूर्य प्रभाव में रखे गए हैं, जबकि मध्यरात्रि के बाद पैदा होनेवाले व्यक्ति चंद्रमा के प्रभावांतर्गत देखे गए हैं।

अपराह्न	☽	☿	♀	☉	♂	♃	♄	☽	☿	♀	प्रातः
रवि	1	8	15	22	29	36	43	50	57	64	चंद्र
शुक्र	2	9	16	23	30	37	44	51	58	65	बुध
बुध	3	10	17	24	31	38	45	52	59	66	शुक्र
चंद्र	4	11	18	25	32	39	46	53	60	67	सूर्य
शनि	5	12	19	26	33	40	47	54	61	68	मंगल
बृहस्पति	6	13	20	27	34	41	48	55	62	69	बृहस्पति
मंगल	7	14	21	28	35	42	49	56	63	70	शनि

उपरोक्त अल्फ्रिडेरी द्वारा हम देखते हैं कि एक व्यक्ति जो 4 बजे अपरान्ह पैदा हुआ है। उसका जीवन सूर्य तथा चंद्रमा के संयुक्त प्रभाव में रहेगा तथा दूसरा वर्ष चंद्रमा तथा शुक्र के तथा फिर चंद्रमा और बुध के—यही क्रम बढ़ता जाएगा। 8वां वर्ष बुध तथा सूर्य के प्रभावान्तर्गत आएगा तथा 29 से 35 वर्ष के बीच का समय, जो मंगल से प्रभावित है, वह खतरनाक होगा।

सबसे गंभीर संकटकाल तत्कालीन 3 गणना वर्ष तथा 10 होगा, जो मंगल तथा शनि के संयोग प्रभाव में होगा। 33वें तथा 49वें उसी तरह के दुष्प्रभावों से युक्त होंगे। लेकिन मैं सोचता हूं कि इस प्रकार के भविष्यकथन का तरीका जैसा यहां दिया गया है, न तो अनुभव और न ही तार्किक रूप से स्वीकृत होगा, तथापि अंकीय पद्धति इस दृष्टि से इससे भिन्न है कि इसमें गणना सिर्फ क्रमिक वर्ष के आधार पर नहीं होती, बल्कि उसमें क्रमिक आयु को भी शामिल किया जाता है।

चूंकि टैरोट तालिका 22 बिंदुओं तक सीमित है, जो 9 का गुणक नहीं है। अतः उसमें विशेषताओं की पुनरावृत्ति नहीं होती है, जैसे कि 'अल्फ्रिडेरी' में होती है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति 1864 में पैदा हुआ=19, 1865 में 1 वर्ष का हुआ। योग 1866=21, 1866 में 2 वर्ष का, 1868=23, चूंकि टैरोट में सिर्फ 22 बिंदु अथवा तालिकाएं होती हैं, अतः 23=1 के संकेतक के बराबर होता है। यह शृंखला इस प्रकार निर्मित होती है:

1867	आयु	3	वर्ष	योग	1870 = 16
1868	"	4	"	"	1872 = 18
1869	"	5	"	"	1874 = 20
1870	"	6	"	"	1876 = 22
1871	"	7	"	"	1878 = 2
1872	"	8	"	"	1880 = 17
1873	"	9	"	"	1882 = 19
1874	"	10	"	"	1884 = 21
1875	"	11	"	"	1886 = 1
1876	"	12	"	"	1888 = 3
1877	"	13	"	"	1890 = 18
1878	"	14	"	"	1892 = 20
1879	"	15	"	"	1894 = 22
1880	"	16	"	"	1896 = 2
आदि					आदि

चक्रीय नियम अथवा आवर्तिता के नियम ने अनेक वैज्ञानिकों को आकृष्ट किया है। उनमें से एक वैज्ञानिक मेंडलिफ का उदाहरण हम दे सकते हैं, जिन्होंने दर्शाया था कि तत्त्वों के परमाणु भार प्राकृतिक अष्टक के अनुरूप होते हैं।

प्रोफेसर रे लंकैस्टर ने सौर धब्बों के संदर्भ में दर्शित किया कि सौर विक्षोभ यदा-कदा होता है, जैसे सामूहिक रूप से तथा निश्चित एवं सुपरिभाषित समय में। यह भी दर्शित किया गया कि ये समय अकाल आदि के समय से संबंधित होते हैं। ग्रहों की गतियों, खगोलीय परिवर्तनों के पीछे निःसंदेह आवर्तिता काम करती है।

मानव जीवन में प्रत्येक क्रिया को खुद को दोहराने की एक प्रवृत्ति देखी जाती है। अतः जो पहले साशय कार्य होता है, बाद में वह आदत बन जाता है। यह मानें कि प्रकृति को अपने निर्माण की विशिष्ट प्रक्रिया की आदत है, तब यह परिणामस्वरूप एक ऐसी प्रक्रिया अपनाएगी, जो एक आवर्ती नियम दूसरे शब्दों में अंकीय क्रमिकता को जन्म देगी।

हम इसे एक नियम कहते हैं, क्योंकि यह अंकीय क्रम से संबंधित है, इसलिए नहीं कि हम इसके कारण को समझते हैं। हमें इस बात के लिए उदाहरण की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि हम भलीभांति जानते हैं कि प्रकृति की एक ऐसी स्वभावगत प्रक्रिया है। यही ज्योतिषविज्ञानियों के ज्ञान के मूल में है।

चंद्रमास तथा ग्रहण चक्रीय क्रमों में ही होते हैं। ग्रहों की युतियां और एक-दूसरे के विपरीत (सातवें घर में) भाव में जाने की प्रक्रिया भी चक्रीय होती है। चंद्रमास का चक्र 19 वर्षों का होता है और अंत में राशिचक्र के उसी भाग में चंद्रमा की स्थिति होती है, जहां से आरंभ हुई थी। यह कहना न होगा कि चन्द्रमा वर्ष के उस दिन अयनांश से उसी दूरी पर होता है। यदि ग्रह पुंजों की संयुक्त क्रिया की किसी भौतिक प्रभाव की तलाश की जा सके, तो यह प्रभाव 19 वर्ष बाद पुनः दृष्टिगोचर होगा।

ज्वार की विशेषता मेरी दृष्टि में मेरे सिद्धांत का प्रत्यक्ष सबूत है, जिसे बिना किसी विरोध के स्वीकार किया जा सकता है। लेकिन हमें यह मानने का कोई कारण नहीं है कि प्रकृति का अस्तित्व वहां समाप्त हो जाता है, जहां हमारी अनुभूति क्षमता समाप्त होती है। वस्तुतः आधुनिक वैज्ञानिक शोधों ने हमारी अतिसाधारण अनुभूति क्षमता की गलतियों की ओर संकेत किया है।

इस वजह से हम तात्त्विक तथा गुणात्मक संबंधों के दार्शनिक विवेचन के द्वारा ज्वारीय प्रभाव का विस्तार मन-मस्तिष्क के क्रिया-कलापों तक विस्तारित करने के अधिकारी हैं।

यदि नक्षत्र पुंज भौतिक जगत तथा उच्चतर भौतिक जगत में स्पष्ट दर्शनीय प्रभाव उत्पन्न करते हैं, तो हम यही तर्क अपनी व्यवस्था के अन्य ग्रहों की युतियों और विपरीत स्थितियों के संदर्भ में प्रस्तुत कर सकते हैं, क्योंकि हम इनकी सभ्यता के विषय में भलीभांति परिचित हैं। इस स्थिति में मंगल तथा बुध, बृहस्पति और शनि, शनि और मंगल आदि की युतियां हमारी व्यवस्था के अर्थशास्त्र पर विशिष्ट प्रभाव डालेंगी। यह हमें प्राकृतिक विशेषताओं में आवर्तिता के तथ्य की ओर तत्काल ले जाती हैं। यदि मंगल तथा बुध की युति राशिचक्र में आज हो रही है, तो यह प्रत्येक 79वें वर्ष बाद इसी आकाशीय क्षेत्र में फिर होगी।

यही स्थिति अन्य ग्रहों के साथ भी है। शनि और मंगल की युति प्रति 30वें वर्ष, बृहस्पति तथा शनि की प्रति 60वें वर्ष होती है। यही स्थिति अन्य ग्रहों की भी है। कुछ की युतियां कम समय में होती हैं अर्थात उनकी आवृत्ति ज्यादा होती है तथा प्रभाव कम होता है, जबकि कुछ की युतियों की आवृत्ति कम होतीं है, मगर प्रभाव व्यापक होता है। यह सूर्य से उनकी दूरी तथा उनके वेग के परिणामस्वरूप होता है।

चूंकि ग्रहों का आवर्ती समय उनके केंद्र (सूर्य) से दूरी के ज्ञात निश्चित अनुपात में होता है। अतः प्रकृति उनसे गुणात्मक संबंध रखती हुई देखती है, जिसे वस्तुतः हम देखने का प्रयास करते हैं तथा वह ब्रह्मांडीय नियमों के रूप में परिभाषित है। बिना संख्यात्मक संबंध के ब्रह्मांड अस्त-व्यस्त तथा

हमारी बोधगम्यता से परे हो जाएगा, परंतु यह अपने नियमों द्वारा इस कदर सुचालित एवं संबंधों में पूर्णतः सुसंगतिपूर्ण है कि हम मिनटों में यह बताने में समर्थ हैं कि कोई आकाशीय पुंज सैकड़ों-हजारों साल बाद कहां होगा, जो वर्षों पहले किसी विशेष स्थिति में था।

लेकिन उन प्रकाश पुंजों के बारे में क्या स्थिति है, जो कभी-कभार हमारी व्यवस्था में नजर आते हैं, जैसे पुच्छल तारे अथवा तारों का टूटना आदि। यद्यपि उनका घनत्व कम होता है तथा गुरुत्व की दृष्टि से उनके क्रियाकलाप ग्रहों पर व्यावहारिक रूप से अल्प प्रभाव डालते हैं। उनकी उपस्थिति तथा तीव्र गति आकाश में विनाशकारी विक्षोभ उत्पन्न अवश्य करती है तथा इन घुमक्कड़ आकाशीय तत्त्वों का हमारे वातावरण पर प्रभाव उनकी ज्योति द्वारा देखा जा सकता है, क्योंकि आकाशीय विक्षोभ (Vibration) हमारे ही वातावरण में हल्के हो जाते हैं। इसी प्रकार वे अत्यधिक गर्मी प्रदान कर सकते हैं, जिसका परिणाम सूखे और अकाल के रूप में हो सकता है। वे हमारे मस्तिष्क, विचारों तथा शारीरिक क्रियाओं को भी प्रभावित कर सकते हैं।

अंततः वे महान प्रज्ञा द्वारा हम तक भेजे गए कोई प्रतीक या संकेत हो सकते हैं, जिसे हम ठीक से नहीं समझ पाते। यदि हम उनका अध्ययन करें तो आशय समझ पाएंगे। जब मिस्र की 'हीरोग्लिफिक' (Hieroglyphics) लिपि पहली बार प्रकाश में आई, तब तक वह अज्ञात व अबूझ भाषा थी, परंतु बाद में धैर्यपूर्वक भाषाविदों ने उसको समझा तथा अब वह आसानी से समझी जा सकती है।

यदि प्रकृति ईश्वर की पुस्तक तथा मनुष्य के लिए ईश्वर का प्रकटन है, तब प्राकृतिक प्रतीकों की गूढ़लिपि को पढ़कर हम ईश्वरीय भाषा, उसके आशय तथा अभिव्यक्त इच्छा को समझ सकते हैं तथा युगों-युगों से ईश्वर द्वारा हमें प्रभावित करनेवाले सृष्टि के उद्देश्य को भी हम समझ सकते हैं।

अंततः हम सार्वभौमिक भाषा के अध्ययन से खुद को समझ सकते हैं। इसके द्वारा अपने विकास के इतिहास और भविष्य की जानकारी कर सकते हैं। तब यह प्रतीत होगा कि ब्रह्मांडीय नियम वस्तुतः मानवीय नियम ही हैं। जैसे आर्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक नियम तथा ब्रह्मांड ही व्यक्ति है। उसमें दैवीय विचारों, एक पूर्व ज्यामिती तथा एक गुंफित गणितीय सूत्र की अभिव्यक्ति होती है। उसका हल किया जाए, तो हमें इस प्रकार के संख्यात्मक परिणाम मिलेंगे:

1/7 =.142857

2/7 =.285714

3/7 =.428571

4/7 =.571428

5/7 =.714285

6/7 =.857142

1= .9 से अनंत तक

यह कहना होगा कि ऐक्यता के भाव में क्रमिक दहाई की ओर अग्रसर होना।

□□

ब्रह्मांडीय तुल्यरूपताएं

प्रथम अध्याय में मैंने यह दिखाया है कि पाई का मान 3.14159 ब्रह्मा के एक युग, एक वर्ष और एक दिन के योग के तुल्य होता है। मैं यह सिद्ध करने की स्थिति में तो नहीं हूं कि प्राचीन हिंदुओं को इन कालखंडों का निर्धारण करते समय, वृत्त की परिधि और उसके व्यास के गणितीय अनुपात का कोई ज्ञान था या नहीं, परंतु इस बात से मैं पूर्णतया सहमत हूं कि उनके सभी वृहत् कालखंड उन कुछ कालखंडों के गुणक हैं, जो सामान्यतया खगोलविज्ञान में दिखाई पड़ते हैं।

यह एकमात्र तथ्य है कि ग्रहों का दूरी संबंधी कैप्लर नियम उनकी गतियों से नियंत्रित होता है। इसलिए समान समय में समान क्षेत्रफल को उनके वेक्टरों (Vectors) द्वारा निर्धारित किया गया है। इसका सीधा संबंध πa^2 के मान से है, जो एक वृत्त के क्षेत्रफल को दर्शाता है। यहां हम पाई का मान 3.14159 लेते हैं और देखते हैं कि निम्न कालावधि इससे किस प्रकार संबंधित है।

ब्रह्मा का एक युग	3,110,400,000,000 वर्ष
ब्रह्मा का एक वर्ष	31,104,000,000 वर्ष
ब्रह्मा का एक दिन	86,400,000 वर्ष
योग	3,141,590,400,000 वर्ष

स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह काल अथवा क्रमशः सत्य, त्रेता, द्वापर, कलियुग के नाम से प्रसिद्ध हिंदुओं की युग संबंधी अवधारणा का इससे सीधा संबंध प्रतीत होता है। गणना करने पर हमें पता चलता है कि इनकी अवधि निम्नानुसार है:

सत युग	17,28,000 वर्ष
त्रेता युग	12,96,000 वर्ष
द्वापर युग	8,64,000 वर्ष
कलियुग	4,32,000 वर्ष

इन वर्षों का कुल योग 4,320,000 सौर वर्ष होता है। इसलिए ब्रह्मा के दिन का निश्चित संबंध द्वापर युग और सतयुग से है। हम यह भी देखते हैं कि प्लेटो के महावर्ष (25,920 वर्ष) का आधा 12,960 वर्ष होता है, जो

कि त्रेता युग का सौवां भाग है। अतः इसमें किंचित भी संदेह नहीं है कि प्राचीन मनीषियों द्वारा उल्लिखित ये खगोलीय अवधियां परस्पर इस तरह से जुड़ी हैं, ताकि खगोलीय कालक्रम की एक संपूर्ण प्रणाली बना सकें। लेकिन इनके स्रोत का पता लगाना कठिन है।

वास्तव में यह देखा गया है कि ये 1234=10 की अंकीय श्रेणी पर बनाए गए हैं और चतुर्युगी का योग पहले युग के मान का दस गुना है, जैसे कि 4,32,000 और 4,320,000 किसी भी अंकीय श्रेणी में 1234 के अनुपात में यही स्थिति होगी, परंतु मैं समझता हूं कि इस प्रणाली का आधार 72 के गुणक में पाया जाएगा, क्योंकि यह एक ऐसी वर्ष संख्या है, जिसमें विषुव मान क्रांतिवृत्त का एक अंश पार करता है।

एक अंश में 60 कलाएं होती हैं तथा 60x72=4320, जोकि हमें युगों का आधार प्रदान करता है। 60 का 6 गुना 360 होता है, जो कि एक वृत्त के अंशों को प्रदर्शित करता है तथा 4,320 का 6 गुना=25,920 जो कि एक महावर्ष होता है। यह जो कि 600 वर्ष का नारों के रूप में जाना जाता था, जिसके दौरान देवता के 12 आविर्भावों में से एक का पृथ्वी पर शासन करना माना जाता था, इससे 12x600=7200 का मान प्राप्त होता है और इसका 60 गुना 4,32,000 वर्ष होता है, जो कि कलियुग की आयु है। इनकी गहराई में जाकर अन्वेषण करना बहुत रोचक है।

प्राचीन मनीषियों को पृथ्वी की धुरी की गति का ज्ञान था, जिसका संबंध क्रांतिवृत्त के झुकाव से है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने इन युगों का प्रयोग उस काल को दर्शाने के लिए किया है, जिसके दौरान पृथ्वी का ध्रुव एक निश्चित अंक में से गुजरता है।

इस विश्वास को विभिन्न खगोलविदों जैसे हर्शेल, मेस्केलिन तथा अन्यों के परीक्षणों से भी समर्थन मिलता है, जिन्होंने यह बताया है कि प्रतिवर्ष आधी विकला अथवा प्रति शताब्दी 50 विकला का ह्रास होता है और यह अयन का ठीक एक सौवां भाग है।

इसलिए यदि हम श्रेणी का 1, 2, 3 गुना कर दें, तो एक वृत्त के 12 घूर्णन का मान=360x12 प्राप्त होगा, तो एक चक्र का मूल मान प्राप्त हो जाएगा 4,320 वर्ष x1, 2, 3, इस प्रकार:

1= 4,320 वर्ष
2= 8,640 वर्ष
3= 12,960 वर्ष
योग 25,920 वर्ष

जो कि महावर्ष है, संपूर्ण अयन भ्रमण और 4320 वर्षों के छः चक्रों का मान

है। अतः यह प्रतीत होता है कि एक वृत्त के अंशों की संख्या को क्रांतिवृत्त की राशियों की संख्या से गुणा करके वही संख्या प्राप्त होती है, जो कि अयन वर्ष अथवा महावर्ष को 6 से भाग करने पर आती है।

हो सकता है सर्वप्रथम उल्लेख किए गए चक्र अर्थात ब्रह्मा के युग की गणना करने में अन्य आधार रहे हों, परंतु ऊपर दिया गया आधार मुझे सर्वाधिक संभव प्रतीत होता है और इनका इतना अधिक घनिष्ठ संबंध है कि इसकी उनके द्वारा भी उपेक्षा नहीं की जा सकती, जो 'पूरी संख्याओं को वैज्ञानिक दृष्टि से स्वीकार नहीं करते हैं। फिर भी, जहां तक अयन की वृद्धि का संबंध है, अचर है।

इस समय इसका मान 50.2453 निकला है, परंतु रिकार्ड से यह स्पष्ट पता चलता है कि पहले इसका मान आज से कम था। संभवतः अयन गति के वास्तविक कारण को ध्यान में रखते हुए वास्तव में हमें यह तथ्य प्राप्त होगा कि सौर कक्ष में किसी निश्चित बिंदु तक धनात्मक मान होगा और बाद में ऋणात्मक मान होगा और मध्यमान ठीक पचास विकला होगा।

इसका ठीक उत्तर कैप्लर के सिद्धांत से मिल जाएगा, जिसके अनुसार दीर्घवृत्तीय कक्ष होने के कारण सूर्य का अपना दो अपसौर और उपसौर होता है और इसी कारण अंतरिक्ष में उसकी गति बदलती रहती है, जो कि अपसौर में अधिकतम और उपसौर में न्यूनतम होती है। ऐसी ही स्थिति इस प्रणाली के ग्रहों और उपग्रहों की भी है।

मैं नहीं समझता कि प्राचीन मनीषियों के युग कल्पना की उपज थे, परंतु प्रथमतः परीक्षणों के माध्यम से उनका अनुसंधान किया गया था और बाद में सैद्धांतिक आधार पर उन्हें पुष्ट किया गया था, क्योंकि मैंने दिखा दिया है कि इसका आधार है, जिससे वे पूरी तरह उत्पन्न हो सके थे और यह आधार खगोलीय है।

पृथ्वी की धुरी के झुकाव में धीरे-धीरे परिवर्तन होने के कारण क्रांतिवृत्त की तिर्यकता में निरंतर परिवर्तन होने का सिद्धांत यदि सत्य है, तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी समय धुरी क्रांतिवृत्त तल में रही होगी और ध्रुवीय क्षेत्रों में शिशिर और ग्रीष्म ऋतु अदल-बदल कर होती रही होगी, जैसा कि इसी कारण से मंगल ग्रह पर इस समय हो रहा है और पृथ्वी विषुवत पेटी उस समय निरंतर बर्फ की पेटी रही होगी।

वर्तमान में जब धुरी लंबरूप हो रही है, भूमंडल की पूरी सतह पर वर्षभर सूर्य की किरणों का वितरण अपेक्षाकृत अधिक समान रूप से हो रहा है, परंतु निवास योग्यता के दृष्टिकोण से आदर्श स्थिति उस समय होगी, जब कक्षा तल के पूर्ण ऊर्ध्वाधर धुरी होगी, क्योंकि तब किसी अक्षांश विशेष में

ग्रीष्म और शिशिर के बीच कोई अंतर नहीं होगा।

बोड के सिद्धांत का उल्लेख करते समय इस पुस्तक के पिछले पृष्ठों में पर्याप्त रोचक एक बात बतानी रह गई है। उस समय जो विषय चल रहा था, उससे संबद्ध प्रतीत न होने के कारण उस पर चर्चा न हो सकी थी, परंतु इस समय जब हम ब्रह्मांडीय तथ्यों पर विचार कर रहे हैं, इससे संबद्ध होने के कारण इस पर विचार किया जा सकता है।

बुध, इत्यादि को छोड़कर, ग्रहों के समानुपाती वेक्टर श्रेणी $3(2^{n-2})+4$ के आधार पर दिए गए हैं, जिससे कि हम देखते हैं कि पृथ्वी 10 के बराबर है, इस श्रेणी से नेप्च्यून को निकाल दिया गया है, परंतु यूरेनस के अंकों का दोगुना करके तथा 4 जोड़कर इसका जोड़ किया जा सकता है। इस तरह 192x2= 384, जिसमें 4 जोड़ने पर 388 आता है, जो कि नेप्च्यून का मान है।

इस पिंड की वास्तविक दूरी आमतौर पर सूर्य से 2760 मिलियन मील दी गई है और गणना करने पर यह पृथ्वी के वेक्टर का 300 गुना है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि यह बोड नियम के सन्निकट मान दर्शाता है, जो कि तब काम करता है, जबकि विभिन्न पिंडों के आकार केंद्र से उनकी दूरी पर उनकी गतियों के समानुपाती हों। लेकिन नेप्च्यून बृहस्पति और शनि से प्रभावित है तथा यूरेनस से भी प्रभावित है।

कुल निष्कर्ष यह निकलता है कि ऊपर उल्लिखित नियम द्वारा अपेक्षित दूरी से बहुत कम दूरी पर है, परंतु जब हम किसी ग्रह पर विचार करते हैं तो देखते हैं कि वह आदिगर्त की अवस्था में है, कोहरेपन से बहुत दूर नहीं है तथा सूर्य से इतनी दूर है कि इन स्थितियों में बिल्कुल भी आवास योग्य नहीं है, जब तक कि हम यह मानकर न चलें, जैसा कि ऐसा मानने के लिए हमारे पास कारण भी है, कि उसका एक सघन वायुमंडल है और इसलिए इस ग्रह से उत्पन्न ऊष्मा को बनाए रखने में समर्थ है। तब केवल यह आवश्यक होगा। इसके ऊपर पिंड विरल और छोटे गुरुत्ववाले होने चाहिए और ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए, जो इसे आवास योग्य बनने में बाधा उत्पन्न करता हो। वास्तव में, प्रकृति की मितव्ययिता का ही यह एक भाग प्रतीत होता है कि अंतरिक्ष में इसने मानव के साहस के लिए समान अनुपात में नए केंद्र खोलने जारी रखे हैं क्योंकि सूर्य के समीपतम ग्रह, अपनी आयु और सूर्य की निकटता के कारण धीरे-धीरे मानव के आवास के कम उपयुक्त रह जाते हैं।

इन कारणों से प्राचीन पौराणिक लय केंद्रों अथवा भ्रमिलों, जहां से विश्व का उद्भव हुआ है, की अवधारणा को ससम्मान स्वीकार करने के लिए पूर्ण आधार है। सौर व्यवस्था का सरगम बिना इसके हिस्सों की सापेक्षता को प्रभावित किए निकाला गया है। यह भी संभव है कि इस व्यवस्था से मानवता दूसरे

ग्रह पर अपना नया बसेरा बना ले। तब यूरेनस उच्च बुध बन जाएगा अथवा वस्तुओं के मापक अष्टक धरातल पर बुध के जीवन की पुनरावृत्ति होगी तथा नेप्च्यून हमारी व्यवस्था का उच्चतर शुक्र होगा तथा देहमुक्त शुक्रवासियों का निवासस्थल होगा।

उस समय जब हमारी धरती पर विकास के लिए जरूरी वातावरण समाप्त हो जाएगा तथा यह रहने योग्य नहीं रह जाएगी, तो नेप्च्यून से इतर ग्रह उसके निवासियों के लिए भविष्य के आवास एवं गुरुकुल बन जाएंगे। यह विचार उतना काल्पनिक नहीं है, जितना कि यह दिखता है। द्रष्टाओं, ऋषि-मुनियों ने अपनी उन्नत दृष्टि से एक नए अंतरिक्ष तथा नई धरती को देखा है। अन्यथा हम इन दूरस्थ ग्रहों को भविष्य की गतिविधियों तथा विकास का गूढ़ केंद्र नहीं मान सकते तथा जैसा, जहां तक हम जानते हैं कि प्रकाश तथा ऊष्मा जीवन के लिए आवश्यक है। यह मानना तर्कसंगत होगा कि कालांतर में ये ग्रह जीवनधारण करने में समर्थ होंगे, तो निश्चय ही वे सूर्य के और निकट आएंगे।

हमने अनेक बार कहा है कि वे ग्रह हमसे अत्यधिक दूर हैं, लेकिन जिससे एक विकास की इकाई के रूप में संभवतः हम घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। सभी दशाओं में हमें मानना पड़ेगा कि उन पर निवास करनेवाले मनुष्यों को भौतिक रूप से उनके विशिष्ट वातावरण व दशाओं को सहन करना पड़ेगा अथवा उन्हें भविष्य की मानवता के बीज क्षेत्र के रूप में देखना पड़ेगा। हम उन्हें उद्देश्यहीन नहीं मान सकते, क्योंकि हमारे पास ऐसा कोई अनुमान नहीं है, जिसके आधार पर तर्क किया जा सके।

प्रकृति इस अष्टवर्ग में संपृक्त प्रतीत होती है। जैसा कि एक लेखक ने पाया है-''जब नए अष्टक का प्रथम उल्लेख विकसित हुआ, तो मनुष्य ने रहना आरंभ किया।'' विकास के क्रम में हमें कई चरण मिलते हैं- अग्निज, गैसीय, तरलीय, धात्विक, वनस्पतीय, जीवधारी तथा मनुष्य। प्रकृति का आठवां सुर प्रथम सुर की आवृत्ति है, परंतु उसका स्वर तीव्र है, जो धरती के विकास के आरंभिक चरण में अग्निज जीवन के भौतिक जीवाणु के रूप में था, वह आध्यात्मिक जीवाणु के संलयन से नए पैमाने पर पदार्थ के उच्चतर रूप में स्नायुओं से गठित मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ है। 'यूरेनियम युग' के रूप में जाना जानेवाला समय अब विश्व में प्रकट हो रहा है।

अपने 2160 वर्ष के क्रम में उच्चतर मानवता का बीजारोपण इस भूमि पर होगा, जिसके लिए विश्व में बौद्धिक जमीन तैयार हो चुकी है। यह हाड़-मांस को आत्मा से सराबोर करने का वक्त है। इसका प्रतिनिधित्व कुंभ राशि द्वारा किया जा रहा है। आकाशगंगा की बीजभूमि से एक नया सूर्य उदित होगा।

मानव में, पहले से ही उच्चतर तथा प्रचुर बौद्धिकता के बीच के विकास की तैयारी हो चुकी है। यह भी हो सकता है कि मानवता के सामाजिक आदर्श तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों में ऐसी बढ़ोतरी हो, जो इस धरती पर मानव ने कभी अनुभव न किया हो।

जहां तक महासौर चक्र के क्रम 'यूरेनियम युग' का प्रश्न है, प्रत्येक चक्र की आवृत्ति पर मानवता क्रमिक विकास के उच्चतर सोपान पर पहुंचती है तथा वह विश्वात्मकता से और प्रगाढ़ संबंधित हो जाती है। अपने समूचेपन में 100 चक्र अथवा महावर्ष 25,92,000 वर्षों के बराबर होते हैं। इस दौरान पूर्ण परिवर्तन हो चुका रहता है। तत्पश्चात धरती की धुरी को एक नई दिशा मिलती है।

परिणामस्वरूप, परिभ्रमणशील तारकों से धरती का नया संबंध स्थापित होता है। जब हम इस तथ्य पर ध्यान देते हैं कि अंतरिक्ष में दूरस्थ तारा विशाल आकाश को छोड़कर धरती से निकटता के सूत्र में बंध जाता है। हमारे विश्व की इस सापेक्षता को नए विकास के एक कारण के रूप में देखा जाता है। जब एक नया आकाश व एक नई धरती 'वस्तुतः अस्तित्ववान होते हैं।'

परीक्षण के बाद पाया जाएगा कि प्राचीन मनीषियों तथा दार्शनिकों का यह सपना खगोलीय तथ्यों की तह में है। वे इतने महत्त्वपूर्ण हैं तथा उनकी अवधारणा इतनी शुद्ध है कि हम विभिन्न खगोलीय, भौगोलिक अनुसंधानों से चकित रह जाते हैं, जो उनकी सत्यता सिद्ध करते हैं।

दूसरे दृष्टिकोण से अंतरिक्ष में नए केंद्रों के प्रकट होने के साथ-साथ मानव विकास के अग्रसर होने का ब्रह्मांडीय परिवर्तनों से संबंध होना जरूरी प्रतीत होता है। हमारे पास इसके सांपार्श्विक सबूत मौजूद हैं, जहां तक यूरेनस तथा नेप्च्यून का सवाल है, ज्योतिष से है। इस पद्धति में पाया गया है कि यूरेनस मौलिक तथा बुद्धिमान अनुसंधानकर्ताओं से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। अतः उस समय यह प्रतीत होता है, जो इससे प्रभावित होते हैं, उनको यह उनके कामों के लिए प्रेरित करता है। कहा जाता है कि यह ग्रह अनुसंधानिक मेधा, प्रेरणा, खोजपूर्ण बुद्धि, मौलिकता, मौजी व्यक्तित्व तथा सावधान मस्तिष्क का संकेत करता है। यह भौतिक जगत में विद्युत ऊर्जा से संबंधित है तथा यह तड़ित की चमक में प्रकट होता है।

दूसरी ओर, नेप्च्यून कलात्मक बुद्धि कौशल का संकेत देता है तथा लयबद्ध कंपनों, समन्वय की चेतना से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। यह ऐसे व्यक्तियों की जन्मकुंडली में प्रभावी पाया जाता है, जिनमें सौंदर्यबोध होता है। इसके प्रत्यक्ष प्रभाव में जन्मे व्यक्तियों के अध्ययन से यह बात पता चलती है कि ऐसे जातक शुक्र ग्रह से अत्यधिक प्रभावित होते हैं।

निःसंदेह, मानव में इनकी उच्चतर कंपनों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त साधन नहीं हैं, परंतु जिस सीमा तक ये मानव में अपनी अभिव्यक्ति दर्ज कराते हैं, वह निःसंदेह असामान्य तथा परिणामों की दृष्टि से अतिसामान्य हैं।

ऐसे मामलों में हमारे पास ससम्मान प्रतीक विज्ञान पर यकीन करने का पर्याप्त कारण है तथा यदि संभव हो, तो उन्हें अपनी वैचारिक प्रणाली में बैठाने की इच्छा करना स्वाभाविक है। आत्मा के गूढ़ तथा उच्चतर विशेषताओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति द्वारा विशेष मानसिक प्रणाली को विकास का प्रयास असामान्य मानसिकता तथा पागलपन के रूप में एक गलत समझे जानेवाले संगठन को जन्म दे सकता है, जबकि वास्तव में वे एक ऐसी स्थिति के पूर्व संकेत हैं, जो कालांतर बाद सामान्य समझी जाएगी।

अंक विज्ञान की दृष्टि से विचार करने पर हम अपने सुरों को 7 के अंक पर समाप्त कर देते हैं। अतएव यूरेनस 8 तथा नेप्च्यून 9 होगा, परंतु परिमाण बुध तथा शुक्र ग्रहों पर लागू होंगे, जिसके अष्टवर्ग में ये हैं और इस प्रकार यूरेनस 8+5=13=4 तथा नेप्चून के लिए 9+6=15=6 के बराबर होगा। यह उस पुराने रहस्यपूर्ण सिद्धांत के अनुरूप होगा, जिसके अनुसार यूरेनस वैसा ही है, जैसा सूर्य है जिसके लिए पश्चातवर्ती (सूर्य) स्थानापन्न ग्रह है।

हम पिछले अध्यायों में अध्ययन कर चुके हैं कि 4 का अंक सूर्य से प्रतीकों के अंक विज्ञान में प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। हम बुध को भी सूर्य के विकल्प के रूप में देख चुके हैं, जो 4 के अंक से संबंधित है, जबकि हम यूरेनस को बुध से संबंधित देख चुके हैं, जहां तक नेप्च्यून का सवाल है, हम पाते हैं कि यूनानियों के देवकुल में उस देवता का नाम 'पोजीडोनिस' (Posedonis) था तथा घोड़ा उसका प्रतीक था।

उसका शासन क्षेत्र समुद्र, विशेषकर भूमध्यसागर था। उसे एक बड़ी मछली के सिर पर घोड़े का मस्तिष्क रखे हुए विचित्र जीव के रूप में संकेतित किया गया था। कई बार उसका अगला हिस्सा बकरी, हिरण अथवा सूंस का दिखाया जाता था। समुद्री घोड़े के विचार से तुरंत दो राशियों मीन तथा धनु का संकेत होता है। दोनों का स्वामी बृहस्पति है। लंबे समय तक नेप्च्यून को ज्योतिषयों ने मीन राशि से संबंधित माना, जैसे वे यूरेनस को कुंभ से संबद्ध मानते थे।

बृहस्पति, जो मीन तथा धनु राशियों का स्वामी है तथा प्रतीक विज्ञान प्रणाली में उसका अंकीय मान 3 है, शुक्र (6) का विकल्प है। इस दशा में यदि हम नेप्च्यून को उच्चतर शुक्र मानें, तो हम स्वाभाविक रूप से उसे 3 तथा 6 के अंकों से संबंधित भाग लेंगे, जो बृहस्पति और शुक्र से संबंधित अंक हैं। यदि हम यूरेनस को उच्चतर बुध तथा सूर्य का विकल्प मान लें, तो इसकी नकारात्मक राशि कुंभ मिलेगी, जिसका स्वामी यूरेनस है तथा जो 4 के अंक

से संबंधित है।

यह अंक सूर्य में नकारात्मक अंक के रूप में भी जाना जाता है। इससे एक बिल्कुल ही नई गणना पद्धति की शुरुआत हो जाती है और हमें प्राप्त होता है- सूर्य=1, लिलिथ (Lilith)=2, बृहस्पति=3, यूरेनस=4, बुध=5, शुक्र=6, चंद्रमा=7, शनि=8, मंगल=9 और नेप्च्यून जो बृहस्पति तथा उच्चतर शुक्र का विकल्प है=6।

यहां हमारे सामने दुविधा की स्थिति है, क्योंकि हम नेप्च्यून तथा शुक्र का मान एक नहीं मान सकते, लेकिन हम वास्तव में कह सकते हैं कि शुक्र=6 तथा नेप्च्यून=9+6=15, परंतु इस मामले में हमें विरोधाभास दूर करने के लिए, बुध=5 तथा यूरेनस=9+5=14 मानना होगा, जिसमें सूर्य के दो अंक 1 और 4 प्रयोग हुए हैं, जिससे एक भिन्न चीज का ही प्रादुर्भाव होता है, परंतु अपनी ठोस अभिव्यक्ति में वह 5 है। यह ज्यादा तर्कसंगत दिखता है।

परिणामस्वरूप हम अपने संगीत सुरों को 9 स्वरों तक मानते हैं। सिर्फ अष्टक तक नहीं। ऐसे मामलों में हमें सूर्य का नकारात्मक मान=4 रखना चाहिए तथा यूरेनस का मान 14 मानना चाहिए। इस प्रकार 1 सूर्य, 2 लिलिथ, 3 बृहस्पति, 4 सूर्य (नकारात्मक), 5 बुध, 6 शुक्र, 7 (चंद्रमा), 8 शनि, 9 मंगल, 14 यूरेनस, 15 नेप्च्यून होगा।

यहां हम देखते हैं कि यूरेनस तथा नेप्च्यून का अंकीय मान 9 के अंक के योगं से बढ़ जाता है। यह अंक (9) मंगल से संबंधित है तथा इच्छाशक्ति का प्रतीक है। अतः मानवता की उन्नति को इच्छा के गुण के प्रयोग पर आधारित संकेतित किया गया है। मस्तिष्क (ज्ञान) की वृद्धि सिर्फ इच्छा ही कर सकती है। यदि हम चाहें, तो सतयुग कल से ही आरंभ हो सकता है।

व्यक्तिगत प्रगति व्यक्ति की इच्छाशक्ति से नियंत्रित होती है। किसी चीज को करने की, कुछ बनने या होने की इच्छा सभी मानव विकासों में निर्णायक कारक तथा प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया में अंतिम कारक की भूमिका निभाती है। जैसा कि श्रीकृष्ण ने कहा है–'आत्मने आत्मनम् उपास्य।' यही बात भगवान् बुद्ध तथा अन्य महापुरुषों ने भी कही है।

***

अंकों में छिपा भविष्य

मानव मन में प्रारंभ से ही भविष्य के रहस्य को जानने की प्रबल उत्कंठा रही है और इसी ने ज्योतिष शास्त्र की अनेकानेक विधाओं जैसे हस्तरेखा विज्ञान, जन्मकुण्डली, मुखाकृति विज्ञान, रमल ज्योतिष व अंक विद्या आदि को जन्म दिया।

इन सभी विधाओं में सर्वाधिक सरल व बोधगम्य अंक विद्या है। अंक विद्या की सहायता से केवल जन्म तिथि के आधार पर आप न केवल किसी भी व्यक्ति की प्रकृति व स्वभाव को परखकर उसके विषय में सबकुछ जान सकते हैं बल्कि यह भी जान सकते हैं कि कौन-सा अंक आपके लिए शुभाशुभ है तथा किस अंक से आपको कैसा फल मिलेगा। आप किसके साथ मित्रता करें तथा किससे बचें। किसके साथ व्यापार करना लाभकारी होगा इत्यादि।

प्रस्तुत पुस्तक अंक विद्या के जनक विश्वविख्यात भविष्यवेत्ता सेफेरियल की अनमोल कृति 'कबाला ऑफ नम्बर्स' का सरल हिन्दी रूपांतरण है। अंग्रेजी भाषा में इस पुस्तक को लाखों पाठकों ने पढ़ा, समझा तथा सराहा है, अब सरल हिन्दी भाषा में आप भी पढ़ें। आशा है विश्व की श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक यह अनमोल पुस्तक जिज्ञासुओं, अध्येताओं, अनुसन्धानकर्ताओं, पाठकों आदि सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

A.H.W. RAJA SERIES